रामायण

(वाल्मीकि) खण्ड-3

رامائن والمیکی

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

लेखक
सुमेर चन्द

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ९०१ (उ.प्र.)

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड तृतीय
(पृष्ठ ५१८ से ६६७ तक)

رامائن (والمیکی)

लेखक
सुमेर चन्द

फ़ारसी से हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन

प्रो० शाह अब्दुस्सलाम
एवं
डा० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
रामपुर - २४४ ६०१ (उ.प्र.)

© रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, (उत्तर प्रदेश)

पुस्तक का नाम : रामायण (वाल्मीकि) खण्ड तृतीय
लेखक : सुमेर चन्द
अनुवाद एवं सम्पादन : प्रो०शाह अब्दुस्सलाम
डॉ० वक़ारुल हसन सिद्दीक़ी
प्रतियाँ : 1000
मूल्य : ₹ 5000/- प्रति सेट (३ खण्ड)

प्रकाशक : विशेष कार्याधिकारी
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी,
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

मुद्रक : डायमंड प्रिंटर्स, नई दिल्ली-११०००२

Name of the Book : **RAMAYAN (Valmiki) Vol. III**
Name of Author : **Sumair Chand**
Annotated & Translated by : Prof. Shah Abdus Salam
& (Late) Dr. W. H. Siddiqui

Published by : O.S.D. Rampur Raza Library,
Rampur (U.P.)

Printed by : Diamond Printers, New Delhi-110002

Price : **₹ 5000/- per set(in 3 Vol.)**

Rampur Raza Library
Hamid Manzil, Rampur-244901 (U.P.)

Phone Library : 0595-2325045, 2327244
0595-2325346
Fax : 0595-2340548
Website : www.razalibrary.com
Email : osdrampurrazalibrary@gmail.com

रामायण

(वाल्मीकि)

खण्ड तृतीय

بسم الله الرحمن الرحیم

اغاز کاند چهارم مسمی بکشکندها کاند و امدن هنومان نزد رام و ملاقات سکریو وند کورد

رام و لچهمن هر دو برادر راکه دارند اسلحه خوب بودند ناگاه سکریو دید و خاطرش
و غمناک شد و از انجا خواست که برود فکر نموده و تامل کرده باربار تردد شد انجاکه را
ایستاده بود خواست که انجارا بگذارد و اراده و حقیقت خود بسنجویه یعنی وزرای خود
گفت این هر دو کس را بالی فرستاده است و لباس فریب پوشیده درینجا امده اند
وزرای سکریو همچنان دیده ازان کریوه بکریوه دیگر رفتند و یکجا جمع شده و درختان
گل دار شکستند در کوه ملیه نشستند و قله ها ان شکستند چنانچه شیران در کریه جنگلی و

نعره

आरंभ करता हूँ मैं उस परमात्मा के नाम से
जो बड़ा दयालु और कृपालु है।

चौथे काण्ड का आरंभ जो किष्किन्धा के नाम समर्पित है और हनुमान का राम के पास आना

सुग्रीव की भेंट राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों को जिनके पास बहुत से हथियार थे। एकाएक सुग्रीव ने देखा और अन्दर ही अन्दर दुखी हुए और वहाँ से चला जाना चाहा, विचार विमर्श किया और थोड़ा रुके। लेकिन उनकी दुविधा बनी रही और उस स्थान को जहाँ रामचन्द्र खड़े थे उसको चाहा कि छोड़ दें और अपने विचार की वास्तविकता अपने मंत्रियों को बताया और कहा कि उन दोनों को बाली ने भेजा है और यह धूर्तता का वस्त्र धारण करके यहाँ आए हैं। सुग्रीव के मंत्री यह सब देखकर एक समूह से दूसरे समूह में गये और एक स्थान पर एकत्र हुए और फूलदार वृक्षों को तोड़ दिया। मलय पर्वत पर बैठे और उन सबकी चोटियों को तोड़ डाला जैसा कि शेर, बिल्ली और चीते आदि उनसे भय खाते थे।

وغیره ازانها خوف خوردند بعده برای سکریو دست بسته نزدیک حاضر امدند ناگاه سکریو ورنتها
که از بالی ترسنده بود هنومان نام بوزنه که دران چهار وزیر بود گفت ازان بالی که میترسی اق سکریو
نیست و دهشت مخور دل خود را قرار ده وعقل بر جادار که مضطرب العقل سزاوار راج نباشد حسنیم
گفتار هنومان را احسن دانسته از وهم خوب تر گفتار به هنومان گفت انها که دراز دست و کلان
دارنده تیر و کمان مانند پسران دیوتا اند هیچکس خوف نخواهد دید وایشان را فرستاده بالی
دانسته در دل شک می آرم اگرچه راجه بسیار آشنا باشد اعتماد نباید کرد بنابران تو رفته اراده ایشان
دریافت نما و از طرف من هم موجب آمدن صحرا بپرس که با تیر و کمان برای چه آمده اید اگر ایشان را
صاف دل دانی چنان کو والا نوعدیگر بگو بدین آیین سکریو هنومان پسر باد را پیغام داد او نزد رام
ولچهمن روان شد دریجا صورت کوه ملیه و درختان و رام ولچهمن جتا گسان و سکریو با شاخ گلدار چهار بوزنه

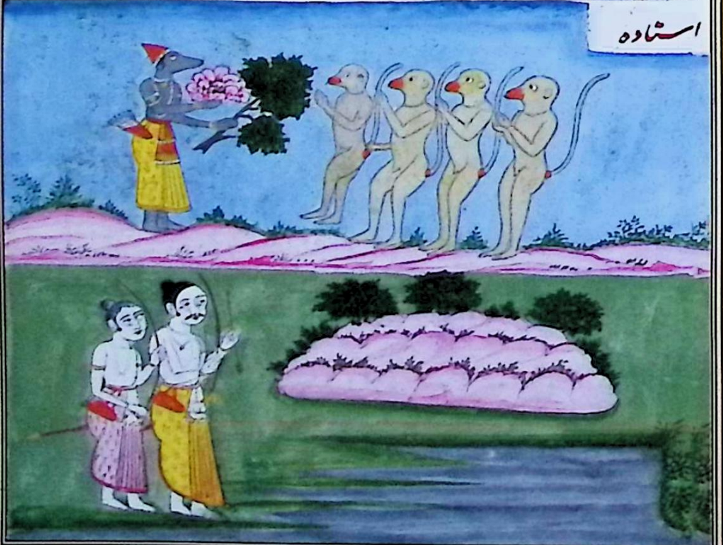

उसके पश्चात् सुग्रीव के मंत्री हाथ जोड़े हुए उपस्थित हुए। यकायक सुग्रीव से, जो बाली से भयभीत था, हनुमान नामक वानर ने जो इन चारों मंत्रियों में से एक था कहा कि जिस बाली से आप भयभीत हैं वह उनमें नहीं है। भयभीत न होइये अपने मन को शान्त रखिये बुद्धि को उसके स्थान पर रखिये क्योंकि व्याकुल और परेशान बुद्धि वाला राज्य के योग्य नहीं होता। सुग्रीव ने हनुमान की बात को भली प्रकार समझकर उससे भी उत्तम बात हनुमान से कही उन लोगों की ओर से जो लम्बे हाथों वाले और बड़ी-बड़ी आंखों वाले हैं और देवता की संतानों की भाँति तीर कमान रखने वाले हैं। कोई व्यक्ति भय नहीं देखेगा और यह लोग चूँकि बाली के भेजे हुए हैं इसलिये मेरे हृदय में उनकी ओर से संदेह एवं शंका है। यद्यपि राजा बहुत मित्र हो परन्तु उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। इस आधार पर तुम जाकर उनका उद्देश्य ज्ञात करो और मेरी ओर से भी वन में आने का कारण ज्ञात करो कि धनुष बाण लेकर क्यों आये हो। यदि तुम उनको स्वच्छ मन का जानो तो इस प्रकार कहना और यदि अन्यथा देखो तो दूसरी प्रकार कहना। इस प्रकार सुग्रीव ने बाद के पुत्र हनुमान को संदेश दिया और वह राम लक्ष्मण की ओर चल दिये।

मलय पर्वत और वृक्षों का चित्र- राम और लक्ष्मण जटा बांधे हुए हैं और सुग्रीव फूलदार शाखाओं के साथ चारों वानरों के साथ है।

2B

مرگ گفتار **هنومان** بموجب گفته سگریو از کوه بلند زغند زده بسرعت نزد رام
ولچهمن رسید وصورت خود را مبدل کرده بلباس گدایان درانجا وارد گردید راقم ترجمه
گوید در ان زمان بعضی بوزنه ها وغیره بهایم همچنان بودند که خود را بهر صورت
که خواهند بنمایند وبهر نوع بسخن درآیند الغرض هنومان چنین گفت که شما هر دو مانند
اندرا از کدام ملک اینجا آمده اید وآهوان وغیره باشندگان جنگل از شما دهشت
خورده اند بر کناره این دریا که آب سرد دارد شما هر دو کیستید وبخرامش مانند شیر هستید
ومانند قوس قزح کمان دارید وخوش شکل ومانند اسونی کمار هستید وتحمل اید این کوه
از شما زیب یافته است وشما قابل راج ودولت اید وچشما مندل دارید گویا از آسمان
آفتاب وماهتاب فرود آمده اند بازوی کلان وسینه فراخ دارید گویا انسان
بصورت دیوتا اید شما بغیر پیرایه هم خوش شکل اید من شما را راجه زاده می بینم ناراین هستید
که لباس من کرده اید وکرشن اجن دارید بگوئید برای چه کار اینجا آمده اید که از خوبی
مانند اسونی کمار هستید من لایق آن میفهمم که تمام زمین را سمدر وسمیر ومندر کوه محافظت
توانند کرد واین کمانهای شما با طلا وجواهر آراسته نورافزاست واین تیرها در ترکش ها
مارهای جانکش اند وکهرگ یعنی تیغها با طلا آراسته زیب آورند ومن از شما حقیقت میپرسم شما
چرا با ما سخن بگوئید ودرینجا سگریو نام دهرماتما سردار بوزنه هاست او برادرش بدر کرده

सर्ग-६५

हनुमान की वार्ता

हनुमान सुग्रीव के कथनानुसार ऊँचे। पर्वत से छलांग मारते हुए शीघ्र राम और लक्ष्मण के पास गये और अपना रूप बदलकर भिक्षुकों के वेष में वहाँ पहुँचे। अनुवादक कहता है कि उस समय में कुछ वानर आदि दूसरे पशु ऐसे थे कि स्वयं को जिस रूप में चाहते प्रकट कर सकते थे और हर प्रकार की वार्ता भी कर सकते थे। हनुमान ने इस प्रकार कहा कि आप दोनों इन्द्र के समान किस देश से यहाँ आए हैं ?और हिरन आदि वन के दूसरे पशु आपसे भय खा रहे हैं। इस नदी के किनारे जिसका पानी ठंडा है। आप दोनों कौन हैं, चलने में शेर लगते हैं, धनुष रखते हैं, सुन्दर हैं, और अश्वनि कुमार के समान हैं। इस पर्वत को आपसे सुन्दरता मिली है, आप लोग राज्य और शासन करने के दोषी हैं तथा जटा मंडल रखते हैं। जैसे देवता के रूप में मनुष्य हैं। आप बिना सजावट के भी सुन्दर हैं। मैं आप लोगों को राजकुमार देखता है आप नारायण है कि मनु का वस्त्र धारण कर रखा है और कृष्ण अजिन रखते हैं। कहिये यहाँ किस काम में आए हैं ?कि गुणवत्ता में अश्वनि कुमार के समान हैं। मैं आपको इस योग्य समझता हूँ कि आप लोग समस्त समुन्द्र, मन्दिर और पर्वत की रक्षा कर सकते हैं और आपके यह धनुष स्वर्ण तथा रत्नों से सुसज्जित और प्रकाशमान है। तरकश के भीतर यह बाण प्राण लेने वाले सर्पों की भाँति हैं और स्वर्ण से सुसज्जित यह तलवारें सुन्दरता बढ़ाने वाली है। मैं आप लोगों से यह वास्तविकता पूछता हूँ कि आप लोग क्यों हमसे बात नहीं करते और यहाँ सुग्रीव नामी धर्मात्मा वानरों का सरदार है उसको उसके भाई ने देश निकाला दे दिया है।

وسن دوت یعني ایلچي اویم و هنومان نام من است و سگریو با شما ملاقات کردن میخواهد

وسن سنجویم و پسر بادم و کام کن هستم یعني هرجا که خواهم میروم و کامروپ هستم بهر لباس بشوند

و برای مطلب سگریو لباس گدا کرده از کوه ملیه درینجا آمده ام گفته هنومان را شنیده رام

از شادی بلچهمن گفت اینک وزیر سگریو با مید دوستی نزد من آمده ای لچهمن با این حرف بزن

و سخن بگو و ما برای کاري که آمدیم و دیدن سگریو اراده کردیم ایلچي او از خود آمده از گردش کال یعني وقت

این عجب تر نیست درینجا صورت رام و لچهمن جتا بر سر و هنومان دست بسته سخن میگوید

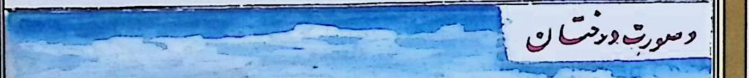

و صورت درختان

और मैं उसका दूत हूँ, मेरा नाम हनुमान है और सुग्रीव आप लोगों से भेंट करना चाहते हैं। मैं उसका मंत्री हूँ वायु का पुत्र और कामग हूँ अर्थात् मैं जहाँ चाहूँ जा सकता हूं और कामरूप हूँ। प्रत्येक वस्त्र पहन सकता हूँ और सुग्रीव के उद्देश्य के लिये मैंने भिक्षुक का वस्त्र पहना है मैं मल्य पर्वत से यहाँ आया हूँ। हनुमान की वार्ता सुनकर राम ने प्रसन्नता के साथ लक्ष्मण से कहा सुग्रीव का यह मंत्री मित्रता की आशा में मेरे निकट आया है। ऐ लक्ष्मण! उसके साथ बातें करो और उससे वह उद्देश्य बताओ जिसके लिये हम यहाँ आये हैं और बताओ कि हम सुग्रीव से मिलने और उसे देखने का विचार रखते हैं और उनका संदेश वाहक स्वयं ही आया है समय चक्र से यह अत्यन्त आश्चर्यजनक है।

राम और लक्ष्मण का चित्र- सिर पर जटा है और हनुमान करबद्ध वार्ता कर रहे हैं।

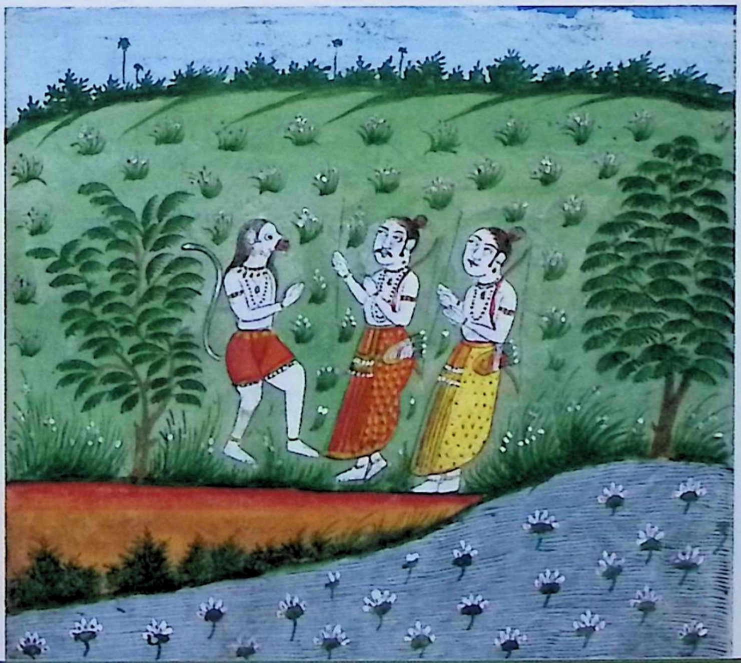

سکریو جواب لچهمن بعد از ان لچهمن از فرموده رامچندر بیان کرد که دشرته راجه دهرم خواهان بود این پسر کلان اوست رام نام و دهرم طور و غریب وضع خیرخواه خلق الله و پناه دهنده پناه خواهان است بموجب امر پدر راج را گذاشته با من و اهلیه خود که سیتا نام داشت درینجا آمده در غیبت ما یان عورت این را راچهس برده است و نام آن راچهس میدانیم باقی هیچ معلوم نیست کجاست و دنو پسر تسریه که از شاپ راچهس شده بود او گفته که سکریو برنده سیتا را معلوم خواهد کنانید او این بگفت و بسرگ رفت انچه حاصل کلام بود گفتم من و برادر در پناه سکریو آمده ایم و از و استعانت میجوئیم اگر سکریو دوستی میکند گویا جشن خوب یافتیم و دولت یافتیم و گرو یعنی پیر من که رام دهرماتماست در پناه سکریو دوستی میکند گویا جشن خوب و دولت یافتیم و گرو یعنی پیر من که رام دهرماتماست در پناه سکریو آمده استعانت میطلبد دانا و عاقل است بسبب رفتن عورت از سکریو خواهان استعانت است سکریو هم برو مهربانی کردن را سزاوار است لچهمن اشک از گریه فرو ریخته این سخن ادا کرد هنومان در جواب گفت مثل شما عاقلان والی دولتها و مسخر کننده حواس و کننده امداد را سکریو کی میگذارد بهتر است که پیش سکریو ما همه برویم او هم از راج افتاده با بالی عداوت دارد که او عورت او را متصرف است

सर्ग-७६

लक्ष्मण का उत्तर

उसके पश्चात् लक्ष्मण ने राम के आग्रह से वर्णन किया कि दशरथ नामी एक धर्मात्मा राजा था, यह उसके बड़े पुत्र हैं राम इनका नाम है धर्मात्मा, आश्चर्यजनक रूप के स्वामी, समस्त जीवधारियों के शुभचिन्तक और शरण चाहने वालों को शरण देने वाले हैं। अपने पिता के आदेशानुसार राजगद्दी छोड़कर मेरे और अपनी सीता के साथ यहाँ आये हैं हमारी अनुपस्थिति में इनकी पत्नी को एक राक्षस उठा ले गया है। उस राक्षस का केवल नाम मुझे ज्ञात है शेष और कुछ नहीं जानता कि कहाँ है और शर्बा के पुत्र दनु (कबन्ध) ने जो शाप के कारण से राक्षस बन गया था उसने कहा है कि सुग्रीव सीता को ले जाने वाले की खोज करेगा। वह यह कहकर स्वर्ग में चला गया। जो कुछ संक्षेप में मामला था वह मैंने बता दिया। मैं और मेरा भाई सुग्रीव की शरण में आये हैं और उससे सहायता चाहते हैं। यदि सुग्रीव मित्रता करते हैं तो हमारी हार्दिक इच्छा पूर्ण होगी और हमें अपार सम्पत्ति प्राप्त हो जायेगी। गुरु अर्थात् मेरे वरिष्ठ जो धर्मात्मा राम है वह भी सुग्रीव की शरण में आकर सहायता चाहते हैं।

वह ज्ञानी और बुद्धिमान है पत्नी के हरण के कारण से सुग्रीव से सहायता चाहते हैं। सुग्रीव भी उन पर दया करने के योग्य हैं। लक्ष्मण ने रोते हुए यह बात कही। हनुमान ने उत्तर में कहा कि आप जैसे बुद्धिमान हृदय वालों के लिये, इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले और सहायता करने वालों को सुग्रीव कब छोड़ने वाला है ?उचित यह है कि हम सब सुग्रीव के पास चले वह भी राज्य से अलग होकर बाली के साथ शत्रुता रखते हैं जो उनकी पत्नी पर अपना अधिकार जमाए है और वन से निकाल दिया है

وبصحرا بدر کرده از خوف او درینجا میباشد و او با ما همه اعانت رام خواهد کرد
چون هنومان چنین گفت رام ولچهمن این سخن پسند کردند بعد ازان هنومان هر دو
برادر را همراه خود آنجا که سگریو بود روان شد و در کوه ملیه ورکهه موک رسید درینجا

صورت رام ولچهمن و هنومان هر دو را همراه خود در کوه ملیه ورکهه موک برده

وصورت کوه وصحرا

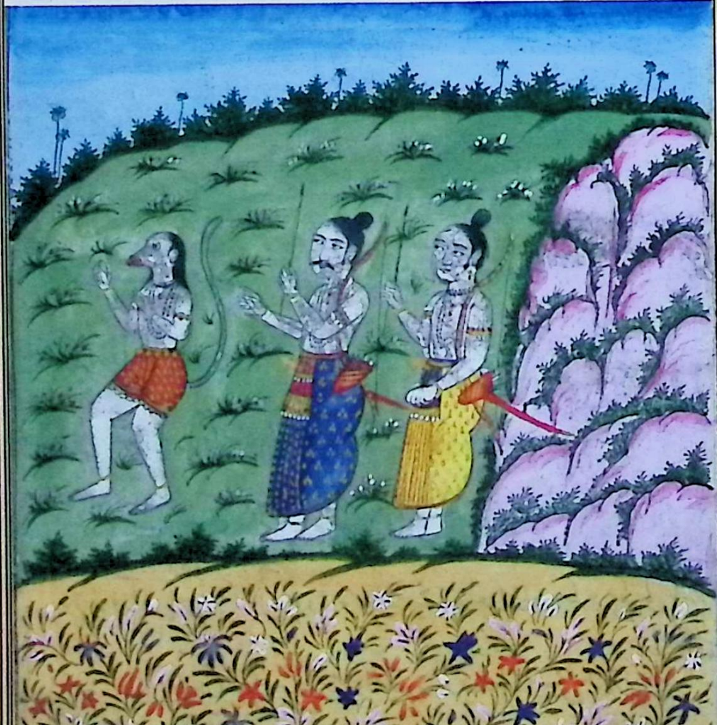

उसके भय से वह यहाँ रहता है और वह हम सब के साथ राम की सहायता करेंगे। हनुमान ने जब यह कहा तो राम और लक्ष्मण ने यह बात पसन्द की उसके पश्चात् हनुमान दोनों भाइयों को अपने साथ लेकर वहाँ के लिये जहाँ सुग्रीव था प्रस्थान किया और मलय पर्वत और ऋष्यमूक पहुँचे।

हनुमान दोनों भाइयों को अपने साथ मलय पर्वत और ऋष्यमूक ले जाते हुए और पर्वत वन का चित्र।

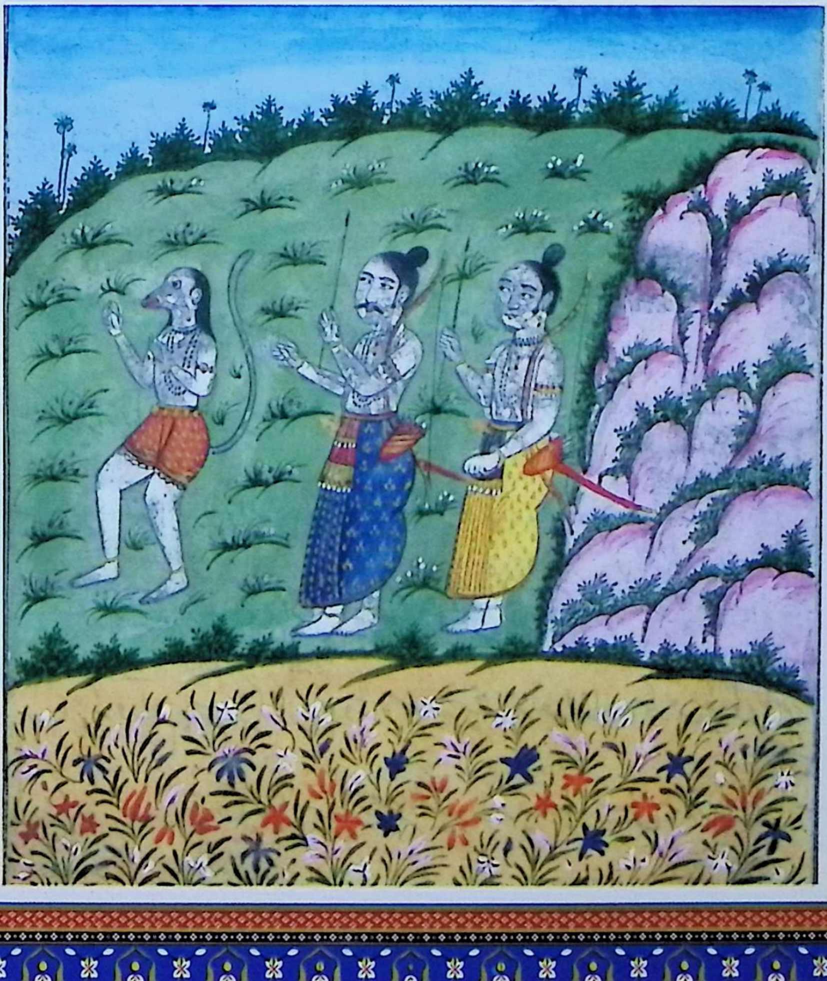

سرگ ملاقات سکریو از رکهه موک هنومان پیشتر در کوه ملیه رفته بسکریو گفت
این رام که عاقل و زور مند است با لچهمن برادر خود در پناه تو آمده و این در اولاد اچهواکو
پسر دشرتهه است و دهرماتمان از امر پدر در صحرا آمده حالا عورت او را از صحرا راچهس
گرفته برد و او اراده دارد که با تو دوستی کند و تو این هر دو را به بین و دستکاری یعنی تعظیم
و اعزاز بجا آر گفته هنومان را شنیده سکریو خوشوقت شد و خوف از دل دور کرده
نزدیک رام آمده دست بسته گفت تو متحمل هستی و مسکین طور و راست رو و زور مند
هستی چنانچه بزرگی تو مرا هنومان ظاهر نمود و من مراد خود یافتم که تو با من بوزینه اخلاص
کردن میخواهی اگر دوستی میکنی اینک دست خود دراز میکنم از دست خود دستم بگیر
رام بخوشی تمام دست او بگرفت بعد ازان رام دست بکشاد سکریو دست او بگرفت
بتاکید بکر از دل دوستی نمودند بعد ازان هنومان صورت گدا گذاشته بصورت اصلی
هیمه ها و آتش آورد و آتش را روشن کرد و از گلها پرستید تا برای دوستی کردن آتش
شاهد باشد سکریو و رام آنرا پردچهنا کردند یعنی گرد بگرد گردیدند بعد ازان از خوشوقتی
آن بوزینه و رام باهم نظر کنان بودند و سیر نمیشدند بعد ازان سکریو بیکدلی تمام برام
ولد دشرتهه گفت بنوعیکه تو با لچهمن در صحرا میگذرانیدی و راچهس اهلیه ترا که دختر راجه جنک باشد
ببرد و گریه کنان گرفتار براه هوا رفت این غم مهاجرت او از تو زود دور میشود خواه

در ساق

सर्ग-७७

सुग्रीव की भेंट

ऋष्यमूक से हनुमान ने पहले से मलय पर्वत पर जाकर सुग्रीव से कहा यह राम जो बुद्धिमान और बलवान है अपने भाई लक्ष्मण के साथ आपकी शरण में आये हैं और यह इक्ष्वाकु की संतानों में दशरथ के पुत्र हैं। धर्मात्मा हैं और अपने पिता की आज्ञा से वन में आये हैं। अब इनकी पत्नी को राक्षस वन में उठा ले गया है। उनकी इच्छा है कि आपसे मित्रता करें। आप इन दोनों को देखिये और इनका आदर सत्कार कीजिये। हनुमान की बात सुनकर सुग्रीव प्रसन्न हुए और हृदय से भय को दूर करके राम के पास आकर हाथ जोड़कर कहा। आप धैर्यवान हैं दीनों के रूप वाले हैं, सत्यवादी और बलवान हैं, जैसा कि आपकी महानता हनुमान ने मुझ पर प्रकट की मैंने अपनी हार्दिक इच्छा पा ली की कि आप मुझ जैसे वानर के साथ सद्भाव चाहते हैं यदि आप मित्रता करना चाहते हैं तो लीजिये मैं अपना हाथ बढ़ाता हूँ अपने हाथ से मेरा हाथ पकड़िये। राम ने पूरी प्रसन्नता से उसका हाथ पकड़ा। उसके बाद राम ने हाथ खोला और सुग्रीव ने उनका हाथ पकड़ा और एक दूसरे के साथ हृदय के साथ मित्रता की। इसके पश्चात् हनुमान भिक्षु का रूप छोड़कर अपने असली रूप में आ गये। लकड़ी और आग लाये और अग्नि प्रज्वलित की और फूलों से पूजा की ताकि मित्रता करने के लिये अग्नि साक्षी रहे। राम और सुग्रीव ने उसका प्रोचना किया अर्थात् उसके चारों ओर घूमे इसके पश्चात प्रसन्नता से भरपूर वह वानर और राम एक दूसरे को देखते थे और उनका मन नहीं भर रहा था। उसके पश्चात् सुग्रीव ने पूरी एकाग्रता के साथ दशरथ पुत्र राम से कहा, जिस प्रकार आपने लक्ष्मण के साथ वन में बिताया और राक्षस आपकी पत्नी को, जो राजा जनक की पुत्री है, उनको रोता हुआ कैद करके वायु के मार्ग से ले गया। उनसे आपके वियोग का यह दुख शीघ्र दूर हो जायेगा।

در رساتل که زیر زمین هفتم باشد خواه بر فلک هر جا که باشد از زور و تلاش
می آریم گفتار مرا یقین دان و غم را دور کن ترا سوگند بکهجیتی ست و کمان میبرام
که سیتا را هنگامیکه راچهس میبرد من دیده ام درکنار راون راچهس بود
و رام رام و لچهمن لچهمن ندا میکرد و ما یان برابر کوه ایستاده دیده پیرایه های خود
وا و تری خود بینداخت آنرا گرفته نگاه داشته ام اگر الفرمانی بیارم رام گفت یاری
زود بیار چرا درنگ میکنی بعد ازان سگریو در کوه یعنی غار کوه رفت وا و تری
دو دیگر پیرایه ها بگرفت و آورده برام بنمود رام آنرا گرفته در آب عرق غرق شد
چنانچه از برم یعنی کحل ماه تیره شود و از محبت سیتا ای محبوبه ای عشقه
گریه کرده صبر گذاشته بر زمین افتاد و آن پیرایه را بر دل نهاده بسیار دم سرد
کشید چنانچه مار در سوراخ بند شده باشد و از غصه دم کشد بعد ازان
گریه را قدری رفع کرده بلچهمن گفت که عقب استاده بود به بین که سیتا پیرایه
هائی خود برانداخته است بعده به سگریو گفت ای سگریو تو کدام سمت
برده و دیدی آن بدکاره کجا می باشد که مرا تصدیع داد که من
برای او همه راچهسان را بکشم که آن برنده سیتا برائی هلاک خود
دروازه مرگ کشاده است تو نشان ده تا دشمن خود را نزد جم میفرستم

और चाहे वह पृथ्वी के सांतवें तल के नीचे हो चाहे आकाश पर कहीं हो हम अपने बल और खोज से उसे ले आयेंगे। मेरी बात पर विश्वास कीजिये और दुख को दूर कीजिये। आपको मेरी मित्रता की सौगन्ध है। मेरा विचार है कि सीता को जिस समय राक्षस ले जा रहा था मैंने देखा है। वह रावण राक्षस के पास थी और राम-राम और लक्ष्मण-लक्ष्मण पुकार रही थी। वह हमें पर्वत पर खड़ा देखकर अपने वस्त्र और उत्तरीय उतार कर डालती जा रही थी। मैंने उन्हें उठाकर सुरक्षित कर लिया है यदि आप कहें तो मैं उन्हें ले आऊँ। राम ने कहा ''अरे यार ! शीघ्र लाओ। क्यों देर कर रहे हो।'' सुग्रीव पर्वत की गुफा में जाकर ओतरी और अन्य वस्त्र लाया और राम को लाकर दिखलाया। राम उन्हें लेकर पसीने में डूब गये, जैसे कि सुरमे से चन्द्रमा काला हो जाता है और अपनी प्रेयसी अर्थात् सीता के प्रेम में रोते-रोते धैर्य छोड़कर धरती पर गिर पड़े। और वह कपड़ा हृदय से लगाकर बहुत ठंडी आह भरी और इस प्रकार तड़पे जैसे कि सर्प छिद्र में बन्द हो। और क्रोध के कारण सांस खींची। उसके पश्चात् विलाप को कम करके लक्ष्मण से, जो पीछे खड़े थे कहा देखो सीता अपने वस्त्र फेंक गयी है। इसके पश्चात् सुग्रीव से कहा, ऐ सुग्रीव! तुमने किस ओर ले जाते हुए देखा है ?वह धूर्त कहां होगा जिसने मुझे कष्ट पहुँचाया है ?मैं इसके लिये समस्त राक्षसों का वध करूंगा कि इस सीता को ले जाने वाले ने अपने विनाश के लिये मृत्यु का द्वार स्वयं खोला है तुम पता बतलाओ ताकि मैं शत्रु को मृत्यु के दूत के पास भेज दूँ।

درینجا صورت رام و لچهمن و سگریو و ملاقات ایشها و صورت چهار بوزنه دیگر و هنوما

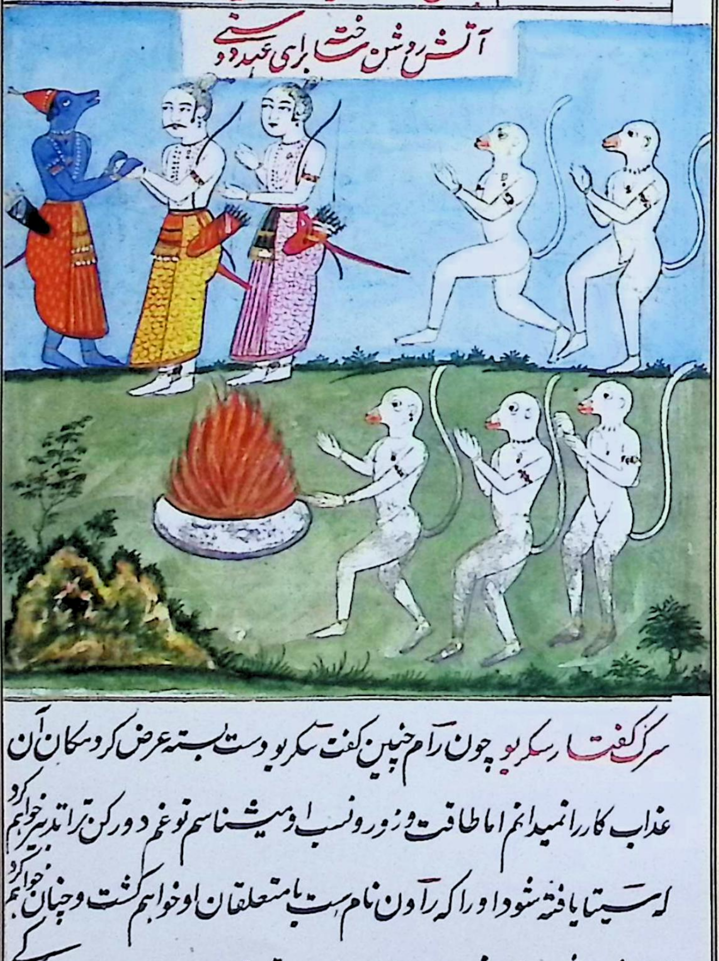

آتش روشن ساختن برای عهد دوستی

سر گفتار سگریو چون رام چنین گفت سگریو دست بسته عرض کرد که آن
عذاب کار را نمیدانم اما طاقت و زور و نسب او میشناسم تو غم دور کن ترا تدبیر خواهم کرد
که سیتا یافته شود و او را که راون نام ست با متعلقان او خواهم کشت و چنان خواهم کرد
که خوش باشی و در غم و هنگام جان رفتن و خوف عقل خود بر جای دار و از روی کودکی
هر کس خود را در غم می اندازد او غرق و خراب میشود چنانچه کشتی در آب از باد تند باشد

राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र और उनकी भेंट और अन्य चार वानरों और हनुमान का चित्र जिन्होंने दोस्ती की सौगन्ध के लिये आग सामने जला रखी है।

सर्ग-७८

सुग्रीव की वार्ता

राम ने जब यह कहा तो सुग्रीव ने निवेदन किया कि मैं उस पापी का घर नहीं जानता हूँ। लेकिन उसकी शक्ति और उसका पारिवारिक सम्बन्ध जानता हूँ। आप चिन्ता एवं दुख दूर कीजिये मैं आपके लिये कोई ऐसा उपाय करूँगा कि सीता मिल जायें। जिसका नाम रावण है मैं उसे तथा उसके सभी सम्बन्धियों के साथ मार डालूँगा और ऐसा करूंगा कि आप प्रसन्न हो जायेंगे। आप अपने अंदर से दुख एवं पीड़ा दूर करके बुद्धि को संजोये रखिये- जो व्यक्ति स्वयं को पीड़ा एवं दुख में डालता है वह तबाह बरबाद हो जाता है। जैसे कि नाव पानी में तेज़ वायु से होती है।

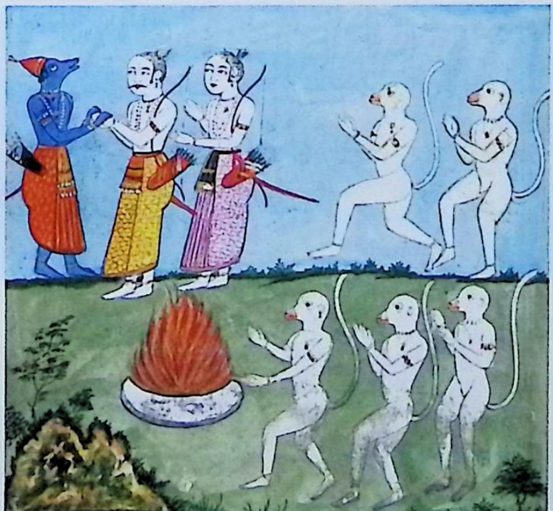

اینک دست بسته و سر فرو کرده عرض میکنم که خود را بدست غم مده و آنان که دایم غم میکنند
راحت نمی یابند غم حسن را ببرد تو غم مخور و خیرخواهی تو بتو میگویم غم مخور سیتا را
خواهم آورد چون سکریو چنین گفت رامچندر از پارچه اشک را صاف نموده
بخویش آمده بسکریو گفت آنچه خواهی نمودی لایق محبت خواهد بود اینک بخود آمدم
تو رفع غم کردی اینچنین دوستان کمیاب اند بتخصیص درین زمان و توجه تدبیر
در جستن سیتا و کشتن راچس خواهی کرد و مرا آنچه باید نمود همه بگو میپرسم ای یار قسم
براسی تست سکریو این را شنیده شاد شده با بوزنه ها و وزرا کار خود کرده دانست درینجا صورت

رام و لچهمن دو زانو نشسته و سکریو و هنومان و دیگر بوزنه ها استاده کلام
دوستی میکنند

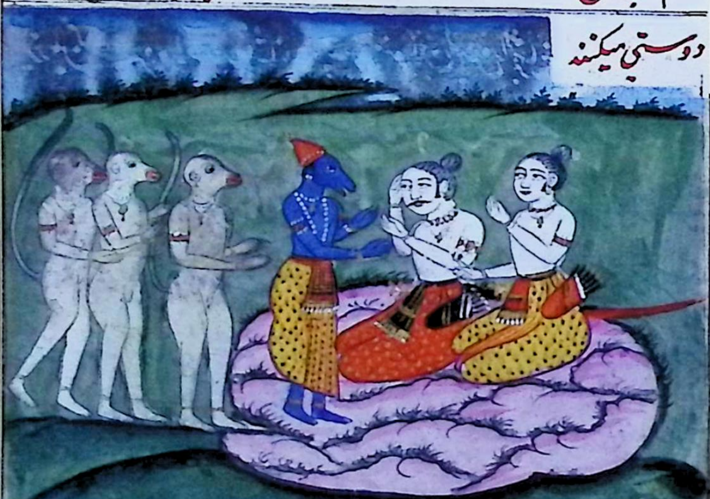

मैं केवल यह निवेदन करता हूँ कि जो लोग सदैव दुखी रहते हैं वह सुख और आराम नहीं पाते हैं। दुख सौन्दर्य को भी समाप्त कर देता है। आप दुख न कीजिये और मैं आपकी भलाई के लिये कहता हूँ कि दुखी न होइये। मैं सीता को खोज लाऊँगा। सुग्रीव के यह कहने पर रामचन्द्र ने वस्त्र से अपने अश्रु पोछे और अपने मन और चेतना को एकाग्र करके सुग्रीव से कहा, ''तुम जो कुछ करोगे वह प्रेम के योग्य होगा लो अब मैं चैतन्य हो गया, तुमने दुख दूर कर दिया, ऐसे मित्र बहुत कम मिलते हैं। विशेष रूप से इस युग में और तुम सीता को खोजने और राक्षस का वध करने के लिये क्यों कार्यवाही करोगे। इस संबंध में मुझे क्या करना चाहिये वह बतलाओ ?मैं तुमसे तुम्हारे शीष की सौगन्ध खाकर पूछता हूँ। सुग्रीव यह सुनकर प्रसन्नचित्त हो गया और अपने अन्य वानरों और मंत्रियों के साथ-साथ मस्ती एवं प्रसन्नता में डूब गया।

राम और लक्ष्मण का चित्र- जो घुटनों के बल बैठे हैं और सुग्रीव हनुमान और दूसरे वानर खड़े होकर मित्रवत बातें कर रहे हैं।

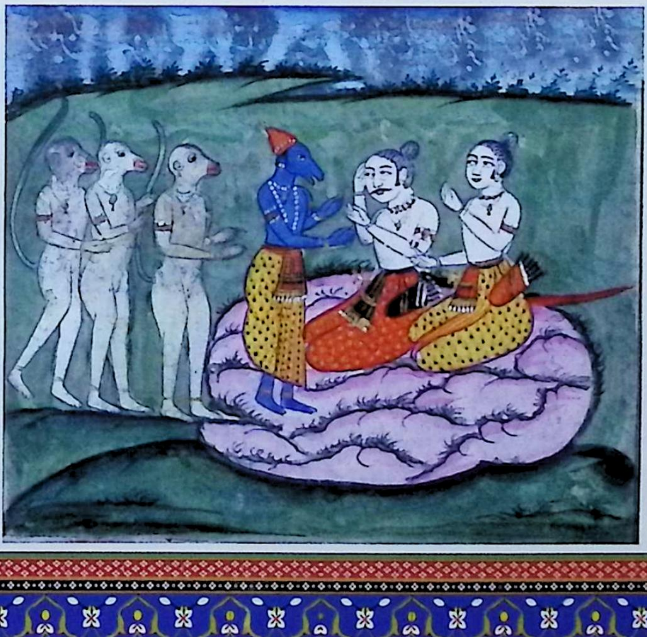

ترک اضطراب سکریو از گفتار رام خوشوقت شده گفت برهمن دیوتا شفقت کردند که مثل تو عاقل و هنرمند دوست من شده است اگر تو رفیق من میشوی راج غیر را هم بگیرم چه جای راج خود و من خود در برادران و دوستان بختیارم که آتش را شاهد نموده با تو دوستی کردم و من هم لایق توام هنرهایم را بهستکی دانی و از خود بظاهر نمودن سزاوار نیستم و همچو تو دانادلان بر دوستی قایم می باشند و ترک زر و ملک وغیره برای دوستی میکنند و محبت نمیگذارند و رامچندر هم در جواب اینچنین کلمات بر زبان آورد و بعده سکریو رام و لچهمن را بر زمین ایستاده دید هر طرف نظر افکنده ناگاه درخت شال بسیار کلان دید که گل کرده و بهرمر بر و آواز میکنند یکشاخ که بر گلهائی بسیار بود بشکست و آورده بر زمین گسترده رام را بر و نشاندند و همچنین هنومان لچهمن را بر شاخ شال نشاند بعد از ان سکریو از روی بهجت رامچندر را نمسکار کرده بشیرین بیانی گفت که من از مکان خود بدر شده آمده ام از خوف بالی درین رکهه موک میباشم و عورت مرا کشیده گرفته از ین غمگین ترم و بالی برادر منست با من عداوت کرده از خوف او همه دیهات میترسند بر من بیسر و سامان تو بشفقت سزاوار هستی رام که داننده دهرم و دوستدار دهرم بود تبسم نموده بسکریو گفت ثمرهٔ دوستی من خواهی دانست همین زمان او را که عورت تو گرفته است میکشم این تیرهای تیز من که از طلا آراسته مانند سنان اندر اند یا چون مار

सर्ग-७६

सुग्रीव की व्याकुलता

सुग्रीव ने राम की बातों से प्रसन्न होकर कहा कि "देवता ने मुझ पर दया की है कि आप जैसा बुद्धिमान व गुणी मेरा मित्र हो गया है। यदि आप मेरे मित्र बन जायें तो मैं दूसरों का राज्य भी ले लूं न कि अपना राज्य। और मैं स्वयं अपने भाइयों और मित्रों में भाग्यशाली हूँ कि अग्नि को साक्षी बनाकर आपसे मित्रता की। मैं भी आपके योग्य हूँ आप मेरे गुण धीरे-धीरे जान लेंगे। स्वयं बताना मुझे शोभा नहीं देता। आप जैसा महान हृदय वाले मित्रता पर दृढ़ रहते हैं और मित्रता के लिये धन सम्पत्ति देश तथा राज्य को छोड़ देते हैं परन्तु प्रेम को नहीं छोड़ते हैं। रामचन्द्र ने भी उत्तर में ऐसी ही बातें कहीं। उसके पश्चात् सुग्रीव ने राम और लक्ष्मण को भूमि पर खड़े देखा, चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, अचानक शाल का एक बहुत बड़ा वृक्ष देखा जिसमें फूल खिले हुए हैं और पक्षी इस पर चहचहा रहे हैं। उसने एक डाल जो बहुत नरम थी तोड़ी और भूमि पर लाकर बिछा दिया और राम को उस पर बैठाया। इसी प्रकार हनुमान ने लक्ष्मण को भी वृक्ष की डाल पर बिठाया। उसके पश्चात् सुग्रीव ने प्रसन्नता के साथ रामचन्द्र को नमस्कार करके मधुर वाणी में कहा- कि मैं अपने घर से निकलकर आया हूँ और बालि के भय से ऋष्यमूक में रहता हूँ। उसने मेरी पत्नी को मुझसे अलग करके ले लिया है, इससे मैं और अधिक दुखी हूँ कि बालि मेरा भाई है। उसने मुझसे शत्रुता कर रखी है और उसके भय से समस्त जीवधारी भयभीत है। मुझ असहाय पर आप दया करने के अधिकारी हैं। राम जो धर्म के ज्ञाता और रक्षक हैं मुस्कुराते हुए सुग्रीव से कहा "तुम मेरी मित्रता का फल जान लोगे मैं इसी समय उसको जिसने तुम्हारी पत्नी छीन ली है वध करूंगा। यह मेरे धारदार बाण जो स्वर्ण से सुसज्जित है इन्द्र के भाले के समान है अथवा क्रोधित सर्प की भाँति है

غضبناک بنابران توبالی را در جنک برزمین کشته افتاده بدان چنانکه کوه بشکند
ازین سخن سکریو خوشحال شده برام کفت درین خود شک نیست که از تیرهای تیز وقت
غصّهٔ تو لوک ها بسوزند مانند آفتاب در وقت آخر جوکها یعنی قیامت اما زور و طاقت او
از من بیکدل شده بشنو بعد ازان تدبیر کشتن بکن آن بالی از سمدر مغرب بسمدر مشرق
و از سمدر جنوب بسمدر شمال ما بین درین فرصت که آفتاب طلوع نکند کردیده می آید و در ماند
نمیشود و قلهای کوه ها را از زور بر داشته بر می اندازد و بسیار درختان کلانرا
که در جنکل بودند برای دانستن زور خود کنده است و دوندوبهه مهیش راچهس که بصورت
جاموس بود و زور بسیار داشت نزدیک کوه همالچل رفت و کفت تو با من جنک کن همالچل
در دل فکر کرده که از من این دوندوبهه کشته نمیشود این را کدام کس خواهد کشت بعد از تامل
بالی را در خاطر آورده با دوندوبهه کفت که مرا طاقت جنک تو نیست و آنکه با تو جنک خواهد کرد
و در شهر کشکندها بالی نام بوزنه ایست و بمده برای رفته مده یعنی درخت شیرینی ها و را بشکن
او در جنک غرور ترا دور خواهد نمود با او مقابله کرده هرکز نخواهی زیست او بجائے نشان واده
رسیده شور عظیم کرد بالی از زور او را بکشت و کشان کشان بر زمین انداخت اینک
استخوان او مانند کوه کیلاس افتاده بنظر می آید یا بالی این را تواند برداشت یا من
و سیومی هیچکس نتواند برداشت بدینسان زورآور است این را فهمیده چنان فکر کن

अतः तुम बालि को युद्ध में धरती पर पड़ा हुआ समझो और ऐसा समझो जैसे कि पर्वत टूटता है। इस बात से सुग्रीव ने प्रसन्न होकर राम से कहा ''स्वयं इसमें भी संदेह नहीं है कि आपके धारदार बाणों से आपके क्रोध के समय समस्त लोक जल जाये जैसे कि प्रलय के समय सूर्य। यद्यपि इसके बल और शक्ति के संबंध में मुझ एक हृदय हुए मित्र से सुनो। इसके पश्चात उसको मारने का जतन करो। वह बालि पश्चिम में समुद्र से पूरब के समुन्द्र में और उत्तर के समुन्द्र से दक्षिण के समुन्द्र में जबकि अभी सूर्य उदय नहीं हुआ करता है, घूमकर वापस आता है। लेकिन थकता नहीं और पहाड़ की चोटियों को अपनी शक्ति के बल से उठाकर फेंक देता है और उसने बहुत से बड़े-बड़े वृक्षों को जो वन में थे अपनी शक्ति दिखाने के लिये उखाड़ दिये हैं। और दुन्दुभि महिष राक्षस जो भैंस के रूप में था और बहुत शक्ति रखता था, वह हिमांचल पर्वत के निकट गया और कहा तुम मेरे साथ युद्ध करो। हिमांचल ने अपने हृदय में सोचा कि यह दुन्दुभि की तो मुझसे हत्या नहीं हो सकेगी। फिर उसकी कौन हत्या करेगा। उसके बाद उसने दिल में बालि का विचार करके दुन्दुभि से कहा कि मुझमें तुमसे लड़ने की क्षमता नहीं है ओर जो तुमसे युद्ध करेगा वह शहर कशनदहा में है वह बालि नाम का एक वानर है तुम उसके मीठे वृक्षों को तोड़ो वह युद्ध में तुम्हारा अभिमान तोड़ देगा। तुम उसके साथ मुकाबला करके कदापि नहीं रह सकोगे। उसने बतायी हुई जगह पर जाकर बहुत कोलाहल किया बालि ने अपनी शक्ति से उसे मार डाला और खींचते-खींचते उसको धरती पर डाल दिया। यह देखिये उनकी हड्डियाँ कैलाश पर्वत के समान पड़ी हुई दिखाई दे रही है। उन्हें या तो बालि उठा सकते हैं या मैं तीसरा और कोई उन्हें नहीं उठा सकता। वह ऐसा शक्तिशाली है इसे समझकर ऐसा कीजिये कि वह एक ही बाण से मार डाला जाये।

که بیک تیر کشته شود و اگر بیک تیر کشته نشد ما همه را خواهد کشت چون سگریو
چنین بر زبان راند لچهمن که نزدیک بود خنده نمود و گفت که ترا از کدام کار
سبکت
برگشتن او بیک تیر یقین شود سگریو گفت این هفت درخت تال را بالی و برید
اگر انهمه را بیک تیر سوراخ کند مرا یقین شود که رام تواند کشت درینجا صورت
رام و لچهمن که سگریو درخت شال را برکنده گسترده بر و نشانده و صورت

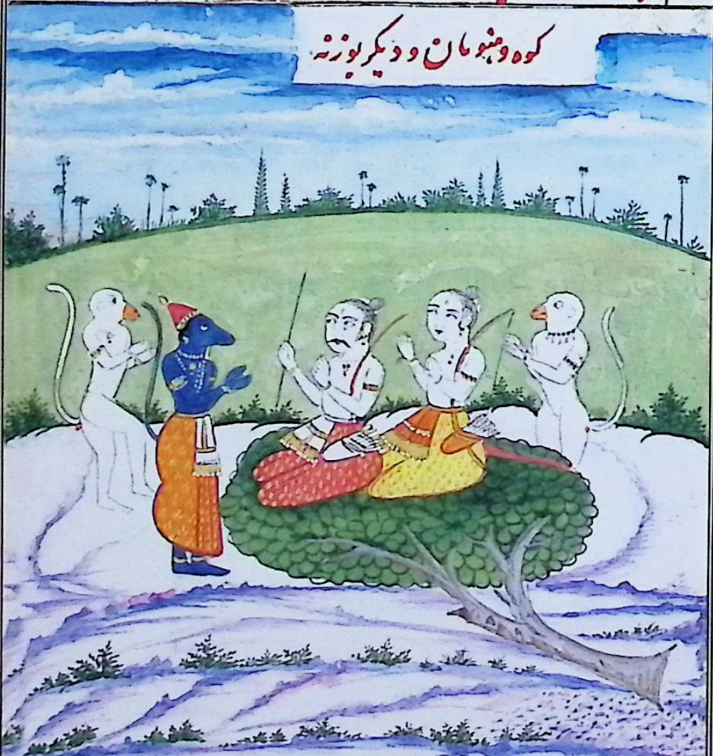

کوه و هنومان و دیگر بوزنه

यदि वह एक बाण से नहीं मारा गया तो फिर हम सबको मार डालेगा। सुग्रीव ने ऐसी बात कही। लक्ष्मण जो निकट थे उन्होंने हँसते हुए कहा कि तुमको किस प्रकार उसके एक बाण से मारे जाने का विश्वास होगा ?सुग्रीव ने कहा ताल के उन सात वृक्षों को बालि ने फाड़ दिया है यदि उन सब में एक बाण से छेद कर दे तो मुझे विश्वास हो जायेगा कि राम उसकी हत्या कर सकेंगे।

राम और लक्ष्मण का चित्र कि सुग्रीव ने शाल के वृक्ष को उखाड़कर और बिछाकर उस पर बैठाया है और पर्वत, हनुमान और दूसरे वानरों का चित्र।

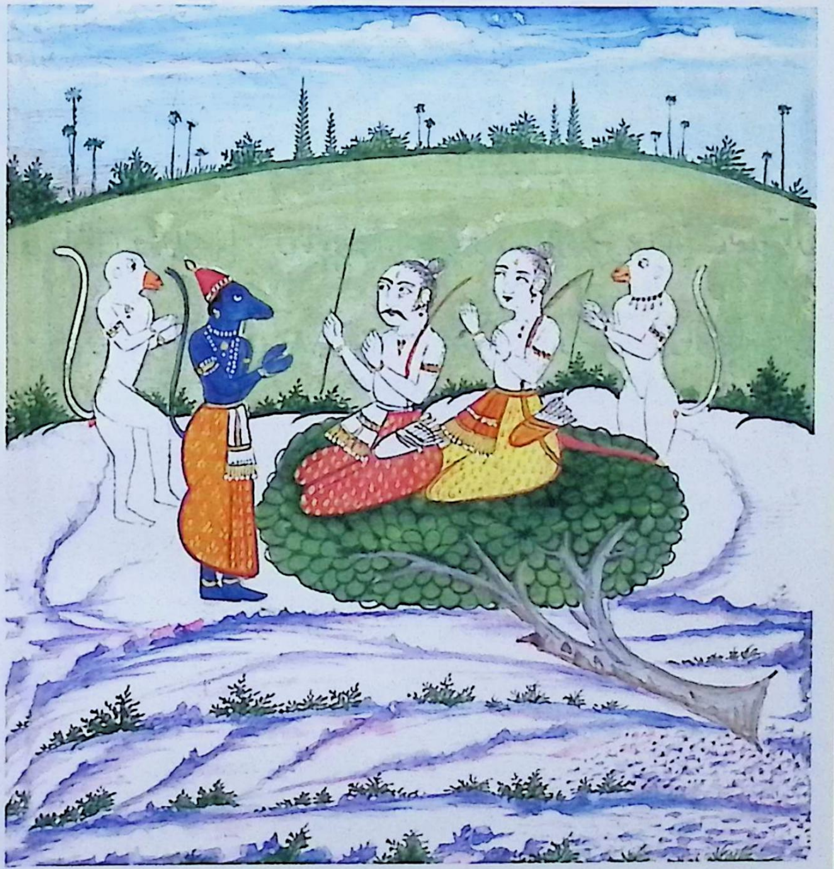

سرگ احوال سکریو بار دیگر سکریو گفت ای رام من غمزده ام و تو پناه غمزدگان
هستی از دستگیری تو مرا پاره طاقت شده است و از غم دل من مدام میسوزد و این بگفت
و از غم اشک برنجیت و چیزی نتوانست گفت و سرشکها را که مانند دریا روان شدند زور
نگاه داشت و گفت بالی مرا از راج بدر کرد و عورت مرا که از جان عزیزتر بود گرفت
دوستان من در بند او یند و برای کشتن من بسیار تدبیر کرده و بسیار بوزنه ها
فرستاده از خوف او در بنجا می باشم و این هنومان وغیره بوزنه رفیق من هستند
از غم زندگی میکنم و این بوزنه ها بهر جا همراه من اند اینقدر مجمل گفتم بتفصیل چه کار
اگر بالی برادر کلانم را بکشی از غم برهانی هر کس که کشنده او است بخشنده جان منست
اینقدر غم با تو گفتم دوست را دوست پناه است این را شنیده رام بسکریو گفت
برای آنچه که میان تو و برادر تو عداوت شده اولا بشنوم بعد از ان فهمیده تدبیر کار کنم خوب شود قبت
شده بگو چون کمان کشیدم و تیر زدم دشمن تو مرد سکریو خوشدل شده باعث عداوت
به بیابان آورده که بالی برادر کلانم پیش پدر بسیار عزیز و نزدیک من هم عزیز تر بود بعد پدر
منتریان او را راجه بوزنه ها کردند او راج میکرد و من مانند چاکران او بودم وقتی مایاوی نام
پسر کلان دوندوبهه راچهس را با او عداوت کلان شد هنگام شب تاریک هرگاه
مردم خفته بودند او بر دروازه کشکندها آمده شور کرده بالی را برای جنگ طلب کرد بالی آواز او

सर्ग-८०

सुग्रीव का वर्णन

सुग्रीव ने पुनः कहा : हे राम ! मैं दुखी हूँ और आप दुखी लोगों की शरण हैं आपके संरक्षण से मुझ में शक्ति आ गयी है। मेरा हृदय दुख से सदा जलता रहता है। उसने यह कहा और दुख के कारण रोने लगा तथा आगे कुछ नहीं बोल सका। उसने अपने आँसुओं को जो नदी के समान बह रहे थे बलपूर्वक रोका और कहा "बालि ने मुझको राज्य से बाहर कर दिया और मेरी पत्नी को जो प्राण से प्रिय थी ले लिया। मेरे मित्र उसकी कैद में हैं उसने मेरी हत्या की बहुत सी योजना कर डाली और बहुत से वानरों को भेज चुका है। उसके भय से मैं यहाँ रहता हूँ और यह हनुमान आदि वानर मेरे मित्र हैं मैं दुख के साथ जी रहा हूँ। यह वानर हर स्थान पर मेरे साथ रहते हैं, मैंने यह सब चर्चा स्वरूप कहा विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं। यदि आप मेरे बड़े भाई बालि की हत्या कर देंगे तो मुझे दुख से छुटकारा देंगे। जो व्यक्ति भी उसकी हत्या करने वाला है वह मुझे नया जीवन देने वाला है। मैंने अपना दुख आप से कहा क्योंकि मित्र, मित्र के लिये शरण होता है।" यह सुनकर राम ने सुग्रीव से कहा जिस बात के लिये तुम्हारे और तुम्हारे भाई के मध्य शत्रुता हुई है। पहले मैं उसे सुनूंगा। उसके पश्चात् समझकर कार्य करने की विधि करूंगा तुम प्रसन्नतापूर्वक कहो मैं जैसे ही धनुष खीचूंगा और बाण मारूंगा तुम्हारा शत्रु मर जायेगा। सुग्रीव ने प्रसन्न होकर शत्रुता का कारण बताया कि बालि जो मेरा बड़ा भाई है मेरे पिता को बहुत प्रिय था और मुझे भी बहुत अधिक प्रिय था। पिता के बाद मंत्रियों ने उसे वानरों का राजा बना दिया। वह राज्य करता था और मैं उसके सेवकों की भांति रहता था एक बार दोनदिया के बड़े पुत्र मायावी राक्षस से उसको बहुत शत्रुता हो गयी। एक काली रात जबकि सब लोग सो रहे थे वह किष्किन्धा के द्वार पर आकर कोलाहल करने लगा और बालि को युद्ध के लिये ललकारा

شنیده غضبناک برای کشتن او بدر آمد من و عورتِ او و غیره برجنید منع کردند بخاطر
نیاورده عقب او برفت من از اخلاص و مهر برادری پس او رفتم آن راجهس بالی را
دیده بگریخت بالی عقب او روان شد درین اثنا مهتاب برآمد و اطراف روشن شد
آن راجهس در سوراخ زمین که از کاه روپوش بود اندرون رفت من و بالی هر دو
بر دروازه ایستاده ماندیم بالی بمن گفت تو بر دروازه سوراخ ایستاده باش
تا من در سوراخ رفته راجهس را کشته برآیم من قبول کردم او در سوراخ درآمد شد
و او را درانجا یکسال بگذشت و من بر دروازه سوراخ گذراندم چو بالی بر نیامد غمگین شدم
و نوع دیگر فهمیدم پس از مدت مدید از سوراخ پیه و خون برآمد من غمناک تر گشتم
و آواز راجهسان هم شنیدم چنانکه در جنگ شور بسیار میکنند دانستم که برادر کشته شد
غمناک شدم او دک کریا را او کردم یعنی بنام او آب دادم و در دروازه بند کردم
و بکشکندها آمدم آن منتریان او بمن پناه جستند و مرا راج دادند من بعدالت
و انصاف راج میکردم ناگاه بالی دشمن خود را کشته در رسید مرا راجه دیده از غصه
چشم سرخ نمود و منتریان را قید فرمود و در قید کردن مرا دران ایام طاقت انتقام گرفتگی بود
اما در عقل من نیامد که برادر کلان را بکشم من او را از روی اعزاز نمسکار کردم او از دل
هیچ سخن با من نگفت او را از خود در رنجیدگی و غصه دانسته خواستم تا خشنود و راضی

کردان

बालि उसकी आवाज सुनकर क्रोधित होकर उसका वध करने के लिये बाहर आया। मैंने और उसकी पत्नी ने उसे बहुत मना किया लेकिन उसने नहीं सुना, उसके पीछे चला गया मैं भी सद्भावना तथा भाई के प्रेम में उसके पीछे गया। वह राक्षस बालि को देखकर भाग गया। इसी बीच चन्द्रमा निकल आया और चारों ओर प्रकाश हो गया वह राक्षस पृथ्वी के छेद में जो घास से ढंका हुआ था अन्दर चला गया। मैं और बालि दोनों द्वार पर खड़े रहे बालि ने मुझसे कहा तुम छिद्र के द्वार पर खड़े रहो ताकि मैं छिद्र में जाकर राक्षस का वध करके वापस आऊँ, मैंने स्वीकार किया वह छिद्र के अंदर चला गया। उसको एक वर्ष बीत गया और मैंने छिद्र के द्वार पर यह समय व्यतीत किया। जब बालि बाहर नहीं निकला तो मैं दुखी हुआ और दूसरी बात समझी एक लम्बे समय के पश्चात् छिद्र से रक्त और पीप निकला मैं और अधिक दुखी हो गया और राक्षसों की आवाजें भी सुनीं जैसा कि युद्ध में बहुत अधिक शोर करते हैं। मैंने जाना कि भाई मारा गया। मैं दुखी हुआ और मैंने उसके नाम पर जल भी दे दिया और द्वार बंद कर दिया। वह जब किष्किन्धा आया और मुझको राजा बना देखकर क्रोध से आंखे लाल कर लीं और मंत्रियों को बंदी कर लिया। मुझे इन दिनों में प्रतिशोध लेने की शक्ति थी परन्तु मेरी बुद्धि में यह बात नहीं आती थी कि मैं अपने बड़े भाई का वध करूँ मैंने उसको उसके सम्मान के लिये नमस्कार किया। उसने शत्रुता के कारण मुझसे कोई बात नहीं की उसको मैंने अपने से दुखी और क्रोध में देखकर चाहा कि उसे प्रसन्न और सहमत कर लूँ। मैंने कहा कि

کردانم گفتم من ترا دیدم که بعافیت رسیدی و دشمن را کشتی ما غریبان را پناه کرد
و خداوند و والی هستی و اینک چیز که بسیار شلا کا دارد و بال چمن یعنی باد
موئین که دستور شاهان هست همه را بگیر و تو راجه ماهی چنانکه پیشتر بودی و این تاج را
بطریق امانت نگاهداشتم بر من غصه مکن و من دست بسته سر فرود آورده اینقدر
میخواهم که گفتم و منتریان و اقربا مرا در غیبت تو زور راج دادند بالی گفت مرا بخاطر نیاورده
بد گفت و دهکار نمود و رعایا و منتریان و غیره را طلبداشته گفت مایاوی اسر هرگاه
بشب مرا برای جنگ طلبید من آواز او شنیده از خانه بدر آمدم عقب من این برادر من
که سکریو باشد بر آمد او مرا دیده از خوف بگریخت و بسوراخ خزید و من و سکریو
عقب او رفتیم من با این برادر گفتم تا که این را نکشم نتوانم بکشکندها رفت
و تو بر دروازه سوراخ باش تا که من بر آیم چنانچه من داخل سوراخ شدم و در انجا
در جست و جوی آن مایاوی اسر مرا یکسال بگذشت هرگاه او را یافتم بکشتم
و پسروان و برادران او را نیز کشتم چنانچه آن سوراخ از خون پر شد من چون بیرون
روان شدم دروازه سوراخ بسته یافتم من بار بار آواز دادم که سکریو سکریو
چون مرا جواب نرسید بسیار غمگین شدم این سکریو مرا از سنگ در زیر زمین بند نمود
خود راج گرفت و بشنگ مهر برادری بخاطر نیاورد بالی اینچنین گفته مرا با یک پارچه

मैंने देखा कि आप सकुशल पहुँच गये और शत्रु को मौत के घाट उतार दिया। हम दीन दुखियों के लिए आप ही भगवान शासक हैं यह राजसी छत्र जो बहुत से शलाका रखता है और तरकश जो राजाओं की परम्परा है, आप ले लें, और आप ही हमारे राजा हैं जैसा कि पहले थे। मैंने आपका यह राज्य धरोहर के रूप में सुरक्षित रखा है मुझ पर क्रोधित न होइए। मैं शीश झुकाकर करबद्ध केवल इतना ही चाहता हूँ जो कि मैंने कहा मंत्रियों और निकट सम्बन्धियों ने आपकी अनुपस्थिति में राज्य दे दिया। बालि ने मेरी बात न मानते हुए मुझे बुरा भला कहा और मुझे तिरस्कृत किया तथा मंत्रियों आदि को बुलाकर कहा; मायावी ने जिस समय रात में मुझे युद्ध के लिये ललकारा तो मैं उसकी आवाज सुनकर घर से बाहर निकला मेरे बाद यह मेरा भाई सुग्रीव भी निकला। वह मुझे देखकर भय के कारण भाग गया और छिद्र में घुस गया। मैं और सुग्रीव उसके पीछे गये मैंने इस भाई से कहा कि जब तक मैं उसकी हत्या न कर लूँ तब तक किष्किन्धा नहीं जा सकता। तुम द्वार पर रहो यहाँ तक कि मैं बाहर आ जाऊँ। अतः मैं छिद्र में प्रविष्ट हो गया वहाँ उस मायावी की खोज में मुझे एक वर्ष बीत गया। जिस समय मैंने उसे पाया मार डाला और उसके भाईयों और गुरुओं की भी हत्या कर दी। अतः वह छिद्र खून से भर गया मैं जब बाहर निकला तो छिद्र का द्वार बन्द पाया मैंने बार-बार आवाज दी कि सुग्रीव सुग्रीव जब मुझे उत्तर नहीं मिला तो बहुत दुखी हुआ। इस सुग्रीव ने मुझे धरती के नीचे पत्थर से बन्द करके स्वयं राज्य ले लिया था। भाई के प्रेम का तनिक भी ध्यान नहीं किया।

بدر کرد و عورت مرا متصرف شد از خوف او بر تمام روی زمین گردیدم آخر درین کوه
اقامت گزیدم که بالی اینجا نتواند آمد باعث عداوت این بود و اینطور مرا غم بسیار است ای
تو مهربانی کن و توجه فرما سکریو چنان بر زبان راند رامچندر تبسم نموده گفت این تیرها
تیز من که چون آفتاب اند بالی را خواهند کشت تا که گیرنده عورت ترا ندیده ام زندگی او است
و من از حال خود میدانم که در دریای غم غرق هستی ترا خواهم برآورد از سخن رام سکریو خوشوقت
گشته گفت آنچه میگوئی همین است تو از غصه میتوانی که اندر وغیره دیوتا بسوزی چنانکه در تمام
لوک آفتاب روشن است و چنانچه در همه بهایم شیر است همچنان تو در مردمان هستی درینجا صورت

رام و لچهمن نشسته و سکریو و هنومان دست بسته استاده سخن میکنند و دیگر بوزنه

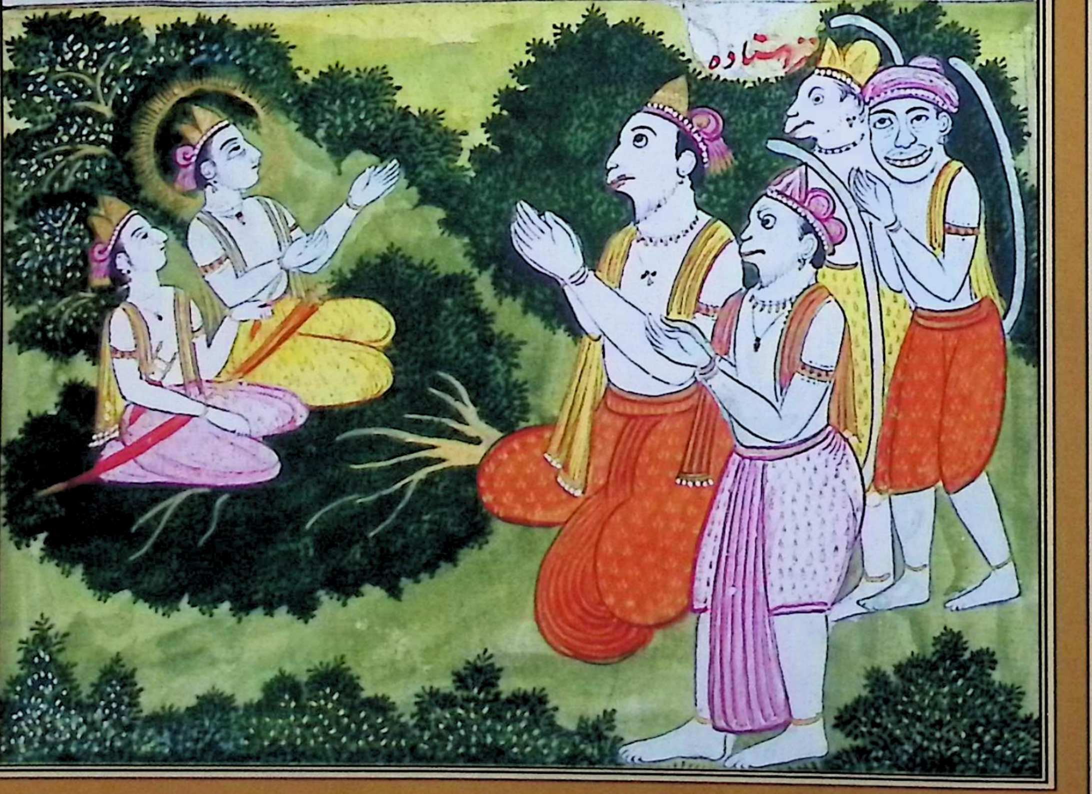

बालि ने यह कहकर मुझे एक वस्त्र में देश से निकाल दिया और मेरी पत्नी पर अधिकार कर लिया। उसके भय से मैं सम्पूर्ण संसार में मारा-मारा फिरा। अन्त में इस ऋष्यमूक में रहने लगा कि बालि यहाँ नहीं आ सकता। शत्रुता का कारण यह था। इस कारण मुझे बहुत दुख है। आप दया कीजिये और ध्यान दीजिये।

सुग्रीव ने यह बात कही तो रामचन्द्र ने मुस्कुराते हुए कहा मेरी यह तेज तलवार जो सूर्य के समान है बालि की हत्या कर डालेगी। जब तक मैं तुम्हारी पत्नी को लेने वाले को न देखूँ तब ही तक वह जीवित है। मैं अपनी स्थिति स्वयं जानता हूँ क्योंकि दुख के सागर में डूबा हुआ हूँ तुझे मैं निकालूँगा। राम की बात से प्रसन्न होकर सुग्रीव ने कहा; जो कुछ आप कह रहे हैं ऐसा ही है। आप क्रोध से इन्द्र आदि देवता को जला सकते हैं। जैसा कि समस्त लोक में सूर्य प्रकाशमान है और जैसा कि समस्त पशुओं में शेर है उसी प्रकार आप मनुष्यों में है।

राम लक्ष्मण का चित्र जो बैठे हैं और सुग्रीव और हनुमान करबद्ध खड़े होकर वार्ता कर रहे हैं और दूसरे वानरों का चित्र।

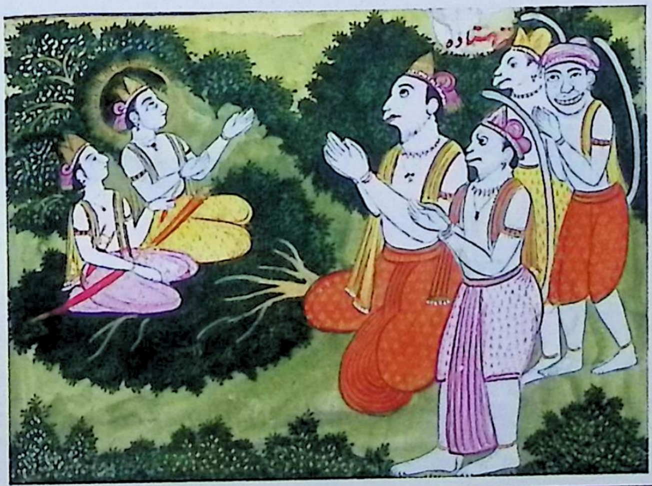

سرگ مذکور جنگ بالی با دوندبهه و جنگ سگریو گفته رام را شنیده بار دیگر از اخلاص
تمام برام گفت دوندبهه نام مهااسر بود وده زور هزار فیل داشت چون بر یافته بود بسیار
متکبر بود او پیش سمدر که خداوند جمیع دریاهاست رفته گفت با من جنگ بکن سمدر
که دهرماتمانست بآواز بلند گفت من طاقت جنگ با تو ندارم و بشنو من نشان میدهم
کسیکه با تو جنگ خواهد کرد آن سردار جمیع کوهاست و خسر مهادیو است هماچل نام دارد
انجا برو دوندبهه دانست که سمدر از من ترسید بر هماچل رفته فیلان را بر داشته
برو زد و شور کرد هماچل خود را بصورت خوش مانند ماهتاب نموده بر قلّه خود برآمد
و گفت تو بکشتن من سزاوار نیستی زیرا که من پناه تپسویان یعنی زاهدان هستم
گفته او را شنیده دوندبهه شور کرده گفت اگر تو جنگ نتوانی کرد و از من خوف خوردی
پس کسیکه با من جنگ تواند کرد نشان ده هماچل گفت بالی نام پسر اندر بوزنه است
و در شهر کشکندها میباشد او با تو جنگ خواهد کرد چنانچه اندر با نموچ را پیشش او زد و
برو گفته هماچل را شنیده دوندبهه در کشکندها رفت و خود بصورت گاومیش جنگلی
با شاخهای تیز نمود که همه خوف افزود و دروازه کشکندها شکستن گرفت و مانند نقاره
از شور غرید و درختان کردرا از شاخ های خود شکستن آغاز کرد بالی که در خانه خود با آسایش
نشسته بود آواز او را شنیده با تارا عورت و غیره بیرون آمد و با دوندبهه گفت

सर्ग-८०

युद्ध का वर्णन

सुग्रीव ने राम की वार्ता सुनकर पुनः पूरे सद्भाव से राम से कहा कि ''दुन्दुभि नामक एक महासुर था और वह दस हजार हाथियों की शक्ति रखता था। क्योंकि उसने वर पाया था इसलिये बहुत घमण्ड करता था। उसने समुद्र के पास जाकर जो सारी नदियों का राजा है कहा कि मुझसे युद्ध करो समुन्द्र जो कि धर्मात्मा है उसने तीव्र आवाज से कहा कि तुम्हारे साथ युद्ध करने की शक्ति नहीं रखता और सुनो मैं उसका पता बताता हूँ जो तुमसे युद्ध करेगा वह समस्त पर्वतों का सरदार है तथा महादेव का स्वसुर है उसका नाम हिमवान् है, वहाँ चले जाओ। दुन्दुभि ने जाना कि समुद्र मुझसे डर गया। हिमांचल पर जाकर उसने हाथियों को उठाकर दे मारा और शोर मचाया। हिमांचल अपने को सूर्य की भांति सुन्दर बनाकर अपनी चोटी पर प्रकट हुआ और कहा तुम मुझे मारने के योग्य नहीं हो क्योंकि मैं तपस्या करने वालों का शरण स्थल हूँ। उसकी बात सुनकर दुन्दुभि ने शोर मचाते हुए कहा यदि तुम युद्ध नहीं कर सकते तो मुझसे डर गये अतः किसी ऐसे का नाम बताओ जो मुझसे युद्ध कर सकता हो। हिमांचल ने कहा; बालि नामी इन्द्र का पुत्र वानर है। किष्किंधा शहर में रहता है। वह तुम्हारे साथ युद्ध करेगा। जैसे इन्द्र ने नमुचि राक्षस के साथ, उसके सामने ले गया। हिमाचल की बात सुनकर दुन्दुभि किष्किंधा गया और सुन्दर जंगली भैसें के रूप में उसने अपने सींग इतने तेज कर लिये कि सब में भय व्याप्त हो गया और उसने किष्किंधा का द्वार तोड़ना आरंभ किया और नक्कारे के समान गुर्राया और आस पास के वृक्षों को अपनी सींग से तोड़ने लगा। बालि जो अपने घर में आराम से बैठा हुआ था उसकी आवाज सुनकर तारा अपनी पत्नी आदि के साथ बाहर आया और दुन्दुभि से कहा

بالي والي بوزنه ما منم جراد رواده شهبر را بريشكي ميدانم كه توازدست من نخوا
زيست دوند و ببه ازغصه كفت اي بوزنه تو حضور زنان زور خود ظاهر مكن با من
جنك كن تا زور مرا بداني يا من درغصه ام مرا خوشوقت كرده دوستي كن
كه تو در كام هوك يعني در آرزوي شهوت دل داده وكفته اند هركه مست و خفته
وازاقربا دور مانده را كشد آن بزرك شته باشد او هرم بود و بتخصيص همچو توكم زور را
كفت او را شنيده بالي تبسم نموده كفت تا بستگي من تارا وغيره عورات را دور كذاشتم
مرا مست دانسته شور مكن واكر از من ترسيده پس باز كرد اكر زندكاني ميخواهي والا
اينك ضرب من ترا بجان ميكند اين بكفت واز غصه مالا ني كه اندر داده بود
از كردن برآورده بجنك مستعد شد و بر دو شاخ سر دوند و ببه را بزور شكستن كرفت
واو شور بسيار كرد واز ميان سر و جاهاي ديكر او خون بيرون شد و بيجان شده
بر زمين افتاد لاشه او را برداشته بدستان خود سنجيده بر كردانيده بضرب
يكپا تا بمسافت يكجوجن يعني چهار كروه انداخت از زخمهاي آن مرده قطره خون
كه ميچكيد از وزيدن باد در آشرم متنك ركهه افتاد وشاپ داد كه هركه اين را انداخته بست
در بيجادر آيد واكر خوا بد آمد في الفور خواهد مرد بالي دست بسته هرچند ركهه را خشنود نمود
اما او مهربان نشد لهذا از خوف شاپ درين ركهه هو كه در نمي آيد انمقدمه را من دانسته

मैं बालि वानरों का शासक हूँ। तुम क्यों शहर का द्वार तोड़ रहे हो ?मैं जानता हूँ कि तुम मेरे हाथ से नहीं बचोगे। दुन्दुभि ने क्रोध से कहा; ऐ वानर! तुम स्त्रियों के सामने अपना बल प्रकट मत करो। मेरे साथ युद्ध करो ताकि तुम्हें मेरी शक्ति का आभास हो। या मैं क्रोधित हूँ मुझे प्रसन्न करके मित्रता करो ताकि तुम्हें काम, भोग अर्थात् हृदय की वासना की इच्छा दे दी जाये। लोगों ने कहा है कि जो व्यक्ति किसी मस्त और सोए हुए सम्बन्धियों से दूर पड़े हुए को मारता है। तो वह बलपूर्वक मारा जाता है वह अधर्मी होता है और विशेष रूप से तुम जैसे निर्बल को। उसकी वार्ता सुनकर बालि ने मुस्कुराते हुए धीरे से कहा कि मैंने तारा आदि स्त्रियों को दूर छोड़ दिया है। मुझको मस्त समझकर शोर मत करो और यदि मुझसे डर गये हो तो फिर वापस चले जाओ। यदि जीवन चाहते हो तो, अन्यथा यह मेरा छोटा सा वार तुमको निर्जीव कर देगा। यह कहते हुए क्रोध के कारण वह माला जो इन्द्र ने दी थी गर्दन से अलग करते हुए युद्ध के लिए तैयार हो गया और अपनी दोनों सींगों के बल से दुन्दुभि का सर तोड़ने लगा। उसने बहुत शोर मचाया और उसके सिर और शरीर के अन्य भागों से बहुत रक्त निकला और वह निर्जीव होकर धरती पर गिर पड़ा। उसके शव को उठाकर और हाथों में तोलते हुए फेंककर एक पाँव की ठोकर से चार कोस की दूरी पर फेंक दिया। उस शव के घाव से जो रक्त की बूँदे टपक रही थीं वह हवा के चलने से मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँचे। उसने शाप दिया कि जिसने उसे फेंका है वह यहाँ आयेगा और वह जैसे ही आयेगा तुरन्त मर जायेगा। बालि ने हर संभव करबद्ध ऋषि को प्रसन्न करने का प्रयास किया लेकिन वह नहीं माना अतः वह शाप के भय से इस ऋष्यमूक में नहीं आता है इस बात को जानते हुए

در همکان بامنتریان خود میباشم واینک هفت درخت تال اندکه بالی دریده است
اینقدر قوت او بیان کردم تو چگونه بالی توانی کشت اگر این تالها را بیک تیر
سوراخ کنی البته بکشتی رامچندر این را شنیده استخوان کالبد دوندوبهه را از انگشت
پای سنجیده بطریق بازیچه قریب مسافت ده جوجن یعنی چهل کروه برانداخت بار دیگر
سگریو گفت مرا شبه شده است واز اخلاص میگویم این استخوان دوندوبهه دران
زمان که بالی انداخته بود از گوشت پر واز خون تر بود و حالا تهی از گوشت و خشک است
زیادتی قوت تو واو درین کار نتوان دانست اگر درین تالها سوراخ کنی ظاهر از دور معلوم
شود و دیگر این هم بشنو که قبل ازین بالی در صحرا میگشت ناگاه بارهای تال بچه وکلان
دیده هفت بارانان برای خوردن خود برچید درین اثنا وقت سندهیا شد در سوراخی
نهاد و بسمت سمدر جهت سندهیا مشغول شد فراغت کرده آنجا که بارها تال نهاده بود آمد
آنها را شکسته و نیم خورده یافت و آنها را مار کلان شکسته و خورده بود بالی شاپ
داد که هفت تال ابچه خواهند یعنی بار اینها را کسی نخواهد خورد آن مار این شاپ شنیده
گفت تو یکبار یک ناحق از غصه شاپ داده این هفت تال که مکان بودن منست و هر که
اینها را بیک تیر سوراخ کند ترا خواهد کشت این را شنیده برادر من بشکستن آنها آمد و همه احوال
گذشته خود بمن ظاهر نمود تو اگر این تالها را سوراخ کنی از فتح خود منسلی شوم

मैं इस भवन में अपने मंत्रियों के साथ रहता हूँ। यह ताल के वह सात वृक्ष हैं जिन्हें बालि ने फाड़ दिया है। मैंने उसकी इतनी शक्ति बताई। आप बालि को किस प्रकार मार सकते हैं ?यदि आप इन तालों में एक तीर से छेद कर दें तो निःसन्देह आप उसे मार सकते हैं। रामचन्द्र ने यह सुनकर दुन्दुभि के शरीर की हड्डियों को पांव के अंगूठे से उठाकर खेल स्वरूप चालीस करोड़ की दूरी पर फेंक दिया। पुनः सुग्रीव ने कहा मुझे सन्देह हो गया है और सद्भाव से कहता हूँ कि दुन्दुभि की यह हड्डियां उस समय में जबकि बालि ने उन्हें फेंका था मांस सहित और रक्त से भरी थीं इस समय यह मांस रहित और सूखी हैं। आपकी या उसकी शक्ति की अधिकता इस कार्य से नहीं जानी जा सकती। यदि इन तालों में छेद कर दें तो आपकी शक्ति प्रतीत होगी दूसरे यह भी सुन लीजिये कि इससे पहले बालि वन में घूमा करता था अचानक ताल के कठोर और बड़े-बड़े देखकर उनमें से सात फल अपने खाने के लिए चयन कर लिये। इसी मध्य संध्या हो गयी उनको एक छिद्र में रख दिया और समुन्द्र की ओर संध्या पूजा में व्यस्त हो गया। उससे निवृत्त होकर जहाँ उसने फल रखे थे आया उनको टूटा हुआ और आधा खाया हुआ देखा, उन्हें एक बड़े सर्प ने तोड़ा और खाया था। बालि ने शाप दिया कि सात ताल का फल कोई नहीं खायेगा उस सर्प ने यह शाप सुनकर कहा तुमने क्रोध में बेकार अचानक शाप दे दिया। यह सात ताल जो मेरे रहने का स्थान है जो भी उनमें एक बाण से छेद करेगा वह तुम्हारा वध कर देगा। यह सुनकर मेरा भाई किष्किन्धा आया और अपने ऊपर बीते हुए समस्त घटना मुझे बताई यदि आप इन तालों में छेद कर दे तो मैं आपकी विजय से प्रसन्न हूँगा।

رام این را شنیده کمان را کشیده تیری بسمت تالها روان کرد چنانچه هفت تال را
سوراخ کرده و کوه رکهه موکهه را سوراخ کرده بر ساتل که زمین هفتم است در رسید
و از انجا لباس منس کرده باز در دست رام آمد سکریو انحالت را دید متحیر شد
و دست بسته سرا بر زمین نهاده رام را نمسکار کرد و گفت زور و استر تو بسیار
کلانند و در زور نظیر اندر و برن هستی که تیر تو هفت تال و کوه و زمین را سوراخ
نمود حالا شبه و غم من رفت برای خاطر من همین زمان بالی را بکش و تو در جنگ
از عهده اندر و غیره دیوتا برآیی چه جای بالی بعد از ان رام باستصواب لچهمن
با او گفت من هم بکشکندها میروم و تو پیشتر رفته بالی را بطلب چنانچه همه بکشکندها
که آنجا بالی بود روان شدند در اثنا راه رام بسکریو گفت مرا تا جان در بدن است
مقصود ترا حاصل باید کرد زیرا که تو در غم مهاجرت عورت همچو من هستی و غریبانه
بمن پناه جسته القصه رام و لچهمن و سکریو و غیره رسیدند و در اختفاء اشجار اقامت
گزیدند رام بسکریو گفت تو ترس را گذاشته بر دروازه کوها یعنی غار کشکندها
ایستاده باش و بالی را بطلب برگاه او بیاید من او را از تیر خواهم کشت چون رام
چنین گفت ها ها انچنین آواز بشور از آسمان برآمد انحالت را عجایب تر دانسته
سکریو بشور بالی را طلب داشت بالی این آواز را شنیده از غصه بیرون آمد و با یکدیگر

کشتی و جنگ

राम ने यह सुनकर धनुष खींचकर एक बाण तालों की ओर छोड़ा वह बाण सात तालों में छेद करता हुआ और ऋष्यमूक के पर्वत में छेद करता हुआ रसातल में, जो सातवी पृथ्वी के नीचे है, पहुँचा और वहाँ से हंस का वस्त्र पहने हुए पुनः राम के हाथ में आ गया ।

सुग्रीव यह स्थिति देखकर आश्चर्यचकित रह गया। और सम्मान से शीष पृथ्वी पर रखकर राम को नमस्कार किया और कहा आपके बाण ने सातों ताल और धरती में छेद कर दिया। अब मेरी शंका और दुख समाप्त हो गया। मेरे लिये आप बालि को इसी समय मार डालिये आप युद्ध में इन्द्र आदि देवताओं से भी विजयी होंगे। इस बालि का क्या महत्व रह जाता है इसके पश्चात् राम ने लक्ष्मण से परामर्श से उससे कहा मैं किष्किन्धा जा रहा हूँ तुम मुझसे पहले चलो। अतः सब लोग किष्किन्धा के लिए प्रस्थान किये जहाँ कि बालि था। मार्ग में राम ने सुग्रीव से कहा; मैं जब तक जीवित हूँ तुम्हारा उद्देश्य अवश्य पूरा करूँगा। क्योंकि अपनी पत्नी के दुख में तुम भी मेरे समान दुखी हो और दीनता में तुमने मेरी शरण ली है। निष्कर्ष यह कि राम लक्ष्मण और सुग्रीव आदि वहाँ पहुँचे और वृक्षों की छाया में विश्राम किया। राम ने सुग्रीव से कहा "तुम भय को अलग करके शीघ्रता से किष्किन्धा के पर्वतों पर जाकर खड़े हो जाओ और बालि को बुलाओ जैसे ही वह आयेगा मैं बाण से उसे मृत्युलोक पहुँचा दूँगा।" राम ने जब यह कहा तो ऐसी ध्वनि का कोलाहल आकाश से आया इस स्थिति को आश्चर्यजनक समझते हुए सुग्रीव ने तीव्र वाणी से बालि को बुलाया। बालि यह पुकार सुनकर क्रोध के साथ बाहर निकला और एक दूसरे के साथ कुश्ती और युद्ध होने लगा।

کشتی و جنگ بسیار شد چنانچه بر فلک ما بین عطارد و مریخ حرب شود طپانچه ها و مشت ها
زدند و رام کمان را گرفته آن هر دو را نظر میکرد اما هر دو را یک شبیه دیده امتیاز نمی نمود
که بالی کدام ست و سگریو کدام بنابران تیر را رها نکرد درین اثنا سگریو شکسته وجود
از پیش بالی بسمت کوه رکهه موک گریخت بخون آلوده و سست شده از طپش بصحرا آمد
رامچندر و لچهمن و هنومان هم درانجا باو برخوردند سگریو آنها را دیده برام گفت
مرا گفتی که بطلب و تماشا معرکه من دیدی و دشمن مرا قریب بهلاک نمود حالا تو چه
خواهی کرد پس صریح مرا باید گفت که بالی را نمیکشم و با مرا طاقت کشتن نیست رام
گفت بشنو بدینواسطه تیر نزدم از لباس و پیرایه و صورت و قد تو و بالی یکسان
بودند و از آواز و گفتار و قوت و غیره تمیز نمیکردم لهذا تیر زدن تجویز نکردم
درین صورت تو بالی را بطلب و از یک تیر کشته و بیجان بر زمین افتاده ببین
و برائی امتیاز یک علامت خود را بکن از ان نشان ترا بدانم بعد از ان
بلچهمن گفت که مالا گج پکهپ که نام گل است در گردن سگریو
انداز چنانچه لچهمن از کوه گج پکهپ آورده و مالا نموده در گلوی سگریو
انداخت و از مالا زیب آور شده با رام بنزدیک کشکندها روان شد

درینجا صورت رام و لچهمن بطرف بالا بلباس سابق و دستور و زیر درختان

जैसे कि आकाश पर बुध और मंगल के मध्य युद्ध होता है, तमाचे और मुक्के मारे। राम धनुष बाण लेकर उन दोनों को देख रहे थे लेकिन दोनों को एक ही जैसा देखकर भेद नहीं पा रहे थे कि बालि कौन है और सुग्रीव कौन ?इस कारण बाण नहीं चलाया। इसी मध्य सुग्रीव पराजित होकर बाली के सामने से ऋष्यमूक पर्वत की ओर भागा। रक्त रंजित और गतिहीन होकर क्रोध के कारण वन में प्रविष्ट हुआ। रामचन्द्र, लक्ष्मण और हनुमान जी भी वहाँ पहुँचे। सुग्रीव ने उनको देखकर राम से कहा; आपने मुझसे कहा था कि युद्ध के लिए ललकारो और आपने मेरा युद्ध देख लिया। शत्रु ने मुझे मरणासन के निकट कर दिया अब आप क्या करोगे ?अतः मुझे साफ-साफ बता देना चाहिए कि मैं बालि की हत्या नहीं कर सकता और मेरे भीतर हत्या करने की शक्ति भी नहीं है। राम ने कहा ''सुनो मैंने इस कारण बाण नहीं चलाया कि वस्त्र, रूप और वेशभूषा से तुम और बालि समान थे और मैं आवाज़, वार्ता और शक्ति आदि के द्वारा तुम दोनों में भेद नहीं कर सका। अतः बाण चलाने का प्रयास नहीं किया। तुम इस समय बालि को युद्ध के लिए ललकारो और उसे एक ही बाण से मृत्यु और धरती पर पड़ा हुआ देखो और भिन्नता के लिए अपना एक चिह्न बना लो। उसी चिह्न से मैं तुमको पहचानूँगा। उसके बाद उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि गजपुष्पी की माला जो एक पुष्प का नाम है सुग्रीव के गले में डाल दो। अतः लक्ष्मण ने पर्वत से गजपुष्पी पुष्प लाकर और उसकी माला बनाकर सुग्रीव के गले में डाल दिया। और वह माला पहनकर राम सुग्रीव के साथ किष्किन्धा के निकटतम स्थान के लिए चल दिया।

کمان بانبوه ایستاده وگرد و پیش چهار بوزنه ایستاده معه هنومان
دروازه
و صورت بالی و سگریو هر دو مشت برداشته بجنگ درپیوسته و صورت
کشکندها کشیده

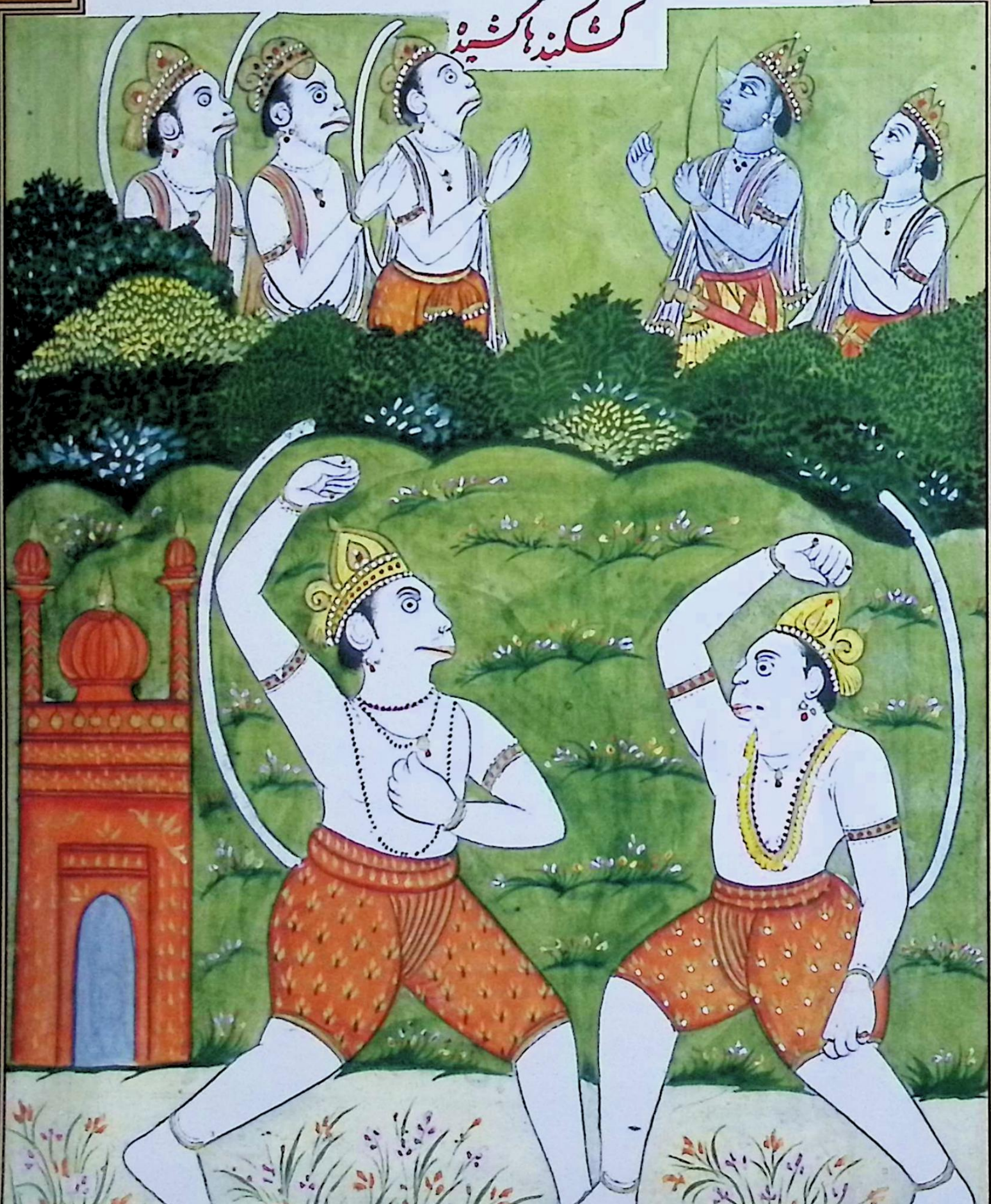

ऊपर की ओर राम और लक्ष्मण का चित्र यथावत पूर्व वस्त्रों में और बड़े वृक्षों के नीचे जनसमूह में बैठे हुए हैं और आस-पास चार वानर हनुमान सहित खड़े हैं और बालि और सुग्रीव का चित्र, दोनों घूंसा ताने हुए युद्ध में व्यस्त हैं और किष्किंधा के द्वार का चित्र खिंचा हुआ है।

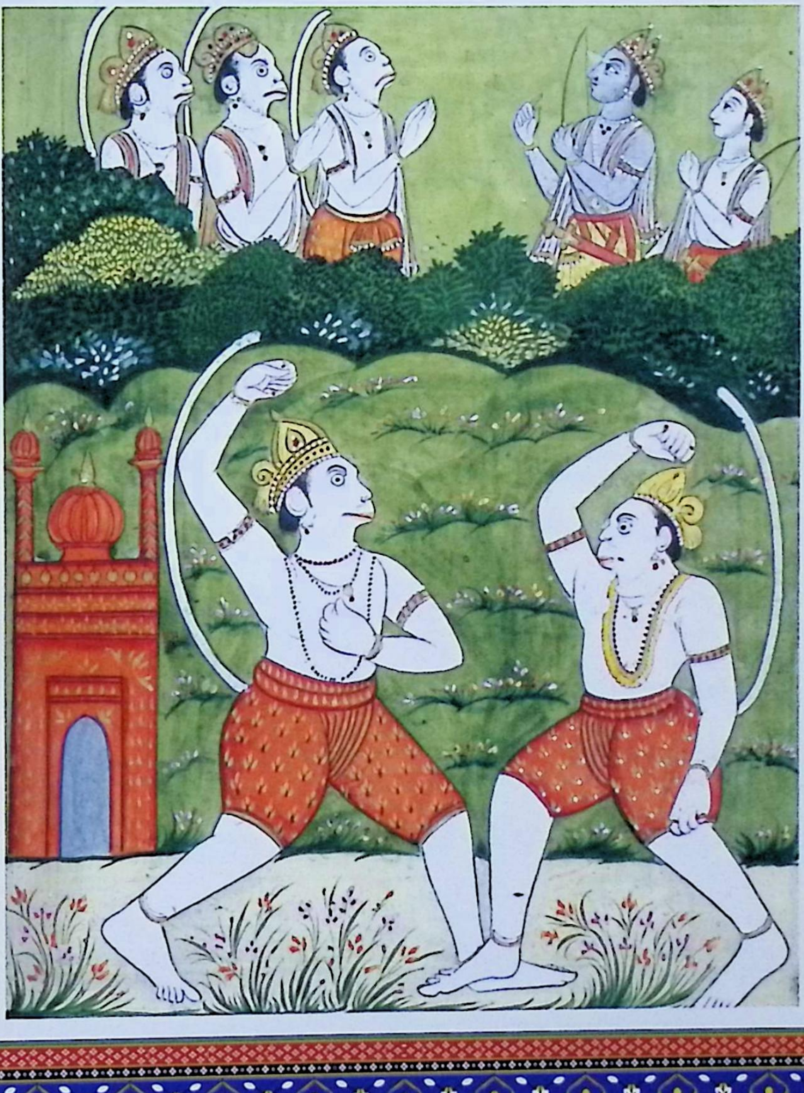

آنجا که بالی والی درانجا بود رفت و در آن کمان تیر هم چون تیر نهادیو در زه کرفت
پیشتر از همه سکریو و لچهمن و عقب شان رام و هنومان و نل و نیل و تار و دیگر
بوزنه ها روان شدند و درختان پربار و دریاهای پرآب و غارها و کوه ها و ترچهر یعنی
منبع آب همه را نظر کنان گذشتند و تالاب ها پر از نیلوفر مانند بید و ریه دیدند و کادنب
و سارس و هنس و نیچر و مرغابی و چکرواک و غیره طیور جوق جوق شاد و کردند و افیال
و دیگر بهایم جنگلی و طیور فلک سیر را تماشا نمودند چون نزدیک کشکندها رسیدند
در اثنای راه مجموعه درختان را دیده رام از سکریو پرسید این درختان که مینمایند و مانند
منبع کدلی درانجا اند این آشرم کیست سکریو گفت درین آشرم هفت کس من تپ و ریاضت
کردند و برت نمودند و همیشه در آب استقامت گزیدند و تا هفت روز
باد خوردند و بعده چیزی نخوردند بدین آیین بعد صد سال با کالبد خود
آن هفت کس بسرگ رفتند از زور کرامات شان درینجا هیچکس داخل شدن
نمیتواند بلکه اندر و غیره دیوتاها نیز بار نمی یابند و اگر کسی از قضا درینجا
داخل میشود باز نمیگردد و آواز پیرایه ها با چهر درست شنیده میشود و ساز
و سرود هم مسموع میشود و خوشبوی از باد می وزد و ترتیا اگن یعنی آتش
زتیا چک هنوز بنظر می آیند و درینجا کبوتران نورانی بنظر می آیند و هیچ عضو شان

बालि जहाँ का शासक था वे वहाँ गये और उस धनुष में महादेव के बाण के समान बाण भी था उसे चिल्ले पर चढ़ाया सबसे पहले सुग्रीव और लक्ष्मण उनके पीछे राम, हनुमान, नल और नील तथा दूसरे वानर चले। फलों से लदे हुए वृक्ष, जल से भरी नदी, गुफा, पर्वत और जल के झरने सबको देखते हुए चले। फिरोज़े के समान नीलोफ़र से भरे हुए तालाब देखे और कारण्डव, सारस, हंस, वञ्जुल, मुर्गाबी और चक्रवाक पक्षी झुण्ड के झुण्ड देखे। हाथियों और दूसरे वन के पशुओं और आकाश के पक्षियों को भी देखा जब किष्किन्धा के निकट पहुँचे तो मार्ग में वृक्षों का झुण्ड देखकर राम ने सुग्रीव से पूछा यह वृक्ष जो दिखाई दे रहे हैं और जहाँ वर्षा का पानी है यह किसका आश्रम है। सुग्रीव ने कहा; इस आश्रम में सात मुनियों ने तपस्या किया, व्रत रखा और सदा जल में खड़े रहे तथा सात दिन तक केवल हवा खाकर रहे। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं खाया। इस प्रकार सात सौ वर्ष के बाद वह सातों व्यक्ति अपने शरीर के साथ स्वर्ग में चले गये। उनके चमत्कारों के बल से यहाँ कोई व्यक्ति प्रविष्ट नहीं हो सकता है अपितु इन्द्र आदि देवता भी नहीं जा पाते हैं और यदि संयोगवश कोई यहाँ प्रविष्ट हो जाता है तो फिर वापस नहीं आ पाता। यहाँ वस्त्रों के हिलने की भी आवाज़ सुनी जाती है और गाने बजाने की भी आवाज़ आती है, हवा से सुगन्ध आती है, आग भी अभी तक दिखाई देती है और यहाँ प्रकाशमान कबूतर के अंगों की भाँति धूसर रंगवाला घना धूम उठता भी दिखाई देता है और उनका कोई भी अंग बुरा नहीं होता है

زبون نمی باشد بعد از ان رام دست بسته مکان آهنا را نمسکار کرد و بعد
دیواری
از نمسکار رام و لچهمن و سکریو پیشتر رفتند درینجا صورت مجموعه درختان و چار
کوتاه در درختان طایران کبوتران و غیر آن و از میان درختان دود هم میخیزد اول
سکریو پس او لچهمن و عقب او رام و سه بوزنه دیگر مع هنومان و سکریو لچهمن را
رو گردانده می رود و همه پا پی میروند و سکریو را رنگ زرد مانند طلاست

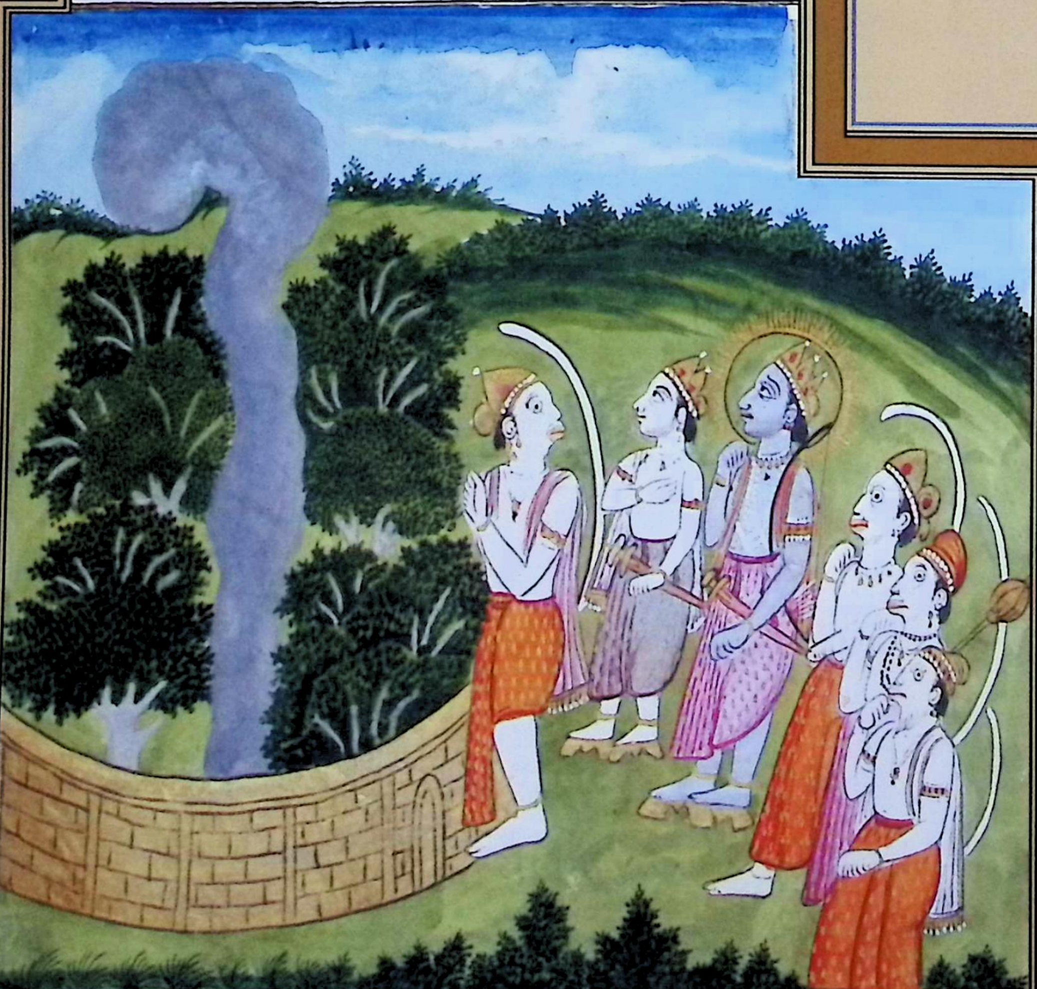

مرکب طبین

उसके बाद राम ने हाथ जोड़कर उनके स्थान को नमस्कार किया और नमस्कार के बाद राम, लक्ष्मण व सुग्रीव और आगे गये।

वृक्षों के झुण्ड की और छोटी चहारदीवारी का चित्र, वृक्षों के ऊपर कबूतर आदि पक्षी बैठे हुए हैं और वृक्षों के बीच से धुआँ भी उठ रहा है सबसे आगे सुग्रीव है उसके पीछे लक्ष्मण और उनके पीछे राम हैं और हनुमान सहित तीन वानर भी हैं और सुग्रीव लक्ष्मण को मुड़कर देख रहे हैं सब एक दूसरे के पीछे चल रहे हैं सुग्रीव का रंग सोने के समान पीला है।

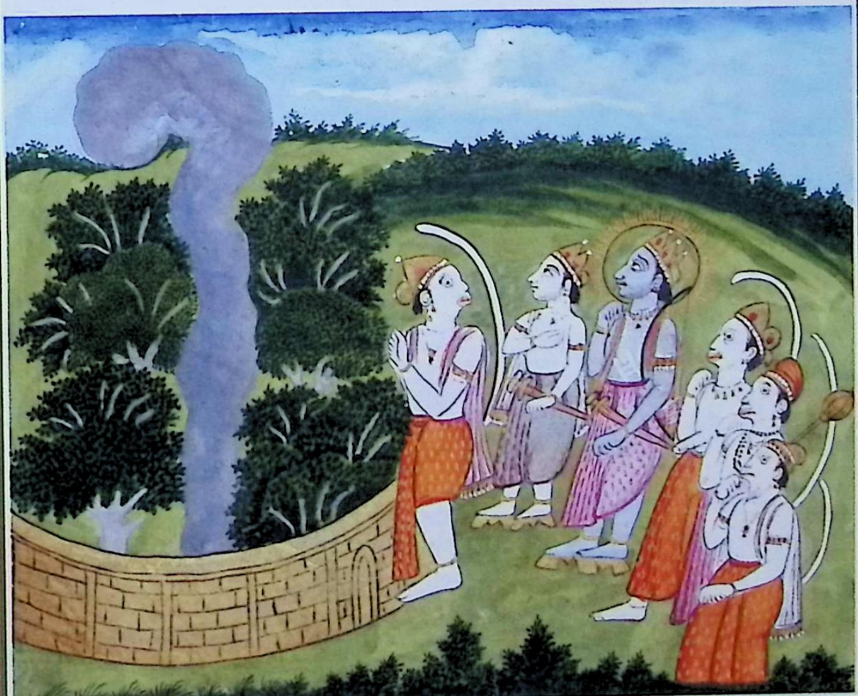

کسر طلبیدن بالی را چون از مکان هفت رکهه دور تر گذشتند بکشکندها که انواع درختان
و تورن و کلم داشت رسیدند و را ختفار درختان اقامت گزیدند سکریو
که حلق کلان داشت هر طرف نظر کرده از آواز شور بالی را طلبید بنوعیکه از آواز
فلک را سوراخ خواهد کرد یا ابر بکرک بارد بعد ازان سکریو برام گفت که حالا
بکشکندها رسیده ایم اکنون پرتنگیا یعنی عهد و اقرار کشتن بالی بجا آر رام گفت
حالا برای تو مالا رکج پکیپ داده شد از بالی خوف مکن به پرتاب یک تیر من بالی
کشته میشود و اگر او زنده بر گردد مرا ملامت بکنی و در حضور تو هفت تال را سوراخ
کردم پیش ازین هرگز دروغ نگفته ام و نگویم بلکه هنگام غم و رنج هم برای آنکه دهرم افزایش
می باید پرتنگیا خواهم نمود چنانچه از بارش ابر در صحرا قلم ها پیدا میشود و میروید همچنان
با آلی را بدان خوف را گذاشته شور بکن که بالی را خواهی کشت و اهل شجاعت
از گرفتار شدن خود بدست دشمن غصه نمیکنند سکریو گفته رام را شنیده
شور کرد گویا آسمان دریده میشود از آواز او ماده بوزنه ها خوف خوردند و اهوان رمیدند
چنانچه اسپ یله شده در جنگ میدود و طیور از هوا بر زمین افتادند چنانچه انجم بعد آخر شدن ایام
چون از فلک بر افتد پسر آفتاب که سکریو بود چنان آواز نمود که در پورنماسی سمدر بموج آید

درینجا صورت سکریو که بر دروازه کشکندها رسیده شور کرده و عقب او رام و لچهمن و سه بوزنه دیگر

सर्ग-८१

बालि को युद्ध के लिए निमंत्रण देना

जब सात ऋषियों के स्थान से कुछ दूर चले गये तो किष्किंधा में जहाँ तूरन और कलम आदि के विभिन्न प्रकार के वृक्ष थे, पहुँचे और वृक्षों की खोह में निवास किया। सुग्रीव जिसका कंठ बड़ा था उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और आवाज़ के शोर से बालि को बुलाया। ऐसा लगता था मानों अपनी आवाज़ से आकाश में छेदकर देगा या बादल मूसलाधार बरसेगा। उसके बाद सुग्रीव ने राम से कहा कि अब हम किष्किंधा पहुँच चुके हैं अब आप प्रतिज्ञा अर्थात् बालि की हत्या करने का वचन दीजिये। राम ने कहा; अब तुम्हारे लिए गजपुष्पी की माला दे दी गयी है बालि से भयभीत न हो मेरे एक ही बाण से बाली मार डाला जायेगा। और यदि वह जीवित वापस जाए तो फिर तुम मेरी निन्दा करना और तुम्हारे सामने मेरे बाण ने सात तबक में छेद कर दिया है। मैंने इससे पहले न कभी झूठ बोला है और न बोलूँगा। अपितु मैं दुख के समय भी इस कारण से कि उससे धर्म में वृद्धि होती है प्रतिज्ञा करूँगा जिस प्रकार बादल के बरसने से वन में कलम उत्पन्न होते हैं और उगते हैं उसी प्रकार बालि को समझो और डर छोड़कर शोर करो कि तुम बालि की हत्या करोगे। वीर लोग शत्रु के हाथों क़ैद होने पर क्रोधित नहीं होते। सुग्रीव ने राम की बात सुनकर शोर किया मानों आकाश फट जायेगा और उसकी आवाज से बंदरिया डर गयीं, हिरन भाग गये जैसे कि घोड़ा परास्त होकर युद्ध में दौड़ता है और पक्षी धरती पर गिर पड़े जैसे कि तारे आकाश से रात्रि के समय गिरते हैं। सूर्य के पुत्र सुग्रीव ने ऐसी आवाज लगाई कि पूर्णमासी में समुन्द्र में मौज आ गयी।

सुग्रीव का चित्र जो किष्किंधा के द्वार पर पहुँचकर शोर कर रहा है और उसके पीछे राम, लक्ष्मण और तीन दूसरे वानर भी हैं।

کس طلبید بالی را چون از مکان هفت رکهه دور تر گذشتند بکشکند ها که انواع درختان
و تورن و کلم داشت رسیدند و راختفار درختان اقامت گزیدند سکریو
که حلق کلان داشت هر طرف نظر کرده از آواز شور بالی را طلبید بنوعیکه از آواز
فلک را سوراخ خواهد کرد یا ابر بکرک بارد بعد ازان سکریو برام گفت که حالا
بکشکند ها رسیده ایم اکنون پرتنگیا یعنی عهد و اقرار کشتن بالی بجا آر رام گفت
حالا برای تو مالا رکج پکهپ داده شد از بالی خوف مکن به پرتاب یک تیر من بالی
کشته میشود و اگر او زنده برگردد مرا ملامت بکنی و در حضور تو هفت تال را سوراخ
کردم من پیش ازین هرگز دروغ نگفته ام و نگویم بلکه هنگام غم و رنج هم برای آنکه دهرم افزایش
می باید پرتنگیا خواهم نمود چنانچه از بارش ابر در صحرا قلم ها پیدا میشود و میروید همچنان
بالی را بدان خوف را گذاشته شور بکن که بالی را خواهی کشت و اهل شجاعت
از گرفتار شدن خود بدست دشمن غصه نمیکنند سکریو گفته رام را شنیده
شور کرد گویا آسمان دریده میشود از آواز او ماده بوزنه ها خوف خوردند و آهوان رمیدند
چنانچه اسپ یله شده در جنگ می دود و طیور از هوا بر زمین افتادند چنانچه انجم بعد آخر شدن ایام
چون از فلک بر افتد پسر آفتاب که سکریو بود چنان آواز نمود که در پورنماسی سمدر بموج آید

درینجا صورت سکریو که بر دروازه کشکند ها رسیده شور کرائیده و عقب او رام و لچهمن و ۳ بوزنه دیگر

सर्ग-८१

बालि को युद्ध के लिए निमंत्रण देना

जब सात ऋषियों के स्थान से कुछ दूर चले गये तो किष्किंधा में जहाँ तूरन और कलम आदि के विभिन्न प्रकार के वृक्ष थे, पहुँचे और वृक्षों की खोह में निवास किया। सुग्रीव जिसका कंठ बड़ा था उसने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई और आवाज़ के शोर से बालि को बुलाया। ऐसा लगता था मानों अपनी आवाज़ से आकाश में छेदकर देगा या बादल मूसलाधार बरसेगा। उसके बाद सुग्रीव ने राम से कहा कि अब हम किष्किंधा पहुँच चुके हैं अब आप प्रतिज्ञा अर्थात् बालि की हत्या करने का वचन दीजिये। राम ने कहा; अब तुम्हारे लिए गजपुष्पी की माला दे दी गयी है बालि से भयभीत न हो मेरे एक ही बाण से बाली मार डाला जायेगा। और यदि वह जीवित वापस जाए तो फिर तुम मेरी निन्दा करना और तुम्हारे सामने मेरे बाण ने सात तबक में छेद कर दिया है। मैंने इससे पहले न कभी झूठ बोला है और न बोलूँगा। अपितु मैं दुख के समय भी इस कारण से कि उससे धर्म में वृद्धि होती है प्रतिज्ञा करूँगा जिस प्रकार बादल के बरसने से वन में कलम उत्पन्न होते हैं और उगते हैं उसी प्रकार बालि को समझो और डर छोड़कर शोर करो कि तुम बालि की हत्या करोगे। वीर लोग शत्रु के हाथों क़ैद होने पर क्रोधित नहीं होते। सुग्रीव ने राम की बात सुनकर शोर किया मानों आकाश फट जायेगा और उसकी आवाज से बंदरिया डर गयीं, हिरन भाग गये जैसे कि घोड़ा परास्त होकर युद्ध में दौड़ता है और पक्षी धरती पर गिर पड़े जैसे कि तारे आकाश से रात्रि के समय गिरते हैं। सूर्य के पुत्र सुग्रीव ने ऐसी आवाज लगाई कि पूर्णमासी में समुन्द्र में मौज आ गयी।

सुग्रीव का चित्र जो किष्किंधा के द्वार पर पहुँचकर शोर कर रहा है और उसके पीछे राम, लक्ष्मण और तीन दूसरे वानर भी हैं।

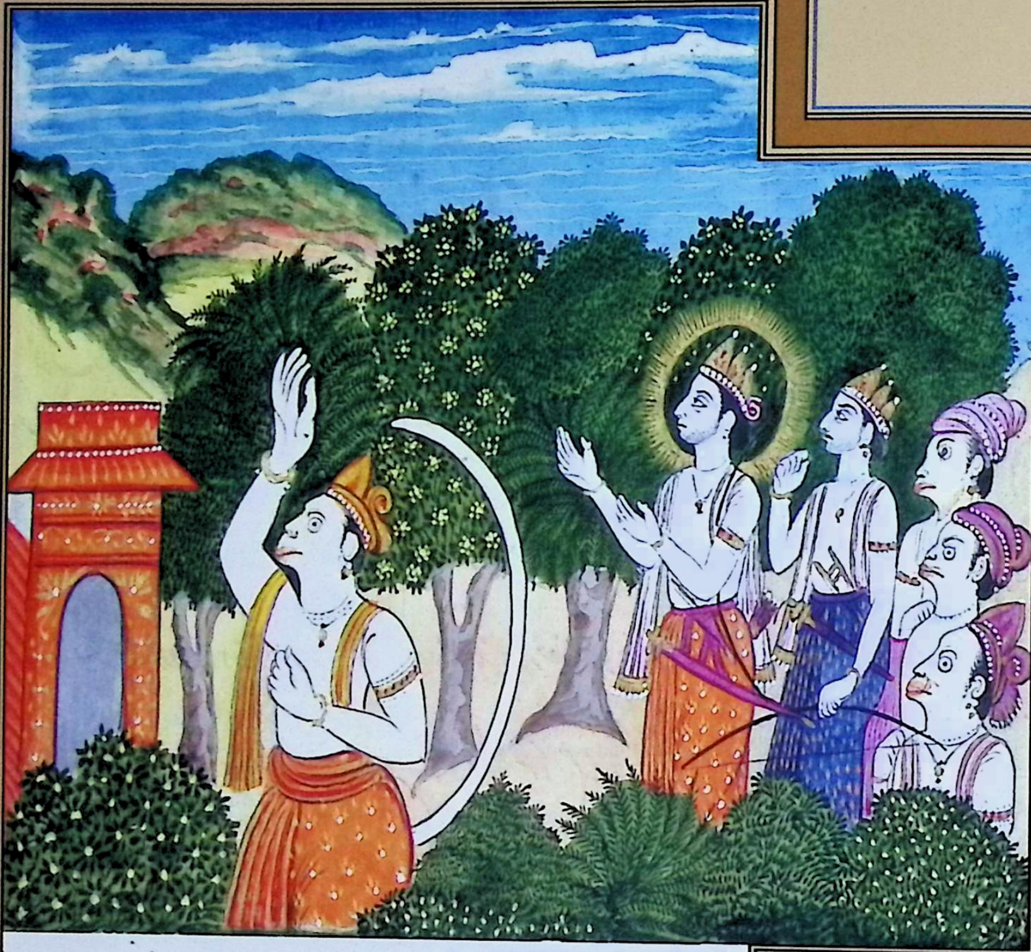

سرک گفت تارا آواز سکریو بالی در اندرون خانه خود شنید و از غصه مانند
آمدند
آفتاب طپیده بی صبر گردید و دندان تیز که مانند آتش و طپش بودند مانند نیلوفر بظهر
بزودی برائی جنگ روان شد گویا میلرزد در آنوقت تارا از محبت و اخلاص چنان گفت
این را که مانند سیلاب افزایش کرده منحرکن و صبر نما و یکایک بیرون مرو و بشنو
برائی این منع میکنم پیش ازین ترا طلبید و از تو جنگ کرده بگریخت باز که میطلبد مرا گمان میشود

सर्ग-८२

तारा की वार्ता

सुग्रीव की आवाज़ बालि ने अपने घर के भीतर सुनी और क्रोध के कारण सूर्य के समान तप कर व्याकुल हो गया। उसके दाँत जो आग की भाँति क्रोध की अवस्था में थे निलोफर की भाँति दिखने लगे। वह तुरन्त युद्ध के लिए चल दिया। मानों उसको कपकपी आ रही है। उस समय तारा ने प्रेम व सद्भाव से कहा कि उसे जिसको तुमने बाढ़ के समान बढ़ा रखा है नियंत्रण में करो और धैर्य रखो और अचानक बाहर मत जाओ। और सुनो मैं इसलिए तुम्हें मना कर रही हूँ कि इससे पूर्व उसने तुमको युद्ध का निमंत्रण दिया और तुमसे युद्ध करके भाग गया। अब फिर तुम्हें युद्ध के लिए निमंत्रण दे रहा है

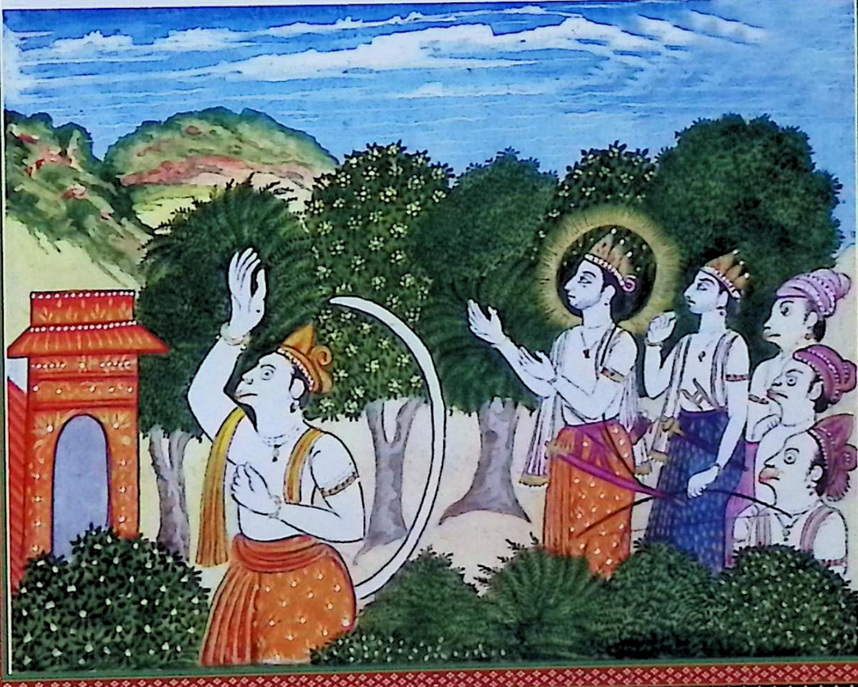

که این کار اندک نیست او را مدد کلان رسیده که بدین آئین شغب میکند
و بیش ازین هنگام تولد انگد کمار انچه شنیده ام با تو میگویم که برادر ترا رام نام
مدد کار خواهد شد و او مانند آتش آخرت هست و او پناه نیکمردان هست و ایمنی خواهان را
ملجا هست و مضطربان را دولت ده است و جمیع فنون را مجمع هست و بکیان آراسته
و از امر پدر بصحرا برآمده هست تو با او دشمنی مکن در جنگ با او کسی نتواند برآمد همین
میگویم که با او صلح کن و بسرعت سگریو برادر خود را جوراج بکن و با رام دوستی نما
و ترک دشمنی از سگریو کن برادر خورد لایق ناز برداریست خواه اینجا خواه صحرا هر جا که
باشد او برادر تست اگر با من اخلاص داری و خاطر من میخواهی با او دوستی کن
گفت مرا کار بند و غصه مکن ترا با رام صلح خوب هست که او نظیر اندر هست و برادر که عقب
رونده اوست مانند اندر و جم بقوت هست و لچهمن نام دارد با آن هر دو از دل
هم دشمنی مکن جمله جواهر و غیره هر چه در خانه تست همه و انگد پسر را بخدمت رام بر
و گرنه اینمکان کوها یعنی غار را گذاشته در ملک دیگر برو و اگر رام و سگریو متفق
شده اند ترا خوف کلان هست مرا شبه کلان شده است بنابران اینمکان را
بگذار چون او دور از رام خواهد شد تو از عهدهٔ او خواهی برآمدن آن زمان درین کار
سعی بجا خواهد شد بالی گفت تارا را که مقرون بخیر خواهی بود در عمل نیاورد با او گفت

मुझे लगता है कि यह साधारण कार्य नहीं है। उसे कहीं से बड़ी सहायता मिली है। जो इस प्रकार शोर कर रहा है। इससे पहले अंगद कुमार के जन्म के समय जो कुछ मैंने सुना है इस कारण कहती हूँ कि तेरे भाई का राम नामक व्यक्ति सहायक होगा और वह परलोक की अग्नि के समान है। वह सज्जन लोगों का शरण स्थल है, शरण चाहने वालों की शरण स्थली है और दुखी लोगों को धन देने वाला है। वह सारे गुणों का संग्रह है, ज्ञान से सुसज्जित है और पिता की आज्ञा से वन में आया है। तुम उसके साथ शत्रुता न करो। युद्ध में कोई उससे जीत नहीं सकता है। मैं यही कहती हूँ कि उसके साथ सन्धि कर लो। शीघ्र अपने भाई सुग्रीव को उत्तराधिकारी बना दो, राम के साथ मित्रता कर लो और सुग्रीव से शत्रुता त्याग दो, छोटा भाई लाड़-प्यार के योग्य है। वह चाहे यहाँ रहे या वन में रहे तुम्हारा भाई है। यदि तुम मेरे साथ सद्भाव रखते हो और मेरी कुशलता चाहते हो तो उसके साथ मित्रता कर लो। मेरे कहानुसार करो और क्रोधित मत हो तुम्हारे लिए राम से सन्धि कर लेना उचित है क्योंकि वह इन्द्र का उदाहरण है। जो भाई उसके पीछे चलने वाला है वह शक्ति में इन्द्र और जम के साथ मन से शत्रुता न करो, समस्त हीरे जवाहरात जो तुम्हारे महल में है और अपने पुत्र अंगद को राम की सेवा में ले जाओ अन्यथा इन गुफाओं को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाओ। और यदि राम और सुग्रीव मिल गये हैं तो तुम्हारे लिये बहुत बड़ा खतरा है। मुझे सन्देह हो गया है। इस कारण यह स्थान छोड़ दो जब वह राम से दूर होगा तो तुम उसे जीत सकोगे। उस समय इस कार्य का प्रसार उचित होगा। बालि तारा की बात को जो भलाई पर आधारित थी नहीं मानी और उससे कहा कि यह पर्वत जो हीरों आदि से भरा है,

این کوه‌ها را که از رتن‌ها و غیره پربت وراج بوزنه‌ها معموری هم نخواهم گذاشت

و از گفتهٔ تو نامرد شده و خوف خورده از بی زوری روگردان نخواهم شد

و رام اگر بندها چل کوه را از زور بازو برکند و اگر این تمام ملک تا سمدر برهم زند

و اگر تمام عالم جهان یا ساگر و فلک با ماه و انجم از تیرهای او بسوزد من ازو نخواهم ترسید

که با سگریو دوست شده یا من کشته شده بر زمین می خفتم یا من او را بر زمین خسپانم بالی

گفتهٔ تارا را که از خیرخواهی گفت پسند نکرد که مغلوب شده بود درینجا صورت بالی و انگد

و تارا و دیگر عورات که سد راه رفتن بیرون شده اند و مانع آمده اند و صورت درختان

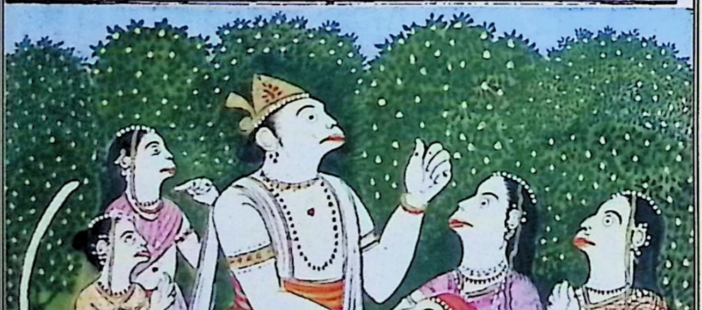

वानरों के राज्य में एक क्षण के लिए भी नहीं छोडूँगा और तेरे कहने से पुरुषार्थहीन तथा भयभीत होकर शक्तिहीनता से वापस नहीं फिरूँगा। यदि राम विन्ध्याचल पर्वत को अपने बल से उखाड़ दे, यदि उन समस्त देशों को समुन्द्र तक नष्ट कर दे, यदि सम्पूर्ण संसार को समुन्द्र सहित और आकाश को चाँद तारों सहित अपने बाणों से जला डाले तब भी मैं उससे नहीं डरूँगा कि सुग्रीव मित्र हो। या तो मैं मरकर धरती पर सो जाऊँगा या उसको धरती पर सुलाऊँगा। बालि ने तारा की बात को जो उसने भलाई में कही थी नहीं पसन्द किया क्योंकि वह क्रोध से भर गया था।

बालि अंगद और तारा और उसकी दूसरी स्त्रियों का चित्र जो बाहर जाने से उसे रोक रही है और बाधा कर रही है और वृक्षों का चित्र।

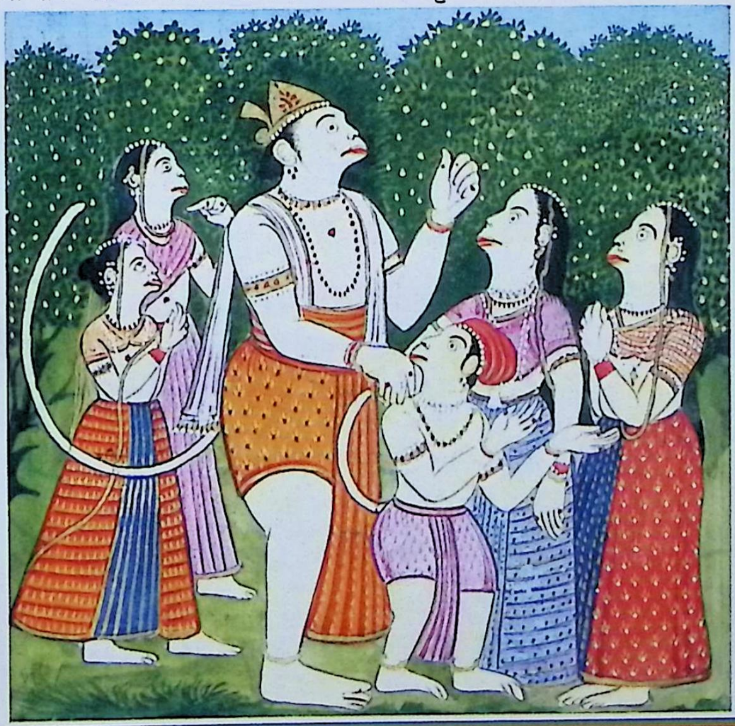

سرکِ تیر زدن رام گفت تارا که از دیدار چون تارا بود بالی خدمت کرده گفت برادر
از طیش شور میکند من چنان با غضب بوده متحمل شوم غصه قدران و سخت کارانرا
در جنگ نشستن بدتر از مردن هست من غصه سکریو را که برای جنگ آمده هست برداشت
نتوانم کرد و از واسطه رام بجهت من فکر مکن او دهرماتما و دانا است بد او نخواهد کرد
من زود رفته با سکریو جنگ نموده غرور را و از دل ربوده از جان نخواهم کشت
الهٰا عورات همراه خود باش و آنچه از محبت شوهری گفتی مهربانی نمودی و تو که با من همراه
می آئی سوگند تراست باز گرد و اینک باز می آیم بعد از آن تارا پردچهنا یعنی گرد گردیده
سُسْتین یعنی دعا ر باز آمدن بخیریت گفته بعورات همراه خود اندر خانه رفت بالی
بیرون آمده هر طرف نظر کردن گرفت از دور سکریو را که مانند طلا زرد رنگ بود
نظر کرده مشت از زور برداشته بسوئی او رفت و سکریو هم مشت برداشته مقابل او
ایستاد بالی از غضب چشم سرخ نموده بسکریو گفت ازین مشت سخت بسته من جان تو
خواهد رفت سکریو گفت این مشت من جان تو خواهد گرفت بالی مشت بسکریو زد چنانکه
او مانند کوه بخون آلوده شد سکریو هم طبانچه ببالی زد که بر زمین افتاد و از بالا درخت تال
که مانند کشتی ساگر پار بود انداخت بالی بعد از مهورت زود برخاست و از غضب مانند
آتش آخرت طپید با هم چنان جنگ کردند که بوده یعنی عطارد و سکر یعنی ناهید بر فلک تغیر کنند

सर्ग-८३

राम का बाण चलाना

तारा की बात पर जो देखने में तारा के समान थी बालि ने निन्दा करते हुए कहा; भाई क्रोध में शोर कर रहा है तो मैं क्रोध में होते हुए कैसे धैर्य रखूँ। क्रोधित और कठिन कार्य करने वालों के लिये युद्ध में बैठ रहना मरने से भी बुरा है। राम की ओर से तुम मेरी चिन्ता न करो। वह धर्मात्मा और ज्ञानी है उसकी सहायता नहीं करेंगे। मैं शीघ्र जाकर सुग्रीव से युद्ध करके उसका घमण्ड तोड़कर उसकी हत्या कर दूँगा। तुम स्त्रियों के साथ यहीं रहो और जो कुछ तुमने एक पति के प्रेम में कहा; कृपा की और तुम जो मेरे साथ आ रही हो तो तुम्हें सौगन्ध है लौट जाओ मैं अभी आता हूँ। उसके बाद तारा उसका चक्कर लगाकर सकुशल वापस आने का आशीर्वाद देते हुए अन्य स्त्रियों के साथ महल के अन्दर चली गयी। बालि ने बाहर आकर चारों ओर देखा और दूर से सुग्रीव को तला के समान पीले रंग में देखकर मुक्का ताने हुए उसकी ओर बढ़ा और सुग्रीव भी मुक्का तानकर उसके सामने खड़ा हो गया बालि ने क्रोध से आँखें लाल करके सुग्रीव से कहा; मेरा यह घूंसा तेरे प्राण ले लेगा। बालि ने सुग्रीव को ऐसा घूंसा मारा कि वह पर्वत के समान रक्तरंजित हो गया। सुग्रीव ने भी बालि को ऐसा घूंसा मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा और ऊपर से वृक्ष ताल के समान जो जहाज की भाँति था गिरा दिया। बालि थोड़ी देर बाद उठा और क्रोध के कारण नरक की अग्नि के समान तड़पा और दोनों में ऐसा युद्ध हुआ जैसे आकाश पर अतारद और नाहीद युद्ध करते हैं

سکریو از دست بالی خسته شده به رام نظر کرد رامچند تیر در کمان نموده بسرعت به بالی در
که بر زمین افتاد آن تیر استر که باعث بردن سرک بالی بود راه سرک نمود و بالی از گریه بحلق
بند شده مثل فیل در گل مانده شده برام گفت از سمت رو که تیر زدی کدام فن تست و بعد ازان
از غم طپیده بسکریو گفت اگر من در جنگ از سبب تو کشته شدم خود را و تارا را او از باو
هیچکس را فکر نمیکنم فکر انگد است که پسر ناز پرورده من است که بی پدر شده در قید دشمنان خواهد افتاد و
غریب خواهد گشت و تحمل خشم دشمنان چسان کند اینچنین فکر کرده پسر اندر بیهوش شده مانند هوجار

بر زمین افتاد و درینجا صورت بالی گرز برداشته و سکریو درخت تار برکنده برداشته و رام
بکمان کشیده در سینه بالی زده و عقب او لچهمن و دیگر بوزنه معه هنومان استاده

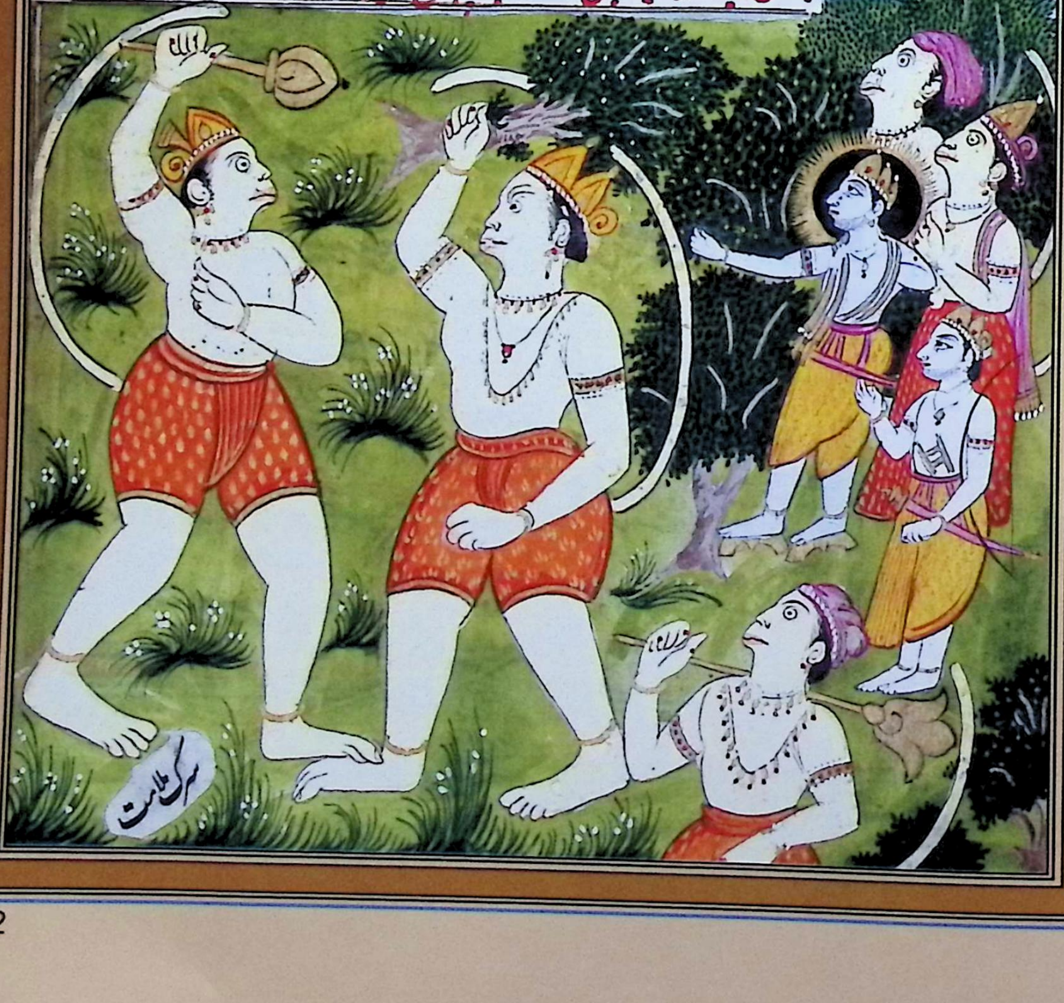

सुग्रीव ने बालि के हाथों घायल होकर राम की ओर देखा रामचन्द्र ने बाण धनुष में रखकर तेजी से बालि को मारा कि वह धरती पर गिर गया। अस्त्र के इस बाण ने जो बालि को स्वर्ग में ले जाने का कारण था उसने स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया और बालि ने बन्द गले से घुँटी हुई चीख निकालकर दलदल में फँसे हाथी की भाँति राम से कहा; सामने की ओर से आपने जो बाण मारा यह आपकी कौन सी कला है उसके पश्चात् अत्यन्त दुख से उसने सुग्रीव से कहा यदि मैं युद्ध में तेरे कारण से मारा जाऊँ तब भी मुझे अपनी तारा की और अन्य सम्बन्धियों में से किसी की चिन्ता नहीं है। मुझे केवल अंगद की चिन्ता है जो मेरा प्रिय एवं लाड़ला पुत्र है, कि वह बिना पिता के होकर शत्रुओं का बन्दी हो जायेगा। वह बेचारा मार दिया जायेगा और शत्रुओं का क्रोध कैसे सहन करेगा।'' यह चिन्ता करते हुए इन्द्र का पुत्र मूर्छित होकर इन्द्र के यान की भाँति धरती पर गिर पड़ा।

बालि का चित्र जिसमें गरज़ और सुग्रीव ने ताड़ का वृक्ष उखाड़कर उठा रखा है और राम ने धनुष में बाण रखकर बालि की छाती में मारा, उनके पीछे लक्ष्मण तथा अन्य तीन वानर हनुमान सहित खड़े हैं।

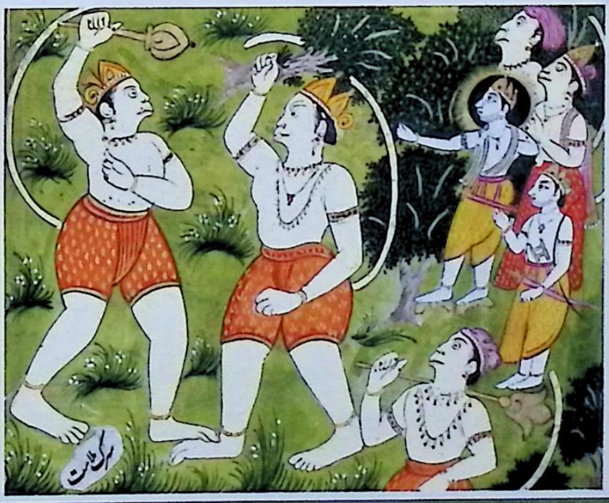

سرک ملامت کردن بالی که پسر انگد دارنده مالائی طلائی بود از تیر رام گشته بر زمین
افتاد مثل راجه ججاتی که بعد آخر شدن پون از آسمان فرود آید یا آفتاب هنگام قیامت بر زمین افتد
اور رام و لچهمن را نظر کرده سخن دهرم آمیخته گفت تو کلین یعنی بلند نسب هستی و قوتمند و باشکوه و برت
کننده هستی و مهربان و کلان کار و داننده وقت و فهمنده و غریب و خیر خواه خلق هستی انیقدر
خوبیهار تو بر زمین میگویند با وجود این فنون چون دیگران چرا شدی و با سگریو اتفاق نمودی
بکشتنم سزاوار نبودی من دهرم دان میفهمیدم نه ادهر لیکن دانستم که بد دل هستی مانند چاه
انباشته از کاه من در خانه و شهر و دیگر جا تقصیر تو نکردم و با تو جنگ نداشتم بچه مرا کشتی و تو
لباس نیکوان پوشیده مانند آتش خس پوش شده نمیدانستم که تو دهرم را مخفی کرده ترا خورنده
اثمار و مول و مسکین باشنده صحرا میدانستم نه جنگ کننده و تو مرا بیگناه زده کار بد کرده تو در میان
نیکان چه گوئی کشنده راجه و کشنده برهمن و کشنده ماده گاو و دزد و خواهان هلاک
دوست و ناسپاس یعنی عاقبت را هیچ داند و گیرنده زر دیگران اینهمه روند نرک اند
یعنی دوزخ و دیگر آنکه چرم من هم لایق داشتن نیست و استخوان بچه کار آیند و گوشت نیز
قابل خوردن مثل تو دهرماتما نیست و گفته اند پنج جانور که دارند پنج ناخن اند در برهم چهتریان
لایق خوردن نیستند ششک و شلک و گودها و سیدها یعنی بوزنه و گورم یعنی کشف و چرم
و استخوان و پشم اینها را اهل دلان نگاه ندارند و گوشت اینها هم نخورند من هم از اینها بودم

सर्ग–८४

बालि द्वारा निन्दा

बालि जो इन्द्र का पुत्र और स्वर्ण का हार रखने वाला था राम के बाण से आहत होकर धरती पर गिर पड़ा, जैसे कि राजा ययाति जो पवन के समाप्त होने के पश्चात् आकाश से नीचे आता है, या जैसे कि सूर्य प्रलय के समय धरती पर गिर जायेगा। उसने राम और लक्ष्मण की ओर देखकर धर्म सम्मत बात कही कि ''आप उच्च वंशीय है और शक्तिशाली, भव्य और व्रत रखने वाले हैं, दयालु, महान कार्य करने वाले समय को जानने वाले और निर्धन को समझने वाले तथा प्रजा के शुभचिन्तक हैं। इतना अधिक गुण आपके लोग पृथ्वी पर वर्णन करते हैं इन गुणों के होते हुए आप दूसरों के समान क्यों हो गये?आपको सुग्रीव के साथ मिलकर मेरी हत्या करना शोभा नहीं देता मैं आपको न धर्मात्मा समझता था न अधर्मी। लेकिन जानता था कि आप रुष्ट हैं, घास से ढंके हुए कुएँ के समान हैं। मैं महल में, शहर में और किसी दूसरे स्थान पर आपका दोषी नहीं हूँ और न मेरी आपसे लड़ाई थी फिर आपने मुझे क्यों मारा ?और आप सज्जनों का वस्त्र पहनकर ढकी हुई अग्नि की भाँति हो गये। मैं नहीं जानता था कि आपने धर्म को छुपा रखा है। मैं आपको फल खाने वाला और वन का निवासी समझता था न कि युद्ध करने वाला। आपने मुझ निर्दोष को मारकर बुरा किया। सज्जनता के प्रति आपके क्या विचार हैं?राजा को मारने वाला, ब्राह्मण और गाय की हत्या करने वाला, चोर और मित्र की हत्या चाहने वाला नास्तिक अर्थात् ईश्वर को न मानने वाला और दूसरों का धन लेने वाला यह सब नरक में जाने वाले हैं। दूसरे यह कि मेरी खाल भी रखने के योग्य नहीं है और हड्डियाँ किस काम आयेंगी ?माँस भी आप जैसे धर्मात्मा के खाने योग्य नहीं है। लोगों ने कहा है कि पाँच पशु जो पाँच नाखून रखने वाले है क्षत्रियों के विचार में वह खाने योग्य नहीं है, गेंड़ा, गोह, साही, खरहा, तथा कछुआ। और उन पशुओं की खाल, हड्डी और बाल सहृदय वाले सुरक्षित नहीं रखते हैं। और उनका माँस भी नहीं खाते हैं। मैं भी उन्हीं में से हूँ।

از تو راجه ای رام زمین چنان هست که عورت خوب با شعور از شوهر نامرد و مثل تو غصه دار
وو دغاباز و بدگوی و بزدل وو دروغ پسند از دشمن نهبه چسپان بوجود آمد ای رام کم و دغا طور داری
و چیو بسته براه میروی و دهرم گذاشته از دست خودکشتی من ترا امیدیدم و اگر از ادهرب دای تو نستمی
همین ساعت ترا گشته جم مینمودم و مثل تو بد دل مرا با نظور گشت که مار براه خفته ناگاه زیر پای
کسی کشته شود برای محبت سکریو مرا عبث کشتی که در جنگ کلوی راون را بسته بتو دادمی اگر سیتا را
در سمدر یا در زیر پاتال برده باشد آورده بنمودمی مانند شوتیا اشوتری را و بعد رفتن من بسرگ اگرچه
راج یافتن سکریو لایق بود عبث کشتیم از ادهرم لایق نبود این بگفت و مضطرب گشته رام را که مانند
آفتاب بود نظر کرده خاموش شد درینجا صورت بالی تیر خورده افتاده و سکریو استاده و رام و لچهمن
و شه بوزنه معه هنومان استاده

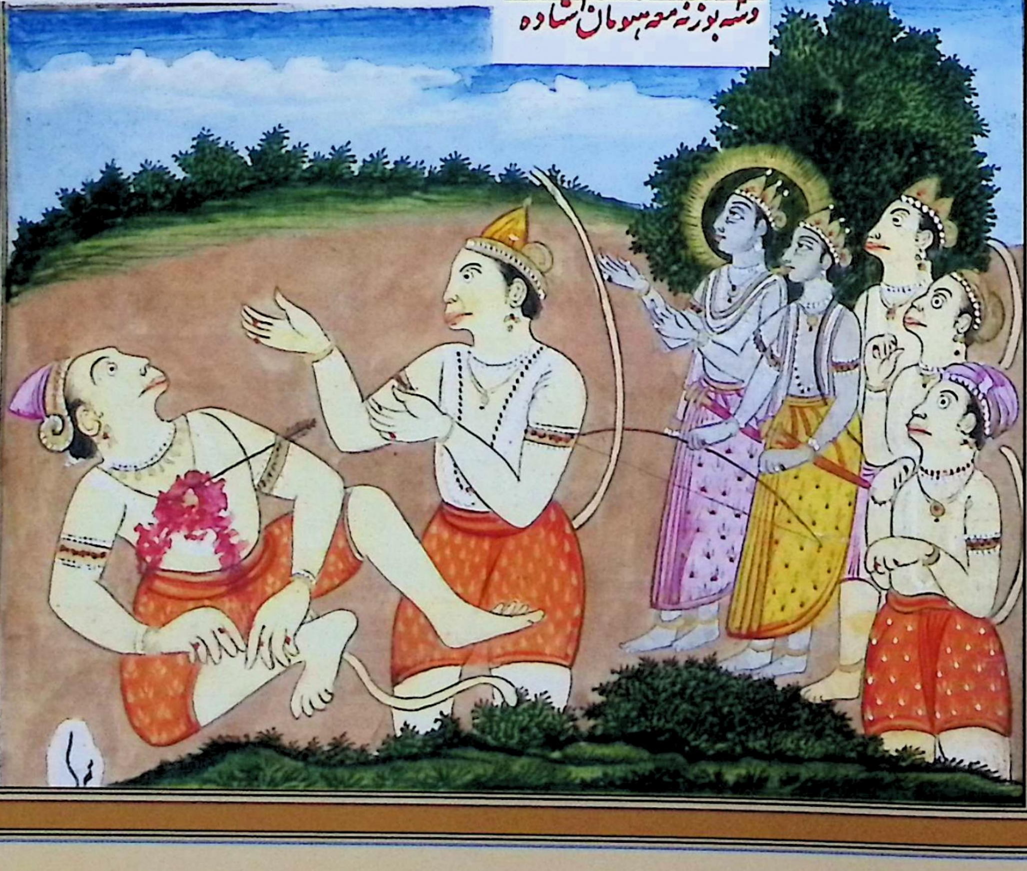

“हे राम ! आप जैसे राजा के लिये धरती ऐसी है जैसे सुन्दर सुशील स्त्री नपुंसक पुरुष पति के लिये हो।

आप जैसा क्रोधी, धोखेबाज़, बुरा कहने वाला, कायर और झूठ को पसन्द करने वाला दशरथ से कैसे अस्तित्व में आया। ऐ राम ! तुम कि जिसका कार्य धोखा देना है, तुम सदा गलत मार्ग पर चलते हो, तुम धर्म को छोड़कर हाथ से गये हो, मैं तुम्हें देख रहा था और यदि मैं तुम्हारे युद्ध के विचार को जानता तो उसी समय तुम्हारी हत्या करके मृत्यु दिखा देता और तुमने मुझे इस प्रकार मारा जैसे कि मार्ग में सोया हुआ सर्प, जो अचानक किसी के पाँव के नीचे आकर मारा जाये। तुमने सुग्रीव के प्रेम में मुझे बेकार मारा। क्योंकि मैं तुम्हें युद्ध में रावण को बाँध कर देता और यदि वह सीता को समुन्द्र में या धरती के नीचे पाताल में ले गया होगा तब भी मैं तुम्हें लाकर दिखा देता जैसे कि श्वेताश्वतरी श्रुतिका को। और यदि मेरे स्वर्ग में जाने के बाद सुग्रीव का राज्य पाना था लेकिन मुझे बेकार अत्याचार के मार्ग से उचित नहीं था” उसने यह कहा और व्याकुलता के साथ राम को जो सूर्य के समान थे देखकर शान्त हो गया।

बालि का चित्र जो तीर खाकर गिर पड़ा है सुग्रीव खड़ा है और राम, लक्ष्मण और तीन वानर हनुमान सहित खड़े हैं।

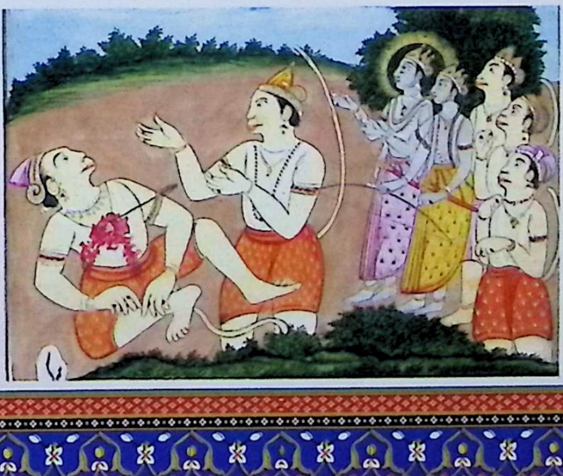

پس گفت رام اینقدر گفتار بالی رام را گفت مانند آفتاب بی شعاع و سحاب ن
بی آب خاموش شد رام ببالی گفت دهرم یعنی صواب و ارتبه یعنی یافتن هر چیز و کام یعنی بر آید
امید و سمی یعنی گردش وقت و لوگک یعنی طریق روزگار اینهمه را فهمیده مرا چرا بد میگوئی
حالا دهرم و ادهرم را نفهمی آن زمان که عورت برادر خورد را در تصرف آوردی و ادهرم کردی
نفهمیدی و درین کار از عاقلان و عالمان مصلحت نگرفتی حالا آن را به بیان کردن
سزاواری خطائی خود را بخاطر نموده این را دهرم بدان و دل مردم همه بد و نیک او ن او
میدانند تو چپل یعنی فریب کار و بونه هائی تو نیز غدار بتو عیبکه کوری راه رود و همراها
هم کور باشند من ترا صریح میگویم تو مرا از غصه بد مگو و دیگر آنکه کسان از گفتار و دغا
و انواع بند بسیار جانوران را میگیرند و میکشند خواه جانور در دویدن باشند خواه در آمید ن
خواه در خوف باشد خواه ایستاده خواه مست خواه هشیار بهر طریق از آن خورندگان
گوشت هست و ایشان را گناه نشود و راج رکهان را شکار دهرم است بنابران بجا است
که تو از تیر من کشته شدی خواه با من جنگ داشتی یا نه خود بهایم بودی دیگر بدان که برای این
ترا کشتم که تو دهرم را گذاشته با عورت برادر خورد صحبت داشتی که این رومانام عورت سگریو
بجای بهو سنه تو بود و با او صحبت میکردی لهذا این رنج دراز یافتی و عذابی که در گرفتن او
و دیگر گناهان که کردی چنانست که از کفاره دور نمیشوند آنها همه سوختند و تو از تیر من کشته

सर्ग–८५

राम की वार्ता

बालि राम से इतनी बात कहकर बिना किरणों के सूर्य या बिन पानी के बादल के समान शान्त हो गया। राम ने बालि से कहा; तुम धर्म अर्थात् पुण्य और अर्थ अर्थात् प्रत्येक वस्तु का पाना काम अर्थात् आशा का पूरा होना और सभी अर्थात् सांसारिक चक्र लौकिक अर्थात् समय का नियम और रंग ढंग इन सबको समझते हुए भी मुझे बुरा क्यों कहते हो। अब तुम सही और गलत को समझ रहे हो। उस समय जब कि तुमने अपने भाई की पत्नी को अपने सम्पर्क में लाकर गलत कार्य किया। इस बात को न समझा था?और इस कार्य में बुद्धिमानों और ज्ञानियों से परामर्श न लिया था। अब तुम उसका वर्णन करने के योग्य नहीं हो और अपनी गलती को हृदय में सोचकर इसी को न्याय समझो। लोगों के हृदय सब अच्छे बुरे को समझते हैं। तुम धोखेबाज़ हो और तुम्हारे वानर भी गद्दार हैं जैसे कि कोई अंधा रास्ता चलता है और उसके साथी भी अन्धे हों। मैं तुमसे साफ कहता हूँ। तुम मुझे क्रोधवश बुरा न कहो। और दूसरी बात यह है कि लोग अपनी बातें, धोखा और विभिन्न प्रकार की बाधाओं से बहुत से पशुओं को पकड़ते हैं और मारते हैं चाहे पशु दौड़ रहा हो या विश्राम कर रहा हो, चाहे डर रहा हो, चाहे खड़ा हो, चाहे मस्त हो, चाहे सतर्क। वह उन्हीं माँस खाने वालों का है और उनको पाप नहीं होता है। राजर्षियों के लिए शिकार उचित है। इस कारण यह सही है कि तू मेरे बाण से मारा गया चाहे तुम मेरे साथ युद्ध करते या न करते। तुम स्वयं पशु थे दूसरे यह जान लो कि मैंने तुम्हें इस कारण मारा कि तुम धर्म को छोड़कर अपने भाई की पत्नी के सम्पर्क में आते थे कि अंततः तुमको अत्यन्त दुख पहुँचा। वह पाप जो उसको पकड़ने में और दूसरे जो पाप तुमने किये हैं वह ऐसे हैं कि प्रायश्चित्त से दूर नहीं होते। उन सबने, उन सबको जला दिया और तुम मेरे बाण से मारे गये

واز زخم حربه پاک شده بلوکهای سنتتان یعنی نیکان خواهی رفت وکناهکاران
بعد سزا دادن راجه پاک شده بسرک میروند چنانچه سنتتان نیک کردار وراجه ها
وسنجی را دهرم دشوارست وراحت زندکی هم دشوار ایهمارا نباید کشت وبد نباید کفت
واز جا نباید انداخت ومذمت نباید کرد که اینها دیوتا اند بلباس آدمی وتو دهرم را
ندانسته از بیعقلی بد میکوئی مرا که بر دهرم آبا واجداد خود مستقیم هستم رام چون اینقدر کفت
بالی دست بسته کفت من از اضطراب رنج تیر تو اینچنین کفتم معذور دار که تو چون مهیندر هستی
ومهربان شو درینجا صورت بالی تیر خورده نشسته وسکریو ورام ولچهمن و دو بوزنه دیکر ایستاده

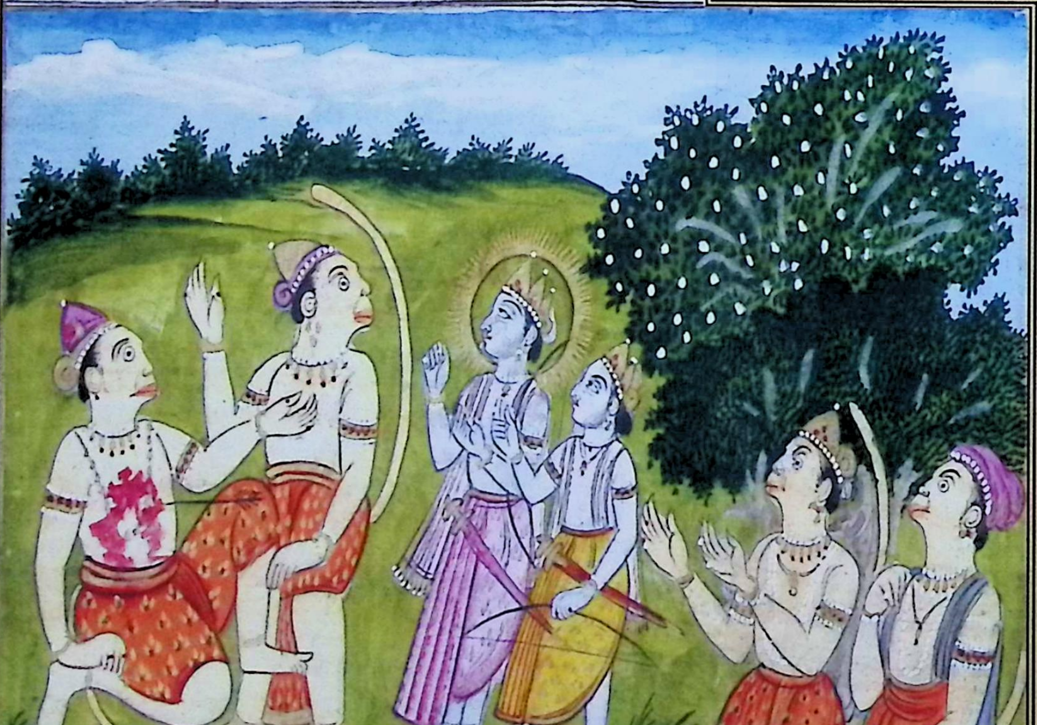

اکر بر من بتا

अब तुम बाण के घाव से पवित्र होकर संतों अर्थात् सज्जन लोगों के संसार में जाओगे और पापियों को दण्ड देने के बाद राजा पवित्र होकर स्वर्ग में जाते हैं। जैसे अच्छे चरित्र वाले सन्त और राजाओं और दानी लोगों के लिए धर्म कठिन है और जीवन के सुख भी कठिन हैं। उनको नहीं मारना चाहिए और न बुरा कहना चाहिए। अपने स्थान से नहीं फेंकना चाहिए और निन्दा नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह लोग मनुष्य के वेष में देवता हैं और तुम धर्म को न जानकर बुद्धिहीनता के कारण मुझको बुरा कह रहे हो और मैं अपने पुरखों के धर्म पर स्थिर हूँ। राम ने जब यह कहा तो बालि ने हाथ जोड़कर कहा; मैंने आपके बाण के कष्ट के कारण ऐसी बात कही। मुझे अलग रखिये कि आप महेन्द्र के समान हैं, मुझ पर दयावान हो जाइये।

बालि का चित्र जो बाण खाकर बैठा है और सुग्रीव राम, लक्ष्मण और दूसरे दो वानर खड़े हैं।

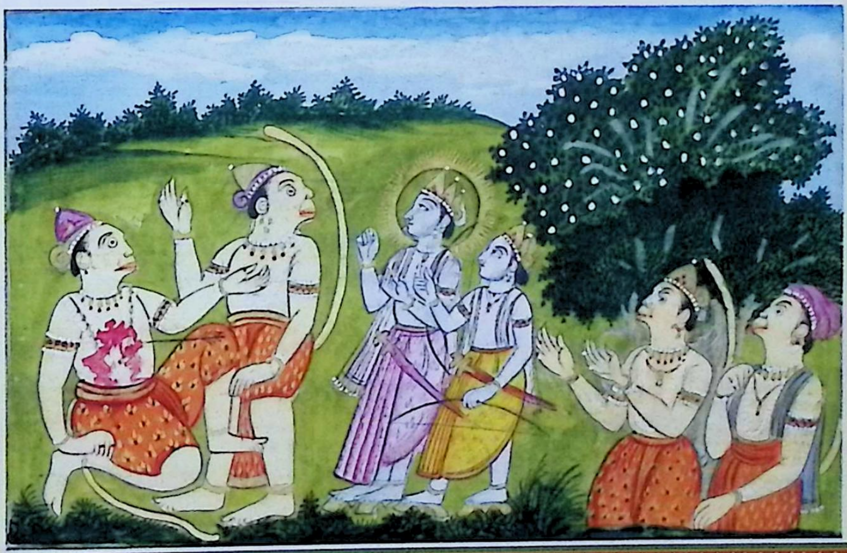

سرکر برآمدن تارا آن راجه بوزنه بضربت تیر بر زمین افتاده هیچ نتوانست گفت
و از بس که از سنگریزه ها وجود او مجروح شده بود قریب جان دادن گشت تارا عورت او
این حالت شنیده با انگد پسر خود از محل سرا بیرون آمد و شوهر را افتاده نظر کرد آنها که عقب روان
انگد بودند رامچندر را با کمان و تیر دیده بگریختند تارا گفت از ترس رام چرا میگریزید راجه
بوزنه ها که شما خادم او بودید او را گذاشته از خوف میدوید بجهت راج برادر برادر را بکشانید
که رام را از دور اشارت کرده بهلاک رسانید این را شنیده همه بوزنه ها جمع آمدند و گفتند پسر تو
زنده باد و بر کرد و پرورش پسر کن جم بجانب رام آمده است و بالی را کشت حالا تو انگد را راج بده
که او محافظت شهر خواهد کرد تارا گفت مرا با پسر چکار و با راج چه سرو کار و با وجود خویش
چکار که شوهر طالعمند میرود و من هم در قدم او خواهم رفت این بگفت و از غم و گریه موی سر
پراکنده کنان و سر و سینه مجروح کنان نزدیک شوهر رفت شوهر را دید کشته بر زمین افتاده
و رام کمان در دست گرفته استاده بنوعیکه اندر از بجر کوه ها بشکند و تارا دل که قسم شیر
برای گوشت بهایم را بکشد یا گرز ما را بگیرد دو بار رام برادر خورد او و برادر شوهر خود دید همه
بر زمین افتاده و گریه و زاری آغاز نهاد چنانکه او را در گریه دیده و بر حال انگد نظر کرده
همه را رقت پیدا شد و دیگر عورات بالی نیز از غم گریه سر کردند تارا با وجود غم آنهمه بوزنه ها را
اطمینان میکرد و میگفت ما همه زنان خراب شدیم و همه در رنج افتادیم و همه را غم کلان رسید

सर्ग-८६

तारा का प्रकट होना

वानरों का वह राजा बाण मारने से धरती पर गिरकर कुछ न कह सका। पत्थर के कणों से उसका शरीर घायल हो गया था इसलिए प्राण त्यागने के निकट हो गया। उसकी स्त्री तारा यह दशा सुनकर अपने पुत्र अंगद के साथ महल से निकली और पति को गिरा हुआ देखा वह लोग जो अंगद के पीछे चल रहे थे राम को धनुष बाण के साथ देखकर भाग खड़े हुए। तारा ने कहा; राम के भय से क्यों भागते हो?वानरों का राजा जिसके तुम सेवक थे उसको छोड़कर डर से भागते हो। इसी कारण भाई का राज्य भाई को देते हैं कि राम को दूर से संकेत करके हत्या कर दे। यह सुनकर सारे वानर एकत्र हो गये। और कहा तुम्हारा पुत्र जीवित रहे वापस जाओ और अपने पुत्र का पालन करो। मृत्यु राम के घर आयी है और उसने बालि को मार डाला तुम अंगद को राज्य दे दो कि अपने शहर की रक्षा करेगा। तारा ने कहा; मुझे लड़के से क्या काम और राज्य से क्या मतलब ?और अपने अस्तित्व से क्या काम ?क्योंकि मेरा भाग्यशाली पति जा रहा है, मैं भी उसके चरणों में जाऊँगी। उसने यह कहते हुए दुख और विलाप के कारण सिर के बाल गन्दे कर लिये और सिर तथा छाती को पीटते हुए पति के पास गयी। उसने पति को देखा कि मरकर धरती पर पड़ा है और राम हाथ में धनुष लेकर इस प्रकार खड़े हैं जैसे इन्द्र वज्र से पर्वत तोड़ते हैं। और शार्दूल जो शेर की एक जाति है मांस के लिए पशुओं को मारता है, या गरूड़ साँप को पकड़ता है और उसने राम के साथ उनके छोटे भाई और अपने पति के भाई को भी देखा। अपने पुत्र सहित धरती पर गिरकर विलाप आरंभ कर दिया। इस प्रकार उसको रोता हुआ देखकर और अंगद की दशा पर दृष्टि करते हुए सबके भीतर दुख व्याप्त हो गया और बालि की दूसरी पत्नियों ने भी रोना आरंभ कर दिया। तारा दुखी होते हुए भी उन सब वानरों को सांत्वना देती थी और कहती थी हम समस्त स्त्रियाँ नष्ट हो गयीं और सब दुख में पड़ गयीं और सबको बड़ा दुख पहुँचा

از یک تیر آرام ما همه کشته شدیم و همه بیوه شدیم و راحت همه رفت بعد ازان روز شهر گرده
ما را از سکینی مانند ستاره که از فلک افتد چنان بر زبان راند از شکستن بیخ وجود تو
ما همه از بیخ بر افتادیم با غم در جهان چسان خواهیم گذراند سخنان شیرین و تبسم ترا یاد آورده
از آتش الم جگر ما میسوزد و با تو در جنگل و جای خوشبو عیشها که کرده ایم از انها نا امید شدیم
و در سمدر ماتم غرق گشتیم ترا بر زمین افتاده دیده جگر ما چرا هزار پاره نمیگردد و تو نه هستی
زن سکریو گرفتی که بهلاک رفتی بپتنک مرگ تو آمد که در بند گشتن سکریو گرفتار گشتی
و این انگد پسر مرا که بناز پرورده ای چرا میگذاری و به پسر خود گفت ای انگد پدر را که دیدن او
بار دیگر مشکل شود به بین و بعد ازان خود با شوهر تو وصل کرده غمگین تر شد و گفت روی انگد را
گرد و در کن و تسلی کن و اطمینان ده و سر این را ببوس که پای تراب سکنی و رام که ترا کشت
بپتنک در کفنه سکریو رفت ای سکریو تو با مقصود باش و بجمعیت خاطر راج بکن که
بداد رعد و تو مرد آواز مضطربانه اینها شنیده عورات انگد وغیره از اندرون شور گریه و زاری
نمودند ازین شور حارس اندرون ببهیتک چنان گفت کسان صواب و گناه را بخاطر کرده
ثمره نیک و بد افعال خود آخرش البته می یابند چیزی را که غم نباید خورد دانایان غم نمیخورند
درین کالبد که مثل حباب است محافظت این انگد پسر بکنید که پسران دایم بجای پدر
لایق باشند آمدن و رفتن جانها ولی قیامی اینها دانسته آدمی را در جهان هیچ دانایی

بنیاد کرد

राम के एक ही बाण से हम सब मारे गये और सब विधवा हो गयीं और सबकी सुख शान्ति चली गयी। उसके बाद अपने पति की ओर मुड़कर तारा दुख से उस तारे के समान जो आकाश से गिरता है यह बात मुख पर लायी ''आपके अस्तित्व की जड़ टूटने से हम सब जड़ से उखड़ गये हम दुख के साथ संसार में कैसे रहेंगे ?आपकी मीठी-मीठी बातें और मुस्कान याद करके दुख की अग्नि से हमारा हृदय जल रहा है, आपके साथ वन में और सुगन्ध के स्थानों में जो सुख हमने भोगा था उससे निराश हो गये और शोक के समुन्द्र में डूब गये। आपको धरती पर पड़ा हुआ देखकर हमारा हृदय हज़ार टुकड़े में क्यों नहीं हो जाता?आपने आसक्ति के कारण से सुग्रीव की पत्नी ले ली जिसके कारण से आहत हुए। निश्चित आपकी मृत्यु आ गयी थी कि सुग्रीव को मारने की पकड़ में आ गये और मेरे पुत्र अंगद को जिसे आपने बड़े जतन से पाला था क्यों छोड़ रहे हो और अपने पुत्र से कहा ऐ अंगद ! पिता को जिसको पुनः देखना कठिन होगा देख लो और उसके पश्चात् पति से निकट होकर और अधिक दुखी हो गयी। और कहा अंगद के मुख पर से धूल साफ कीजिये। सान्त्वना दीजिये, उसको निश्चिन्त कीजिये, उसके मस्तक को चूमिये, कि मिट्टी का पाँव उखाड़ रहे हैं और राम जिन्होंने आपको मारा है निश्चय ही वह सुग्रीव के कहने में आ गये। ऐ सुग्रीव तुम अपना ध्येय प्राप्त करो और निश्चिन्तता के साथ राज्य करो कि तुम्हारा शत्रु भाई मर गया। उन सबकी चिन्तित आवाज सुनकर बालि की स्त्रियों आदि ने अन्दर से रोना चिल्लाना आरंभ कर दिया। इस कोलाहल से अन्दर के पहरेदार ने कहा व्यक्ति पाप और पुण्य के अनुरूप अपने अच्छे और बुरे का फल अन्त में अवश्य पाते हैं। जिस वस्तु को दुख नहीं आता वह खाओ और बुद्धिमान लोग दुख नहीं खाते हैं इस काल चक्र की मुट्ठी में जो एक बुलबुले की भाँति है इस पुत्र अंगद की रक्षा करो कि पुत्र सदैव पिता के स्थान पर योग्य होते हैं। जीवन का आवागमन और उनका अस्थायित्व जानकर व्यक्ति को संसार में कोई बुद्धिमानी की बात नहीं करना चाहिए

نباید کرد و از قصت گریخته هرگز آدمی سیده نشود بدین نمط تارا با زنان

دیگر با بالی سخن میکرد و غم میخورد و دریغ مینمود و دست میسود و بر زمین انجا

که بالی بود افتاده بود درینجا صورت تارا عورت بالی و دیگر عورتهای او که

بهائی چو موپرشان ساخته و او بخاک و خون میغلطد و پسر او انگد نزد پدر استاده

و یکطرف رام و لچهمن و سکریو و هنومان استاده اند

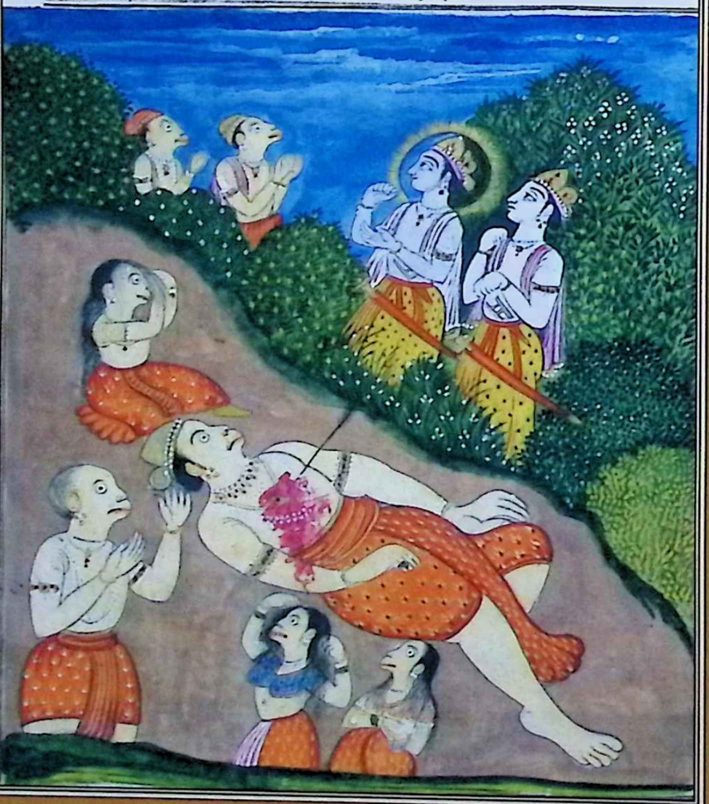

और काल से भागकर व्यक्ति कदापि बच नहीं पाता है। तारा बालि की दूसरी पत्नियों के साथ इसी प्रकार की बात कर रही थी और दुख प्रकट कर रही थी, पश्चाताप कर रही थी ओर जहाँ बालि पड़ा हुआ था वहीं यह भी पड़ी हुई थी।

बालि की पत्नी तारा और उसकी दूसरी स्त्रियों का चित्र जो अपने सिर के बाल फैलाए हुए है और वह रक्त तथा मिट्टी में लोट रहा है और उसका पुत्र अंगद पिता के पास खड़ा है एवं एक ओर राम, लक्ष्मण, सुग्रीव और हनुमान खड़े हैं।

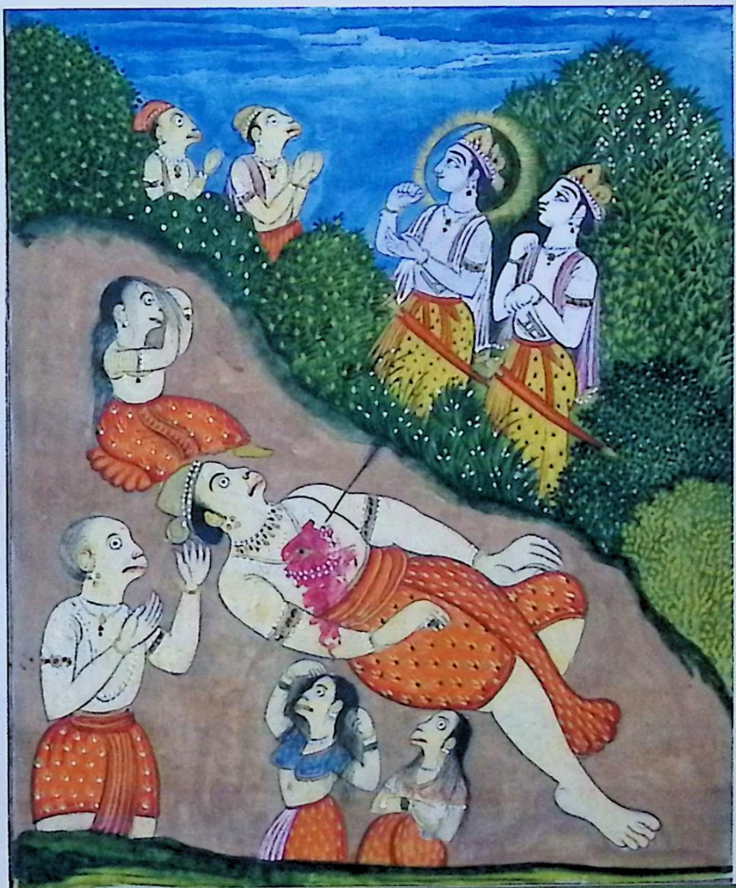

مرگ غم کردن تارا تارا بار دیگر نفسها کشیده و در قدم شوهر افتاده گفت ای اندر بوزنه ها
بی تو زندگی مشکلست اینک من از زندگی آرزو دور کردم و گوشت مرا کده و شغال و زاغ
و غیره خواهند خورد و برای آنها کالبد میگذارم و من پسر عزیز انگد را که بازو بند طلا دارد
میگذارم و محبت از او بر میدارم مرا کسان چه خواهند گفت اما پسران لوک نمیبرد آنجا که
زنان خواهان شوهر میرسند و این راز زنان زمانه نمیدانند پس حکم چنان بجا نیارد که شوهر
خواه عورت انحلاصمنب باشد یا نباشد اگر خبری پسر را بطور نصیحت هم گویند او بخشم آید و اگر شوهر را
بغصه هم گویند او بذیرد بلکه خوش شود و عورت که باختیار پسر باشد چه وفادار و تمام بدهوا یعنی
بیوه زبون ترست اینقدر زبونی ها را دیده جان خود میگذارم بی شوهر مردن خوبست باشد
تارا اینقدر گفته بیقرار شده پیرایه از تن بر آورده لیکن او بی پیرایه هم مانند روهنی که بی ماه
زیبا بود گفت این پسر خوشدامنه بر زمین افتاده و مانند آتش بد وار افتاده و تمام تن از گرد آلوده
و گریه مینمود ناگاه هر طرف نظر کرده سگریو را دید و گفت خوب شد من هم جان خود میدهم
در این جهان زندگی بیهوده هیچست چونکه بالی را کشتی من کشته شدم که بغیر سلاح هم کشتن شوهر
عورت را برابر کشتن است سگریو این را شنیده شرمنده گردیده چشم بر زمین دوخته جای [illegible]
بگفت القصه او همچنین غم و الم میکرد و ماده بوزنه ها نخنان تسلی بهمه انواع میگفتند و
او بار دیگر از گریه گفتن گرفت که پسران مانند انگد اگر صد باشند یکسو و شوهر تنها یکسو و بار

بسمت رام

सर्ग-८७

तारा का शोक करना

तारा ने पुनः ठण्डी आहें भरकर और पति के चरणों में गिरकर कहा; ऐ वानरों के इन्द्र। आपके बिना जीवन कठिन है देखिये मैंने जीवन से आशा को दूर कर दिया है और मेरा माँस गिद्ध गीदड़ और कौए आदि खायेंगे। उनके लिए मैं अपना शरीर छोड़ती हूँ और इससे अपना मोह त्याग करती हूँ। मुझे लोग क्या कहेंगे परन्तु पुत्र उस लोक में नहीं ले जाता है क्योंकि वहाँ पति को प्रेम करने वाली स्त्रियाँ ही पहुँचती हैं। इस बात को इस युग की औरतें नहीं जानती हैं। पुत्र ऐसा आज्ञाकारी नहीं होता जैसा कि पति को चाहने वाली पत्नी होती है। यदि पुत्र को दीक्षा के रूप में कुछ कहते हैं तो वह क्रोधित हो जाता है और यदि पति को क्रोध में पत्नी कुछ कहती है तो वह बुरा नहीं मानता है, अपितु प्रसन्न होता है। और जो स्त्री पुत्र के वश में होती है वह क्या वफ़ा करेंगी। विधवा अधिक बदनाम है मैं इतनी बदनामियाँ और बुराइयाँ देखकर ही प्राण दे रही हूँ। बिना पति के मर जाना ही उचित है। तारा ने इतना कहकर व्याकुल होकर शरीर से वस्त्र उतार दिया लेकिन वह बिना वस्त्र के भी जैसे कि रोहिणी बिना चाँद के होती है सुन्दर थी। उसने कहा; मेरी सास का यह पुत्र धरती पर पड़ा हुआ है और अग्नि के समान दो बादलों में पड़ा है और उसका पूरा शरीर मिट्टी से भरा है यह कहकर वह रोती थी। अचानक उसने चारों ओर दृष्टि डाली और सुग्रीव को देखकर कहा; अच्छा हुआ मैं भी अपने प्राण दे रही हूँ इस संसार में विधवा का जीवन तुच्छ है। चूँकि तुमने बालि को मारा इसलिये मैं मारी गयी। क्योंकि बिना हथियार के भी स्त्री के पति को मारना उसे हत्या करने के ही समान है। सुग्रीव यह सुनकर लज्जित हुआ और उसने दृष्टि धरती में गाड़ दी और कोई उत्तर नहीं दिया। अतः वह इसी प्रकार दुख प्रकट कर रही थी और बन्दरिया उसे विभिन्न प्रकार से सांत्वना दे रही थी उसने फिर पुनः रोते हुए कहना आरंभ किया कि यदि पुत्र अंगद के समान हो तो वह एक ओर, पति अकेला एक ओर। उसने फिर राम से

بسمت رام خطاب کرد تو که در نسب راج رکهه پیدا شدی و در جنگل بخوردن ثمرات صحرای
گذراندی بکشتن بالی بی دشمنی لایق نبودی واگر برای دوستی سکریو برای کار خود کردی
چرا با بالی نکردی و مرا نزد یک شوهر مرده خود مردن خوبست که پدر بقدر خرج میدهد
و برادر هم همین مقدار و پسر هم همچنین لیکن شوهر بی اندازه دهد او را کدام نمیرسند تو
چرا با بالی راه نکردی که اگر اندر وغیره سیتا را گرفته بودی او هم مدد بالی شتاب کی یافتی
و کسیکه چند بار بر سکریو غالب آمده باشد، الا از تیر رام جان میدهد وای رام من چون
پت برتا هستم میتوانم ترا نیز شاپ دهم اما ما که سیتا در بندگی دیست تو لایق شاپ
نیستی و تو هم او را شتاب خواهی آورد و او بسبب شاپ من نزد تو بسیار نخواهد ماند اما
باعث پاکی خود و هنر پت برتا او در زمین خواهد رفت با وجودیکه تو خواهش او خواهی کرد
بعد از ان انگد پسر خود که قریب استاده بود گفت با دوست دشمنی نباید کرد و نگاهداشتن
دوست دشوار است زیرا که هر گاه از دوست دشمنی نماید شخص را از بیخ برکند اینقدر گفت
و سر او نزد یک زانو گرفت و گریه و غم آغاز کرد بالی با وجودیکه بیهوش بود از شنیدن شور او
چشم بکشاد و هنگام حالت نزع برام گفت تو پسر راجه باشی و طور و لباس مانند دهرماتما نیست
باین لباس کار زشت چرا میکنی و شم یعنی تسخیر دل و دان یعنی بخشش و دیا یعنی مهربانی
بر ضعفا و ست یعنی راستی و پراکرم یعنی شجاعت این فنون راجهاست و سزا دادن بدکاران

कहा कि आप राजर्षि के परिवार में उत्पन्न हुए और वन में जंगली फल खाकर बिताया आप बालि को बिना किसी शत्रुत्रा के मारने वाले न थे। यदि आपने सुग्रीव की मित्रता के लिए और अपने कार्य के लिये ऐसा किया है तो यही कार्य बालि के साथ क्यों नहीं किया ?और मेरे लिए मुर्दा पति के पास मरना अच्छा है। क्योंकि पिता आवश्यकतानुसार व्यय देता है और भाई भी इतना ही देता है और पुत्र भी ऐसा ही होता है लेकिन पति अनुमान से अधिक देता है। इसको कोई नहीं मानता है। आपने बालि को क्यों नहीं आदेश दिया कि यदि इन्द्र आदि सीता को ले गये होते तो आप बाली की सहायता से उन्हें शीघ्र ही पा लेते। और जो व्यक्ति कि कई बार सुग्रीव पर भारी पड़ चुका है अब राम के बाण से प्राण दे रहा है। और हे राम ! मैं चूंकि पतिव्रता हूँ इसलिये तुम्हें भी शाप दे सकती हूँ। लेकिन चूँकि सीता दूसरे की क़ैद में हैं इसलिये आप शाप के भागीदार नहीं हैं। तुम भी उनको शीघ्र लाओगे और वह मेरे शाप के कारण आपके पास अधिक नहीं रहेगी अपितु वह अपनी पवित्रता और पतिव्रता के कारण धरती में समा जायेगी। इसके अतिरिक्त कि आपको उनकी इच्छा होगी उसके बाद उसने अपने पुत्र अंगद से जो निकट ही खड़ा था कहा; मित्र के साथ शत्रुता नहीं करनी चाहिए और मित्र की देखभाल कठिन है। क्योंकि जिस समय मित्र की ओर से शत्रुता प्रकट होती है उस व्यक्ति को जड़ से उखाड़ देती है। इतना कहकर उसका सिर जाँघों के निकट कर लिया और रोना और दुख करना आरंभ कर दिया। बालि ने जो कि मूर्छित था उसका शोर सुनकर आँखें खोल दीं और मरणासन्न की अवस्था में राम से कहा; आप राजा के पुत्र हैं और आपके वस्त्र और कार्यकलाप धर्मात्माओं की भाँति हैं। आपके इस वस्त्र में बुराई क्यों करते हैं?और दशम अर्थात् दिलों को जीतना, और दान अर्थात् देना, और दया अर्थात् निर्बलों पर कृपा और सत्य अर्थात् सच्चाई और पराक्रम अर्थात् वीरता यह राजाओं की विशेषता है

نیز فن هست ولیکن ما باشند کان صحرا و خورندکان ثمرات ایم آنطور در ما نیست
چنانچه آدمیان راست نه دهرم را دانیم نخواهش را تهه کنیم اندریان یعنی مایان را
بخود میکشند چنانچه طایر بسته رسن باشد تو ازین تبر کار زبون کردی وکشتن بهایم
برائی زمین یا زر یا جاه لازم باشد تو در من ازینجا چه دیدی زیرا که این زمین با کوه
وصحرا ازان اولاد اچهواکو ست و بهایم وطیور را سزا دادن وجزا دادن هم اختیار
آنست واین را محافظت بهرت میکند که راست گو و پاک روست و داننده ثمره
دهرم وارتهه وکام هست و دهنده جزا و سزاست و نیت یعنی دستور و نیت یعنی
خلاف همه درو ست که دهرم او را نا معین میدانیم با وجود حراست او از دهرم
این عقل تو چه شد ما خلاف طریق نیستیم و بدهرم مقیدیم و حکم بهرت را بجا می آرم
و تو که از راج افتاده خلاف دهرم گزین خواهش خود را پیش خاطر نموده خلاف راه
رفتی بد کردی رام بار دیگر گفت بشنو که برائی آن کشتم با عورت برادر خورد خود صحبت
داشتی لهذا کشتم و برادر کلان و پدر از هر که بد یعنی علم آموخته شود هر سه پدر
یعنی پدر باشند و برادر خورد و پسر و شاگرد هر سه پسر باشند تو این طریق را گذاشته
خلاف کردی و با عورت برادر خورد صحبت کردی لهذا کشتم و مردن تو لایق دیدم
و راجه بهرت از حکم من راج میکند و تو که از دهرم گذشته مرا چرا نصیحت میکنی و بهرت

هم چنان

और बुरों को दण्ड देना भी एक गुण और विशेषता है। लेकिन हम वन में रहने वाले और फल खाने वाले हैं वह विधि विधान हम में नहीं है जो कि व्यक्तियों में है न हम धर्म को जानते हैं और न इच्छा को रोकते हैं। इन्द्र मायान को स्वयं मारता है जैसे कि रस्सी से बँधा हुआ पक्षी होता है। आपने उससे भी अधिक बुरा काम किया और पशुओं को मारना धरती के लिए या धन के लिए, या पद व धन के लिए उचित होता है। आपने मुझमें इनमें से क्या देखा ?क्योंकि यह पृथ्वी पर्वत और वन सहित इक्ष्वाकु की सन्तान की है। पशुओं और पक्षियों को दण्ड तथा फल देना भी उनका ही अधिकार है । उसकी रक्षा और देखभाल भरत करते हैं जो सत्य मार्ग पर चलने वाला, पवित्र आचरण वाला है, धर्म का फल जानने वाला है और दण्ड व फल देने वाले हैं। नियति और नियम उनके हाथ में है कि मैं उनके धर्म को जानता अनिश्चित जानता हूँ कि उनकी रक्षा के उपरान्त आपकी बुद्धि को क्या हो गया था। हम विधि के विरुद्ध नहीं हैं और धर्म के अनुरूप हैं और भरत की आज्ञा का पालन करते हैं और आप जो कि राज्य से दूर पड़े हुए हैं धर्म के विरुद्ध नियम अपनाकर और अपनी इच्छा को सामने रखकर सही मार्ग के विरुद्ध चले बुरा किया। राम ने पुनः कहा कि सुनो ! मैंने तुमको इसलिए मारा कि तुम अपने छोटे भाई की पत्नी के साथ सम्पर्क में आते थे। बड़ा भाई और पिता तथा गुरू जिससे ज्ञान प्राप्त करते हैं तीनों गुरु अर्थात् पिता होते है। छोटे भाई की पत्नी से संभोग किया, अतः मैंने तुम्हें मारा और तुम्हारा मरना ही उचित दिखा तथा राजा भरत मेरे आदेश से राज्य कर रहे हैं और तुम जो कि धर्म से फिर गये हो मुझे क्यों दीक्षा दे रहे हो

هم چنان کسا زا به اینزا میرساند ومن بهرت را امر کرده برای سزادادن مثل توغم
مصمم کرده ام و با سگریو مرا دوستی شد چنانچه با لچهمن و برائی عورت وراج ترا
سزادادم ومن پرتنگیا بحضور بوزنه ها کردم چگونه خلاف آن کنم برای این سزادادن
تو لازم آمد تو هم عهد قبول کن و سزائی تو بهر نوع دهرم بود تو غم مکن من ترا باختیار خود
نکشتم گفته رام را شنیده بالی دل خود را بخود کشیده هیچ نگفت و چون حواس و
عقل و دل از جا جنبیدن گرفت سگریو و پسر خود را دیده گفت ای سگریو بر کردار زشت
من نظر مکن از مستی و رفتن هوش چنان میشود اینک راج بوزنه ها تو بکن ومن
اکنون نزد جم میروم و این زندگی و راج و دولت میگذارم و حشتی که کرده ام هم میگذارم
و در بخالت ترا میگویم این را شنیده و در دل نگاه دار این تیر رام که در وجود من
خزید همه حواس و جان را گرفته خواهد رفت و آنچه من بد کرده ام آنرا معاف کن
و این پسر انگد را که از ناز پرورده ام و گاهی قبل ازین غم ندیده است و مرا از جان
عزیزتر است این را تو پرورش کن و تو پرورنده و ادب دهنده و حفظ کننده و
ایمنی دهنده این همچو من باش و این پسر خود تارا است و بقوت برابر نیست بعد مردنم
این را تو جوراج بکن و در رفتن نزد سیتا و دیدن راون و کشتن را چهسان پیشرو تو
خواهد شد و این جوان با قوت است در جنگ کارهائی خوب خواهد نمود اما اگر دختر

और भरत भी ऐसे लोगों को दण्ड तक पहुँचाता है। मैंने भरत को आदेश देकर तुम जैसों को दण्ड देने का दृढ़ निश्चय कर लिया है और सुग्रीव के साथ मेरी ऐसी मित्रता हो गयी है जैसे कि लक्ष्मण के साथ। मैंने स्त्री और राज्य के लिये तुमको दण्ड दिया और मैंने वानरों के सामने प्रण किया है, उसके विरुद्ध कैसे करूंगा। तुझको दण्ड देना आवश्यक है। तू भी इसे स्वीकार कर, तेरा दण्ड हर प्रकार से न्याय पर आधारित है तू दुख मत कर। मैंने तुझको अपने अधिकार से नहीं मारा। राम की बात सुनकर बालि ने अपने मन को दुखी कर कुछ नहीं कहा और जब उसका होश, बुद्धि और हृदय अपने स्थान से हिलने लगा तो उसने सुग्रीव और अपने पुत्र को देखकर कहा; ऐ सुग्रीव! लौट जाओ। बुराई के साथ मुझे न देखो। मस्ती और होश के चले जाने से ऐसा ही होता है। अब वानरों पर राज्य तुम ही करो और मैं जम के पास जाता हूँ और यह जीवन राज्य और धन छोड़ता हूँ। और जशन जो मैंने किया है वह भी छोड़ता हूँ और इस दशा में तुमसे कहता हूँ इसको सुनकर हृदय में सुरक्षित रखना। राम का यह बाण जो मेरे अन्दर घुसा है यह प्राण लेकर ही जायेगा। मैंने जो कुछ बुरा किया है उसे क्षमा करो और मेरे इस पुत्र अंगद को जिसका बड़े लाड़ प्यार से मैंने पालन किया है, उसने इससे पहले कोई दुख नहीं देखा है और मुझको प्राण से अधिक प्रिय है। उसको अब तुम ही पालो और तुम मेरे समान उसका पालन करने वाले, सभ्यता सिखाने वाले, रक्षा करने वाले और शान्ति व संरक्षण देने वाले बन जाओ। यह स्वयं तारा का पुत्र है और शक्ति में मेरे समान है मेरे मरने के बाद तुम उसे उत्तराधिकारी बना देना और यह सीता के पास जाने, रावण को देखने और राक्षसों की हत्या करने में तुम्हारा अगुवा होगा। यह शक्तिशाली युवक है। युद्ध में अच्छे कार्य करेगा।

سکهین که تارا باشد اگر قبول کنی بیشبه زن خود بکن و خلاف عقل او نباید کرد
و ترا کار رام البته باید کرد و از ناکردن آن او برهم خواهد شد تا همچو من کشته نشوی و این
مالای طلائی بگیر بعد مردن من این دولت کلان ترا نصیب باد این بگفت و بعد از ان
سمت رام دست بسته نمسکار کرده بطریق سپارش پسر چنان بگفت بعد مردن من انگد
مسکین تر خواهد شد و بهمین فکر هستم که در سرگ انگد را نخواهم دید و هنوز از دیدن این پسر
سیر نشده‌ام و از تیر تو میمیرم و تو پناه همه ذیحیات هستی پسر مرا بگیر و این مالای طلای بگیر
که صد لشکر دارد و اندر مرا داده هست و بلچهمن بده که بسگریو بدهد و یا تو خود بسگریو بده
رامچندر با آن مضطرب حال بالی گفت از ضرب سلاح من پاک شدی بلوک بیکهاند برو
و آن مالای طلائی بسگریو داد و بالی گفته رامچندر را شنیده غم مرگ از خود دور نمود
بعد از ان بانگد نام پسر گفت در ملکها و قلعها و دشمنان و دوستان متحمل خواهی
شد و در رنج و راحت محکوم سگریو خواهی شد و چنانچه بر من ناز میکردی بر سگریو
نخواهی کرد شاید خوش نیاید و پیوسته در مرضی والی خود باشی و کار را نه
بسیار محبت و به بسیار دشمنی کنی هر دو درجه را نگاهداری این بگفت
و چشم برگردانده و دندانها کشاده بیجان شد تارا او را تکیه و پناه
کرده بر زمین افتاده چنانکه شاخ بناگانی درخت کلان شکسته بود

بخلوت تارا

सखीन की पुत्री अर्थात् तारा यदि स्वीकार करे तो तुम निःसंकोच उसे अपनी पत्नी बना लो और उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य करना चाहिये और तुम्हें राम का कार्य अवश्य करना चाहिए। उसके न करने से अधर्म अर्थात् अत्याचार होगा, जब तक कि तुम मेरी तरह मारे न जाओ। और यह सोने की माला लो। मेरे मरने के बाद इतना बड़ा धन तुम्हें मिले। उसने यह कहा और इसके बाद राम की ओर हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए पुत्र की अनुशंसा के रूप में कहा ''मेरे मरने के बाद अंगद बहुत अधिक दुखी हो जायेगा और मैं इसी चिन्ता में हूँ कि मैं स्वर्ग में अगंद को नहीं देखूंगा। अभी तक मैं पुत्र को देखने से मेरा मन नहीं भरा। आपके बाण से मर रहा हूँ और सारे जगत के आप संरक्षक हैं। मेरे पुत्र को ले लीजिये। और यह सोने की माला भी ले लीजिये जिसमें सौ मोती हैं जिसे इन्द्र ने मुझे दिया है और लक्ष्मण को दे दीजिये कि सुग्रीव को दे दे या आप स्वयं ही सुग्रीव को दे दीजिये।'' रामचन्द्र ने इस चिन्तित बालि से कहा; 'मेरे हथियार की चोट से तुम पवित्र हो गये। अब महालोक इन्द्र में जाओ और वह सोने की माला सुग्रीव को दे दो।'' बालि ने रामचन्द्र की बात सुनकर मृत्यु का दुख अपने से दूर किया उसके बाद अंगद नामी लड़के से कहा; तुम देशों, समय, शत्रुओं और मित्रों पर निर्भर रहोगे और दुख सुख में सुग्रीव के आधीन रहोगे। संभवतः उसको अच्छा न लगे और तुम सदा अपने मालिक की इच्छानुसार रहोगे। और तुम काम से न बहुत प्रेम करोगे और न बहुत शत्रुता, दोनों स्थिति में सतर्क रहोगे। उसने यह कहा और आँख उठाकर और दाँत खोलकर निर्जीव हो गया। तारा उसको सहारा और टेक लगाकर इस प्रकार धरती पर गिर पड़ी जैसे कि किसी बड़े वृक्ष की टहनी तोड़ी जाती है।

درینجا صورت تارا موپریشان و سر بالی بیجان بر زانو نهاده گریه کنان و دو عورت
دیگر نیز همچنان بسر عریان نعره زنان و انگد نوجوان ازین ماجرا حیران و انگشت
حیرت بدندان و تیر در تن بالی پنهان و از زخم او خون روان و رام و لچهمن
و دو سه بوزنه و هنومان از طرف نظر کنان

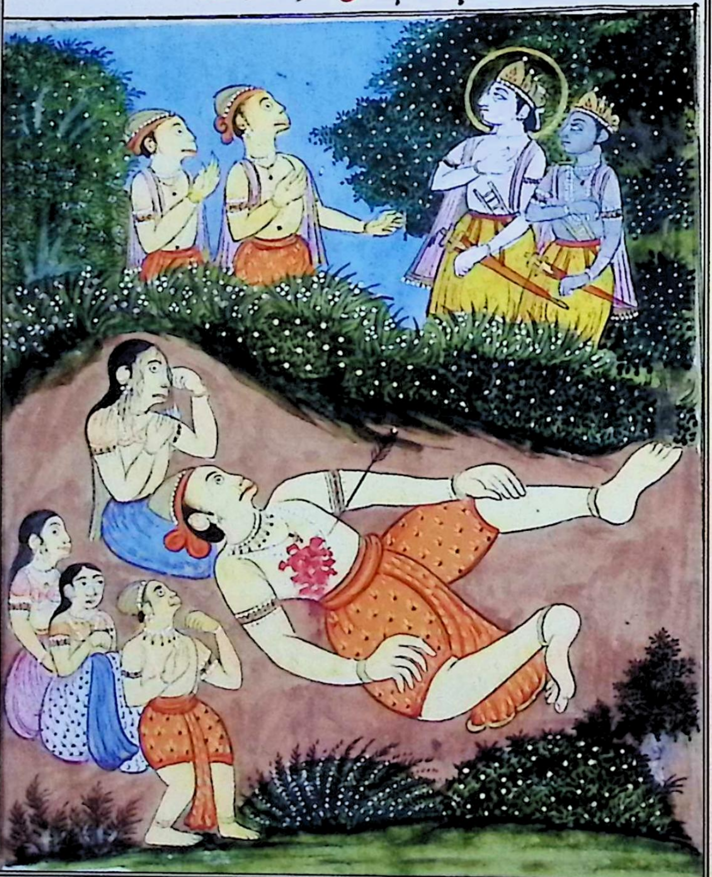

तारा का चित्र जो बाल बिखराए और निर्जीव बालि का सिर घुटनों पर रखे रो रही है और दो तीन स्त्रियाँ भी इसी प्रकार नंगे सिर चिल्ला रही हैं। नवयुवक अंगद इन सब से हैरान है और बाली के शरीर में बाण लगा है तथा उसके घाव से रक्त बह रहा है, और राम लक्ष्मण एवं दो तीन वानर और हनुमान एक ओर से देख रहे हैं।

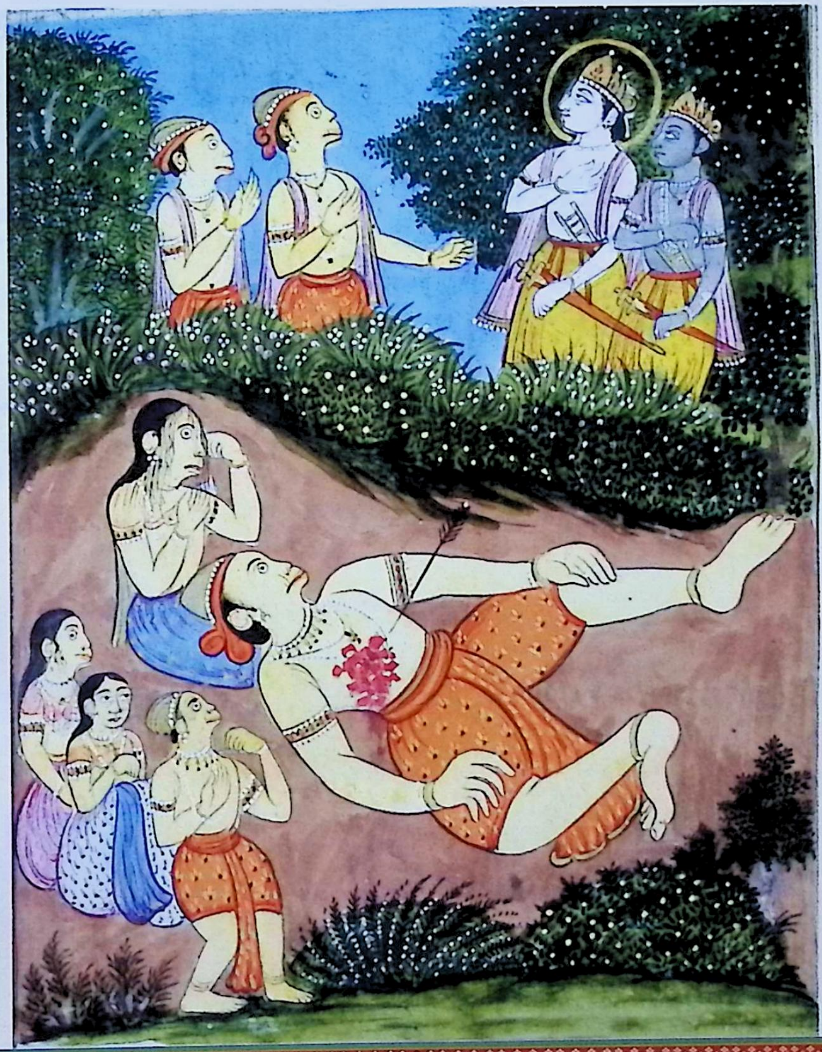

که ماتم تارا بعد ازان بار دیکر بشوهر مرده خطاب کرده کفت تو کفتی مرا کردی
اینک جان بلب رساندی از نسبت من دیکرانرا عزیز داشتی دیکرانرا تسلی کردی
و مرا هیچ نکفتی و بلند قدران و قوتمندان خرس و بوزنه ها بسیار در خدمت تو هستند
وانکد و غیره هم هستند چرا با ایشان شادی نمیکنی این انکد پسر تو میکرید و سینه های
تو میکرید چرا نمیشنوی برخیز و خفتن زمین بکذار همچنین شجاعان بر زمین افتند
و ترا زمین از نسبت من عزیزترست که بیجان کشته برو خفته و با من سخنی نمیکویی
و مرا میکذاری و دانایان کویند دختر را بجنک طلب نباید داد چنانچه من عورت
جنک طلب بیوه شدم نحوست من و نیکراهی من رفت در ساکر ژرف ماتم غرق شدم
و من میدانم که جکر من چون سنک سخت است که از مردن شوهر صد پاره نمیشود
و عورت بی شوهر با وجود پسر و دولت نیک نباشد نام بیوه خود بروست و سکریو حالا
بمطلب خود رسید که تو به تیر رام کشته شدی بدین آیین تارا مینالید که نیل نام بوزنه
تیر را از جسم بالی برکشید که از برآوردن آن خون از وجود او مانند ابر بچکید و بیجان کردید تارا
با چشم اشک آلوده نظر کرده به انکد کفت هنکام آخر به پتی نمسکار بکن انکد قدم پدر بکرفت
و نام خود کفت من انکدم تارا از کریه کفت چرا چنانچه پیشتر در جواب میکفتی عمرت
دراز باد حالا نمیکویی و مالا که اندر در جنک بخشیده بود در کردن سکریو می بینم و تو راج

सर्ग-८८

तारा का शोक

तारा ने इसके बाद पुनः मृत पति को संबोधित करते हुए कहा; "तुमने मेरा कहा नहीं किया, देख लो जान चली गयी। मेरे मुकाबले दूसरों को प्रिय रखा, दूसरों को सांत्वना और मुझसे कुछ नहीं कहा। उच्च स्थान वाले और गूंगे शक्तिशाली तथा बहुत से वानर तुम्हारी सेवा में हैं और अंगद आदि भी हैं। तुम क्यों उनके साथ संवाद नहीं करते। यह तुम्हारा पुत्र अंगद रो रहा है, और तुम्हारे साले रो रहे हैं, तुम क्यों नहीं सुनते?उठो! और धरती पर सोना छोड़ो। वीर लोग इस प्रकार धरती पर गिरते हैं, तुमको धरती मुझसे अधिक प्रिय है कि निर्जीव होकर उस पर सो रहे हो, और मुझसे कोई बात नहीं कर रहे हो, एवं मुझे छोड़ रहे हो। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि योद्धा को पुत्री नहीं देनी चाहिए जैसे कि मैं योद्धा की पत्नी विधवा हो गयी, मेरी घमण्ड और सदाचारिता सब समाप्त हो गयी और मैं शोक के समुन्द्र में डूब गयी। मैं जानती हूँ कि मेरा हृदय पत्थर के समान कठोर है कि पति के मरने पर भी सौ टुकड़े नहीं होता है। बिना पति के स्त्री, पुत्र और धन के होते हुए सदाचारी नहीं रहती है। विधवा का नाम ही बुरा है और अब सुग्रीव अपने उद्देश्य को पहुँचा कि तुम राम के बाण से मारे गये।" इसी प्रकार तारा विलाप कर रही थी कि नील नामी एक वानर ने बालि के शरीर से बाण निकाला। जिसके निकालने से उसके शरीर से बादल की भाँति रक्त बहने लगा और वह निर्जीव हो गया। तारा ने अश्रु भरी आँखों से उसकी ओर देखते हुए अंगद से कहा; अन्तिम समय देख लो और नमस्कार कर लो अंगद ने पिता के पाँव पकड़ लिये और अपना नाम बताया कि मैं अंगद हूँ। तारा ने रोते हुए कहा; क्यों आप जैसे पहले उत्तर में कहते थे कि तुम्हारी लम्बी आयु हो इस समय क्यों नहीं कह रहे हैं ?और जो माला कि इन्द्र ने आपको युद्ध में दिया था वह मैं सुग्रीव के गले में देख रही हूँ

و دولت کذاشته میروي مانند آفتاب بمغرب چنانچه سابق کشکندها را نظر میکردي
حالا راه سرک را بنظر مي آید اکر همراهي تو مرا در عاقبت میسر آید پس جان خود را بکذارم
ولیکن مرک خود یک باعث است در اصل ثمره کردار خود یافته کالبد را کذاشته میروي و تو
کفته مرا نشنیدي و من بمنع کردن قدرت نداشتم کشته کشتي و از مردن تو من هم با پسر خراب
شدم دولت و اقبال من میرود و تو به پرلوک برو لیکن مرا و پسر را و برادران و اقربا را
کذاشته رفتن لایق تو نبود چه تقصیر کردیم که کذاشته میروي و اکر کرده ایم آنرا معاف کرده بلوک

چون کنشندکان برو در نیجارت بالی مرده تیر خورده خون از بدن روان کشته و انکد پای او کرفته
و سکریو تیر از زخم کشیده و هنومان دو و بوزنه دیکر نزدیک استاده و تارا وغیره موی پریشان ساخته
و رام و لچهمن بر کنار استاده اند

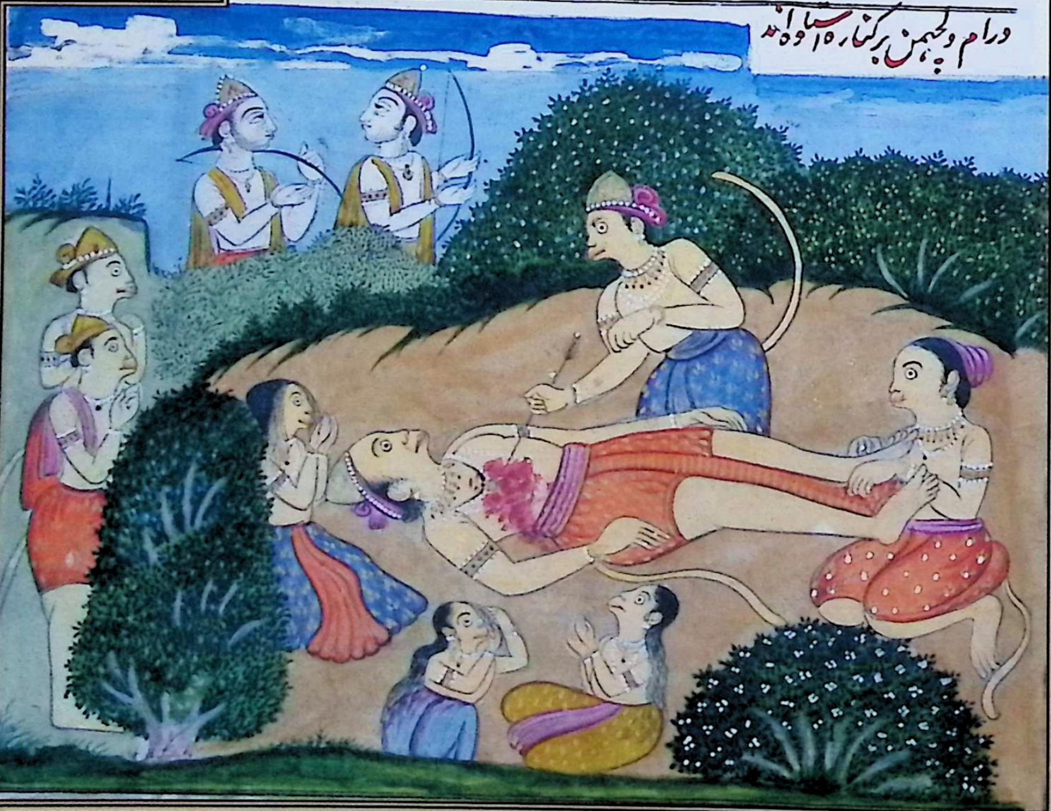

और आप राज्य और धन छोड़कर जा रहे हैं जैसे कि सूर्य पश्चिम में जाता है। जिस प्रकार पहले आप किष्किन्धा को देखते थे अब आपको स्वर्ग का मार्ग दिखाई दे रहा है। यदि परलोक में आपका साथ मुझे भी मिल जाये तो मैं भी अपने प्राण त्याग दूँ लेकिन मृत्यु स्वयं एक कारण है वास्तव में आप अपने चरित्र का फल हम पाकर और शरीर छोड़कर जा रहे हैं। आपने मेरी बात नहीं सुनी और मैं रोकने की क्षमता नहीं रखती थी अतः आप मारे गये और आपके मरने से मैं भी पुत्र सहित नष्ट हो गयी। मेरा धन और विदा हो गया और आप परलोक जाइये। लेकिन मुझे और पुत्र को भाईयों और सम्बन्धियों को छोड़कर जाना आपको शोभा नहीं देता। हमने कौन सा पाप किया है कि आप हमें छोड़कर जा रहे हैं ?और यदि पाप किया है तो उसे क्षमा करके लोक में पुण्य करने वालों के साथ जाइये।

बालि का चित्र जो निर्जीव है, बाण लगा हुआ है, और उसके शरीर से रक्त निकल रहा है। अंगद ने उसके पाँव पकड़ रखे हैं। सुग्रीव ने घाव से बाण खींचा है और हनुमान तथा दूसरे वानर निकट खड़े हैं, और तारा आदि बाल बिखराये हुए हैं, राम एवं लक्ष्मण किनारे पर खड़े हैं।

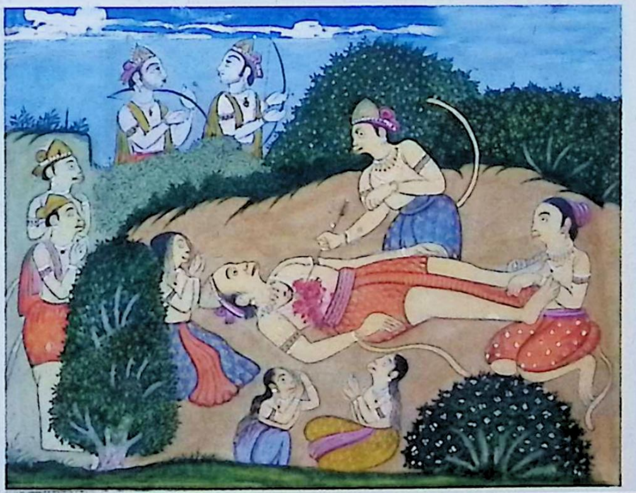

سرگ سنسکار بالی بالی را مرده دیده لچهمن بسگریو گفت که جربت کارج یعنی کار آخرت
این را بکنید و تارا و انگد را همراه گرفته بالی را بسوزید و هیمه خشک و صندل وغیره بیارید و انگد
و تارا را تسلی بکنید و عقل کودکانه بگذارید که این شهر محکوم تست و مالها و پارچه هار گوناگون
و روغن گاو و روغن کنجد و خوشبوها وغیره بیارید و شبکا یعنی تابان بطوریکه بهر داشتن
مرده کنند تو بردار شبکا خوب باشد که در آنوقت تخصیص خوب ماند و همه بوزنه ها برای
برداشتن شبکا طیار شوند تا بالی را بردارند گفته لچهمن را شنیده تار نام بوزنه اندر کوهها
رفت و برای سنسکار بالی شبکا آورد سگریو بالی را برداشته در شبکا نهاد و انگد هم
در سنسکار مدد کار شده بالا و پارچه های خوب او را آراسته برداشتند آنجه سگریو امر کرد که کار
آخرت او بکنید پیش پیش بوزنه ها روان شدند بعد از آن شبکا و انگد و تارا وغیره عورات
گریه کنان از عقب روان شدند چنانچه از گریه اینها بوزنه کوه و صحرا در گریه شدند در کناره
دریا قریب کوه بوزنه ها چتا کردند و شبکا را از دوش فرود آوردند و همگنان یکسو ایستادند
تارا بار دیگر سر میت را گرفته گریه و زاری بسیار کرد و گفت اینک انگد پسر تست چرا او را نمی بینی
و روی تو با آنکه بجان شده بوزنه ها خوشوقت می بینند چنانچه در زندگی بود و مرگ تو بلباس
رام آمده که ما همه را بیوه کرد اینک زنان عزیز جانت پیاده از شهر آمده اند و نزد عورات
ماهرویانت سگریو استاده چرا حسد نمی بری و اینک تار بوزنه وغیره منتریان تو هستند اینها را

رفت

सर्ग-८६

बालि का अन्तिम संस्कार

बालि को निर्जीव देखकर लक्ष्मण ने सुग्रीव से कहा कि इसका अन्तिम संस्कार कर दो। तारा और अंगद को साथ लेकर बालि का अन्तिम संस्कार कर दो और सूखी लकड़ी तथा चन्दन आदि लाओ और अंगद तथा तारा को सांत्वना दो, और बचपना छोड़ो कि अब यह शहर तुम्हारे आधीन है। विभिन्न प्रकार की माला, वस्त्र, गाय की चर्बी और तिल का तेल और सुगन्ध आदि लाओ। शव को ले जाने के लिए विमान, जैसा कि लोग बनाते हैं, तुम उठाओ शिबका अच्छा रहेगा विशेष रूप से इस समय अच्छा रहेगा। समस्त वानर शिबका उठाने के लिए तैयार रहें ताकि बालि को उठायें। लक्ष्मण की बात सुनकर तार नामी वानर पर्वत के अन्दर गया और बालि के अन्तिम संस्कार के लिये शिबका लाया और सुग्रीव ने बालि को उठाकर शिबका में रखा। अंगद भी इस कार्य में सहायक हुआ और माला अच्छे वस्त्रों से उसको सुसज्जित किया। राजा सुग्रीव ने आज्ञा दिया कि इसकी क्रियाकर्म करो। आगे-आगे वानर चले उसके बाद शिबका और अगंद, तारा और दूसरी स्त्रियाँ उसके पीछे रोती हुई चलीं उनके रोने से पर्वत और वन के बन्दर भी रोने लगे। नदी के किनारे पर्वत के निकट वानरों ने चिता बनाई और शव को कन्धे से नीचे उतारा तथा सब एक ओर खड़े हो गये। तारा ने पुनः शव का सिर पकड़कर बहुत अधिक विलाप किया और कहा; "यह तुम्हारा पुत्र अंगद है उसे तुम क्यों नहीं देखते ?वानर भली प्रकार देख रहे हैं, जैसा कि जीवन में था, और तुम्हारी मृत्यु राम के रूप में आयी थी ?कि जिसने हम सबको विधवा कर दिया। यह तुम्हारी प्राण प्रिया स्त्रियाँ शहर से पैदल आयी हैं और तुम्हारी कुशल स्त्रियों के निकट सुग्रीव खड़ा है। तुम्हें उससे ईर्ष्या नहीं हो रही है और यह तार वानर आदि तुम्हारे मंत्री हैं

رخصت بکن تا مان با تو معاشرت کنیم القصه تارا بدین آئین گریه و ناله میکرد و بوزنه ها او ده
منع میکردند که انگد و سگریو مرده را بر چتا نهادند و انگد با حسن وجوه آتش داد و اپسب
کرد یعنی بطرف چپ کردید بعد از آن بوزنه ها با حسن وجوه کریا بالی کرده بر پنپا رفتند
و جل کریا کردند یعنی بنام او آب دادند و غسل کردند بعد از آن همگنان برای دیدن رام
و لچهمن آمدند و معه سگریو و انگد دست بسته ایستادند و احوال گذشته بالی بیان میکردند

درینجا صورت چتائی بالی بر دریای پنپا بالی را در آن نهاده انگد آتش داده و سگریو استاده
و دیگر بوزنه ها نیز استاده اند و تارا و دیگر عورات او شیون و ماتم زیر میکنند

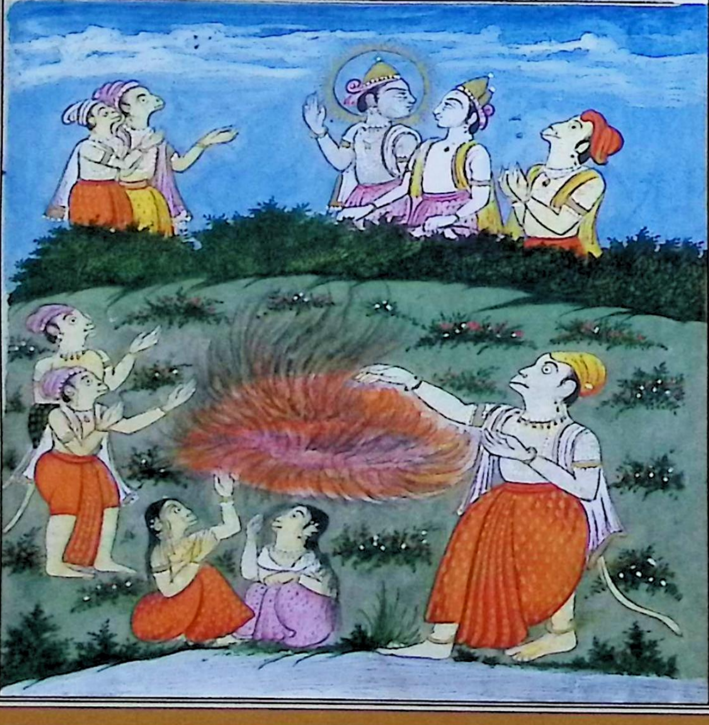

उनको विदा करो ताकि हम तुम्हारे साथ रहें।'' अतः तारा इसी प्रकार विलाप कर रही थी और बन्दरिया रो रही थी कि इतने में अंगद और सुग्रीव ने शव को चिता पर रखा और अंगद ने भली प्रकार आग लगा दी एवं बायीं तरफ घूमा। उसके बन्दर अच्छी तरह बालि का क्रिया करके पम्पा पर चले गये और जलक्रिया किया अर्थात् उसके नाम पर जल दिया और स्नान किया उसके बाद सब राम और लक्ष्मण को देखने के लिये आये। सुग्रीव और अंगद के साथ हाथ जोड़कर खड़े हो गये तथा बालि के बीते हुए दिन का वर्णन किया।

पम्पा नदी पर बालि की चिता का चित्र, बालि को उस पर रखकर अंगद ने अग्नि दी। सुग्रीव खड़ा है एक ओर दूसरे वानर भी खड़े हैं और तारा एवं उसकी दूसरी पत्नियाँ शोक कर रही हैं।

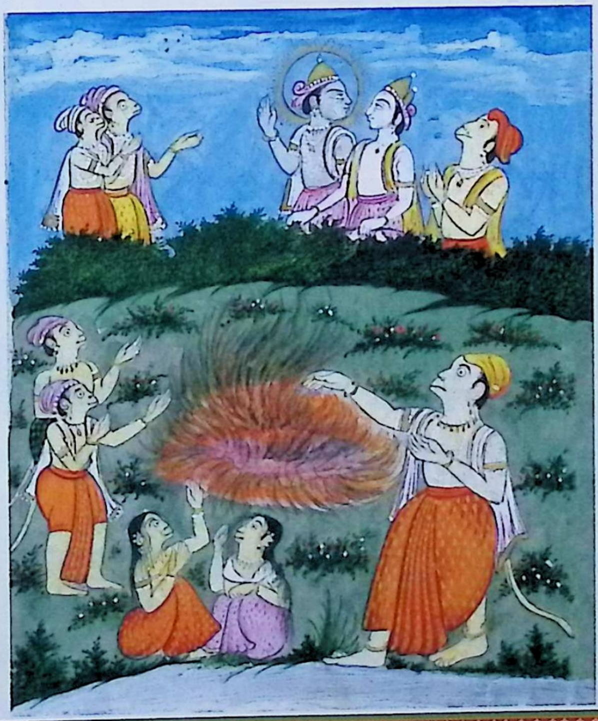

سرک راج دادن بسکریو و انگد تا ده روز سکریو با انگد پریت کارج برادر نمود چون پاک شد
سکریو و همه بوزنه ها نزد رام رفتند و دست بسته استادند بنوعیکه پیش بر بها
رکهه ها ایستند بعد از ان هنومان پسر باد که مانند کوه طلا نمودار است و چون آفتاب
رو دارد دست بسته عرض نمود که از مهربانی تو سکریو راج آبا و اجداد خود که از بوزنه ها
یافتن دشوار بود می یابد برائی در آمدن شهر حکم شما میخواهد تا اقربا و برادران وغیره
بانواع منتر داویه غسل کنانیده با مالا وغیره پرستش او بکنند و تو بداخل شدن درین شهر
سزاواری تا همه بوزنه ها خوشوقت شوند گفته هنومان را شنیده رام در جواب گفت
تا چهارده سال مرا در شهر یا در دیهه آمدن روا نیست که امر پدر چنین است و این سکریو
اکنون در کوها یعنی شهر کشکندها در آمد شود و با حسن وجود بسرعت ابهشیک راج بکنید
و بعد از ان رام به سکریو گفت که این انگد را جوراج خود بکن و درین ماه شراون
یعنی برشکال نزدیک رسیده تا چهار ماه بارش که هنگام او ولوک یعنی کار کردن
و لشکر آراستن نیست درهمین کوه اقامت خواهیم کرد اینک کوها کوه ست آب خوب دارد
و نیلوفر دارد با لچهمن درینجا خواهیم ماند بعد گذشتن ماه کارتک تدبیر کشتن دشمن کرده
آئین خواهد شد و این هنگام خوب است تو در شهر داخل شو و ابهشیک راج بکن بدین
از رام حکم گرفته سکریو داخل کشکندها شد و هزاران بوزنه جمع آمده بشهر در آمد و جی سکریو

सर्ग-९०

सुग्रीव और अंगद को राज्य देना

दस दिन तक सुग्रीव ने अंगद के साथ भाई का शोक मनाया। जब पवित्र हुआ तो सुग्रीव और सारे वानर राम के पास गये और हाथ जोड़कर खड़े हो गये, जैसे कि ब्रह्मा के सामने ऋषि खड़े होते हैं। उसके बाद पवन पुत्र हनुमान ने जो सोने के पर्वत के समान प्रकट हुए, और सूर्य के समान प्रकाशमान, करबद्ध निवेदन किया कि आपकी दया से सुग्रीव अपने पुरखों का राज्य जो वानरों से पाना कठिन था पा रहा है। शहर में आने के लिए आपसे आज्ञा चाहता है ताकि सम्बन्धियों और भाई आदि विभिन्न प्रकार के मंत्र और दवाओं से स्नान कराके माला आदि के साथ उसका स्वागत करे और आप इस शहर में प्रवेश करें ताकि सारे वानर प्रसन्न हों। हनुमान की बात सुनकर राम ने उत्तर में कहा कि चौदह वर्ष तक मुझे शहर या देहात में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं है क्योंकि यह पिता का आदेश है और यह सुग्रीव अभी पर्वतों में अर्थात् किष्किन्धा शहर में प्रविष्ट होना चाहता है भली प्रकार शीघ्रता से उसे राज्य सौंपो। उसके बाद राम ने सुग्रीव से कहा कि उस अंगद को अपना उत्तराधिकारी बना लो और इस महीने में वर्षा निकट आ गयी है वर्षा के चार महीने तक जो काम करने और सेना को सुसज्जित करने का समय नहीं है। मैं इसी पर्वत में निवास करूँगा। यह पर्वत है, जल यहाँ का श्रेष्ठ है और नीलोफर भी है और मैं लक्ष्मण के साथ यही रहूँगा। कार्तिक मास के बीतने के बाद शत्रु के मारने की योजना बनाई जायेगी। यह समय अच्छा है तुम शहर में प्रविष्ट हो और राज्य संभालो। इस प्रकार राम से आज्ञा लेकर सुग्रीव किष्किन्धा में प्रविष्ट हुए और हजारों वानर एकत्र होकर शहर में आये

کنتنند وجی لفظی است که در ستایش و بزرگی دادن و فتح گویند و سکریو هم بارعایا
و هنومان وغیره در مکان برادر در آمد شدند بعد ازان بوزنه ها اورا ابهشیک کردند
و بنوعیکه دیوتا اندر را کنند و چتر سفید با سطوانه طلائی بانواع کار زر آراسته
کردند و سفید بالبجن یعنی چامر با ڈنڈی طلائی مرصع که قیمتی بود مهیا کردند و دوب
من ها و رتن ها و همه دوا ها و کلهائی درختان شیر دار و مالا هائی خوشبوی
و نیلوفر هائی که در آب راکد پیدا شوند و راکد آبی را گویند که روان نباشد
و چندن هار خوب و خوشبو هائی دیگر و اچهت طلائی و قند و شهد و روغن و جغرات
و چرم شیر و خوک را پائی پوش و عورات کلان چشم و شانزده دختران این همه مهیا شد
بعد ازان بوزنه ها مطابق وقت و موافق دستور از جواهر و پارچه برهمنان از پرستش
کردند بعده آتش را بر کش داب که قسمی از کیاه باشد برهمنان روشن کرده هوم نمودند بعد
مناظر ها و محل ها و غیر ها از مالا و سوب ها آراستند و روبرو ها بانواع منتر ها آسن ها گسترانیدند
و بوزنه ها از ندی ها و جمیع تیرتهه ها و سمدر ها آب آوردند و از سبوهائی زرین پر کردند
بعد ازان از شاخ گاو و از کلس طلائی و از جمیع دوا ها و از دختران کلس گیر و دیگر سازها ابهشیک
مطابق دستور از منتر ها و برحسب شاستر سکریو را ابهشیک کردند چ و گواچهه و گوبه و نربهه

و گندهماد و هیند و دوبدبهه و سکهین و جانبوان و نل اینها باتفاق سکریو را

और सुग्रीव की जय हो का नारा लगाया। जय एक ऐसा शब्द है जो प्रशंसा एवं विजय के अवसर पर बोलते हैं। सुग्रीव भी प्रजा और हनुमान आदि के साथ भाई के महल में प्रविष्ठ हुआ। उसके वानरों ने उसका अभिषेक किया और जिस प्रकार देवता इन्द्र के लिए करते हैं। सफेद ताज सोने के तारों से विभिन्न प्रकार के रत्नों के साथ सुसज्जित किया और सफेद झालर जो बहुमूल्य सोने की डंडी से सुसज्जित थी एकत्र किया और मनो घास, हीरे जवाहरात, ताजा रसदार वृक्षों के फूल, सुगन्धित माला और नीलोफर जो राकिद पानी में उत्पन्न होते हैं और उच्चकोटि के चन्दन और दूसरी सुगन्ध सोने की जंजीर, कन्द, शहद तेल, शेर और सुअर की खाल के जूते, बड़ी-बड़ी आँखों वाली स्त्रियाँ और सोलह किशोरियाँ यह सब एकत्र किया उसके बाद वानरों ने समय और नियम के अनुसार रत्नों और पारचों से ब्राह्मणों की पूजा की। उसके बाद बरकश (कुश) जो दूब घास की एक जाति होती है। उसमें आग लगाकर ब्राह्मणों की पूजा की उसके बाद झरोखों, महलों आदि को मालाओं और वस्त्रों से सुसज्जित किया एवं उन पर भाँति-भाँति के मंत्रों के साथ आसन लगाया। वानर, नदियों, तीर्थ के स्थानों और समस्त समुन्द्रों से जल लाए और सोने के मटकों से भरा। उसके बाद गाय की सींग, सोने के कलश और कलश की चोटी और दूसरे अन्य सामग्री के साथ मंत्रों से और शास्त्र के अनुसार सुग्रीव को अभिषेक किया और गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गंधमादन, मयन्द, द्विविद, हनुमान, जाम्बवान और नल

ابهشیک کردند چنانکه باسوان اندر را ابهشیک کنند بعد ازان هزاران بوزنه
ابهشیک کردند و بنیس نام بوزنه چتر برگرفت و بر سر سکریو از خوشوقتی سایه کرد و نل
و تار هر دو بوزنه بالنجن یعنی چامر گرفته پس پشت ایستادند و بموجب فرموده رام
به انگد جو راج ابهشیک کردند و از جو راج نمودن او همه بوزنه ها احسنت احسنت
به سکریو گفتند و تمام کشکندها از پتاکا و دهوجا ر مالادار پر شد و باشندکان شاد
و خرم گشتند و بعده خبر ابهشیک برام عرض کردند و سکریو تارا را گرفته راج میکرد چنانچه اندر

راج نماید درینجا صورت شهر و دیوان عام که سکریو را بر تخت طلا راج داده و انگد بر کرسی زر نشسته و دیگر اسباب
بادشاهی مهیا و راجه خرسها و ده بوزنه سردار شکیل دست بسته ایستاده اند و برهمنان هوم میکنند

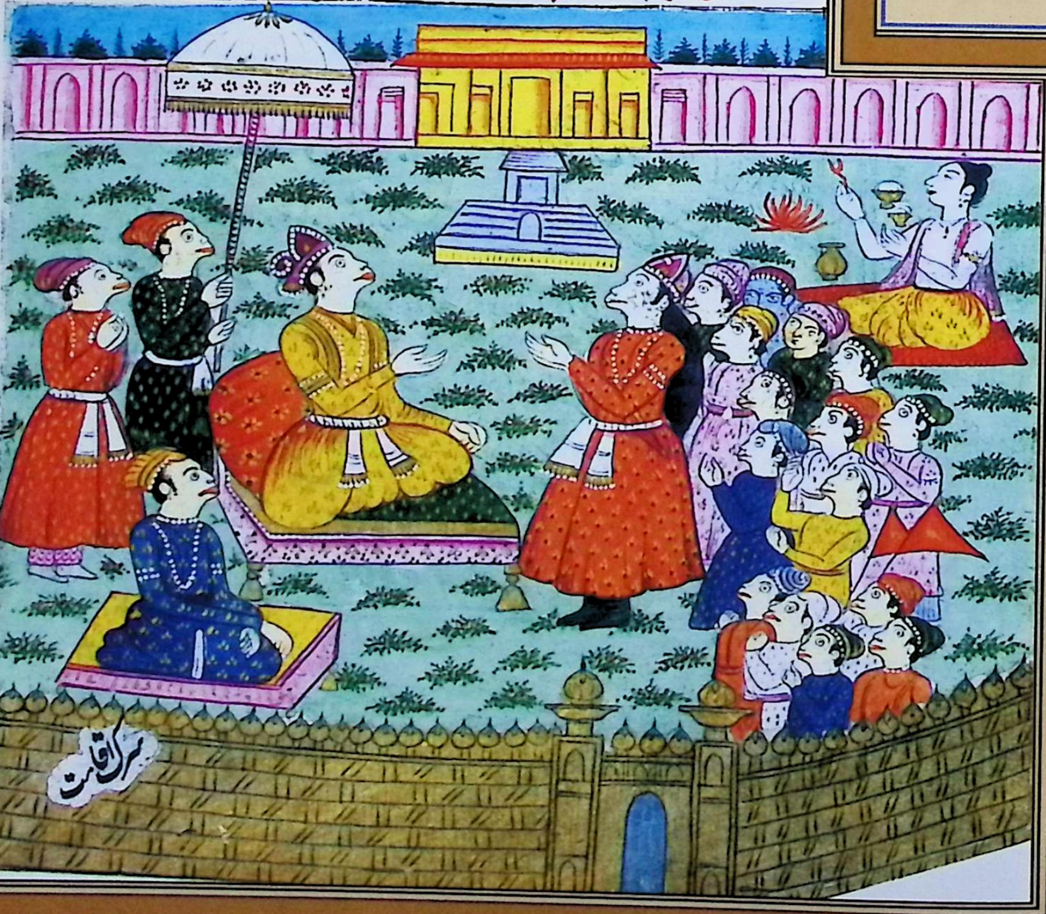

उन सबने मिलकर सुग्रीव का अभिषेक किया। उसके बाद हजारों वानरों ने अभिषेक किया और पस नामी वानर ने छत्रशाही लिया और सुग्रीव के सर पर प्रसन्नता से छाया किया। नल और तार दोनों वानर झालर लेकर पीछे खड़े हो गये और राम के कथनानुसार उत्तराधिकारी अंगद का भी अभिषेक किया तथा उसको उत्तराधिकारी बनाने पर सारे वानरों ने सुग्रीव का शुभ हो शुभ हो कहा। सारा किष्किन्धा माला वाले अलम से भर गया और वहाँ के निवासी प्रसन्न हो गये। उसके बाद अभिषेक की सूचना राम को दी और सुग्रीव तारा को लेकर राज्य करने लगा जैसा कि इन्द्र राज करते हैं।

शहर और दीवाने आम का चित्र कि सुग्रीव को सोने के तख़्त पर राज्य दिया और अंगद सोने की कुर्सी पर बैठा है। दूसरे शाही सामान एकत्र है और राजा प्रसन्न है। दस सुन्दर सरदार वानर हाथ जोड़े खड़े हैं और ब्राह्मण होम कर रहे हैं।

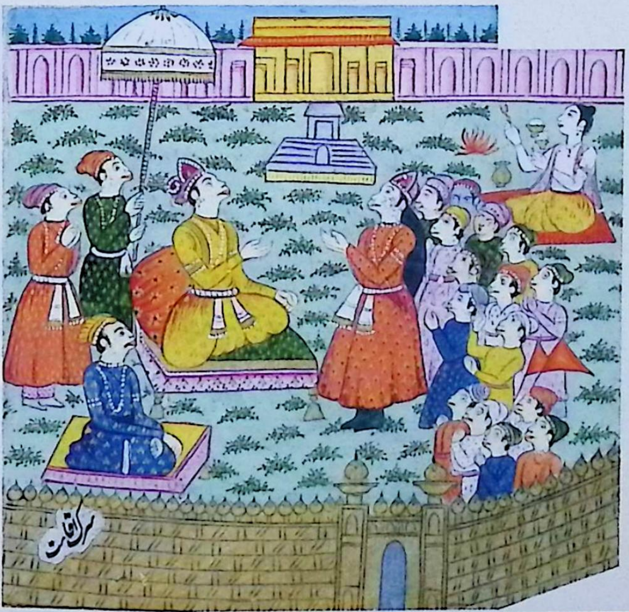

سرگ اقامت رامچندر بر پرسرون کوه بعد ابهشیک سگریو و داخل شدن در کشکندها

رام با لچهمن بر کوه پرسرون آمد آنجا شاردول و آهو و سنکهه اقامت داشتند و پیلها و درختها بسیار بودند و از خرس و بوزنه کو پوچهه که قسمی از بوزنه ها باشد پر بود و آبها صاف داشت دران کوه درکوها کلان با لچهمن اقامت کرد که نزدیک آن آب بسیار بود و از نیلوفرها و کارند و چکرواک وغیره آراسته بود اما رام بسبب مهاجرت عورت بهیچ چیز شوق نمیکرد و هرگاه ماهتاب طلوع میکرد و سیتا یاد می آمد زیاده تر حزین میشد و اکثر با چشم اشک ریزان میماند و بر بستر خواب نمیکرد و وقتی از غم و الم در اضطراب شده و بیاد او نفسها میکشید گاهی چشم برهم میزد گاهی میکشاد و گاهی خشمگین و گاهی مسکین میشد لچهمن اینحالت را دیده گفت تو باین افعال سزاوار نیستی و فکر مکن که کس از فکر بیکیه میشود بر کار مستعد شو و خوشوقت باش و راچهسها را با قبایل و اقربا بکش و تو طاقت داری که تمام زمین با ساگر و صحرا برهم زنی چه جای کشتن راچهس بدکار و من نیروی تو میدانم چنانکه آتش از خاکستر پوشیده باشد گفته لچهمن را رام پسند نمود و گفت آنچه از اخلاص و آرزوی قوت گفتی درین تردد نیست اما ازین که زور من هیچ کار نمی آید غصه من غلبه میکند باز لچهمن گفت تا گذشتن شرت کال که ایام برسات است صبر کن بعده راون را با سلطنت و دولت مستاصل بدان و غصه را ازیر کن و

सर्ग-६१

रामचन्द्र का प्रस्रवण पर्वत पर निवास

सुग्रीव के अभिषेक और किष्किंधा में प्रवेश होने के बाद राम और लक्ष्मण प्रस्रवण पर्वत पर आये। वहाँ शार्दूल, हिरन, सिंह रहते हैं और हाथी और वृक्ष अत्यन्त थे और लंगूर और वानर, जिनकी पूंछ वानरों की एक जाति होती है, उनसे पर्वत भरा था। जल स्वच्छ था उस पर्वत में, एक बड़े पर्वत पर लक्ष्मण ने निवास किया जिसके निकट जल बहुत था। और वह नीलोफर, कारण्डव और चक्रवाक आदि से सुसज्जित था। जहाँ तक राम की बात है तो उन्हें पत्नी के वियोग के कारण किसी वस्तु की इच्छा नहीं रह गयी थी। जिस समय सूर्य उदय होता और सीता याद आतीं तो वे अधिक दुखी हो जाते और कभी-कभी आँखों से आँसू बहते और बिस्तर पर सो नहीं पाते थे। और कभी दुख के कारण चिन्तित हो जाते और उनकी याद में ठंडी आँहें खींचते कभी आँखें बन्द कर लेते और कभी खोल देते कभी क्रोध में होते और दयनीय बन जाते। लक्ष्मण ने यह दशा देखकर कहा; आपको यह सब शोभा नहीं देता है आप चिन्ता न कीजिये कि मनुष्य चिन्ता करने से विवश हो जाता है। अपने कार्य पर लगे रहिये और प्रसन्न रहिये और राक्षसों को उनके कबीलों और सम्बन्धियों सहित मार डालिये। आप में यह शक्ति है कि पृथ्वी को समुन्द्र और वन सहित अस्त व्यस्त कर दें। अतः बुरे राक्षसों की हत्या कीजिये मैं आपकी शक्ति जानता हूँ जैसे कि राख में अग्नि छुपी होती है। लक्ष्मण की बात को राम ने पसन्द किया और कहा; जो कुछ तुमने सद्भाव और शक्ति की इच्छा के विषय में कहा उसमें संदेह नहीं है लेकिन इस कारण से कि मेरी शक्ति किसी काम नहीं आ रही मुझ पर क्रोध का प्रभुत्व हो जाता है। लक्ष्मण ने फिर कहा; ''शरत काल अर्थात् वर्षा के दिन बीतने तक धैर्य रखिये, उसके बाद रावण की राज्य सिहांसन सहित हत्या कर दीजिये और क्रोध को नियंत्रण में कीजिये

چهار ماه صبر نما و با من باش چنانچه درین ایام افعی زهر را دور کرده اقامت
میکند درینجا صورت پرسرون کوه و بر و شاردول و سنکهه و آهو و فیل و خرس و نونه
و کراز و چشمه های آب و در و نیلوفر و چکروا و کارنداک و رام در غم نشسته
و لچهمن دست بسته بتسلی پرداخته

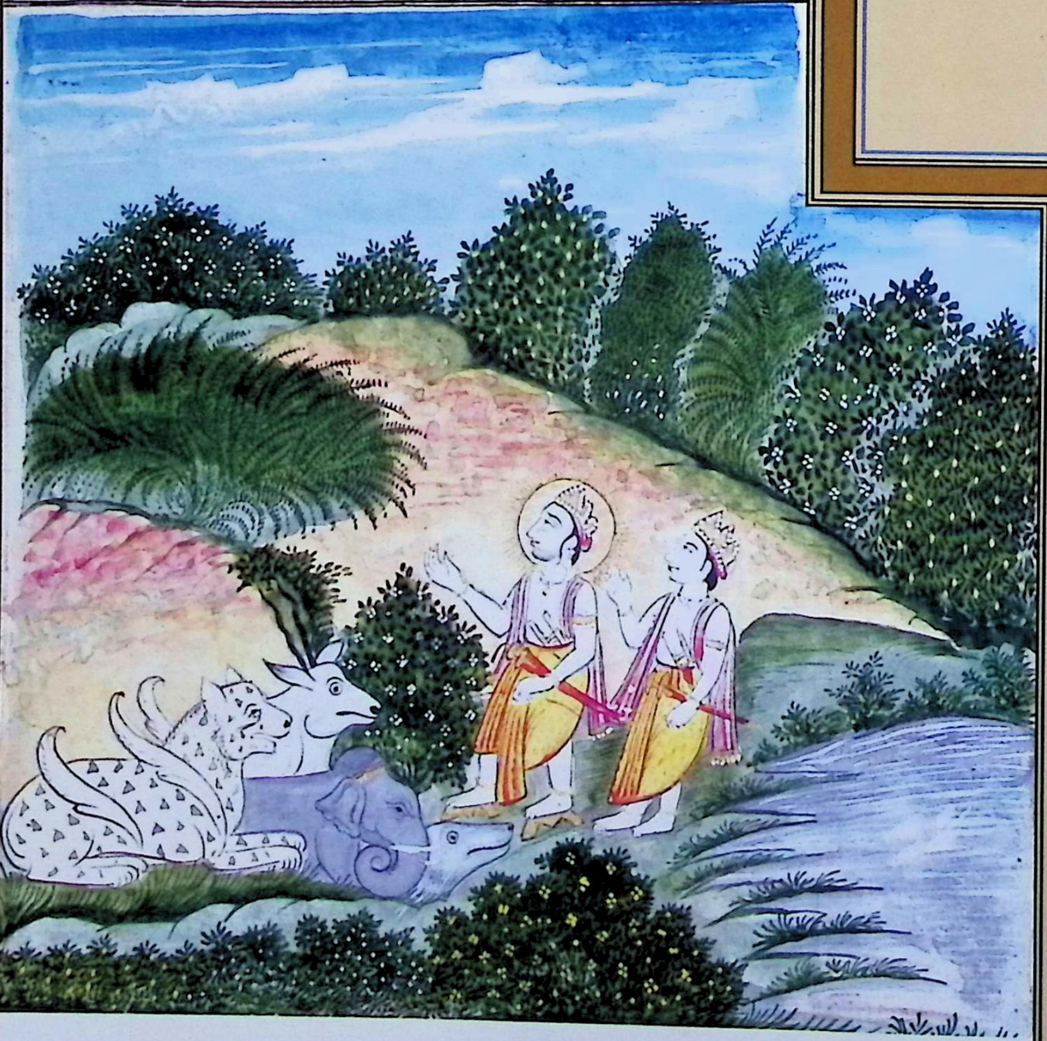

مرک کفتار رام

चार महीने और धैर्य रखिये तथा मेरे साथ रहिये जैसा कि उन दिनों अजगर भी विष को त्याग करके एक स्थान पर स्थाई रूप से रहने लगता है।

प्रस्रवण पर्वत का चित्र और उस पर शार्दूल (बाघ) हिरन, शंख, हाथी और वानर हैं। और वह पानी के स्रोतों से भरा है जिसमें नीलोफर है और चक्रवा, क्रौंच और वक है एक ओर राम उदासीन बैठे हैं और लक्ष्मण सभ्यता से सांत्वना दे रहे हैं।

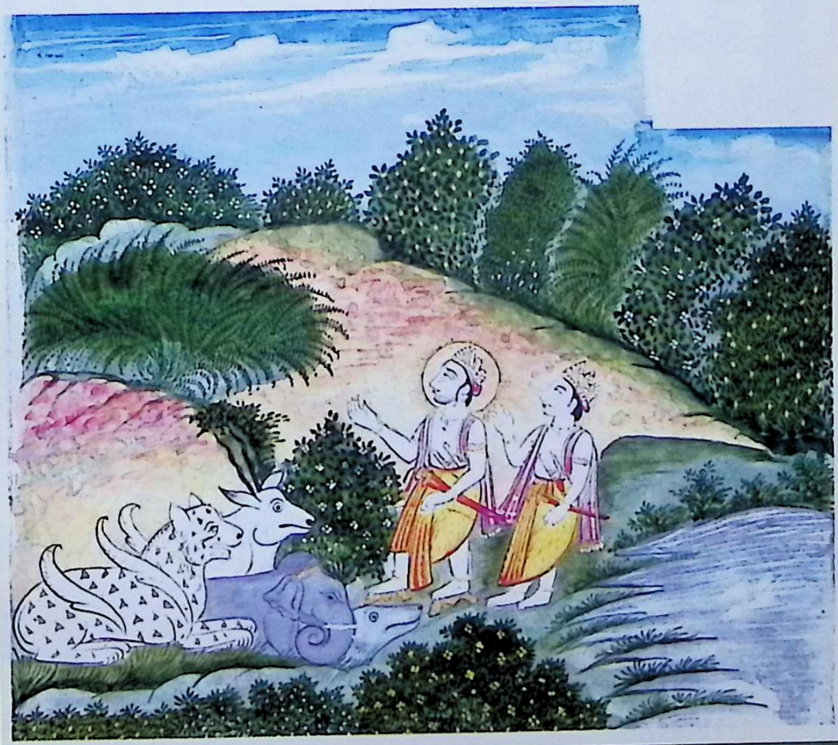

سرگ گفتار رام با لچهمن ای لچهمن حالا وقت بارش رسیده و آسمان از میغ ناپدید گشته
تا نه ماه شعاع آفتاب که بخار تمام زمین در خود تحمل میدارند درین ایام میبارانند درین روزها
راجه ها کوچ نمیکنند و تمام راه ها از آب پر میشود و آفتاب در ابر پوشیده است بنوعی
که من در غم پوشیده ام قطرات و رشحات ابر هم چنانست گویا از غم اشک بارانند و این
درخت ارجن که بر کوه شگفته است مانند سگریو ابهشیک یافته است و برق در ابر نیلی
مانند سیتا در کنار راون مینماید بعد گذشتن ماه اساده بهرت آواز آب سرجو خواهد شنید
و انتظار آمدن از صحرا باجودهیا خواهد کشید و من اینک آرزوی استعانت از سگریو
دارم او دشمن را هلاک کرد و براج کلان مشغول شد و من از عورت و راج دور افتاده
بسر میبرم اول راه ساگر بدشواری توان رفت بعد ازان همچو راون دشمن زور آور
در پیش است چون از ساگر نتوان گذشت سگریو بهوش کار مرا چه خواهد کرد او بعد مدت بسیار
عورات را یافته با آنها بعیش مشغول است و کار مرا هیچ بوزنه ها نمیفرمایند و من در تعجیلم
سگریو در راحت چرا او را بیوقت تصدیع دهم و او وقت را دانسته از خود بی شبه
رفیق کار خواهد شد چنانکه من در کشتن بالی مدد او کردم او هم در آوردن سیتا مدد
خواهد شد از کار کسی دوست شود و از عوض خواستن دشمن گردد لهذا وقت را
بگذرانم سگریو در کار کردن کم زور نیست بعد گفتن رامچندر لچهمن دست بسته گفت

सर्ग-६२

राम की वार्ता लक्ष्मण के साथ

ऐ लक्ष्मण अब वर्षा ऋतु आ गयी है और बादल के कारण आकाश छुप गया है। नौ महीने तक सूर्य की किरणें जो सम्पूर्ण पृथ्वी की गर्मी अपने अन्दर रखती है इन दिनों बढ़ जाती है। इन दिनों में राजा यात्रा नहीं करते हैं और समस्त मार्ग जल से भर जाते हैं और सूर्य बादलों में छुपा हुआ है जिस प्रकार से कि मैं दुख में छुपा हुआ हूँ। वह दुख के कारण आँसू बहा रहे हैं और अर्जुन का यह वृक्ष जो पर्वत पर उगा और खिला हुआ है। उसने सुग्रीव की भाँति अभिषेक लिया है और नीले बादलों में बिजली ऐसी लग रही है जैसे कि सीता रावण के पहलू में लगती हैं। आषाढ़ का महीना बीतने के बाद भरत सरजू नदी के पानी का शोर सुनेगा और वन से अयोध्या आने की प्रतीक्ष करेगा और मैं इधर सुग्रीव की सहायता लेने की इच्छा रखता हूँ। उसने शत्रु की हत्या की और बड़ा राज्य पाया। मैं स्त्री और राज्य से दूर पड़ा हुआ मारा-मारा फिर रहा हूँ प्रथम तो समुन्द्र का मार्ग कठिनाई से तय किया जा सकता। दूसरे रावण जैसे शक्तिशाली शत्रु से मुकाबला है। जब समुन्द्र से जाया नहीं जा सकता तो सुग्रीव होश में मेरा कार्य कैसे करेगा ?उसने बहुत समय बाद अपनी पत्नी पायी है उसके साथ भोग विलास में व्यस्त है। और मेरे काम के लिये किसी वानर से नहीं कह रहा है। मैं कष्ट में हूँ और सुग्रीव को मैं सुख में कष्ट क्यों दूँ ?और वह समय को समझते हुए निःसन्देह कार्य में साथी बनेगा जैसा कि मैंने बालि को मारने में उसकी सहायता की। वह भी सीता को लाने में सहायक होगा किसी का कार्य करने से मित्रता हो जाती है। और उसका बदला चाहने से शत्रुता हो जाती है। अतः मैं समय बिता रहा हूँ सुग्रीव कार्य करने में असमर्थ नहीं है। रामचन्द्र के कहने के बाद लक्ष्मण ने आदर से कहा;

انچه گفتی شتاب بعمل خواهد آورد تا ایام برسات صبر کن القصه در انتقام چندان ماندند
که شرت کال بآخر رسید درینجا صورت کوه و درختان سرخ و زرد و سفید
شگفته و بر درختان جانوران نشسته و ابر سیاه برخاسته و برق میجهد
و قوس قزح برآمده و جانوران وحشی میگردند و رام و لچهمن غمگین نشسته اند

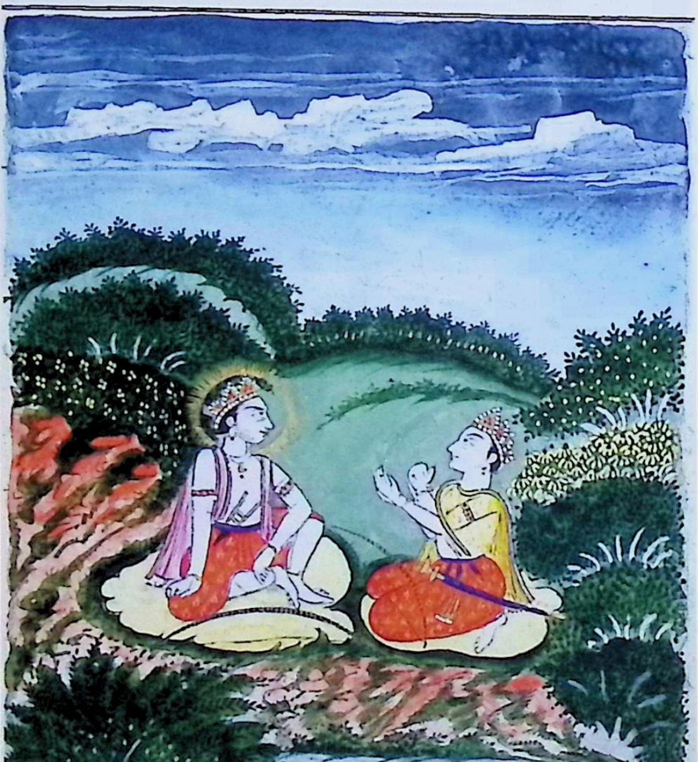

जो कुछ आपने कहा वह अतिशीघ्र उसे करेगा। वर्षा के दिनों तक धैर्य रखिये अतः वहाँ इतने समय तक रहें कि वर्षा ऋतु समाप्त हो गयी।

पर्वत का चित्र जिस पर लाल व सफेद और पीले रंग के वृक्ष लगे हुए हैं और वृक्षों पर पक्षी बैठे हैं। काले बादल उठे हैं बिजली चमक रही है इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हुए हैं और जंगली पशु मस्ती कर रहे हैं और राम और लक्ष्मण उदास बैठे हुए हैं।

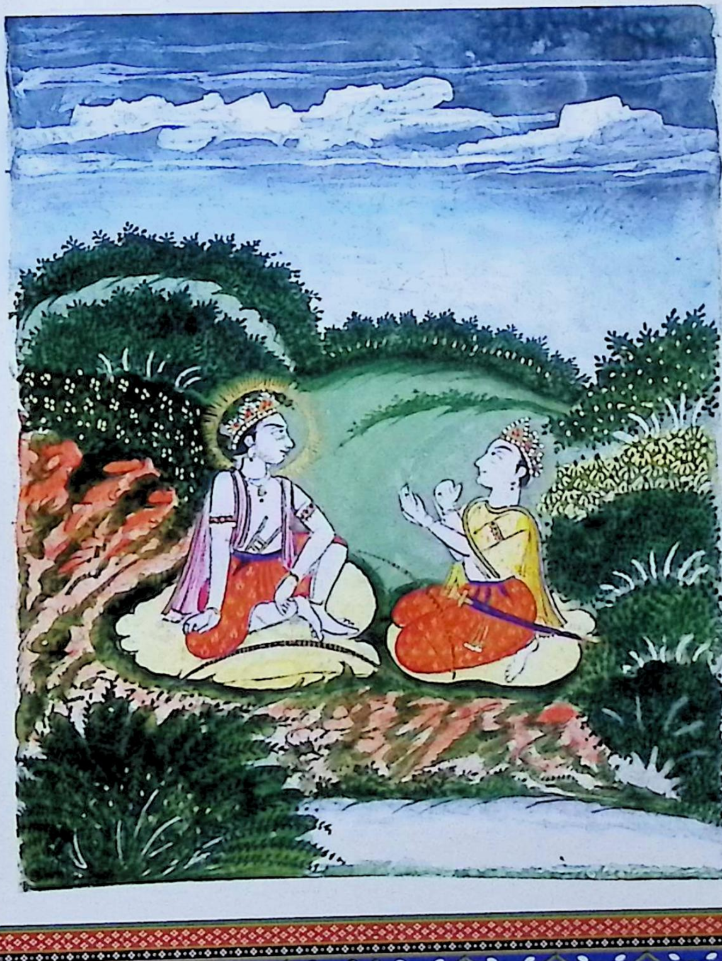

سرگ در طلبیدن بوزنه‌ها سگریو چون بمطلب دلخواه خود کامیاب شد و اهلیه خود
و تارا را بر محکوم خود یافت با دختر سکهین که تارا با شدرت میکرد یعنی صحبت و شب و روز
بیرنج بعیش مشغول شد چنانکه اندر با ابسرها و دیوتاها باشد و همه کارها باختیار منتریان
سپرده هنومان که داننده وقت و کردنی و ناکردنی هست و مغز فهم سخن بود بدین حالت
سگریو را دیده بادب گفت تو راج و جشن و لچهمی یافتی و اقربا کلان ترا پرستیدند و دشمن را
از صلابت تو نام هم نیست حالا شرط دوستی بجا آر و هر که با دوستان بدوستی
بسر برد او را کیرت و راج و بزرگی افزون شود و هر کرا ستیا موافق و خزانه باشد و دوستان از
دلخواه باشند او ثمره راج میابد رام که مقصود تو بر آورد ترا نیز کار او باید کرد و سیتا را
باید جست چه زیر زمین و چه دشت و چه آب چه بر چرخ گردان و کوه و سحاب بفرما که
سیتا را بجویند و ترا کروران بوزنه محکوم اند سگریو گفته هنومان را شنیده خود را
برین کار آورد و نیل نام بوزنه را حکم فرمود که تمام لشکر را جمع کند و چنان نماید که بروز
پورنماسی تمام لشکر جمع شود و هر بوزنه که ما بین هفت شب حاضر نشود او کشته خواهد شد
اینقدر حکم فرموده اندر محل خود بآسایش در آمد شد **سرگ فرستادن لچهمن** پس بعد گذشتن
برسات شبی رامچندر نشسته بود کام یعنی شوق دیدار و شهوت برو غلبه کرد عیاشی
سگریو بنائی و نوش و رفتن سیتا را یاد نموده مضطرب تر شده بیهوش افتاد بعد از

सर्ग-६३

वानरों को बुलाने के वर्णन में

सुग्रीव जब अपने उद्देश्य में सफल हो गया और अपनी पत्नी और तारा को अपने अधीन पाया तो सकहीन की पुत्री तारा से संभोग करने लगा और रात दिन बिना किसी कष्ट व दुख के विलासिता में व्यस्त रहने लगा, जैसे कि इन्द्र अप्सराओं और देवताओं के साथ व्यस्त होते हैं। उसने समस्त कार्य मंत्रियों को सौंप दिये और हनुमान ने, जो समय को पहचानने वाले, करने और न करने के योग्य कार्यों को जानने वाले थे, बात को भीतर तक समझने वाले थे, उन्होंने सुग्रीव को इस स्थिति में देखकर कहा; ''तुमने राज्य, यश और लक्ष्मी को पा लिया और बड़े-बड़े सम्बन्धियों ने तुम्हारी पूजा की और शत्रु का तुम्हारे बल से नाम तक नहीं रहा। अब तुम मित्रता का वचन निभाओ और जो मित्रों के साथ मित्रता निभाता है उसकी कीर्ति, राज्य और वरीयता में वृद्धि होती है। और जिसके पास राजनीति और धन होता है, प्रिय मित्र होते हैं वह राज्य का फल पाता है। राम जिन्होंने तुम्हारा कार्य किया तुम्हें भी उनका काम करना चाहिए। सुग्रीव ने हनुमान की बात सुनकर स्वयं को इस कार्य के लिये तैयार किया और नीलनामी वानर को आदेश दिया कि समस्त सेना को एकत्र करो और ऐसा करो कि पूर्णमासी के दिन समस्त सेना एकत्र हो जाये। और प्रत्येक वह वानर जो सात रातों के बीच उपस्थित नहीं होगा उसकी हत्या कर दी जायेगी। इतना आदेश देकर वह अपने महल के अन्दर सुख सुविधाओं के साथ प्रविष्ट हो गया।

सर्ग-६४

लक्ष्मण का भेजना

वर्षा ऋतु के बीत जाने के बाद एक रात्रि रामचन्द्र बैठे हुए थे। उन पर कामवासना और संभोग की इच्छा प्रबल हुई। वह सीता को याद करके और अधिक दुखी होकर बेहोश हो गये।

مهورت بهوش آمده باز سیتا را در دل یاد آورده در زاری شد آسمان را صاف
و قمر را نورانی دیده و شب را منور دیده سیتا را در خاطر گذرانیده بلچهمن گفت
که اندر زمین را از آب تر ساخته بطراوت سبزه پرداخته روان شد و هر سو که آواز رعد
و طاوسان وغیره شنیده کمی گرفت و سحاب کوه و درختان را از آب پر نموده
و ابرها که مانند فیلان مست با زنجیر برق همی بودند گذشتند از بارش آب جواهر و دار آبت
کوه ها صاف شده چنان بنظر می آیند که در شب دیجور انجم و انواع نیلوفر و اشجار جاها
نردبان وار ریز بند چنانچه عورت بصورت جبلی خود و درختان پنس و سیب برن
و کودار در کوه شگفته بنظر می آیند و دریاها آب صاف و پهکر یعنی تالاب ها از هنس
و کارندوا و جکرواک خوش مینمایند و کنارهای ندی چنان مینمایند که عورت نو بصحبت
در آید و او ران از شرم نماید و منجری یعنی شاخچه گلها که از حرکت باد می جنبد چنانست
که زن شراب یا دیگر از مسکرات خورده متحرک برگردد و راجه ها که با یکدیگر عداوت
دارند درین ایام کوچ کنند این وقت مهم سرکردن راجه هاست من سکربو را
در کار خود این اراده کم می بینم و مرا که مهجور سیتا ام چهار ماه مانند صد سال گذشت
و بر من که دور از عورتم و الم آلوده و از راج افتاده ام راجه سکربو تلطف و مهربانی نمیکند و من
بی ناتهه یعنی خداوند و دور از راج هستم و عورت را راون برده غریب و از خانه دور و مغلوب

एक क्षण बाद होश में आकर सीता को फिर मन में याद किया और रोने लगे उन्होंने आकाश में साफ चन्द्रमा को चमकदार और रात को प्रकाशित देखकर तथा सीता को हृदय में याद करते हुए लक्ष्मण से कहा कि ''भीतर धरती को पानी से भिगाकर और हरियाली को ताजा बनाकर चले गये और चारों ओर जिधर झंझावात और मोर आदि की आवाज़ सुनी गयी उसमें कमी प्राप्त की। पर्वत के बादल और वृक्षों को पानी से भरकर के और बादलों को जो जंजीर में बँधे हुए मस्त हाथी के समान बिजली जैसे लगते थे बीत गये। वर्षा के जल से पर्वतों के रत्न साफ होकर ऐसे दिखाई देते हैं जैसे अंधेरी रात में तारे। विभिन्न प्रकार के नीलोफर और वृक्ष ऐसे सजे हुए हैं जैसे कि गर्भवती स्त्री। कटहल, सेब के वृक्ष और गोदार पर्वत पर खिले दिखाई देते हैं। नदी व तालाब अपने स्वच्छ जल के साथ हंस, कारण्डव ओजगर और अंक के द्वारा भले लग रहे हैं और नदी के किनारे ऐसे दिखाई देते हैं जैसे कोई नई दुल्हन सम्पर्क में आती है और वह लज्जा के कारण जांघ नहीं दिखाती है और फूलों की शाखाएँ जो हवा के चलने से झूमती ऐसी लग रही हैं जैसे कोई स्त्री शराब या दूसरे नशे वाली वस्तु खाकर झूमने लगे। राजा जो एक दूसरे के साथ शत्रुता रखते हैं इन दिनों में कूच करते हैं। मैं सुग्रीव में अपने कार्य के प्रति यह दृढ़ता को देखता हूँ और मेरे लिये कि मैं सीता के वियोग में हूँ चार महीने सौ वर्ष के समान बीते मुझ पर, कि मैं अपनी स्त्री से दूर और दुखी हूँ और राज्य से वंचित हूँ। राजा सुग्रीव दया नहीं करता है और मैं अनाथ अर्थात् बिना मालिक के और राज्य से दूर हूँ और मेरी स्त्री को रावण ले गया है। मैं दीन हूँ और घर से दूर

شهوة در پناه او آمده ام بچندین وجوه سگریو از من منحرفست و شرطی که برای جستن
سیتا کرده بود بجا نمی آرد بنابران ای لچهمن تو بکشکندها رفته سگریو را که براحت
شهری مشغول است از طرف بگو که هر که پیشتر زر دهند کار او سائلان را
و بیشتر احسان کنند کار او نا امید گرداند او سفلهٔ جهانست و نیک یا بد که قول را راست
نکند او سفلهٔ جهانست و کسانیکه احسان کنند کار او دوستان او کار نمیکنند آنها را
بعد مردن کرم و غیره هم نمیخورند هر آینه میخواهی که کمان مرا در جنگ کشیده ببینی و باز
آوازهٔ زهٔ من خواهی که بشنوی و فقط بالی را بیک تیر کشته ام تو اگر از راستی
برگردی با اقربا و قبائل ترا بکشم تو بر شرط خود قایم شو و براه بالی مرو لچهمن گفتار رام را
که مضطربانه گفته بود شنیده گفت اگر آن کم خرد چنان کنند نه بوزنه ها خواهند ماند و نه
مقصود خواهد یافت و نه نفع راج خواهد گرفت از بسکه شعور رفته راحت شهری گرفته
و احسان ترا از خاطر فراموش کرده کشتن برادر کلان نمیداند اینچنین احمقان را راج
نباید داد من غصه را نگاه نمیتوانم داشت حالا سگریو را میکشم لچهمن خواست که برود
رام گفت **سرگرفتن لچهمن** رام گفت مثل تو کسان خطا نمیکنند و هر که از خطا کسی را بکشند
او سفلهٔ جهانست ترا حالا همچو نباید کرد که نیکان بد گویند با او از اخلاص بطریق سلوک
پیش آیی و با او اینچنین نکویی که وقت گذشت لچهمن بموجب امر بطرف شهر روانه شد.

वासना में लीन होकर उसकी शरण में आया हूँ। इन कुछ कारणों से सुग्रीव मुझसे रुष्ट है और सीता की खोज करने की उसने जो शर्त लगायी थी उसे पूरा नहीं कर रहा है। इस कारण ऐ लक्ष्मण ! तुम किष्किन्धा जाकर सुग्रीव से जो एक शहर के विश्राम में व्यस्त हैं मेरी ओर से कहो कि अधिकांश धन देने वालों और भिक्षुकों और अधिक उपकार करने वालों को जो निराश करता है वह संसार का नीच आदमी है। वह पुण्य समझता है कि अपनी बात को सच न प्रमाणित करे वह संसार का नीच व्यक्ति है। जो उपकार करने वालों और मित्रों का कार्य नहीं करते हैं, मरने के बाद उनको भी नहीं खाते हैं। निःसन्देह तुम यह चाहते हो कि मेरे धनुष को युद्ध में खींचकर देखो और फिर धनुष को चिल्ले पर चढ़ाने की ध्वनि चाहते हो कि सुनो, बालि को मैंने एक बाण से मारा और तुम यदि सत्य से फिरोगे तो मैं तुम्हारे संबंधी और कबीले सहित तुम्हें मार डालूँगा। तुम अपनी बात पर स्थिर रहो और बालि के मार्ग पर न चलो।" लक्ष्मण ने राम की बात को जो उन्होंने व्याकुलता से कही थी सुनकर कहा; "यदि वह बुद्धिहीन ऐसा करता है तो न वानर रहेंगे और न अपना उद्देश्य पायेगा और न राज्य का लाभ प्राप्त करेगा। एक शहर का सुख प्राप्त कर लिया है इसलिये आपका उपकार उसने भुला दिया है। वह बड़े भाई का मारा जाना नहीं जानता है ऐसे मूर्खों को राज्य नहीं देना चाहिए। मैं क्रोध को रोक नहीं सकता हूँ। अब मैं सुग्रीव को मार डालूँगा। लक्ष्मण ने चाहा कि जायें उसी समय राम ने कहा।

सर्ग–६५

लक्ष्मण का जाना

राम ने कहा तुम जैसे लोग गलती नहीं करते हैं। और जो गलती से किसी को मार डालता है वह संसार का नीच है। तुमको अब ऐसा नहीं करना चाहिए कि सज्जन लोग इसे बुरा कहते हैं। सद्भाव के साथ व्यवहार करो और उससे यह न कहो कि समय बीत गया है। लक्ष्मण आदेशानुसार शहर की ओर चल दिये

وکمانی چون کمان اندر بدست گرفته وراه دور را گذاشته درختان تال وکرن را
شکسته بسرعت تمام میرفت وسنگهای کوه را از پائی خود سایان واشجار شکنان شتاب
رسید کنگرها را از بوزنه ها پر دید ومکان سکریو را از دور بنگرید واز غصه بوزنه ها را نظر کرد
آنها سنگها ودرختان را بطریق سلاح دهشت خورده بدست گرفتند لچهمن اینحالت را
دیده زیاده تر در غصه شد ومانند آتش از انداز هیزم مشتعل شد بوزنه ها لچهمن را در غضب
دیده از خوف رو بگریز نهادند بعضی از آنها رفته آمدن لچهمن از غصه وطیش سکریو بیان
کردند او که با تارا بمعاشرت مشغول بود هیچ نشنید بعد ازان سنجو یعنی وزیران سکریو فرمودند
که بوزنه ها مانند فیل ومانند کوه ومانند شیر بیرون برآمدند همه ها چنانکه ناخن ودندان را بجای
سلاح داشتند ودهن کلان کشاده بودند کسی از آنها قوت ده فیل وکسی قوت صد فیل وکسی
قوت هزار فیل داشت وکسی چنان که قوت او بمقدار نیاید لچهمن اینهمه را بخاطر نیاورده
داخل شهر شد بعد ازان مکان سکریو که از طلا آراسته بود مانند کیلاس نظر نموده
بدر استاد آنجا سرودی خوب شنید که بنیاد بی یکسان باواز بود وانواع زنان
خوش شکل وجوان را در انجا نظر کرده ونوکران وعقب روان سکریو را در انجا دید این
عیشهای سکریو وعمها برادر خود را بخاطر آورده زیاده تر در غضب شد نفسها کشید
چشم را سرخ کرده چون آتش باد خان در طیش شد انگد را که بر دروازه بود بغصه گفت

और वह इन्द्र के धनुष के समान एक धनुष हाथ में लेकर और दूर का मार्ग छोड़कर शाल, ताल और करन के वृक्षों को तोड़ते हुए शीघ्रता से चले जा रहे थे। पर्वत के पत्थरों को पाँव से रौंदते हुए और वृक्षों को तोड़ते हुए शीघ्र पहुँच गये। उन्होंने किष्किंधा को वानरों से भरा देखा और सुग्रीव के महल को दूर से देखा और क्रोध से वानरों पर दृष्टि डाली। उन्होंने भयभीत होकर संख और वृक्षों को हथियार स्वरूप हाथों में ले लिया। लक्ष्मण यह देखकर और अधिक क्रोधित हो गये और लकड़ियों की अग्नि की भाँति उत्तेजित हो गये। वानर लक्ष्मण को क्रोध में देखकर भय से भाग खड़े हुए। उनमें से कुछ ने जाकर लक्ष्मण के क्रोध और उत्तेजना में आने का सुग्रीव से वर्णन किया। उसने जो तारा के साथ सम्पर्क में व्यस्त था कुछ नहीं सुना। उसके बाद सन्जु अर्थात् सुग्रीव के मंत्रियों ने कहा कि वानर, हाथी, पर्वत और शेर के समान बाहर निकलें। सब के सब चूँकि नाखून और दाँत हथियार के स्थान पर रखते थे। और बड़े-बड़े मुँह खोले हुए थे। कोई उनमें दस हाथियों की शक्ति रखता था और कोई ऐसी शक्ति रखता था जो माप से बाहर है। लक्ष्मण उन सबको अनदेखा करते हुए शहर में प्रविष्ट हुए। उसके बाद सुग्रीव के महल को जो कैलाश के समान सोने से सुसज्जित था देखकर द्वार पर खड़े हो गये और वहाँ उन्होंने सुरीला गाना सुना कि बीन और बिल्ली की आवाज़ में समान थे। वहाँ उन्होंने विभिन्न प्रकार की सुन्दर और नवयुवतियाँ देखीं और नौकर और सुग्रीव के पीछे चलने वालों को देखा। सुग्रीव के यह ठाठ बाट और अपने भाई के दुख सोचकर और अधिक क्रोधित हुए। साँस खींचकर और आँखे लाल करके आग और धुएँ के समान क्रोधित हुए और अंगद से जो द्वार पर खड़ा था क्रोध से कहा

که برو و بسگریو زود بگو که من اینک آمده ام و ایستاده ام آنکه اندرون رفته
دیده و شنیده بیان نموده و آنکه خود لچهمن را در غضب دیده با لشکر بوزنه ها تمام
دروازه ها محافظت کرد لچهمن تمام شهر را از بوزنه ها و رانده اشجار پر دیده زیاده
زیاده بغضب میشد و آن بوزنه ها بالای بام و مناظر رفته استادند و شور میکردند
القصه ازان شور سگریو لچهمن را نزدیک تر آمده دانسته با بنت سکهین و نیل و نل
و انگد و هنومان و دیگر بوزنه ها یکجا بوده مشورت جست چنانچه انگد را از دیوتا ها مصلحت
پرسد همه بوزنه ها برای راضی کردن لچهمن سخن گفتند بعد ازان هنومان هنرمند
پسر باد که بدانش چون برسپت یعنی برجیس است بسگریو که چون اندر است گفت
که رام و لچهمن هر دو برادر راست رو و کشاده دل و کننده احسان و دهنده راج اند
ازانها یکی کمان را گرفته بر دروازه رسیده از خوف او بوزنه ها شور میکنند و آن
لچهمن نام برادر رام است که از حکم رام آمده است او را بالطلب یا جواب ده هر چه بگو
باشد مصلحت کن و من میدانم که لچهمن برای خاطر رام از غصه آمده است
با پسر و برادران پیش او سر فرو کرده نمسکار بکن و شرط پذیرفته بجا آر
و احسان کرده آنها بدل بگذاران و تلاش سیتا کن و او شجاع
و داننده استر ها است و از غم و الم در غصه آمده با او آشتی کن

कि जाओ और सुग्रीव से शीघ्र कहो कि मैं आया हूँ और खड़ा हूँ। अंगद ने भीतर जाकर जो देखा और सुनाया वर्णन किया और अंगद स्वयं लक्ष्मण को क्रोध में देखकर वानरों की सेना के साथ सारे द्वार की रक्षा करने लगा। लक्ष्मण सम्पूर्ण शहर के वृक्षों को वानरों से भरा देखकर और अधिक क्रोधित हुए और वह वानर कोठों और झरोखों में जाकर खड़े हो गये और शोर करने लगे। अतः इस कौतुहल से सुग्रीव ने लक्ष्मण को अत्यन्त निकट जानकर सकहीन की पुत्री और नील और नल अगंद और हनुमान और दूसरे वानरों के साथ एकत्र होकर परामर्श किया जैसे कि इन्द्र देवताओं से परामर्श लेते हैं। वानरों ने लक्ष्मण को मना करने की बात कही। उसके बाद हुनरमन्द हवा के पुत्र हनुमान ने जो बुद्धि में बृहस्पति के समान हैं, सुग्रीव, जो इन्द्र के समान हैं, कहा, ''राम और लक्ष्मण दोनों भाई हैं। बड़े दिल को मुखड़े वाले हैं, कृपा करने वाले हैं, राज्य देने वाले हैं, उनमें से एक धन को प्राप्त किया जा चुका है। लक्ष्मण राम के लिए क्रोध में आए हैं। अपने पुत्र और भाइयों के साथ उनके सामने सर झुकाकर नमस्कार कीजिये और शर्त मानकर उसे पूरा कीजिये, और उनके किये हुए उपकार का बदला चुकाइये और सीता की खोज कीजये। वह बहादुर और अस्त्र का ज्ञान रखने वाला है वह दुख के कारण क्रोध में आये हैं इनके साथ संधि कर लीजिये।

درینجا صورت مکان بِ وسگریو بر تخت نشسته و چامر بردارها چامر زرنگار بر سر او استاده
و نبت و سکهین و نیل و نل و انگد و هنومان و دیگر بوزنه از سگریو مشورت
مشورت در مقدمه رام میکنند و لچهمن و دو سه بوزنه بیرون محل استاده اند

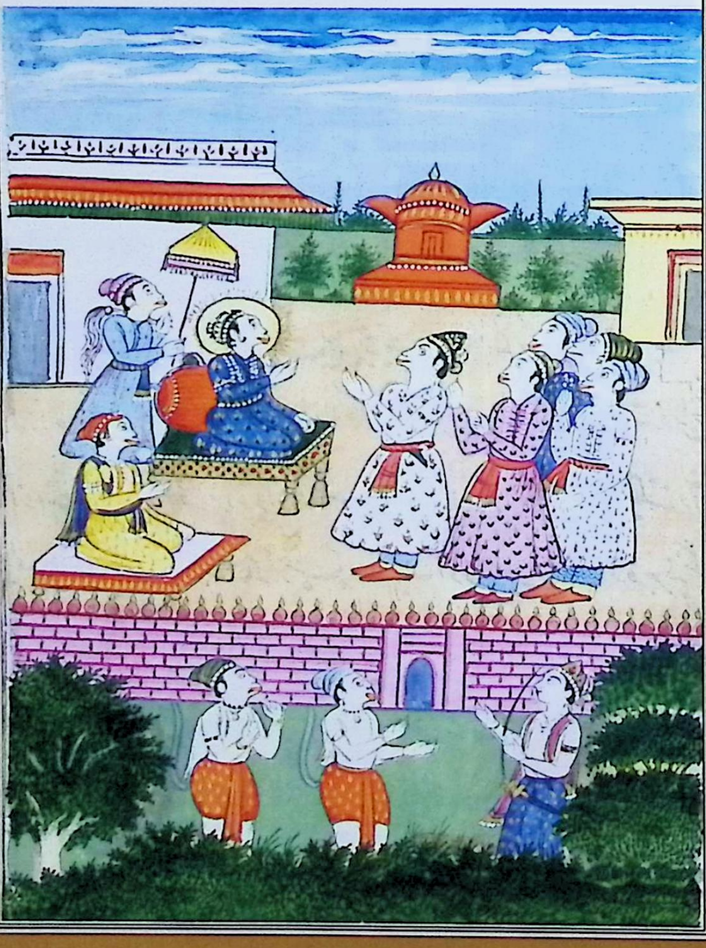

سر اگفتار بگوید

सुग्रीव महल में तख्त पर बैठा है झालरधारी स्वर्ण झालर के साथ उसके सिर की ओर खड़े हैं और सकहीन की पुत्री नील, नल, हनुमान और दूसरे वानर सुग्रीव के साथ राम की समस्या पर परामर्श कर रहे हैं और लक्ष्मण तथा दो तीन वानर महल के बाहर खड़े हैं।

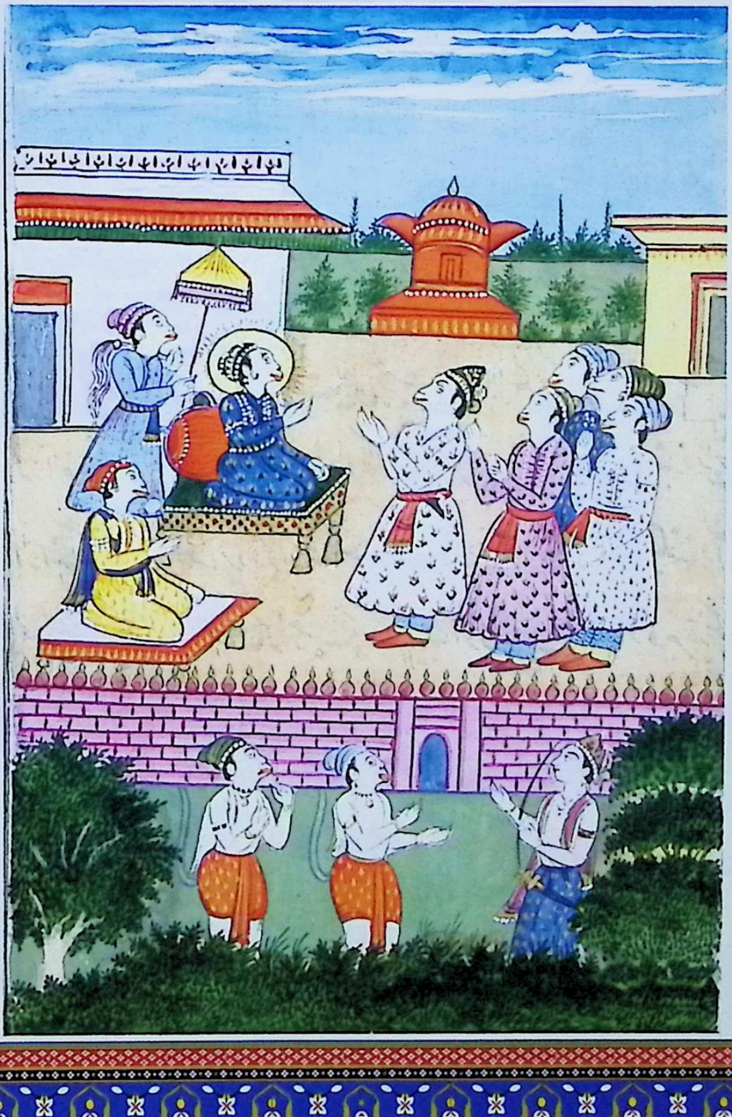

سر گفتار سگریو چون هنومان بدین آئین گفت سگریو مهورتی سر فرو کرده در فکر شد
همه منتریان گفت من چیزی بد نگفته ام و نه بد کرده ام لچهمن برادر رام چرا در غصه آمد
در این امر انچه در دانش شمایان در آید مقرر کرده بگوئید و مرا از رام و لچهمن خوفی نیست
اما دوست در غصه نباید اینقدر مرا تردد است دوست کردن مشکلست و محافظت آن
مشکلتر بسبب دولت اخلاص نمیماند بنابران از رام میترسم انچه او احسان کرده
من عوض او نکرده این الم چون سنان بدلم میخلد چون سگریو چنین گفت هنومان
از میان بوزنه ها و منتریان چنان بر زبان رانده این از تو عجب نیست که احسان او
فراموش بکنی و رام شجاع خوف ترا از دل بدر کرده برای خاطر تو بالی را کشت
و درین شک نیست که رام از غصه بلچهمن سخنها گفته باشد که تو از مشغولی و عیش
هنگام را نمیفهمی درختان شگفته اند و فلک صاف شده از انجم زیبا شده و ابر رفته
و اطراف روشن شده و دریاها شفاف گشته تو مغلوب شهوة و معاشرت هستی
لچهمن این را دانسته آمده است و رام که مضطرب و غمناک و مهجور از اهلیه است
البته کلمات سخت گفته باشند تو تقصیر کرده و تدبیر این است که دست بسته رام را
خشنود کن گویند که منتریان را گفتار خیر خواهی را چه ضرور باید گفت بنابران خوف را
دور کرده خیر خواهی تو میگویم اگر کمان را برداشته رام در غصه آید میتواند که جچهه و دیوتا

सर्ग-९६

सुग्रीव की वार्ता

जब हनुमान ने यह कहा तो सुग्रीव कुछ देर सिर झुकाकर सोचते रहे फिर सारे मंत्रियों से कहा; मैंने कोई गलत बात नहीं कही है और न बुरा किया है। राम के भाई लक्ष्मण क्यों क्रोध में आये हैं ?इस संबंध में तुम लोगों की बुद्धि में जो आए उसे सोचकर कहो। मुझे राम व लक्ष्मण से कोई भय नहीं है। लेकिन मित्र क्रोध में नहीं आता है। बस मुझे इतनी चिन्ता है। मित्र बनाना कठिन है और उसकी रक्षा करना और अधिक कठिन है। धन के कारण सद्भाव शेष नहीं रहता है इस कारण से मैं राम से डरता हूँ। उन्होंने जो उपकार किया है मैंने उसका बदला नहीं चुकाया है। यह बात मेरे मन में भाले के समान चुभती है। जब सुग्रीव ने यह कहा तो वानरों और मंत्रियों के बीच से हनुमान यह बात अपने मुख पर लाए कि यह आपकी ओर से आश्चर्य नहीं है कि आप उनके उपकार को नहीं भूलते हैं। वीर राम ने भय को हृदय से दूर करके आपके लिये बालि को मारा और इसमें सन्देह नहीं है कि राम ने क्रोध के कारण लक्ष्मण से कुछ बातें कहीं होंगी। आप अपनी व्यस्तता और विलासिता के कारण अवसर को नहीं समझ रहे हैं। वृक्ष खिले हुए हैं, आकाश स्वच्छ है, सितारों से सुसज्जित है, बादल जा चुका है और चारों ओर प्रकाश है। नदी साफ हो चुकी है। आप वासना से लीन संभोग में व्यस्त हैं। लक्ष्मण इसको जानकर आये हैं और राम ने जो दुखी चिन्तित और पत्नी के वियोग के शिकार हैं, निःसन्देह कटुवचन कहे होंगे। आपने अपराध किया है अब उसका निराकरण यह है कि आदर से राम को प्रसन्न कीजिये लोग कहते हैं कि मंत्रियों को राजा की भलाई की बात अवश्य कहनी चाहिए। इस कारण मैं भय को दूर करके आपकी भलाई की बात कहता हूँ। यदि धनुष उठाकर राम क्रोध में आते हैं तो उनके भीतर इतनी शक्ति है कि यक्ष देवता

وکند هرپ و تمام عالم را برهم زند لهذا سر فرو کرده با قبیله نمسکار نموده
شرط بجا آرد خلاف فرموده رام و لچهمن در دل هم مگذران که رام
زور آدمی ندارد و بلک مانند اندرست درینجا هم صورت محل و سگریو
و هنومان و نل و نیل و سکهین و انگد بدستور و انجا هنومان دست بسته عرض مینماید
و لباس و مکان نوع دیگر

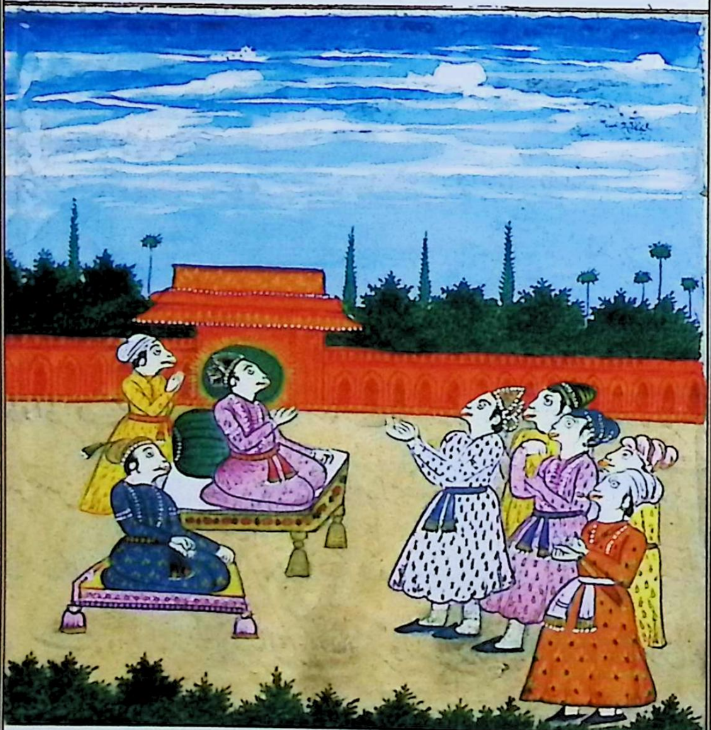

سرکو داخل شد نیز

और गन्धर्व तथा सारे संसार को ध्वस्त कर दें। अतः सिर झुकाकर कबीले के साथ नमस्कार करते हुए शर्त पूरी कीजिये और राम व लक्ष्मण के आदेश के विरुद्ध कुछ मत सोचिये। क्योंकि राम मनुष्य का बल नहीं रखते अपितु वह इन्द्र के समान हैं।

यहाँ भी महल का चित्र है और सुग्रीव, हनुमान, नील, नल और सुषेण अंगद यथावत् हैं। यहाँ हनुमान हाथ जोड़कर निवेदन कर रहे हैं तथा वस्त्र और महल दूसरे प्रकार का है।

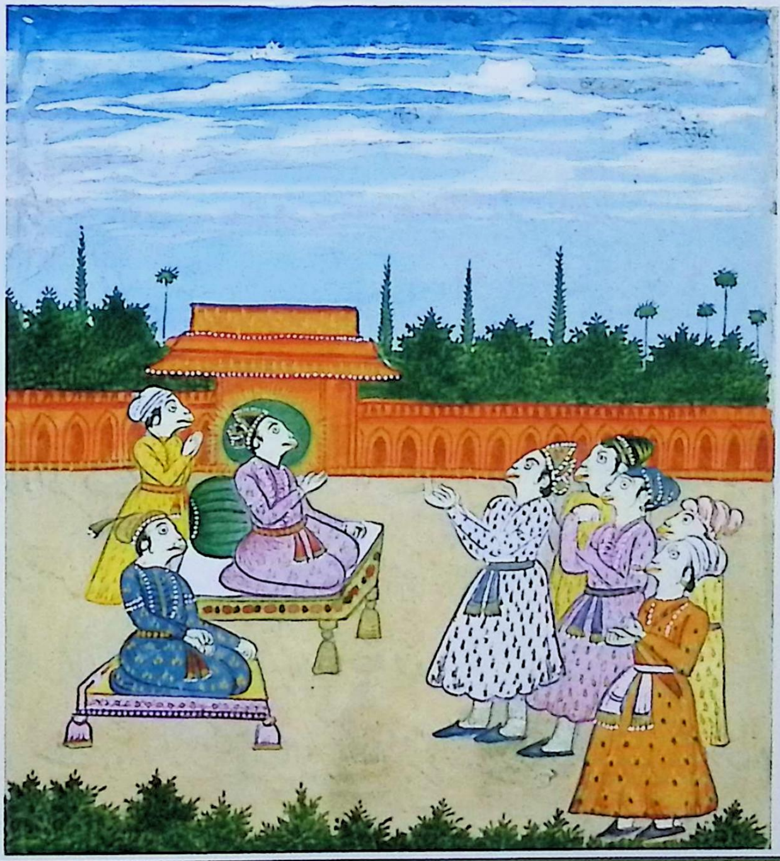

سرک داخل شدن لچهمن القصه بموجب اجازت سکریو لچهمن داخل شهر کشکندها شد بوزنه‌های
که کلان شکل و بسیار زور بودند لچهمن را دیده دست بسته ایستادند و لچهمن را در عقبه
دیدن بهیچ نوع مانع شدن نتوانستند و لچهمن آنجا کوها یعنی غارها را از طلا آراسته
بدید و از انواع جواهر مرصع دید و درختان اقسام کلدار و ستونهائی از بیدوریه
که قسمی از نیلم باشد بدید و بالائی آنها تورن یعنی بالائی بندروار از مرجان بدید
و خانه‌هائی و مناظر باقسام سن یعنی جواهر آراسته دید و درختان شکفته بابر
کام پهل دید یعنی هر ثمره که دل تمنا کند موجود شود و آن مکان از بوزنه‌ها که پسران دیو
و کندهرپ بودند زیبا بود که هر یک از بوزنه‌ها مالا و پارچه دب داشت و چندن
و اکر و غیره خوشبوی آلوده بود و شاهراه دید مانند فراخی سمیرو بندهاچل کوه
کشاده و انواع مناظر نظر کرد و تالاب پر از نیلوفرها دید و دریاچه‌ها که از کوه بر آمده
بودند دید و راه آمدن دیوتاها و پترها دید و خانه انکد دید و خانه مینده و دوبد نظر کرد و خانه
های کویه و کواچه و کج و شربهه و بدهمال و سنپاتی و سوبرجا جبه و هنومان و کومده و سکهین و نیل و نل
و دبرماهو و سوباهو و سنت و دیگر بوزنه‌ها را نظر کرد و خانه‌هائی از زر و جواهر آراسته
گویا تمام کوه سفید است و خانه سکریو را چون خانه اندر دید که مناظر و کنگرها سفید
چون کیلاس داشت و درختان سرب کام پهل و سایه سرد دلخواه داشت و خوشبوئی

सर्ग-६७

लक्ष्मण का प्रविष्ट होना

अतः सुग्रीव की आज्ञानुसार लक्ष्मण किष्किंधा शहर में प्रविष्ठ हुए। वानर जो बड़े रूप वाले, शक्तिशाली थे लक्ष्मण को देखकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये और लक्ष्मण को क्रोध में देखकर किसी प्रकार बाधा नहीं उत्पन्न कर सके। लक्ष्मण ने वहाँ पर्वतों अर्थात् गुफाओं को सोने से सुसज्जित देखा और विभिन्न प्रकार के रत्नों से सजा देखा, फूलदार वृक्ष और उनके तने नीलम से सुसज्जित देखे और उनके ऊपर तूरन अर्थात् मरजान की भाँति वानरों की माला देखी। महलों और झरोखों को मनो रत्नों से सजा देखा, और वृक्षों को लहलहाता हुआ फलों के साथ देखा, अर्थात् प्रत्येक वह फल जिसकी इच्छा करो वह उपस्थित था और वह स्थान वानरों से जो देव और गन्धर्व की अप्सरायें थीं, सौन्दर्य से ओत-प्रोत थीं। वानर वस्त्र और दूब घास की माला रखते थे और चन्दन तथा अगर आदि की सुगन्ध वातावरण में रची बसी थी और उन्होंने सड़के देखीं। विन्ध्याचल पर्वत की भांति फैला हुआ और विभिन्न प्रकार के दृश्य देखे। तालाब को नीलोफर से भरा देखा और नदी तथा झरने, जो पर्वत से निकले थे देखे। देवताओं के आने का मार्ग और पत्र देखे, अंगद का महल देखा, द्विविद का महल देखा और गज, गवय, गवाक्ष, शरभ, सम्पाति, विद्युन्माली, सूर्याक्ष, हनुमान, कुमुद, सुषेण, नल, नील, सुबाहु, सुनेत्र और दूसरे वानरों के घर देखे। कुछ महल हीरे जवाहरात से सुसज्जित थे मानों कि पूरा सफेद पर्वत है और सुग्रीव का महल इन्द्र के महल के समान देखा जिसके दृश्य और सफेद कंकण कैलाश पर्वत के समान थे, जो सब काम फल और छाया ठण्डी रखते थे और भांति-भांति की सुगन्ध रखते थे

انواع کلهها داشت بر دروازه بسیار بوزنهها قوتمند چون ابر نیله و دارنده سلاح
دید و بر دروازه تورن یعنی بندروار طلا نظر کرد در خانه سکریو بی دهشت درآمد شد
او را نزدیک آمده دانسته سنجوان یعنی وزرای سکریو پیشوا دست بسته رفتند آنها
که هنومان وغیره بودند موافق ضابطه گفت نموده پیشتر رفت و اندرون خانه دید
که از پلنگها و آسنها بسیم و زر آراسته اند و سکریو بر پلنگ و جای خواب طلای
نشسته و از دب جامهها و مالاها چون مهندر ارنده هست و عورات که دب پیرایه دارند
نزدیک او یند و مانند کبیر نجورمی نشسته و هزاران زنان با خود دارد چنانکه
آندر در اپسرها بنماید و تارا بطرف چپ و روما جانب راست نشسته و چامرها بادندی
طلائی عورات بر و میرانند عیشهای او و رنجهای برادر خود بیاد آورده خشم لچهمن
دوچند میشد چشم سرخ کرده و لبها گزیده بار بار نفسها سرد مانند افعی هفت
که در سوراخ بند کرده میکشید سکریو او را در طیش دیده دست بسته یکایک برخاست
و تارا و روما هر دو عورت او عقب او دست بسته ایستادند و سکریو در هر دو زنان چنان مینمود
که مابین دو نشاکها انجم قمر نماید بعد از آن سکریو به بسیار اعزاز و اکرام پیشوای
لچهمن آمد و درخواست کرد تا اندرون درآید لچهمن بطیش اندر رفت سکریو قدری
دلگرفته شد تارا او را دلدهی کرد و سکریو با تارا چنان خوشنما بود که ماه با ستاره باشد

[illegible] ×

उन्होंने द्वार पर बहुत से वानर शक्तिशाली नीले बादल के समान और हथियार रखने वाले देखे। तोरण अर्थात् वानर समान द्वार पर सोना देखा और सुग्रीव के महल में निर्भय होकर प्रविष्ट हो गये। उनके निकट आया हुआ जानकर संजवान अर्थत् सुग्रीव के मंत्री अगुवायी के लिये करबद्ध हो गये। उन लोगों से जो हनुमान आदि थे नियमानुसार वार्ता की और आगे बढ़ गये। महल के अन्दर देखा कि वह पलंग सोने चांदी से सुसज्जित था और सुग्रीव पलंग एवं सोने की मसहरी पर बैठा है और घास की माला और वस्त्र महेन्द्र के समान डाले हुए है। स्त्रियां जो घास के वस्त्र पहने हुए है उसके निकट हैं और कुबेर के समान प्रसन्नतापूर्वक वह बैठा है। हजारों स्त्रियां उसके साथ हैं जैसे कि इन्द्र अप्सराओं में होते हैं। तारा बायीं ओर और रूमा दाहिनी ओर बैठी है और सोने की छड़ी वाले झालर स्त्रियां हिला रही हैं। उसका यह ठाठ बाट और अपने भाई का दुख याद करके लक्ष्मण का क्रोध दो गुना हो गया। आंखे लाल करके और होंठ मींच कर बार-बार सांस लेते थे जैसे कि वह अजदहा सांप जो छिद्र में बन्द कर दिया गया हो, और मुंह खोलते थे। सुग्रीव उनको क्रोध में देखकर अचानक हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और तारा और रूमा उसकी दोनों स्त्रियाँ उसके पीछे हाथ जोड़कर खड़ी हो गयीं और सुग्रीव उन दोनों स्त्रियों के मध्य ऐसा लग रहा था जैसे तारों के झुरमुट में चन्द्रमा दिखाई देता है। उसके बाद सुग्रीव बहुत ही अधिक आदर के साथ लक्ष्मण की अगुवाई के लिये आया और निवेदन किया कि अन्दर पधारे। लक्ष्मण क्रोध में भीतर गये। सुग्रीव थोड़ा दुखी हुए। तारा ने उसका दुख दूर किया और सुग्रीव तारा के साथ ऐसा अच्छा लग रहा था जैसे कि चन्द्रमा तारों के साथ भला लगता है।

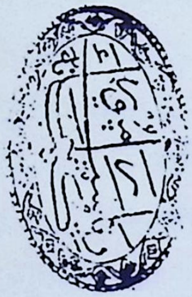

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (५८३) सादा है।

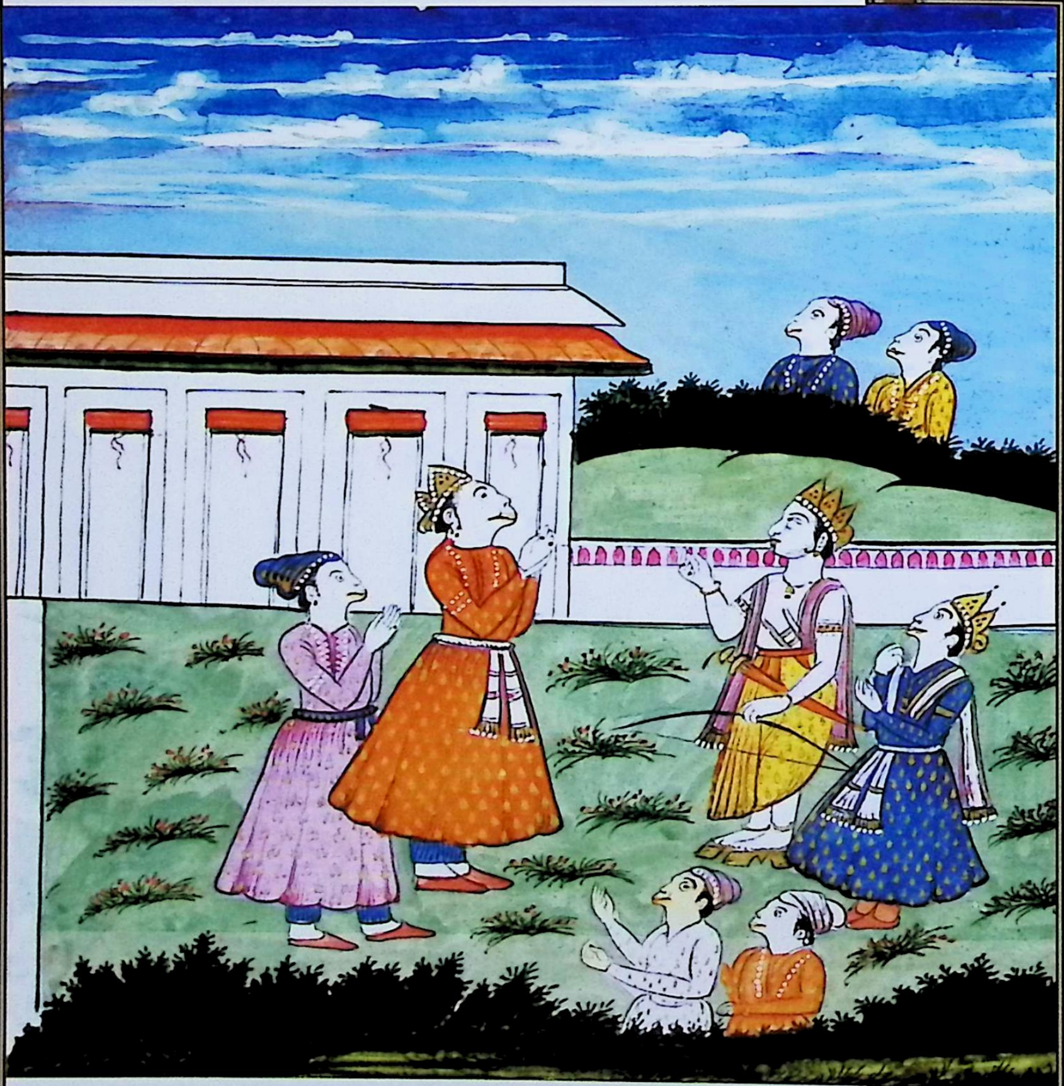

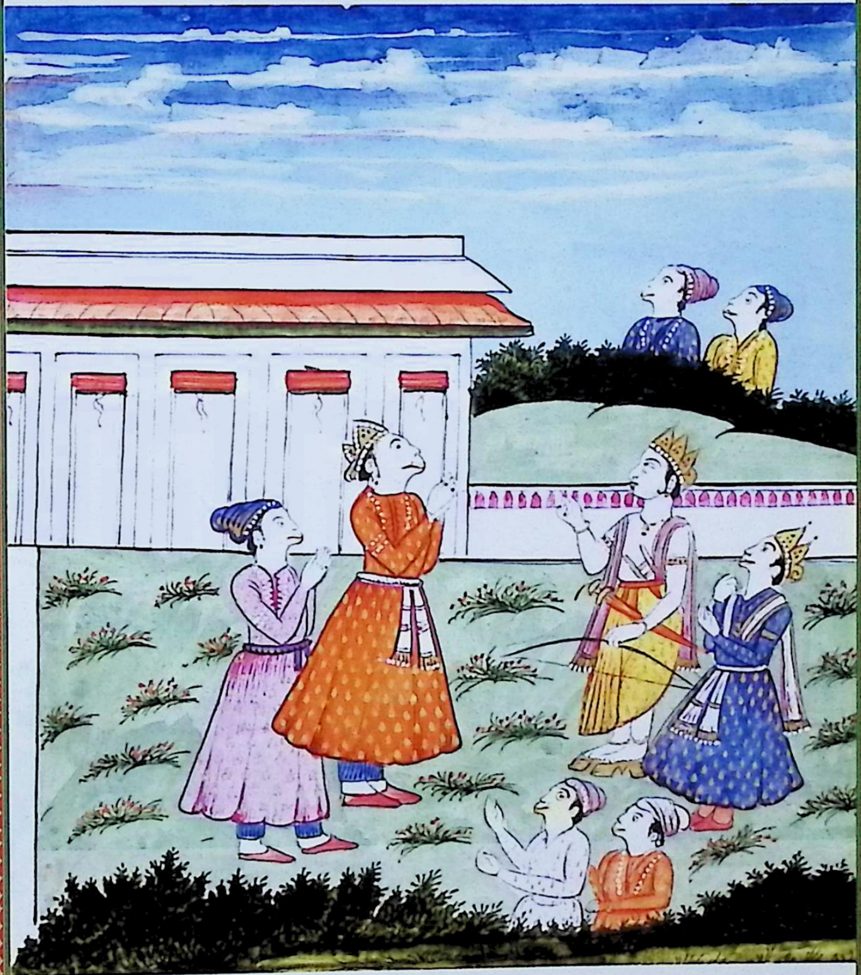

سرک غصه لچهمن سگریو لچهمن را در غصه آمده دیده مکانِ ایستادن را گذاشته
و تارا را هم بتفاوت گذاشته باستقبال رسید و مانند کلب برچهه ایستاد و تارا هم
از میان زنان نزدیک او قدم نهاد و به لچهمن گفت که بنشیند او که از گفتار
برادر در غصه بوده در جواب گفت من چنان دوت یعنی قاصد نیم که به نشستن
و بچیزی گرفتن و خوردن لایق باشم هرگاه کار فرستنده من شود به ستکار
یعنی باعزاز و اکرام سزاوار باشم سگریو از خوف نمسکار کرده چنان گفت که رام که داننده
آتما یعنی خود هست ما همه مانند خادم او هستیم و همان خواهیم کرد که مرضی رام خواهد بود و ارگهه
و پاتر یعنی پرستش موافق ضابطه بگیر و بعد گرفتن آن و نشستن تو بر آسن و بعد موافق
خواهش تو کلمات خواهیم گفت لچهمن گفت مرا بزرگ من گفته است بتغیر کردن کار
ستکار او قبول نکنی و تو پیغام بزرگ من بشنو و اگر نیک دانی بر آن عمل کن
سگریو همچنان ایستاده و زنان گرد حلقه کرده که لچهمن گفت آن رام کاردان راست گو
میلئی
و راجه جهان که ترا بطریق احسان کردن بر دوستان راج داده با او پرتگیا دروغ
از تو کدام کاذب تر باشد اگر برائی بهائمی دروغ گفته شود پنج کس را هلاک کند و دروغ
برائی گاو ماده ده کس را و دروغ برائی اسپ صد کس را و اگر دروغ برائی طلا گفته شود
ذات و غیر ذات را هلاک کند و اگر برائی زمین گفته شود همه را بکشد و برائی زمین دروغ

सर्ग-६८

लक्ष्मण का क्रोध

सुग्रीव ने लक्ष्मण को क्रोध में आया हुआ देखकर अपने खड़े होने का स्थान छोड़कर स्वागत के लिये पहुँचा और पालतू कुत्ते के समान खड़ा हो गया और तारा भी स्त्रियों के मध्य से उसके निकट पहुँची तथा लक्ष्मण से कहा कि बैठिये। उन्होंने जो भाई की बातों से क्रोध में थे उत्तर में कहा; मैं ऐसा विचार नहीं रखता कि बैठने और कोई वस्तु लेने और खाने के योग्य हूँ। जिस समय मेरे भेजने वाले का काम हो जायेगा उस समय मैं आदर व सम्मान का अधिकारी बनूँगा। सुग्रीव ने डर से नमस्कार करते हुए कहा राम जो आत्मा अर्थात् स्वयं को जानने वाले हैं हम सब उनके सेवक हैं और हम वही करेंगे जो राम की इच्छा होगी। और हमारी पूजा आप नियमानुसार स्वीकार कीजिये। उसको लेने और घास के आसन पर आपके बैठने के बाद आपकी इच्छानुसार हम बात करेंगे। लक्ष्मण ने कहा; मेरे बड़े भाई ने कहा है कि काम किये बिना उसका सम्मान मत स्वीकार करना, और तुम बड़े भाई का संदेश सुनो और यदि उचित समझो तो उसका पालन करो। सुग्रीव उसी प्रकार खड़ा था और स्त्रियाँ उसके चारों ओर घेरा बनाये हुए थीं कि लक्ष्मण ने कहा; ''वह राम जो काम जानने वाले सत्यवादी और संसार के राजा हैं जिन्होंने तुमको मित्रों पर उपकार करने के रूप में राज्य दिया तुम उनके साथ झूठ बोलने का प्रयास करते हो तुम से बड़ा झूठा और कौन होगा ?यदि पशुओं के लिए झूठ बोला जाता है तो वह पाँच लोगों की हत्या करता है और गाय के लिए दस लोगों की, और घोड़े के लिये सौ लोगों की हत्या करता है, और जो झूठ सोने के लिये बोला जाता है तो वह जाति और बिना जाति की हत्या कर देता है, और यदि भूमि के लिये

هرگز مباد و اگر کسی با کسان وعده دروغ کند خود را و اقربا را بکشد و هر که احسان کنندگان را
بذله فراموش کند او در همه ذیحیات کرت کهن شود کهن آنرا گویند که جگت را خراب کند
و احسان را فراموش کند و نیز کسی که وعده کرده را خلاف کند او را هم کرت کهن گویند
و برهما که تمام آفرینش او را منسکار میکنند این اشلوک بطریق گیت فرموده است
معنی آن اشلوک اینست هر که برهمن را بکشد و هر که شراب خورد و هر که دزدی کند
و هر که برت بشکند همه نکرت یعنی قابل خارج کردن از مردم هستند اما هیچکس زیاده تر
از کرت کهن نیست و تو ای بوزنه دروغ گو بیشک کرت کهن هستی با رام که اول
احسان کرده است عوض نیکی ترا بجهته تلاش سیتا اهلیه رام تدبیر کردن لازم است
ای بدطریق تو در عیش مشغول شده و رام را نمیدانی که تو بسبب او راج یافته احسان را
نمیفهمی همین زمان بیک تیر بالی را کشته دیده اما دانایان را مثل تو احسان نباید کرد
و بر نادانان و کرت کهنان یعنی احسان فراموشان و آنان که مغلوب عورت باشند
احسان نباید کرد و تو بر شرط خود قایم شو و براه بالی مرو کدام عاقل و جهاندیده مانند تو
در عیش مشغول است و بسبب عورات بسیار تصدیع خواهی کشید چنانکه می تمام اسیر کشید از
دست گرفتن و آتش بمیان دادن تو برادر مرا دغا دادی و تو بددل و دروغ گو
و خواهان عورات هستی اینک ترا از تیر بخانه جم میفرستم و با آواز تیرها جگر دوز چنان میکنم

झूठ बोला जाता है तो सबको मार डालता है। भूमि के लिए कदापि झूठ नहीं बोलना चाहिए। यदि कोई किसी के साथ किया वचन झूठ प्रमाणित करता है तो अपने को और सम्बन्धियों को मारता है। जो उपकार करने वालों का बदला भुला देता है वह समस्त जीवधारियों में कृतघ्न होता है। कृतघ्न उसको कहते हैं जो सारे संसार को खराब करता है और उपकार को भूल जाता है। जो प्रण के विरुद्ध करता है उसको भी कृतघ्न कहते हैं और ब्रह्मा ने जिन्हें सारी प्रजा नमस्कार करती है यह श्लोक गीत के रूप में बताया है। इस श्लोक का अर्थ यह है कि जो ब्राह्मण को मारता है, जो शराब पीता है, जो चोरी करता है, जो व्रत तोड़ता है यह सारे लोग नकरत अर्थात् निकाल दिये जाने के योग्य हैं लेकिन कोई भी व्यक्ति करत कहन से अधिक नफरत नहीं होती है और तुम ऐ झूठ बोलने वाले वानर ! निःसन्देह तुम कृतघ्न हो। राम के साथ, जिन्होंने प्रथम तुम पर उपकार किया तुम उनका बदला नहीं चुका रहे हो। तुम्हारे लिये राम की पत्नी सीता को खोजने की योजना करना अनिवार्य है। ऐ बुरे कर्म वाले तू विलासिता में व्यस्त हो गया और राम को नहीं जानता कि उन्हीं के कारण से तूने राज्य पाया है। तू उपकार को नहीं समझता है। तूने इस समय बालि को एक ही बाण मारा गया देखा है। निःसन्देह बुद्धिमानों को तुझ जैसे के साथ उपकार नहीं करना चाहिए। मूर्खों पर और कृतघ्नों अर्थात् उपकार भुला देने वालों और जो लोग स्त्रियों के अधीन रहते हैं उन पर उपकार नहीं करना चाहिये। और तू अपनी शर्त पर दृढ़ हो, और बालि के मार्ग पर मत चलो, तुझ जैसा और दूरदर्शी विलासिता में व्यस्त है। तू स्त्रियों के कारण बहुत कष्ट उठायेगा जैसा कि शराब हाथ में लेने और आग पकड़ने से कष्ट होता है। तूने मेरे भाई को धोखा दिया है। तू झूठा, भोग विलास में लिप्त तथा बुरे हृदय वाला है। अभी मैं तुझे बाण से यम के घर भेज देता हूँ

که دیگران دوستی کرده باز بر تو نگردند و تا زمانی که تو تیرها از او لا داچهوا کو نخورده

بآسایش خفته و کار رام را در دل نمیگذاری درینجا صورت محل سر

عورات او

سگریو با نواع زیب و زینت بطور دیگر و سگریو بطور خوب و تارا در دیا

غضبان است

جام در دست با لچهمن سخن میگوید و گرد پیش بوزنه استاده اند و لچهمن بصورت

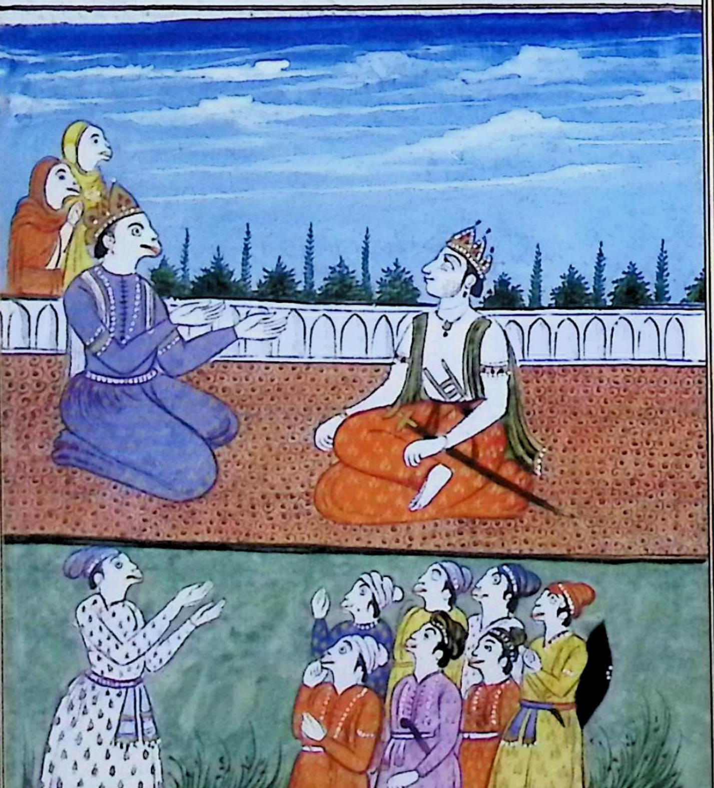

मैं बाणों से तेरे साथ ऐसा व्यवहार करूँगा कि दूसरे लोग कभी तेरी मित्रता की ओर वापस नहीं आयेंगे और जब तक तू इक्ष्वाकु की सन्तान के हाथों से बाण नहीं खा लेता तब तक तू आराम से सोता रहेगा और राम का कार्य करने का विचार दिल में नहीं लायेगा।

सुग्रीव के महल का चित्र, दूसरे तरीके का विभिन्न प्रकार की सज्जा से सुसज्जित है, और स्वयं सुग्रीव

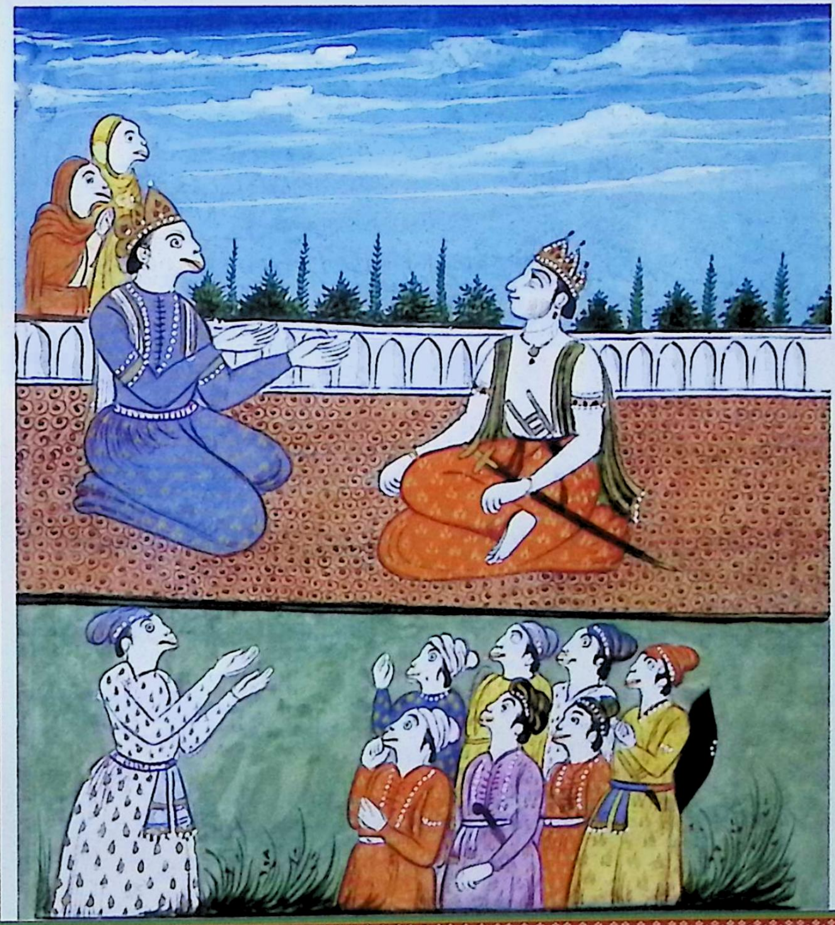

سرک گفتن تارا چون لچهمن چنان بر زبان راند تارا که نزدیک سکریو بود لچهمن
گفت که تو بچنین کلمات گفتن سزاوار نیستی این راجه بوزنه هاست و تخصیص از زبان
تو برآمده و این نه کرتکهن ست نه دغاباز نه غصه دار نه دروغ گو نه کینه نهاد نه احسان
فراموش ست و کاریکه رام لچهمن کرده انداز دیگران نتواند شد و سکریو را از لطف رام
راج بوزنه ها رسید و من و روما هر دو برسیدند و آن رام که رنج میکشد او را راحت هم
خواهد رسید و در معاشرت فی الواقع گذشتن ایام معلوم نمیشود و شوامنتر که با گهرتاچی
اپسرا بسیار سال بعیش گذرانده و در لذت عیش گذشتن ایام را هیچ ندانست چه جای
دیگر مردم و این سکریو بعد هزار سال آرام یافته و هنوز از لذائذ دنیوی سیر نشده
رام معذور دارد و تو مانند دیگران بغصه سزاوار نه و همچو تو فهمیده یکایک خشم نکند
و این سکریو دهرماتمان عاقل و فرمان بردار گرو یعنی پیر است و از صحبت تو زیاده تر
شده به بدگفتن سزاوار نه و برادر کلان تو که سردار جنگ آوران ست این راجه
بوزنه ها دوستدار او ست چنانچه رام ترا لایق پرستش و اعزاز ست همچنان این ست
از سکریو خورسند شو و غصه بگذار و من میدانم که سکریو برای خاطر رام مرا و روما را
و دولت و اقبال و راج بوزنه ها و خانه را ترک کند و خاطر نگهدارد اگرچه رفاقت او کردن
که میتواند که او را مانند این هزاران ست اما سیتا را بخدمت رام خواهد آورد چنانچه

सर्ग-९९

तारा की वार्ता

जब लक्ष्मण अपने मुख पर यह बात लाए तो तारा ने जो सुग्रीव के निकट थी लक्ष्मण से कहा कि "आपको ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता। यह वानरों के राजा हैं और यह बात केवल आपने ही कही है। यह न कृतघ्न है न धोखेबाज़, न क्रोधी और न झूठे, न वैमनस्य रखने वाले और न उपकार को भुलाने वाले हैं। जो कार्य लक्ष्मण और राम ने किया है वह दूसरों से नहीं हो सकेगा। सुग्रीव को राम की कृपा से वानरों का राज्य मिला है और हम दोनों भी अर्थात् मैं और रूमा भी उसे मिलीं। और वह राम जो कष्ट सहन कर रहे हैं, उन्हें भी सुख मिलेगा। समाज में दिन बीतने का पता नहीं चलता है। विश्वामित्र ऋषि ने घृताची (मेनका) अप्सरा के साथ बहुत वर्ष बिताये। सुख और आनन्द में दिन के बीतने को कुछ नहीं समझा। यहाँ तक कि दूसरे लोग और इस सुग्रीव ने हज़ारों वर्ष के बाद सुख पाया है। अभी सांसारिक सुख से तृप्ति भी नहीं है। राम उसको विवश समझेंगे। तुम अन्य लोगों के समान क्रोध करते शोभा नहीं देते हो। तुम जैसा बुद्धिमान व्यक्ति अचानक क्रोध नहीं करता है, और यह सुग्रीव धर्मात्मा, बुद्धिमान तथा गुरु अर्थात् अपने गुरू का आज्ञाकारी है। आपके सम्पर्क से और अधिक हो गया है तथा आपका उसको बुरा कहना शोभा नहीं देता है। आपका बड़ा भाई जो योद्धाओं का सरदार है, यह वानरों का राजा उसका मित्र है अतः जिस प्रकार राम आपके लिये पूजा और आदर के योग्य हैं उसी प्रकार यह है। सुग्रीव से प्रसन्न हो जाइये और क्रोध छोड़ दीजिये। मैं जानती हूँ कि सुग्रीव, राम के लिए, मुझे और रूमा को धन व मान सम्मान और वानरों के राज्य तथा महल को छोड़ देगा और उनकी रक्षा करेगा। यद्यपि उनके जीवन भर का साथ कौन दे सकता है, क्योंकि उनके समान हज़ारों हैं। लेकिन वह सीता को राम के पास अवश्य लायेगा

روهني بخدمت ماه آيد و راون را خواهد كشت چنانچه رام مرا با سكريو توصل داد
همچنان سكريو سيتا را با رام متوصل خواهد ساخت وانچه من ميدانم آن را بشنو
راون را زشت دل شنيده ام وده هزار كرور راچهس در لنكا هستند وسي وشش
راچهس ديگر هستند وچهار ده هزار راچهس ديگر هستند تا آنكه اينهمه راچهسان كه كارآزموده
اند كشته نميشوند راون را نتوان كشت راقم ترجمه گويد كه اسما شمار در كتب حساب
مثل كرن كوتهل وليلاوتي بدين آئين است اول درجه آحاد است بعده عشرات
بعده مآت وبعده الوف چنانچه ده يك را ده شود وده ده را صد وده صد را هزار
وده هزار را ابت گويند وده ابت را پريت وآنرا لك گويند وده لك را دشلچ وده
دشلچ را كوت وآنرا كرور گويند وده كرور را اربد واربد نيز گويند وده اربد را ابج
وده ابج را كهرب وده كهرب را نكهرب وده نكهرب را مهاپدم وده مهاپدم را سنكبه
وده سنكبه را جلده وآن را سمدر نيز گويند وده جلده را انت وده انت را مده
وده مده را پرارده خوانند تا لفظ پرارده هژده پايه مقرر است القصه تارا با لچهمن
ميگويد كه راچهسان بسيار سخت كاراند از فوج بسيار بوزنه ها توان كشت اينقدر
بالي مرا ميگفت وايام استقبال را نميدانم كه چه خواهد شد انچه شنيده ام گفتم
لهذا بوزنهاي مبارز وپرزور از جابجا طلبيده انتظار آمدن آنها داريم بعد از ان براي

जैसे कि रोहिणी चन्द्रमा के पास आती है। रावण की हत्या करेगा जिस प्रकार राम ने मुझे सुग्रीव से मिलाया उसी प्रकार सुग्रीव सीता को राम से मिलायेगा। और जो कुछ मैं जानती हूँ उसे सुनो। मैंने सुना है कि रावण के साठ हृदय हैं और दस हज़ार करोड़ राक्षस लंका में है इसके अलावा छत्तीस हजार राक्षस और हैं, तथा चौदह हजार राक्षस और हैं। जब तक कि यह सारे राक्षस जो कामरूप अर्थात् विभिन्न रूप बदलने वाले हैं मारे नहीं जायेंगे रावण की हत्या नहीं की जा सकती। अनुवादक कहता है कि गणना की पुस्तकों जैसे करन कौतूहल और लीलावती में इस प्रकार लिखा है, पहले स्थान पर इकाइयां हैं उसके बाद दहाईयां, उसके बाद सैकड़ा और फिर उसके बाद हजार है। अतः दस इकाई का दस होता है और दस दहाई का सौ, और दस सौ का हजार और दस हजार को अयुत कहते हैं, और दस अयुत को परीत और उसको लाख कहते हैं, और दस लाख को वशलज और दस वशलज को कोटि और उसको करोड़ कहते हैं। और दस अरबद अंज और दस अंज के खरब और दस खरब को नखरब और दस नखरब को महापदम और दस महापदम को शंख और दस शंख को जलदह और उसको समदर भी कहते हैं। और दस जलदह को अन्त और दस अन्त को मदह और दस महद को परादह बोलते हैं। परादह के शब्द तक अट्ठारह स्तर निर्धारित हैं। अतः बहुत से वानरों की सेना से ही मारा जा सकता है, बालि मुझसे यह कहा करते थे। और मैं भविष्य को नहीं जानती कि क्या होगा ?मैंने जो सुना है उसका वर्णन कर दिया। अतः योद्धा और शक्तिशाली वानर प्रत्येक स्थान से बुलाकर हम उनके आने की प्रतीक्षा करेंगे उसके बाद

کار رام راجه سکریو خواهد برآمد و حالا بوزنه ها و خرس ها و گولانگولان هزاران و صدها و کروران میرسند و تو غصه را برطرف کن و از دهن تو سخنان طیش شنیده زنان بوزنه ها را استقرار نمیماند که اول خوف بابت کشتن بالی دیده اند درینجا

صورت محل سرای سکریو بطور مذکور و سکریو دست بسته پیش لچهمن استاده و یکطرف روما عورت او با چامر و طرف دوم تارا چامر بکف با لچهمن سخن میگوید و دیگر صف بوزنه استاده و لچهمن خشمناک و بوزنه ده نفر و ماده بوزنه هشت نفر

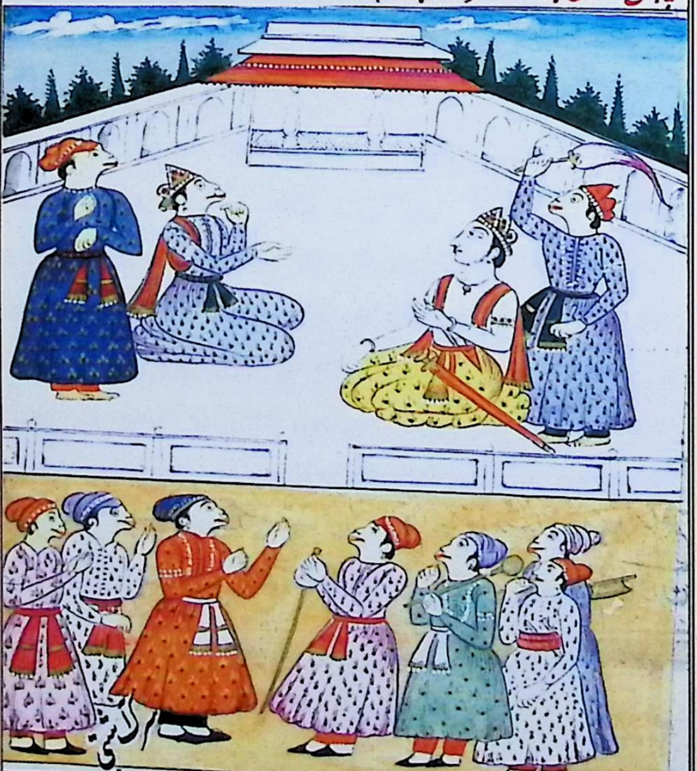

राम का कार्य करने के लिये राजा सुग्रीव निकलेंगे। और अभी वानर, ऋक्ष और गोलांगूल वानर सैकड़ों, हजारों और करोड़ों की संख्या में पहुँच रहे हैं आप क्रोध छोड़िये, आपके मुख से क्रोध की बातें सुनकर वानरों की स्त्रियों की शांति भंग हो जाती है। क्योंकि वह पहले ही बालि की हत्या का भय देख चुकी हैं।

सुग्रीव के महल का चित्र, यथावत् और सुग्रीव आदरपूर्वक लक्ष्मण के सामने खड़ा है और एक ओर उसकी पत्नी रूमा मुर्छल लिये हुए है और दूसरी ओर तारा हाथ में मूर्छल लिये लक्ष्मण से बातें कर रही है। दूसरी पंक्ति में वानर खड़े हैं, और लक्ष्मण क्रोध में है। वानर दस है और मादा बानरिया आठ हैं।

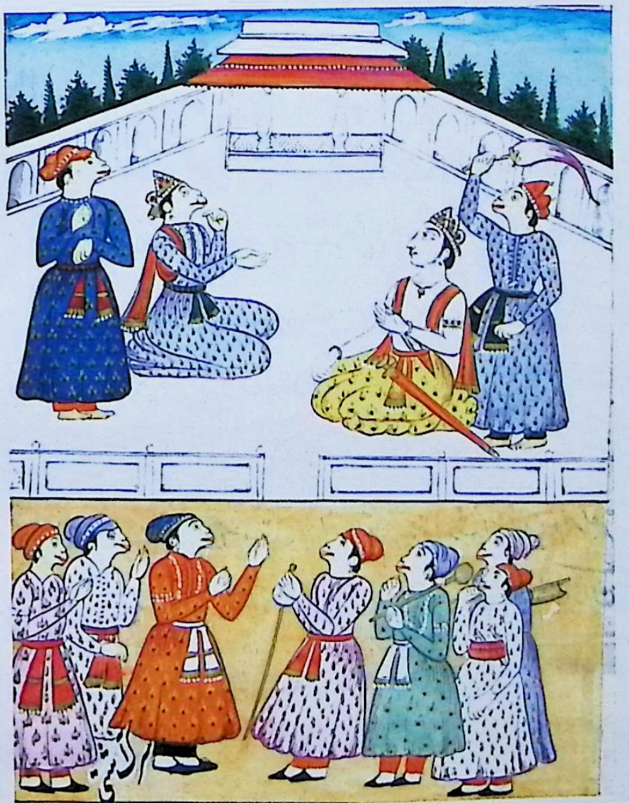

سرگ آشتی کردن هردو بعذر گفته تارا را شنیده لچهمن که خوی جبلی او نرم دلی است قبول کرد و سگریو را که از لچهمن خوف بدل رسیده بود برطرف شد و مالا که در گلو بود یکطرف کرده هشیارتر شد و بلچهمن گفت من بی سر و سامان و از راج افتاده را رام راج داده است من هم بعوض سعی میکنم سیتا می آید و راون کشته میشود از رفاقت رام این کار میکند اگرچه رفاقت او را چه در کار است کسی که هفت درخت تال و کوه و زمین را بیک تیر سوراخ کرده باشد و هر گاه کمان کشد از آواز آن زمین و کوه ها بلرزد اما ما هم عقب او رویم و برای کشتن راون و همراهان او خواهیم رفت قصور ما معاف فرمایند سگریو چنین گفت لچهمن مهربان بدل شده گفت که تو دانان و کارکننده و جنگ آور هستی سزاوار و برجسته گفتی باینچنین گفتن سوای تو و برادر کلان من که لایق باشد نوکران باری و مروت برابر رام هستی و خوی تو چنانست که براج کردن بوزنه ها لایقی و از امداد تو رام دشمن را شتاب خواهد کشت و درین شک نیست و تو همراه من بیرون برای و رام را که از غم مهاجرت عورت مغموم است تسلی کن و آنچه تو گفتار رام غمناک که از غصه گفته شنیدی و من آنچه گفتم همه معاف کن کن و معذور دار که صاف دلان غصه دار را معذور دارند لهذا آنچه گفتم معاف من غم رام را شنیده از غصه ترا کلمات سخت گفتم معذور دار **سرگ طلبیدن بوزنه ها**

सर्ग-१००

दोनों का संधि करना

तारा की इतनी बात सुनकर लक्ष्मण ने, जिनका स्वभाव नम्र है, स्वीकार कर लिया और सुग्रीव के हृदय में लक्ष्मण की ओर से जो भय बैठा था दूर हो गया। माला जो उसके गले में थी उसे वह निकालकर और सतर्क हो गया तथा लक्ष्मण से कहा, ''मुझे बिना किसी सामान और राज्य से वंचित को, राम ने राज्य दिया है। मैं भी उसका बदला चुकाने का प्रयास करूँगा। सीता आयेंगी और रावण मारा जायेगा। राम के सहयोग से यह कार्य होगा। यद्यपि उनको किसी के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। जो व्यक्ति ताल के सात वृक्षों, पर्वत और धरती में एक बाण से छिद्र कर देता है, और जो ऐसा योद्धा हो कि जब धनुष खींचता है तो उसकी ध्वनि से धरती पर्वत कांप जाते हैं। लेकिन फिर भी हम उनके पीछे जायेंगे और रावण और उसके साथियों की हत्या करने के लिये जायेंगे। हमारा अपराध क्षमा कीजिये।'' सुग्रीव ने यह कहा तो लक्ष्मण ने दयालु होकर कहा कि ''तुम धर्मात्मा, कार्य करने वाले और युद्ध जो हो तुमने बात निःसंकोच और उचित कही। ऐसी बात कहने के लिये तुम्हारे और मेरे बड़े भाई के अतिरिक्त और कौन योग्य होगा। तुम्हारा स्वभाव ऐसा है कि तुम वानरों पर राज्य करने के योग्य हो। और तुम्हारी सहायता से राम शत्रु को अतिशीघ्र समाप्त कर देंगे, इसमें संदेह नहीं है। तुम मेरे साथ बाहर चलो और राम को जो पत्नी के वियोग से दुखी है; सान्तवना दो, और जो कुछ तुमने दुखी राम की बात जो उन्होंने क्रोध से कही, सुनी और जो कुछ मैंने कहा सबको क्षमा करो। स्वच्छ हृदय वाले क्रोध वालों को नम्य समझते हैं। अतः जो कुछ मैंने कहा क्षमा कर दो। मैंने राम का दुख सुनकर क्रोध में तुमको कठोर बातें कहीं। क्षमा करो।

سکریو بالچهمن چنین گفته بعد از ان به هنومان که عقب استاده بود گفت بوزنه ها را
که در وبنید رلیه و کیلاس کوه و مندر و نچال میباشند و آنانکه در کوهستان و سمدر ها
بچهم واست کر که انجا آفتاب غروب میشود میباشند آنها رنگ نیلوفر دارند و رنگ سرمه دارند
و آنانکه مانند فیل اند و آنکه در کوه سرمه باشند و آنانکه در کوه دردهومر میباشند و آنکه
در منشلا دهات کوه میباشند و آنها که رنگ ابرشام و رنگ سرخ میباشند و آنکه در صحراها
و مکان تپسویان میباشند و دیگر جاها همه را بطلب اگرچه پیش ازین دوت ها یعنی قاصدها
فرستاده شدند لیکن باز برای سرعت دیگر بفرست و آنها که در ده روز نرسند
آنها را بقتل رسان صدها و هزاران و کروران را از حکم من بطلب و از حکم من باطراف روند
هنومان این را شنیده بهر طرف بوزنه کان بطریق قاصدان فرستاد و آنان
مانند بشن قدم برداشته رفتند و بوزنه ها حکم سکریو را چون پیک مرگ دانسته از خوف او
زود روان شدند از میان است کر که در انجا آفتاب غروب میشود ده کرور بوزنه رسیدند
و از کوه انجن یعنی سرمه سه کرور بوزنه رسیدند و از کیلاس کوه هفت کرور و هفصد بوزنه
رسیدند و از کوه هماچل هزار کرور و هزار بوزنه رسیدند و از کوه بندهاچل نه کرور
بوزنه رسیدند و آنها که برکنار دریای شیر میباشند و نارجیل وغیره میخورند تعداد آنها
کرده نمی شد و از صحاری و جبال و نجار آنقدر بوزنه رسیدند که آفتاب از سایهٔ آنها

پوشیده شد

सर्ग-१०१

वानरों को बुलाना

सुग्रीव ने लक्ष्मण से यह कहा। उसके बाद हनुमान से जो उसके पीछे खड़े थे कहा "वह वानर जो महेन्द्र, हिमवान् , विन्ध्य, कैलास पर्वत और मन्दराचल में रहते हैं और जो पश्चिम के कोहिस्तान और समुन्द्रों में रहते हैं, और अस्ताचल जहाँ सूर्य अस्त होता है रहते हैं, और वह कि जिनका रंग नीलोफर के समान है और जिनका रंग सुरमें जैसा है और जो हाथी के समान है और जो कि सुमेरू के पर्वत में रहते हैं, और जो कि धूम्रगिरि पर्वत में रहते हैं और जो कि महारूण पर्वत में रहते हैं और वह कि जिनका रंग शाम के बादल जैसा है और जिनका रंग लाल है और जो कि वनों और तपस्या करने वालों के स्थान पर रहते हैं, और जो दूसरे स्थान में रहते हैं, सबको बुलाओ। यद्यपि इससे पहले दूत भेजे जा चुके हैं लेकिन शीघ्रता के लिये दूसरों को पुनः भेजो और जो वानर कि दस दिन के अंदर न पहुँच सके। उनकी हत्या कर दो। सैकड़ों, हजारों और करोड़ों को मेरे आदेश से बुलाओ और चारों ओर जाये।" हनुमान ने यह सुनकर चारों ओर वानरों को दूत के रूप में भेजा और वह विशन के समान पैर उठाये हुए गये। और सभी वानर सुग्रीव के आदेश को मौत का दूत समझते हुए भय के कारण शीघ्र चले गये। और अस्ताचल से जहाँ सूर्य अस्त होता है दस करोड़ वानर पहुँचे और अंजन अर्थात् सुरमे के पर्वत से तीन करोड़ वानर पहुँचे। कैलाश पर्वत से सात करोड़ आठ सौ वानर पहुँचे और हिमाचल पर्वत से हजार करोड़ और हजार वानर पहुँचे। विंध्याचल पर्वत से नौ करोड़ वानर पहुँचे और जो कि मीठी नदी के किनारे रहते हैं और नारियल खाते हैं उनकी संख्या नहीं गिनी गई और वनों पर्वतों तथा समुन्द्रों से इतनी संख्या में वानर पहुँचे कि उनकी छाया से सूर्य छिप गया।

پوشیده شد بعضی بوزنه‌ها که از راه همانجل روان شدند دران راه عجیبه دیدند
آنجا که جک مهادیو شده بود و نشان اقدام کوری یعنی پاربتی است و بیدی هم هست
و مول و پهل آنجا را بمزه امرت دیدند و آنجا هر غله و نبات که میروید هر کس که آنرا
بخورد تا یکماه گرسنه نشود بوزنه‌ها مول و پهل آنجا و آب و دواهای آنجا گرفته
و از ان جک مهادیو کلها نیز گرفته برای خاطر سکریو آوردند و در همان صورت
بوزنه‌های شتاب رو در کشکندها رسیدند سکریو پیشکش همه‌ها بگرفت و دیگر
بوزنه‌ها نیز رسیدند و پیشکش‌ها آوردند سکریو همه را قبول کرد و خوشوقت شد

درینجا صورت لچهمن و سکریو مقابل نشسته و تارا و روما عقب سکریو استاده‌اند و انگد نزد لچهمن نشسته
و چامر بردار پس لچهمن استاده و هنومان وغیره برای تعجیل رسیدن فوج آمد رفت میدارند
و رسیدن فوج بوزنه‌ها بر فیلان و اسپان وغیران با نیزه‌ها و نشان‌ها و صورت جنگل و دنیا برای لچهمن

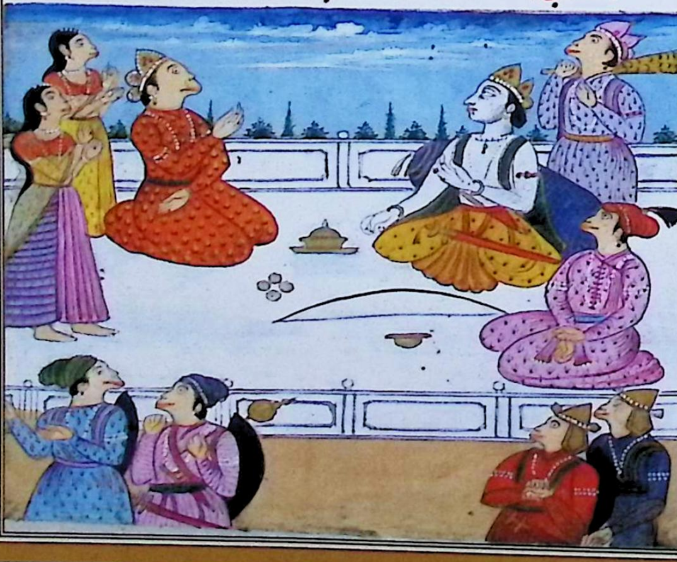

कुछ वानर जो हिमाचल पर्वत के मार्ग से आये उन्होंने उस मार्ग में अनोखी वस्तु देखी, वहाँ, जहाँ कि महादेव का यज्ञ हुआ था और गौरी अर्थात् पार्वती के पग के चिह्न हैं और बेदी के भी, और वहाँ उन्होंने मूल और फल को अमृत के स्वाद के साथ देखा। जहाँ प्रत्येक अनाज और पौधा उगता है जो व्यक्ति उसे खाता है वह एक महीने तक भूखा नहीं होता है। वानरों ने वहाँ से मूल, फल, जल और औषधियाँ लीं और इस महादेव के यज्ञ से फूल भी लिये और सुग्रीव के सम्मान के लिये आये। उसी क्षण तीव्र गति वानर भी किष्किन्धा पहुँच गये। सुग्रीव ने सबकी भेंट स्वीकार की और दूसरे वानर भी पहुँच गये और भेंट लाये। सुग्रीव ने वह सब स्वीकार किया और प्रसन्न हुए।

लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र, जो आमने सामने बैठे हैं और तारा और रूमा सुग्रीव के पीछे खड़ी है। अंगद लक्ष्मण के पास बैठा है और मूर्छल भाई लक्ष्मण के पीछे खड़े हैं। और हनुमान आदि सेना के शीघ्र पहुँचने के लिये अन्दर बाहर आ जा रहे हैं और वानरों की सेना का हाथियों और घोड़ों आदि पर भालों के साथ पहुँचना, लक्ष्मण के लिये झण्डे और वन तथा वृक्षों का चित्र।

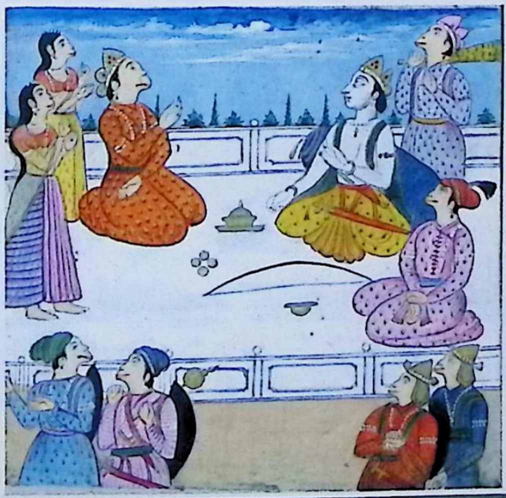

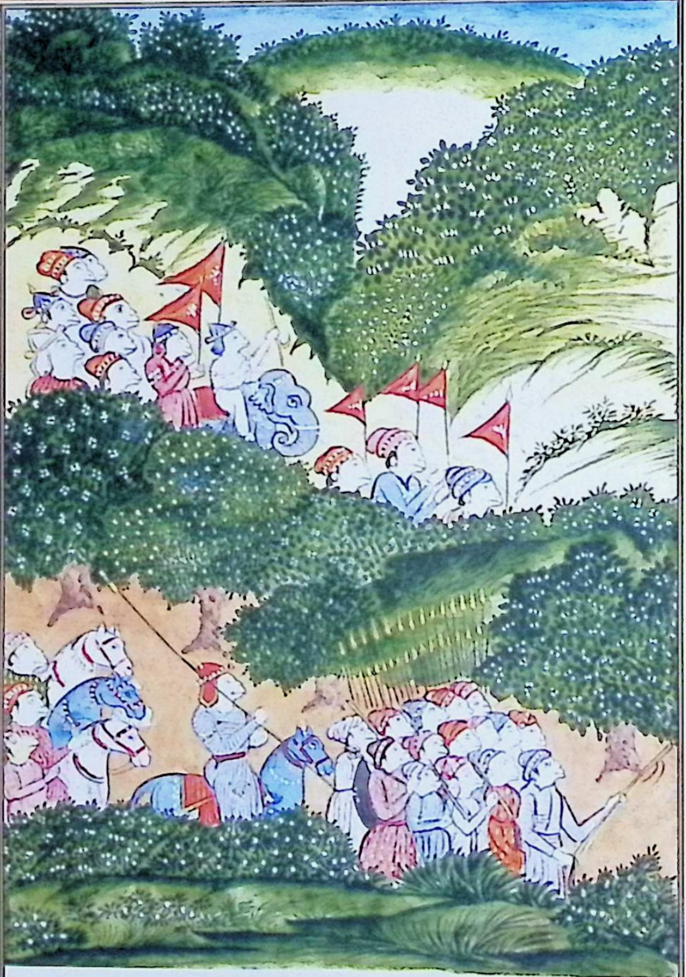

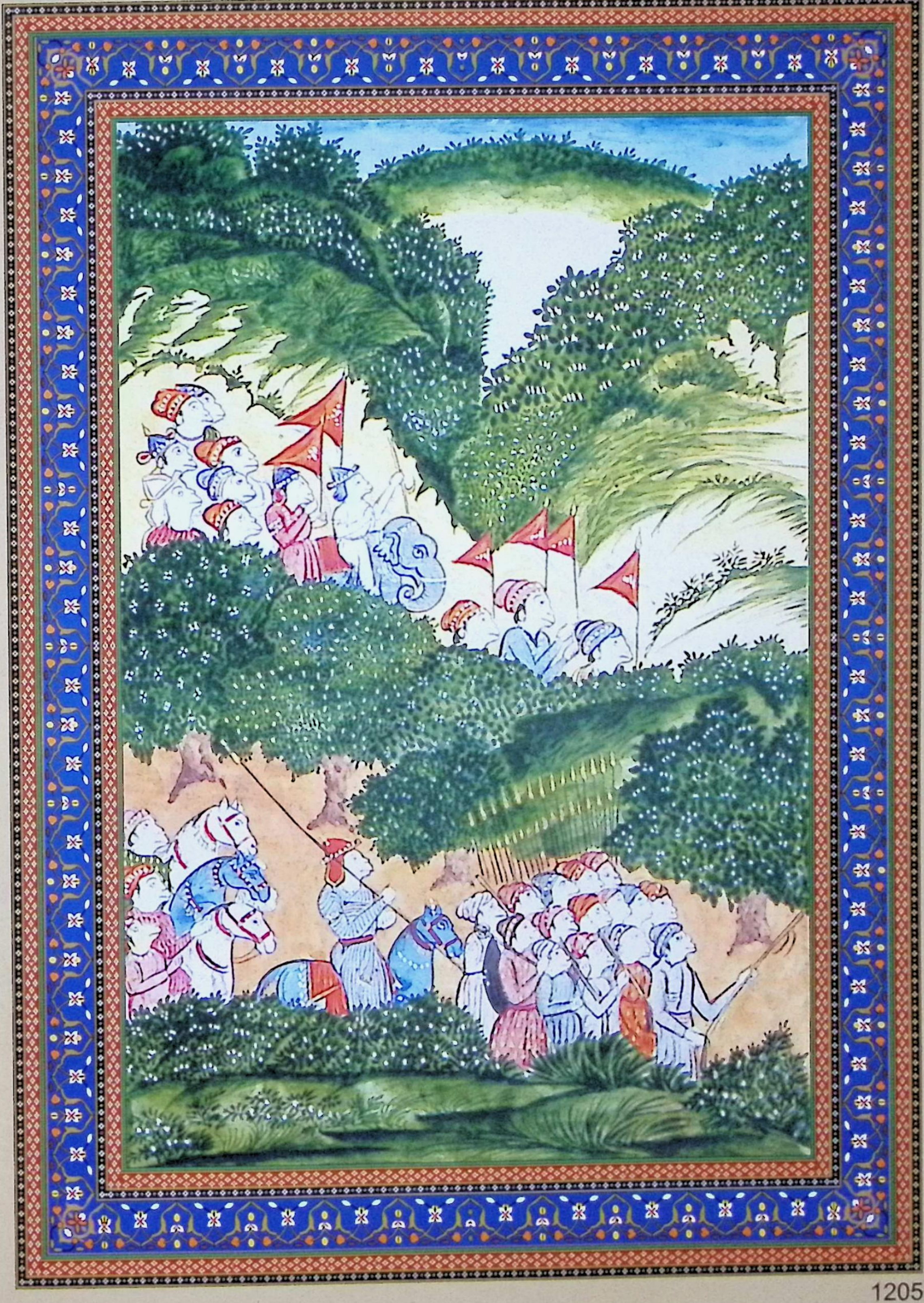

بکسر آمدن سکریو نزد رام پس ازان سکریو برای دیدن رام اراده رفتن کرد
و پای ترا بنمود بعد ازان بوزنه ها را طلبیده و لچهمن را هم متفق کرده بطریق مشورت گفت
اینقدر لشکر بوزنه ها رسید و دیگر بوزنه ها هم خواهند رسید و زور آوران و قوتمندان
بوزنه ها که رسیده اند شمار آنها نتوان کرد اما با سرداران بوزنه ها نزد رام میروم
تا او لشکر را دیده مهربان شود و غصه بگذارد و من دست بسته میروم و لچهمن را
پیشتر نموده رام را مهربان کنم او که مرا جان و راج و خانه و تارا داد و بالی را
بشکست او را به پیشم گفته سکریو را شنیده هنومان گفت که بسیار معقول گفتی و از رفتن
لچهمن رام هرگز غصه نخواهد کرد و او دایم بی خشم و دبرماتمان و محب دهرم و پناه امان خواهان
و شتاب شاد میشود و کار دهرم کننده و از تهه ست و مانند سمندر بهنر ها ست و در و خطائی
نیست تراز و دیا بدرفت بعد ازان از لچهمن مشورت پرسیده از کشکندها بیرون رفت
و تارا و غیره عورات را همانجا گذاشت و آن زنان بمحل سراهای خود رفتند
بعد ازان سکریو به بوزنه فرمود که شبکا یعنی تخت روان برای سواری بیارید
آنها شبکا مرصع بود حاضر کردند سکریو با لچهمن بر و سوار شد و چتر سفید بر سر
و چامر سفید هر دو همراه کردید و سنکهه و کرنا و غیره نواختند و بندیان یعنی
بادفروشان سرکر آمدن بوزنه ها و دادن محله چون سکریو دست بسته سخن گفت

सर्ग-१०२

सुग्रीव का राम के पास आना

उसके बाद सुग्रीव ने राम को देखने के लिये उनके पास जाने का निश्चय किया और मिट्टी का पैर बनाया। उसके बाद वानरों को बुलाकर और लक्ष्मण को भी मिलाकर परामर्श के रूप में कहा; "वानरों की इतनी सेना पहुँच गयी, और दूसरे वानर भी पहुँचेंगे, और बलवान और शक्तिशाली वानर जो पहुँचे हैं उनकी गिनती नहीं की जा सकती। अब मैं वानरों के सरदारों के साथ राम के पास जाता हूँ। ताकि वह सेना को देखकर दयावान हो जायें और क्रोध त्याग दें। मैं करबद्ध जाता हूँ और मैं लक्ष्मण को आगे भेजकर राम को दयालु बनाऊँगा। जिसने मुझे प्राण, राज्य, महल और तारा को दिया और बालि को पराजित किया, मैं उसे देखूंगा। सुग्रीव की बात सुनकर हनुमान ने कहा कि बहुत उचित बात आपने कही। लक्ष्मण के साथ से राम कदापि क्रोध नहीं करेंगे और वह सदा से क्रोध से दूर, धर्मात्मा, धर्म को मित्र रखने वाले और संरक्षण चाहने वालों की शरण रहे हैं। शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, और धर्म का काम करने वाले हैं। समुन्द्र के समान असंख्य गुणों वाले हैं और उनमें कोई कमी नहीं है। तुमको शीघ्र जाना चाहिए उसके बाद लक्ष्मण से परामर्श लेकर किष्किन्धा से बाहर गया और तारा आदि स्त्रियों को वहीं छोड़ा और वह स्त्रियाँ अपने महल में चली गयीं। उसके बाद सुग्रीव ने वानरों से कहा कि शिबिका अर्थात तख्त रखा सवारी के लिए लाओ। उन्होंने सुसज्जित शिबिका प्रस्तुत किया। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ उसमें सवार हुए और सिर पर शाही छत्र और सफेद मूरछल दोनों साथ हो गये और शंख और करना आदि फूंके और बाजा बजाने वाले साथ हुए।

सर्ग-१०३

वानरों का आना और सलामी देना

जब सुग्रीव ने हाथ जोड़कर बात की

51B

سرگ آمدن سگریو نزد رام پس ازان سگریو برای دیدن رام اراده رفتن کرد
و پائی تراب شود بعد ازان بوزنه ها را طلبیده و لچهمن را هم متفق کرده بطریق مشورت گفت
اینقدر لشکر بوزنه ها رسید و دیگر بوزنه ها هم خواهند رسید و زور آوران و قوتمندان
بوزنه ها که رسیده اند شمار آنها نتوان کرد اما با سرداران بوزنه ها نزد رام میروم
تا او لشکر را دیده مهربان شود و غصه بگذارد و من دست بسته میروم و لچهمن را
پیشرو نموده رام را مهربان کنم او که مرا جان و راج و خانه و تارا داد و بالی را
بشکست او را به پنم گفته سگریو را شنیده هنومان گفت که بسیار معقول گفتی و از رفاقت
لچهمن رام هرگز غصه نخواهد کرد و او دایم بی خشم و دهرماتان و محب دهرم و پناه امان خواهان
و شتاب شاد میشود و کار دهرم کننده و ارتهه ست و مانند سمدر پر هنرهاست و در وی خطائی
نیست ترا زود باید رفت بعد ازان از لچهمن مشورت پرسیده از کشکندها بیرون رفت
و تارا و غیره عورات را همانجا گذاشت و آن زنان بمحل سراهای خود رفتند
بعد ازان سگریو به بوزنه فرمود که شبکا یعنی تخت روان برای سواری بیارید
آنها شبکا مرصع بود حاضر کردند سگریو با لچهمن برو سوار شد و چتر سفید بر سر
و چامر سفید هر دو همراه کردید و سنکهه و کرنا و غیره نواختند و بندیان یعنی
باد فروشان سرگ آمدن بوزنه ها و دادن محله چون سگریو دست بسته سخن گفت

सर्ग-१०२

सुग्रीव का राम के पास आना

उसके बाद सुग्रीव ने राम को देखने के लिये उनके पास जाने का निश्चय किया और मिट्टी का पैर बनाया। उसके बाद वानरों को बुलाकर और लक्ष्मण को भी मिलाकर परामर्श के रूप में कहा; ''वानरों की इतनी सेना पहुँच गयी, और दूसरे वानर भी पहुँचेंगे, और बलवान और शक्तिशाली वानर जो पहुँचे हैं उनकी गिनती नहीं की जा सकती। अब मैं वानरों के सरदारों के साथ राम के पास जाता हूँ। ताकि वह सेना को देखकर दयावान हो जायें और क्रोध त्याग दें। मैं करबद्ध जाता हूँ और मैं लक्ष्मण को आगे भेजकर राम को दयालु बनाऊँगा। जिसने मुझे प्राण, राज्य, महल और तारा को दिया और बालि को पराजित किया, मैं उसे देखूंगा। सुग्रीव की बात सुनकर हनुमान ने कहा कि बहुत उचित बात आपने कही। लक्ष्मण के साथ से राम कदापि क्रोध नहीं करेंगे और वह सदा से क्रोध से दूर, धर्मात्मा, धर्म को मित्र रखने वाले और संरक्षण चाहने वालों की शरण रहे हैं। शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, और धर्म का काम करने वाले हैं। समुन्द्र के समान असंख्य गुणों वाले हैं और उनमें कोई कमी नहीं है। तुमको शीघ्र जाना चाहिए उसके बाद लक्ष्मण से परामर्श लेकर किष्किन्धा से बाहर गया और तारा आदि स्त्रियों को वहीं छोड़ा और वह स्त्रियाँ अपने महल में चली गयीं। उसके बाद सुग्रीव ने वानरों से कहा कि शिबिका अर्थात तख्त रखा सवारी के लिए लाओ। उन्होंने सुसज्जित शिबिका प्रस्तुत किया। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ उसमें सवार हुए और सिर पर शाही छत्र और सफेद मूरछल दोनों साथ हो गये और शंख और करना आदि फूंके और बाजा बजाने वाले साथ हुए।

सर्ग-१०३

वानरों का आना और सलामी देना

जब सुग्रीव ने हाथ जोड़कर बात की

رام در جواب گفت اندر بحر بگذارد یعنی آب بارد عجب نبود و آفتاب تاریکی دور کند
و ماه شب را روشن کند و زمین عالم بر خود نگاه دارد اینهمه عجب نبود و همچنین مثل تو با دوستان
اگر احسان کنند و بکار آیند عجب نبود من ترا امیدانم که راست گو هستی برادر و دوست بر چه بنسبتی
مرا تو هستی و تو سزاوار تلاش کردن سیتا هستی و راچهس او را برای بلاکی خود برده است
زود او را خواهم کشت چنانچه پدر اندرانی را که پلوم راچهس بود اندر کشت و از لطف تو
بمقصود خواهم رسید درین اثنا لشکر بوزنه ها که عقب لشکر بود ما بین راه می آمد نمودار شد
بوزنه ها زغند زنان رسیدند چنانچه زمین بلرزید و بطریق محله دادن بنظر رام گذشتند
چنانچه تمام اطراف از بوزنه های فیل مانند تیز دندان پوشیده شد و همه ها دارند
اسلحه از تال و شال و غیرها بودند و ده هزار سردار فوج یا بوزنه صد کرور ها و همه راه رونده
فلک هر جا که خواهند برسند بودند بسیاری باشنده کوه و بسیاری باشنده سمندر واقسام
جاها بودند و بسیاری برنگ آفتاب و برنگ نیلوفر و سفید بودند چنانکه با ده هزار کرور
بوزنه ستیل نام بنظر گذشت بعد ازان کیسری نام بوزنه پدر هنومان که مانند کوه
بود و مثل آتش و آفتاب برنگ بود با بسیاران هزار کرور بوزنه ها بنظر گذشت
بعد ازان گواچهه نام بوزنه با گولانگول ها که قسم بوزنه هاست بشمار یک کرور بنظر بگذشت
بعد ازان میگبه آب نام با خرس ها برنگ دخان بتعداد هزار کرور بنظر گذشت

و بعد ازان

तो राम ने उत्तर में कहा ''इन्द्र वज्र छोड़ते हैं, अर्थात् वर्षा करते हैं और आश्चर्य नहीं होता। सूर्य अंधकार समाप्त करता है और चन्द्रमा रात्रि को सुशोभित करता है, और पृथ्वी अपने जीवधारियों की रक्षा करती है यह सब भी आश्चर्यजनक नहीं होता। और इसी प्रकार यदि तुम जैसे मित्रों के साथ उपकार करें और काम आये तो आश्चर्य नहीं होगा। मैं तुम्हें जानता हूँ कि तुम सत्य पर हो और भ्राता और मित्र जो कुछ हो मेरे तुम्हीं हो। तुम सीता को खोजने के योग्य हो, और राक्षस उनको अपनी मृत्यु के लिये ले गया है। मैं शीघ्र ही उसे मार डालूँगा जैसा कि इन्द्राणी के पिता को, जो पुलोम राक्षस था इन्द्र ने, मार डाला था। तुम्हारे सहयोग से मैं अपने उद्देश्य में सफल हूँगा। इसी मध्य वानरों की सेना जो सुग्रीव के पीछे रास्ते के बीच आ रही थी, प्रकट हुई और वानर छलांगे मारते हुए ऐसे पहुँचे कि धरती काँप गयी। सलामी देने के रूप में राम के सामने से गुजरे। अतः समस्त धरती हाथियों की भांति तेज दातों वाले वानरों से छुप गयी। समस्त ताल और शाल से बने हुए अस्त्रों से सुसज्जित थे और दस हजार सेना के सरदार सैकड़ों करोड़ों वानरों के साथ आकाश के प्रत्येक मार्ग पर पहुंचने की योग्यता रखने वाले थे। बहुत से पर्वतों के रहने वाले और बहुत से समुन्द्रों के रहने वाले थे और बहुत से विभिन्न स्थानों के रहने वाले थे और बहुत से सूर्य के रंग के, नीलोफर के रंग के श्वेत रंग के थे। अतः दस हजार करोड़ वानरों के साथ शतबलि नामक वानर सामने से गुजरा, उसके पश्चात् केसरी नाम का वानर हनुमान का पिता जो पर्वत की भांति था और जिसका रंग अग्नि और सूर्य की भांति था करोड़हा करोड़ वानरों के साथ सामने से गया। इसके पश्चात गवाक्ष नामक वानर वानरों की एक जाति कोलानकोल की एक करोड़ की संख्या के साथ गुजरा। उसके पश्चात् मेघाब नामक वानर धुएं जैसी रंगत रखने वाले एक हजार करोड़ वानरों के साथ गुज़रा।

وبعد ازان پنس نام بوزنه باده کرور بوزنه بنظر گذشت ومیندو ودوبده هردو برادر
باهفده کرور بوزنه بنظر گذشتند وگند هماون نام باشش کرور بوزنه بنظر گذشت بعده انکه
که جوراج بود باهزار پدم بوزنه ویک سنکهه بنظر گذشت بعد ازان تار نام بوزنه باهزار کرور
بوزنه بنظر گذشت بعده نیل نام باده کرور بوزنه بنظر گذشت بعده دری مکهه نام بایازده کرور بوزنه
بنظر گذشت بعده نیت وکومده ود ویرو چیمن وسنتپاتی وات دورام وکهرک نیت
وجهاهنون وکج وگویه وسربه هریک باده ده کرور بوزنه ها بنظر گذشتند وسوای اینها بسیار
بوزنه گذشتند تمام کوه وصحرا پراز بوزنه ها شد هرسو جوق غرغنه میزدند وشور واواز میکردند
بعضی گرد سگریو می گشتند وبعضی او را امشکار میکردند وبعضی دست بسته پیش او می ایستادند سگریو
همه را برامچندر مینمود بعده سگریو همه را برای قیام در کوه ها وصحراها ومکانهای آب جاها مقرر کرد در اینجا

صورت مرور افواج وسگریو رام را تماشای لشکر میکنانند ولشکر میگذرد

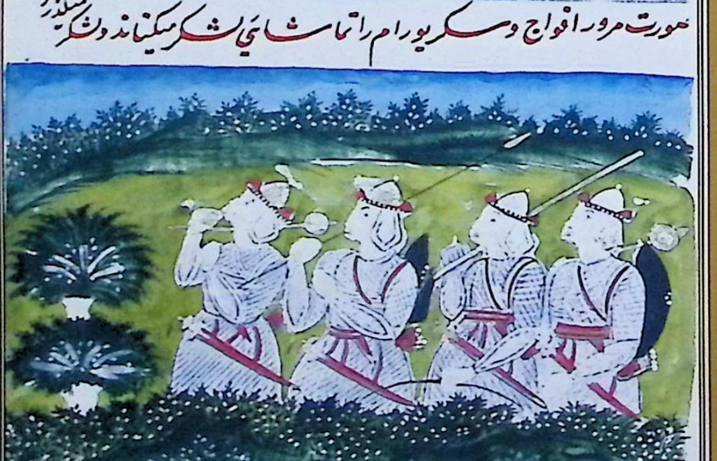

उसके बाद पनस नामी वानर दस करोड़ वानरों के साथ सामने से गुजरा, और मयन्द और द्विविद दोनों भाई सत्रह करोड़ वानरों के साथ नजर से गुज़रे और बलवान गज नामक वानर छः करोड़ वानर के साथ गया। इसके पश्चात् अंगद जो राजा का उत्तराधिकारी था हजार पदम और एक संख वानरों के साथ गुजरा। इसके पश्चात् तार नामक वानर हजार करोड़ वानरों के साथ सामने से गया। इसके पश्चात् नील नामक वानर दस करोड़ वानरों के साथ गया। इसके पश्चात् नल, गवण , जोफर, लक्ष्मण, सत्पाती, अत, वराम, खरक, नीत, महा, हनुमान, गज, गोया और सरबा दस-दस करोड़ वानरों के साथ गुजरे। इनके अतिरिक्त भी बहुत से वानर गये। समस्त पर्वत और वन वानरों से भर गये वह चारों ओर दौड़ते और छलांगे मारते-फिरते थे, शोर मचाते और आवाज निकालते थे। कुछ सुग्रीव के चारों ओर घूमते और कुछ उसको नमस्कार कर रहे थे। कुछ उसके समक्ष हाथ जोड़े ससम्मान खड़े थे। सुग्रीव सबको रामचन्द्र को दिखला रहा था। उसके पश्चात् सुग्रीव ने सबके लिये पर्वतों, वनों और पानी के स्थानों में रहने के स्थान निर्धारित कर दिये।

सेना के गुजरने का चित्र, सुग्रीव राम को सेना का दृश्य दिखला रहे हैं और सेना सामने से गुज़र रही है।

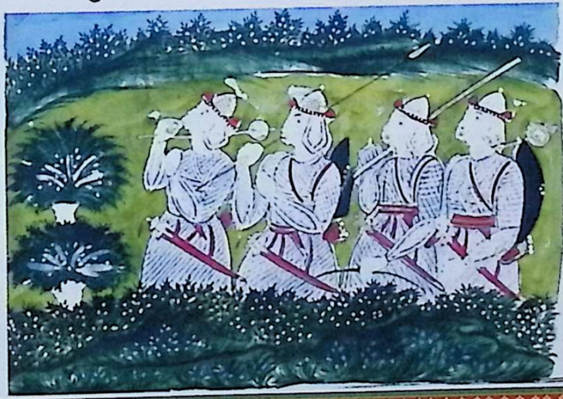

मूल पाण्डुलिपि में यह पृष्ठ (५९८) सादा है।

طلا میباشند و آنها که فقط ماهی میخورند و در ملک دیگر باشند کان جزائر و آنها که میان
میباشند اینهمه با حسن طریق نظر کنید و در ملک آنان که بکوهستان جزائر از کشتی ها میروند
و در جزایر ها که جواهر پیدا میشود و در سورن کوتی و سورن مندت نظر کنید و بعد از مرو
از جنبودیپ سنشر نام کوهی است که قلهٔ او بآسمان رسیده است و دیو دانوا انجا
میباشند در ان همه جا ها جابجا راون و سیتا را ملاحظه کنید و بعده آنطرف کالودک
نام سمدر است آنجا راچهسان میمانند و از امر برهما همیشه گرسنه میباشند بعده لوهت نام
سمدر است که آب او دایم سرخ میماند آنجا شاخ کلان درخت سالملی بنظر آید و آنجا خانهٔ گرز است
که سفید مانند کیلاس بشوکرمان کرده است و در آنمکانها سیتا را نظر کنید بعده کوشرنک نام
کوهی است که از میان آب با هزار سرون قله بیرون آمده و در آن کوه مندیها نام
راچهسان درشت که بانواع صورت اند و آویخته میمانند و بوقت بر آمدن آفتاب در آب فرو میروند و بلا
سو در شب باز پیدا میشوند که اندر آنها را شاپ داده است بعده چهیر دوک نام سمدر است
که چون ابر سفید از شیر پر است و در میان او سبهه نام کوه از نقره است آنجا نیلوفر نقره اند
که شاخ آنها از طلا است و راج هنس که سو در شنان آنها را میگویند آنجا هستند و آنجا
کنر و چهپه و چارن و طیور و مارها برای دیدن نیلوفرها میروند بعد از ان کهرب اودوک سمدر
که از روغن پر است آنجا بسبب کرکوت سر اسپ پیدا میشود و روغن آن سمدر را میخورد

जो सोने के समान होते हैं, वह जो केवल मछली खाते हैं, दूसरे देश में द्वीपों के निवासी हैं, वह जल के मध्य रहते हैं उन सबको भली प्रकार देखो और उन लोगों के देश में जो कोहिस्तान पर रहते हैं। जिन द्वीपों में रत्न उत्पन्न होते हैं, और सूरन कोती और सूरन मंडत को देखो और जरद्वीप से गुजरने के बाद शिशिर नामक एक पर्वत आता है जिसकी चोटी आकाश तक पहुँची हुई है। वहाँ देव और दानव रहते हैं और उन समस्त स्थानों में जगह-जगह रावण और सीता को खोजो और उसके बाद उस ओर कि जिस ओर आलोदक नामक समुद्र है, वहाँ राक्षस रहते हैं, और ब्रह्मा के आदेश से सदा भूखे रहते हैं। उसके बाद लोहित नामक समुद्र है जिसका जल सदा लाल रहता है वहाँ शाल्मलि नामक एक वृक्ष की एक बड़ी शाख (टहनी) दिखाई देती है वहाँ गरुड़ का घर है, कि उसे कैलाश के समान विश्वकर्मा ने सफेद कर दिया है उन स्थानों में भी सीता को देखो उसके आगे को शारंग नाम का एक पर्वत है, जो पानी के मध्य से हजार सरुन चोटियों के साथ बाहर निकला है। उस पर्वत में मनदेह नामक शक्तिशाली राक्षस जो विभिन्न रूपों के हैं और सदा लटके रहते हैं और निकलने के समय जल में चले जाते हैं और रात्रि में पुनः उत्पन्न होते हैं कि इन्द्र ने उनको शाप दिया है। उसके बाद क्षीरोदक नामक समुद्र है जो सफेद बादल के समान दूध से भरा है और उसके मध्य सबहा नामक पर्वत चाँदी का है वहाँ चाँदी के नीलोफर है जिनकी शाखें सोने की हैं। और राजहंस कि जिनको सुदर्शन कहते हैं वहाँ है। और वहाँ कनर, जछ, चारन, पक्षी और साँप नीलोफर देखने के लिये जाते हैं। उसके बाद कहरब ऊदक समुन्द्र है जो नील से भरे हैं वहाँ करतूत के कारण दरयाई घोड़ा उत्पन्न होता है और उस समुद्र के तेल को खाता है

وان سر اسپ را بدوا اشش گویند وانجا آواز بسیار جانداران شنیده میشود
هرگاه که در دهن آن اسپ می درآیند و بطرف اوترن سمدر جات روپ سلا نام کوه است
که تمام از طلاست و بمقدار مسافت چهارده جوجن که پنجاه و شش کروه باشد و در آن کوه
دیوانت یعنی شیش که هزار سر دارد بنظر می آید و آن انت نیله پارچه است اوتر شرا نام
تالی که از طلاست از کیت نشان او آراسته است و بطرف پورب آن هیم می نام کوه است
او را یکصد کرور ستون است و تا صد جوجن که چهار صد کروه باشد طول دارد و در بیدکا
آنجا سنگهای کلان از قسم طلا بنظر می آیند و شال و تال و تمال و کرنکا و کلها همه از طلا اند
و او را قله که عرض سه جوجن و طول ده جوجن دارد و آن قله را سومنس نام است و همه از
طلاست آنجا بکهیان نام بالکهیلا هنگام طلوع آفتاب بنظر می آیند و آنجا شام سرخ منماید
و بشن تربکرم که اوتار باهن است و برائی گرفتن راجه بل شده اول قدم در انجا نهاد دوا قدم
دوم بر سر سمیر کوه نهاد و او از اوتر جنبو دیپ گذشته آفتاب بغیر قله بنظر نمی آید
شعاع او قدری روشن میشوند همان چشم و یحیات روشن میکردند زین جا باران
و سیتا را باید جست و دیگر مکان که بیان کرده ام آنجا هم باید جست و در فرصت
یکماه برگشته باید آمد و زیاده ازان اگر خواهید بود از من قابل کشتن خواهید شد
ای بوزنه ها اینقدر جاها که گفته شد بجوئید و آنجا که آفتاب نمی تابد و مکان نیست

ازانهم

और इस दरियाई घोड़े को बदवाइश कहते हैं और वहाँ बहुत से जीवधारियों की ध्वनि (आवाज़ें) उस समय सुनी जाती हैं जिस समय कि वह घोड़े के मुख में प्रवेश करते हैं। और उत्तरी समुद्र की ओर रूपसला नामी पर्वत है जो सम्पूर्ण सोने का है और चौदह जोजन अर्थात् छप्पन कोस की दूरी पर है और उस पर्वत में देवान्त अर्थात् शीश जिसके हजार सर होते हैं दिखाई देता है। और वह नीले कपड़े का अन्त है। ऊतरशरा नाम है ताल का जो सोने का है। गीत से उसका चिन्ह सुसज्जित है और उसके पूर्व की ओर पर्वत है उसमें एक सौ करोड़ खंभे हैं और सौ जोजन अर्थात चार सौ कोस लम्बाई रखता है। उसके नीचे भारी पत्थर जो सोने की एक जाति से है दिखाई देते हैं, और शाल, ताल, करंगा और फूल सब सोने के हैं, और उसकी चोटी की ऊँचाई तीन जोजन और लम्बाई दस जोजन है और इस चोटी का नाम सौमनस है। और यह सब सोने का है वहां वैखानस महात्मा महर्षि नामक बालखिल्यगण सूर्य उदय के समय दिखाई देते हैं। और वहां शाम लाल लगती है ओर बिशन तरबकरम जो बामन का अवतार है, और राजा बलि को कैद करने के लिये आया है। पहला पग उसने वहां रखा और दूसरा पग सौमनस पर्वत पर रखा और वह अतर जम्बूद्वीप से गया है। सूर्य बिना चोटी के दिखाई नहीं आता है उसकी किरणें प्रकाशित होती हैं। उसी समय जीवधारियों की आंखें भी प्रकाशित होती हैं और उन्हीं स्थानों से सीता और रावण की खोज करना चाहिये। और दूसरे स्थान जिनका मैंने वर्णन नहीं किया वहां भी खोजना चाहिए। और एक महीने की अवधि में वापस आना चाहिये, और यदि उससे अधिक समय चाहोगे तो मेरी ओर से मार दिये जाने योग्य होगे। ऐ वानरो! इतने स्थानों में जो वर्णन की गयी ढूंढ़ो। और जहां कि सूर्य नहीं चमकता है और स्थान नहीं है

آنرا هم نمیدانم در یکجا گشته بیائید و دیگر جاها از زمین برای تفحص نشان خواهم داد

درینجا صورت رامچندر و لچهمن تاج مرصع بر سر و کمانها در بر و شمشیر بسته بر مسند نشسته اند

و سگریو مقابل اینها نشسته و صورت فوج بوزنه ها و صورت آنجاها که از بوزنه ها میگوید

و انجهارا میفرستد و صورت بیکهانان

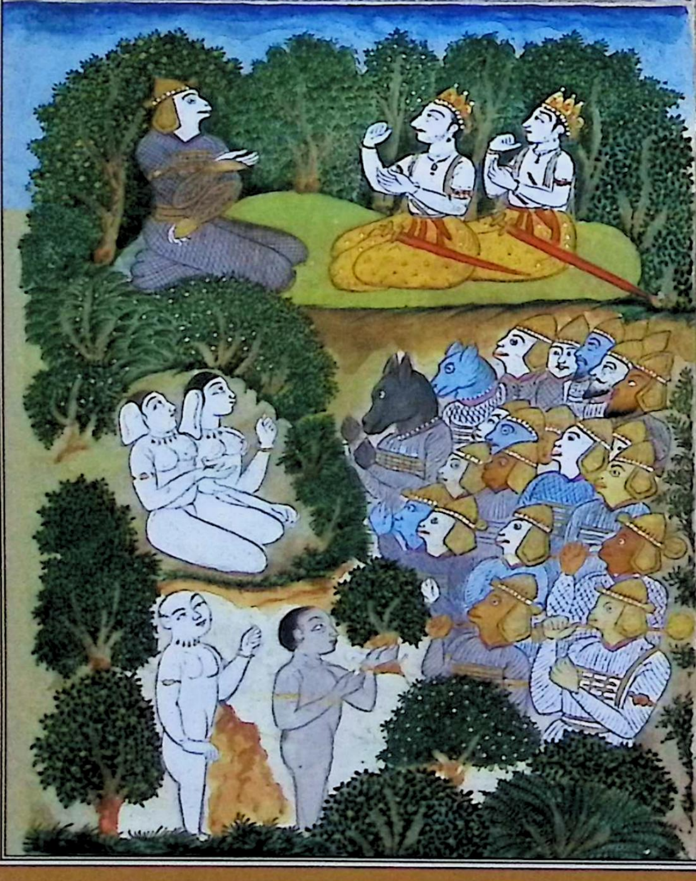

मैं भी उसको नहीं जानता हूँ। वहाँ भी ढूढ़ों और एक महीने में घूमकर वापस आ जाओ और पृथ्वी पर दूसरे स्थानों को ढूंढ़ने के लिये मैं चिह्नित करूंगा।

रामचन्द्र और लक्ष्मण का चित्र जिनके सिर पर सुसज्जित ताज है धनुष पास में है, और तलवार बांधे हुए आसन पर बैठे हुए है, और सुग्रीव उनके सामने बैठा है। वानरों की सेना का चित्र और उन स्थानों का चित्र जो वानरों से कह रहा है, और जहां उनको भेज रहा है और बेगहांन का चित्र।

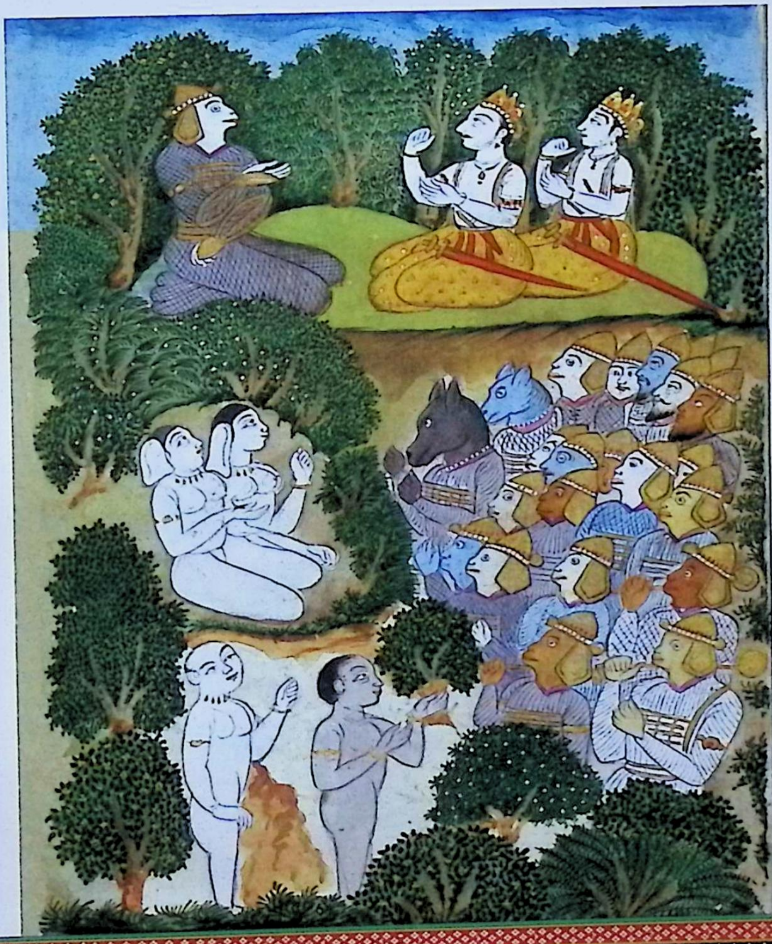

سرک بیان سمت وچهن بعد از ان سگریو جانبوان پسر بر بهمارا و نیل پسر آتش را و نهومان
پسر باد را و سوهوتر و سرارچی و سرکولم و گج و گواچهه و شربهه و سکهین و میند و دوبد
و دجی و کند همادن و اولکا موکهه و اسنگ که هر دو پسر مشوا نزاند و انگد وغیره بوزنه ها را
بسمت وچهن رخصت کرد و همراه اینها لشکر بسیار داد و فرمود که در جمیع جا های آن سمت
سیتا را باید جست و در کوه بندهاچل که هزار قله دارد و در نرمدا ندی و کرش بگاندی
و میکلا و متکلا و جنبومتی ندی و چندر منی ندی و ملک بدر و ماهکمتی و تیر ولی ندی
اینهمه جا راون و سیتا را تلاش باید کرد و در بلاد تسکان و کلندان و کلنگ و شاران
و کوکران و در غارها ریخ و در وندکارن و کوداوری ندی و کاپران که اپسران آنجا
بنظر می آیند و ملک چوندران و پوندران و کیرلان و کرون و ملیه که انواع دهات دارد
و در صحرا چندن و جبل تال راون و سیتا را نظر باید کرد و بعد از گذشتن از مکان کاور
و اپسران مکان اگست رکهه ست و بعده آشرم بلست رکهه ست که آنجا دختر گند هرب یا سکهی ها
گذشته و از امرا و بصورت گراه که قسمی از نهنگ باشد شده اند و در مالنی ندی که
بسمدر می پیوند میباشند و بعده مکانی از طلا و بمروارید آراسته و در بند بسته اند
مینماید از آنجا گذشته ملیا یعنی مرجادا یعنی کناره سمدر بنظر می آید و آنجا جنگله چندن است
در آنجا راون و سیتا را باید جست آنجا سمندر را شنا باید کرد و در آنجا سمدر از شاپ منی

پی مع

सर्ग-१०४

दक्षिण दिशा का वर्णन

उसके बाद सुग्रीव ने ब्रह्मा के पुत्र जाम्बवान को, अग्नि के पुत्र नील को, पवन पुत्र हनुमान को और सुहोत्र, शरारि, शरगुल्म, गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, सुषेण, मयन्द, दीद, नजी, गंधमादन, उल्कामुख और अनंग कि दोनों हुताशन के पुत्र हैं और अंगद आदि वानरों को दक्षिण की ओर भेजा। और उनके साथ बहुत सी सेना भेजी और आज्ञा दी कि इस ओर के समस्त स्थानों में सीता की खोज करना चाहिए। विन्ध्याचल पर्वत में जो हजार चोटियां है नर्मदा नदी में और गोदावरी नदी, महानदी, मतकला, जनूमती नदी, चन्द्रमनी नदी, विदर्भ, माहकमती और वतीखली नदी उन सब स्थानों में रावण और सीता की खोज करना चाहिए और शकान, कलनदान, कलकं, शारन, कोकरान, आरेंज की गुफाओं में, दण्डकारण्य, गोदावरी नदी और कावेरी में कि जहां अप्सरायें दिखाई देती हैं। और देश चन्दरान, पवनदरान, कीरलान, करून और मलीया जो विभिन्न प्रकार की धातु रखते हैं। चन्दन के वन और तमाल के वन में रावण और सीता को देखना चाहिए। कुबेर और अप्सराओं के स्थान से गुजरने के बाद अगस्त्य ऋषि का घर है उसके बाद पुलस्त्य ऋषि का आश्रम है जहां से गन्धर्व ऋषि की पुत्री गयी है। और उसके आदेश से कश्यप के रूप में, जो एक प्रकार का मगरमच्छ है, परिवर्तित हो गयी। और मालिनी नदी में जो समुन्द्र में मिलती है और वहां राक्षस रहते हैं और उसके बाद सोने का घर है जो मुक्तामणियों से सुसज्जित है और बन्द में बांधा है दिखाई देता है। वहां से आगे बढ़कर बेला अर्थात् समुन्द्र तट दिखाई देता है। वहाँ चन्दन का वन है वहां भी सीता और रावण की खोज करना चाहिये। वहाँ समुन्द्र में तैरना पड़ेगा और वहां समुन्द्र मेरे शाप से बिना लहरों के हो गया है और

بی موج شد و آب در هم نمیشود بعد ازان جزیره ایست بمقدار صد جوجن یعنی چهار صد کروه
و ازانجا گذشته مهیندر نام کوهی است که قلهای او از طلاست و الپسرا و سده و چارن
و اقسام طیور و کنر برو میباشند آنجا در پرب آندر گل میبارد آنجا سیتا را باید جست
و عقب آن کوه دیپ یعنی جزیره ایست بمقدار صد جوجن که در انجا کسی نتواند رفت و بعده
کو طلاست از سمدر بر آمده است و قلهٔ او تا مکان برهما رسیده است و قلهٔ او در آب سمدر مانند آفتاب
و ماهتاب پرنور بنظر می آید و یک قلهٔ او که از زر است آفتاب آنجا میگذرد و یک قلهٔ او از نقره است
که آنجا ماهتاب میگذرد و آنرا اکرت کهن و دوغ کو و ناستک یعنی آنانکه عاقبت را هیچ گویند
نمیتوانند دید او را انشکار کرده بجویید و بعده آنطرف سمدر کوهی است بمقدار چهار ده
جوجن که همچو آفتاب روشن است آنجا بهل و مول و غیره اشیا خواهید خورد و بعد ازان
پیشتر خواهید رفت. و آنجا بیدوت نام کوهی است که در انجا بنوکرمان چنان درختان
نشانده که هر ثمر که کسی در دل کند همان ببار آید در نیمکاهها سیتا و راون را بجویید و ازانجا
گذشته مالوان نام کوهی است که راه بالا بر آمدن او بمقدار چهار ده جوجن است آنجا
مانند دهوجا اندر کنجر نام مکانست که بشوکرمان کرده است و آنجا انجنا نام ندی است
و اکست رکهه آنجا برای ابهشیک و آوردن فیل استاده شده است و خاک آلوده
رکت چندن و یاقوت مرجانست و آنجا سنی است و همانجا بمقدار یک جوجن چهار کروه

पानी उछलता नहीं है। उसके बाद सौ जोजन अर्थात् चार सौ कोस की दूरी पर एक द्वीप है, वहां से आगे जाकर महेन्द्रनामी एक पहाड़ है जिसकी चोटियां सुनहरी हैं, और अप्सरायें सिद्ध, चारण, विभिन्न प्रकार के पक्षी और किन्नर उस पर रहते हैं। वहां परब में अन्दर फूल बरसाते हैं, वहाँ सीता को ढूंढ़ना चाहिए। उस पर्वत के पीछे द्वीप है। सौ जोजन की दूरी पर, जहां कोई नहीं जा सकता है। उसके आगे सोने का पर्वत है जो समुन्द्र से निकला है और उसकी चोटी ब्रह्मा के घर तक पहुंची हुई है। उसकी चोटी समुन्द्र के पानी में सूर्य व चन्द्रमा के समान प्रकाशमान दिखाई देती है। और उसकी एक चोटी सोने की है। सूर्य वहां से गुजरता है। और उसकी एक चोटी सोने की है। जहां से चन्द्रमा जाता है। और उसको कृतज्ञ, झूठा और नास्तिक, अर्थात वह लोग जो ईश्वर को तुच्छ समझते हैं नहीं देख सकते उसको नमस्कार करके ढूंढो। उसके बाद समुद्र के उस ओर एक पर्वत है, चौदह योजन की दूरी पर, जो सूर्य के समान चमकता है। वहां फल, मूल आदि चीजें तुम खाओगे। उसके बाद और आगे जाओगे वहां वैद्युत नामक एक पर्वत है जहां विश्वकर्मा ने ऐसे वृक्ष लगाये हैं कि कोई व्यक्ति जिस फल की भी इच्छा हृदय से करता है वह उसी समय निकल आता है। उन स्थानों में भी सीता और रावण को ढूंढो। वहां से आगे चलकर मालवान नामक एक पर्वत है। उसके ऊपर चलने की दूरी चौदह जोजन है। वहां इन्द्र के दहूजाअ के समान कुंजर नामक स्थान है जो विश्वकर्मा ने बसाई है वहां अनजना नामक नदी है। और वहां अगस्त्य ऋषि अभिषेक के लिये और हाथी लाने के लिये खड़े हैं। और मिट्टी से लिप्त रक्त चन्दन और याकूत मरजान है। वहाँ सरस्ती है और उसी स्थान पर एक जोजन चार कोस चौड़ा

عریض وصد جوجن طویل تورن یعنی خطی دراز از طلاست وآنجا هوکوتی نام شهر مار است
که آنرا ماران زهردار حراست میکنند وآنجا راجه باشک میباشد ودرینجا ها نیز سیتا را
باید جست وازانجا گذشته رکهبه نام کوه هست که آنجا اقسام دهات وجواهرها میباشند
وآنجا کوشرکهبه چندن وسرخ چندن وسیاه چندن وبرنگ آتش چندن پیدا میشود
وآن جنگله را روهتا نام گندهرب ها حراست میکنند آن چندن ها را نخواهید گرفت
وآنجا چهار سردار گندهربان اند شیلوک وگرامن وبهجهو بهرو اینجا راهم نظر خواهید کرد
بعده ترشرنگ نام کوه هست وآنجا سومنسا نام ندی هست بر سواحل آن واوترکوه همه را
خواهید جست بعد ازان حم لوک هست که آنجا تاریکی بسیار هست وازان گذشته کوهی است
بانواع مکانها بمناظر طلائی وستونهائی الماس وبیدوریه آراسته است واقسام درختان
آنجا هستند وآنجا جم راجه برآسن دهرم نشسته نیک کردار وبد کار را جزاو سزا میرساند
وازانجا گذشته کوه زر وطلا هست ودرختان آنجا را ثمره از مروارید ویاقوت ومرجان است
وآنجا آشرم ترنانک نام رکهبه هست که بر زمین میباشد وبر آسمان هم میرود تا آشرم ترنانک
رسیده وسیتا را تفحص کرده زود بیائید وهر که از شما سیتا را دیده خواهد آمد او برابر من
در راج خواهد شد وقابل اعزاز بود همه جا ها به بینید اما زیاده از یکماه نخواهید ماند والا کشتنی شوید
واگر از حکم من خلاف نمائید در زندگی خودها خلل باید بعد ازان سگریو فقط به هنومان

और सौ योजन लम्बा तोरन अर्थात् सोने का एक लम्बा पत्र है। और वहां भोगवती नाम का सांपों का शहर है, जिसकी विषैले सांप रक्षा करते हैं। और वहां राजा वासुकि रहता है उन स्थानों में भी सीता को ढूंढ़ना चाहिये और वहां से आगे जाकर ऋषभ नामक एक पर्वत है। जहां विभिन्न प्रकार की धातु एवं रत्न होते हैं। और वहां गोशीर्षक चन्दन, लाल चन्दन, काला चन्दन और आग के रंग का चन्दन उत्पन्न होता है और उस वन की रोहित नामी गन्धर्व रक्षा करते हैं तुम वह चन्दन ले लेना और वहां गन्धर्वो के चार सरदार हैं शैलूष, ग्रामणी, शिक्ष, शुक और वभ्रु उनको भी तुम देखोगे। उसके बाद तरशरंग नामक पर्वत है वहां सोमसा नामक नदी है उसके तट पर और पर्वत के उत्तरसब स्थान पर ढूंढ़ना। उसके बाद यमलोक है, जहां बहुत अंधकार है वहां से गुजरकर एक ऐसा पर्वत है जो विभिन्न प्रकार के भवनों और सुन्दर दृश्य और इलमास के खंभों से सुसज्जित है। और वहां भांति-भांति के वृक्ष हैं और वहां यम राजा धर्म के आसन पर बैठा है और अच्छे बुरे कर्म करने वालों को दण्ड देता है। वहां से आगे जाकर सोने का पर्वत आयेगा और वहां के वृक्षों के फल, मुक्तामणि, याकूत और मरजान के हैं। और वहां तरनानक नामक ऋषि का आश्रम है, जो पृथ्वी पर रहता है और आकाश पर भी जाता है। तरनानक आश्रम तक जाकर और सीता की खोज करके शीघ्र वापस आओ। और तुम में से जो सीता को देखकर आयेगा वह राज्य में मेरे समान होगा और सम्मान के योग्य होगा। समस्त स्थानों पर देखो लेकिन एक महीने से अधिक समय मत लगाना अन्यथा मारे जाओगे और यदि मेरी आज्ञा के विरुद्ध करोगे तो अपने जीवन में रुकावट पाओगे। उसके बाद सुग्रीव ने केवल हनुमान की ओर मुंह करके कहा:

رو کرده گفت تو زور بسیار داری و هنگام قوت تست بهر نوع که ستیا

یافته شود چنان بکن درینجا صورت رام و لچهمن و سگریو بدستور دو سه بوزنه
ولد برهما
چامر میکنند و بعضی دست بسته استاده اند و صورت انگد و هنومان و جانبوان
هر یک
و نیل آتش و کولم و گج و گواچهه و شرببه و سکهین بوزنه پر و دوبد و کند هادن
بشکلی دیگر قوی هیکل و خوب صورت باشد انگد و هنومان و جانبو و نیل و گج بصورت فیلها

و صورت دیگر بوزنه لنگور

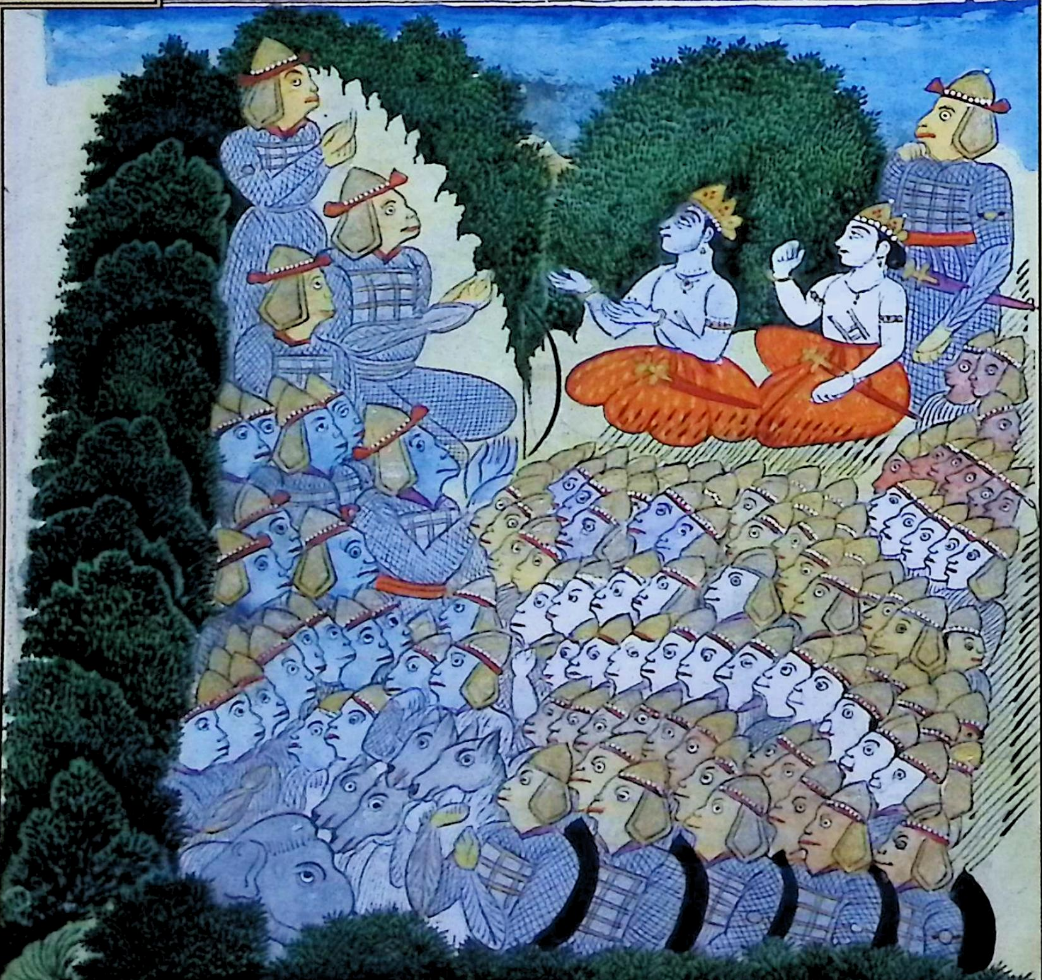

तुम बहुत शक्ति रखते हो और अब यह तुम्हारी शक्ति के प्रदर्शन का समय है। जिस प्रकार भी सीता मिल सके उस प्रकार करो।

राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र यथावत। दो तीन वानर मूर्छल झल रहे हैं और कुछ करबद्ध खड़े हैं और अंगद, हनुमान, ब्रह्मा के पुत्र जाम्बवान, अग्नि के पुत्र नील और कोलम, गज, गवाक्ष्ज, शरभ और सुषेण का चित्र। दो बूढ़े वानर आपस में और प्रत्येक शक्तिशाली और भीमकाय रूप में हैं और सुन्दर हैं और अंगद, हनुमान, जाम्बवान, नील और गज हाथी के रूप में हैं और दूसरे वानरों और लंगूर का चित्र।

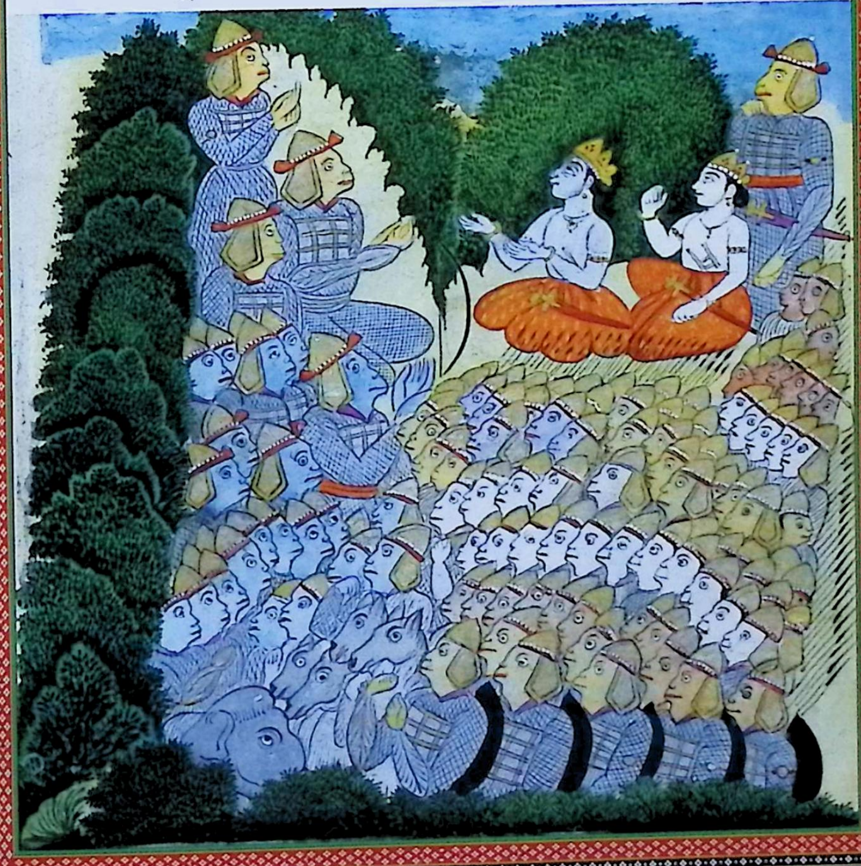

سپردادن انگشتری بار دیگر سکریو هنومان را در جمیع بوزنه ها قوی تر دانسته گفت
که ترا امید آنم که بر زمین و هوا و زیر زمین و بمکان دیوتاها و آب ها همه جا بیروی و ترا الو کهاسی کنند بری
و دیوتاها و افعی ها و سمندر و کوهستان همه معلوم هست و ترا قوت رفتن و شعور نوعی که سیتارا شاد شنده
بنظر آید چنان کن بعده چون رام دانست که هنومان بر کار مستعد هست و البته کار خواهد کرد
انگشتری که بر و نام رام کنده بود بد و داد که سیتا ازین علامات بالیقین داند و گفت که این انگشتری
سیتا ترا فرستاده من داند و عزم تو چنانست که بامر سکریو کار مرا کنی هنومان آنرا گرفته و بسینه بست
از سر نمسکار کرده قدم رام بوسه داده بتک در آمد و بخوشی در لشکر بوزنه ها رسید چنانچه ماه در ستاره ها رسید

درینجا صورت رام و لچهمن و سکریو بدستور و دیگر بوزنه دست بسته استاده و رام هنومان را انگـ

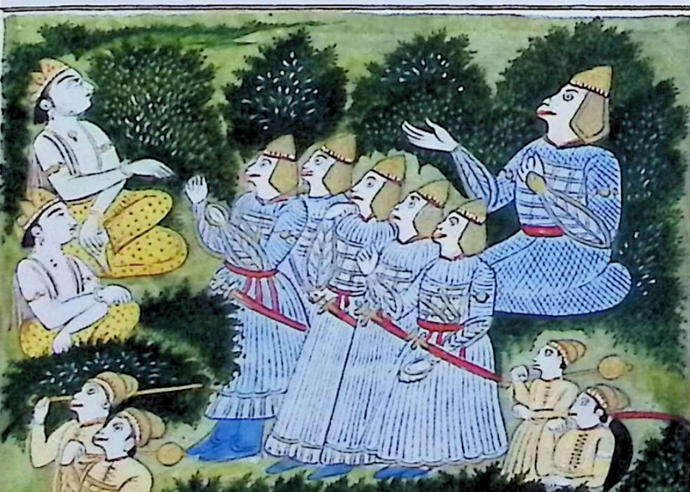

सर्ग-१०५

अंगूठी का देना

पुनः सुग्रीव ने हनुमान को सारे वानरों में अधिक शक्तिशाली समझते हुए कहा कि ‘‘मैं तुमको जानता हूँ कि तुम धरती और वायु पर और पृथ्वी के नीचे और देवताओं के घर और जल सब स्थान पर जा सकते हो। और तुमको गन्धर्व, देवताओं, सांपों, समुन्द्रों और कन्दराओं के स्थान मालूम हैं और तुम्हारे भीतर जाने की शक्ति और योग्यता है। सीता जैसे भी दिखाई दे ऐसी योजना करो। उसके बाद जब राम ने जान लिया कि हनुमान कार्य के प्रति दृढ़ हैं और कार्य अवश्य करेंगे तो उन्होंने प्रसन्न होकर वह अंगूठी जिस पर राम नाम लिखा था उसे दी कि सीता इस चिह्न से विश्वास कर लेगी। और कहा कि इस अंगूठी से सीता तुमको मेरा दूत समझेगी। तुम्हारा विचार और निश्चय दृढ़ है कि सुग्रीव के आदेश से तुम मेरा काम करोगे। हनुमान ने उसको लेकर हाथ जोड़कर सिर से नमस्कार किया और राम के चरण को छूकर प्रसन्नतापूर्वक वानर की सेना में पहुँचे जैसे कि चांद सितारों में पहुँचता है।

राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का यथावत चित्र और दूसरे वानर करबद्ध खड़े हैं। राम हनुमान को अंगूठी दे रहे हैं।

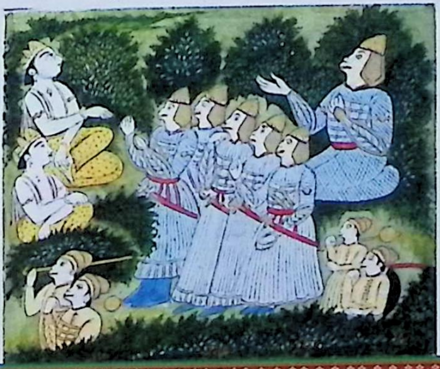

سرگ بیان سمت پچهم بعد ازان سگریو سکهین نام بوزنه خسر خود را که پدر تارا بود

و دیگر بوزنه ها را طلبیده تبسم نموده گفت که باد و لک بوزنه بسمت پچهم بروید و سیتا را و مکان

راون را تفحص کنید و راشتر و بالهنک و سودرا ابیر و دیگر مکانها، راجه ها و شهرها بجوئید

و ندی های سرداب و پوناک که آنجا مولسری هاست و جائی درخت کیتکی ها همه را بجوئید

و در کنک کهند و جنگل تال که آنجا بوزنه ها ناز کیر و نارجیل میخورند و در جنگل تا پسان و در کوهستان

هم به بینید و ملک کیلیه ها و سنده و سویر و مالوا و دیگر جا و ساگر پچهم که در انجا گراه میباشند و ددهای

اقسام اقسام و مکان افتادن مرنج رکهه و دریاها و قله های کوه و خانه رتن ها به بینید و آنجا

که سنگم سنده و ساگر شده یعنی هر دو جمعند جها هیم کرم نام کوهی ست که صد قله ها دارد

و درختان کلان دارد و برو شیران و فیلان مست جاودان میباشند و انجا شیران

بر درختان در آشیانه ها میباشند و تم که قسمی از جانور آبی بسیار کلان میباشد و ماهی و فیلان

را همه را آشیان میباشد آنجا بهمه تدبیر بجوئید و بیشتر تیرتهه ها و مکان ریاضت کشان

بجوئید و ملک مرو و هن و ملک مارو و ملک سووار بهیر و ملک استری راج که آنجا

عورتان میباشند و عورت راج میکنند بجوئید و از انجا گذشته پور رجکهه بن و پنج ند شاید

پنجاب باشد و کاشمیر و کرب شلا و شاکل پوشکر وارند و دیگر را بجوئید بعده ملک کانبدها

و بر بهوم یعنی زمین سرخ و ملک کیکیان وغیره بجوئید بعد ازان سمدر پچهم را خواهید دید

सर्ग-१०६

पश्चिम की दिशा का वर्णन

उसके बाद सुग्रीव ने अपने ससुर सुषेण नामक वानर को, जो तारा का पिता था, और दूसरे वानरों को बुलाकर मुस्कुराते हुए कहा कि तुम लोग दो लाख वानर के साथ पश्चिम की ओर जाओ और सीता को और रावण के स्थान को ढूंढो। सौराष्ट्र, बाहूलीक और सूदर जाओ और राजा के महलों और शहरों में ढूंढ़ो और सरदाब और पूनाक की नदियों में, जहां मूलसरी बहुत है और केतकी के वृक्ष के स्थानों में सब स्थान पर ढूंढ़ो और खण्ड की गंगा में और ताल के वनों में जहाँ वानर नारियल खाते हैं और तापिस्तान के वन और कोहिस्तान में भी देखो और कीलो और सिंध और सवेर व मालवा के देश में और दूसरे स्थान और पश्चिम के समुन्द्र में कि जहां घड़ियाल होते हैं, और विभिन्न प्रकार की घास और ऋषि मरीख के गिरने के स्थान में, और नदियों पर्वत की चोटियों और रतन के घरों में भी देखो। और जिस स्थान पर सिंध और सागर का संगम हुआ है अर्थात् दोनों एकत्र हैं वहाँ सोमगिरी नामी एक पर्वत है जिसकी सैकड़ों चोटियां हैं, और बड़े-बड़े वृक्ष हैं और उन पर शेर, हाथी सदा रहते हैं। और वहां शेर वृक्षों पर घरों में रहते हैं। और ''तुम'' कि जल के पशुओं की एक जाति है जो बहुत बड़ा होता है और मछलियों और हाथियों सबके घर होते हैं। वहाँ हर प्रकार से खोजो, और तीर्थस्थानों और तपस्या करने वालों के स्थान में खोजो और देश मरूदहन, देश मारू, सूदार भेर देश और अस्तरी देश में कि जहां स्त्रियाँ रहती हैं और स्त्रियां ही राज्य करती हैं, खोज करो। और वहाँ से आगे जाकर पूरनजगह वन और पाँच नदियों वाला पंजाब होगा। और कश्मीर और करबशला और शाकल पोशकर रखते हैं और दूसरे स्थानों में ढूढ़ों। उसके बाद कानदहावहर बहूम अर्थात् लाल धरती और कैकया आदि के देश में ढूढ़ो। उसके बाद तुम पश्चिमी समुन्द्र को देखोगे

آنجا کوهی هست که بر و درختان طلائی مرصع اند و آنرا پارجاپر کوه گویند آنرا بجوئید
و آنجا بیست و چهار کندهرپ سردار میباشند و تابعان قریب یک کرور اند و آنان
از دور منع میکنند و پهل و مول کسی را نمیدهند و بسیار زور دارند آنجا از تدبیر سیتا را
بجوئید و در چهارم حصه آن سمدر چکرپان نام کوهی هست که در و بسیار جواهر اند و درختان
همیشه بار آور می باشند آنجا چکریست که هزاران آر یعنی دندان دارد و بجرنابهه نام است
آنرا برای کشتن دیتان بشوکرمان کرده است و آنجا ده صد بار نشستن رفت و پنج
جن و هیکر بود آنو را کشته پانج جن شنکهه و چکر را آورده هست بعد از ان براه نام
کوه هست قریب شصت و چهار جوجن مسافت دارد و قله های زرین دارد و در میان
دریا شور هست آنجا هم راون و سیتا را باید جست بعده پراک جونکهه نام شهر است
که آنجا نرک نام دانو میباشد آنجا هم بجوئید و از انجا گذشته سکهین نام کوه هست که اند
آنرا محافظت میکنند و آنچنان مینماید که گویا قله او بر آسمان نقش کرده اند و آنجا درختان
طلا هستند و دیو رکهه میباشند و از سر آن رشحات آب هزاران میچکند و آنجا فیلان
و اسپان و طاوسان و شیران و غیره می آیند و از خوف اندر آنجا شور بسیار نود
و در انجا اندر را راج داده در انجا هم راون و سیتا را به بینید و از انجا گذشته
شصت هزار کوه طلا اند و مانند آفتاب روشن هستند و بسبب خوبی آن کوه

वहां एक ऐसा पर्वत है जिस पर सुसज्जित सोने का वृक्ष है। उसको पारियात्र पर्वत कहते हैं उसकी तलाशी लो और वहाँ चौबीस गन्धर्व सरदार रहते हैं और उनके अधीन लगभग एक करोड़ है और वह लोग दूर से रोकते हैं, और फल और मूल किसी को नहीं देते हैं। बहुत शक्ति रखते हैं वहाँ किसी योजना से सीता की खोज करो और उस समुन्द्र के चौथे भाग में चक्रवान् नामक एक पर्वत है। जिसमें असंख्य रत्न हैं और वृक्ष सदा फल से लदे रहते हैं। वहाँ एक ऐसा चक्र है जिसमें हजारों दांत हैं और बजरनाबह नाम है उसे दीतान की हत्या करने के लिये विश्वकर्मा ने बनाया है और वहाँ दस सौ बार बिशन गये हैं और पाँच जिन और हैकर या अनु की हत्या करके पांच जिनों के साथ शंख और चक्र को लाये हैं। उसके बाद बराह नामक पर्वत है लगभग चौसठ जोजन दूरी है। और सुनहरी चोटियां हैं जो समुन्द्र के मध्य है। वहाँ भी सीता और रावण को खोजना चाहिए। उसके बाद पराग चूंकि शहर का नाम है जहाँ नरक नाम दानव रहते हैं वहाँ भी ढूंढ़ो और वहाँ से आगे बढ़कर सकहीन नाम का पर्वत है, कि इन्द्र उसकी रक्षा करते हैं। और वह ऐसा लगता है मानों उसकी चोटी को आकाश पर बना दिया है। और वहाँ सोने के वृक्ष हैं और देखरेख करते हैं और उसके ऊपर से पानी की हजारों बूँदे टपकती हैं और वहां हाथी, घोड़े, मोर और शेर आदि आते हैं और इन्द्र के भय से वहां शोर अधिक नहीं होता है और वहां इन्द्र को राज्य दिया है। वहां भी रावण और सीता को देखो। वहाँ से आगे बढ़कर साठ हजार सोने के पर्वत हैं और सूर्य के समान प्रकाशमान है

بهایم و طیور و ددها و درختان همه زرین مینمایند و در میان آنها کوه میر که بزرگ
کوهاست میباشد و آفتاب او را برداده است که از سبب خوبی تو هرکه و هرچه در پناه تو
خواهد ماند شب و روز طلائی خواهد شد و بر تو دیو و دانو او را چهس و هرکسان که آفتاب پرست
خواهند کرد سرخ رنگ مانند زر خواهند شد و آدت و بسو و رودر و مروت و اشونی بکار
برای سندهیا آخر روز که سندهیا پچهم باشد بران کوه میر می آیند و سورج را میپرستند
و از آنجا سورج است میشود یعنی آفتاب غروب میشود و آفتاب راه دو هزار و دو صد
جوجن و کتری در چشم زدن طی میکند و بر قله آن کوه دب مکانست که بشوکرمان نموده است
و در اینجا انواع اشجار و طیور خوشنما اند و آن نشستگاه راجه برن که والی آب هست
و آنجا دو تمان رکهه میباشند که مانند آفتاب ثانی روشن اند آنان را نمسکار کرده بجستن سیتا
بروید و در آن کوه درخت تال هست که وه سر دارد و آن از طلاست و بانواع بیدک
خوشنمای آنجا هم سیتا و راون را تلاش کنید و از انجا گذشته کوه است هنماید و آن سرجست
آنجا مروید که آنجا پیشوا از آتش هست و شیران و بهایم و طیور و دیوتا و مار در آنجا نمیروند
و آنجا مکان راجه برن هست و نیلوفر و دیگر درختان طلائی اند که خود سنبهو بنا کرده است
و آنجا تالها زرین هستند سوم وارچی نام هست اینقدر مکان که آفتاب آنجا را روشن
میکند باید رفت و در آنجا که آفتاب نمیرسد من آنجا را نمیدانم همه بوزنه ها همراه خسر من بروید

और उस पर्वत की विशेषता के कारण बहायम, पक्षी दरिन्दे और वृक्ष सब सुनहरे लगते हैं। और उनके मध्य मेरु पर्वत, जो बड़ा पर्वत है, पड़ता है और सूर्य ने उसको वर दिया है कि उसकी सुन्दरता के कारण जो व्यक्ति और जो कुछ उसकी शरण में रहेगा वह दिन रात सोने का होगा और उस पर देव, दानव और राक्षस और जो लोग कि निवास करेंगे वह सोने के समान लाल रंग के होंगे। और विश्वेदेव, मरुद्गण और अश्वनी कुमार दिन की अन्तिम तपस्या के लिये जो पश्चिम की संध्या होती है उस मेरु पर्वत पर आते हैं और सूर्य की पूजा करते हैं और वहीं से सूर्य अस्त होता है। सूर्य दो हजार दो सौ जोजन और उससे कुछ अधिक मार्ग पल भर में तय करता है और उस पर्वत की चोटी पर एक दिव्य मकान है जो विश्वकर्मा ने बनाया है और वहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष और सुन्दर पक्षी हैं। वह राजा वरुण के बैठने का स्थान है जो जल का मालिक है। वहाँ दीप्तिमान ऋषि रहते हैं जो दूसरे सूर्य के समान प्रकाशित हैं। उसको नमस्कार करते हुए सीता की खोज में जाना। उस पर्वत पर ताल का वृक्ष है जिसके दस सर हैं और वह सोने का है और सुसज्जित करने वाली वस्तुओं से सुसज्जित है। वहां भी सीता और रावण को ढूंढना। और वहां से आगे अस्त का पर्वत दिखाई देता है और वह लाल है, वहां मत जाना कि वहां वैश्वानर की अग्नि है। और शेर, बहायम पक्षी और देवता और सांप भी वहां नहीं जाते हैं। वहाँ राजा वरुण का घर है और नीलोफर और दूसरे सोने के वृक्ष हैं कि जिन्हें स्वयं सम्भू ने लगाया है और वहाँ स्वर्ण जड़ित ताल है, सोमदारची नाम है, उस स्थान तक, जिसको सूर्य प्रकाशित करता है, जाना चाहिए और जहां सूर्य नहीं पहुंचता है मैं उस स्थान को नहीं जानता। सारे वानर मेरे ससुर के साथ जायें कि वह बहुत बुद्धिमान

که بسیار عاقل و قریب ترنست چنان نمائید که سیتا بنظر آید و از آست کر بر گشته خواهید آمد
و زیاده از یکماه نخواهید بود و الا کشتنی خواهید شد و ای سکهین تو کرو و بجای پچهن هستی
آنچنان کن که سیتا بنظر آید بعد ازان سکهین وغیره بوزنه ها سکریو را شکار کرده اجازت

گرفته سمت پچهم روان شدند درینجا صورت رام و لچهمن و سکریو بدستور و بوزنه رخصت میشود
بر سر اینان چامر میکنند و سکهین بوزنه قوی هیکل بدر تارا دست بسته استاده

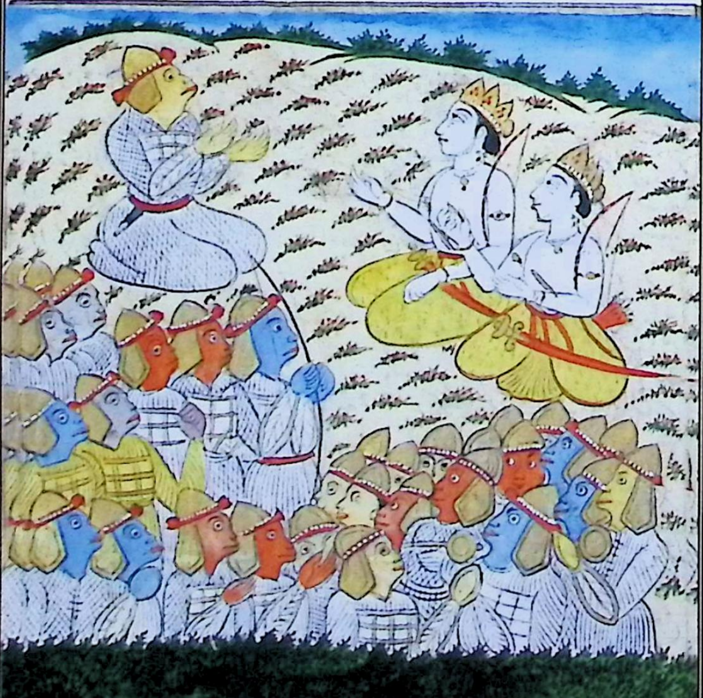

और मेरे सबसे निकट सम्बन्धी हैं। ऐसा करो कि सीता दिखाई दे जाये और अस्त कर से वापस आओगे और एक महीने से अधिक नहीं रहोगे, अन्यथा मारे जाओगे। और ऐ सकहीन ! आप मेरे गुरू और पिता के समान हैं आप ऐसी योजना कीजिये कि सीता दिखाई दे जाए। उसके बाद सकहीन आदि वानर सुग्रीव को नमस्कार करके और आज्ञा लेकर पश्चिम की ओर चल दिये।

राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र पूर्व की भांति यथावत। दो वानर उनके सिर पर मूर्छल हिला रहे हैं और भीमकाय वानर सकहीन तारा का पिता हाथ जोड़कर खड़ा होकर विदा हो रहा है।

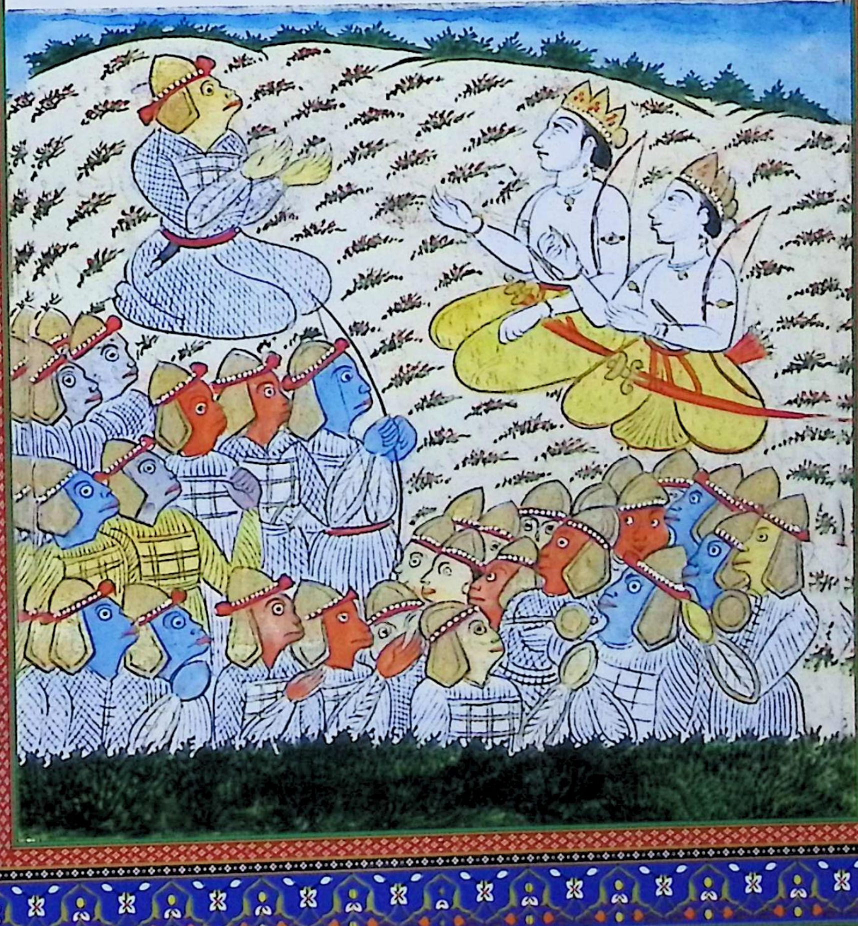

سرگ بیان سمت اوتر سگریو بسمت پچهم خسر خود را فرستاده و در تردد بود که بطرف
اوتر یعنی شمال کرا فرستند مهورتی فکر کرده شتبل نام بوزنه را گفت ای پسر جم با هزار کرور
بوزنه بسمت اوتر شما بروید و ای شتبل و ای بوزنه کان همه کوه و صحرا بجوئید که سیتا و راوان را
نشانی معلوم شود در کوه هماچل بجوئید که کار رام را کرده من از فرض ذمه می برآیم و اگر کار
رام میشود زندگی من با نفع است چنان بکنید که سیتا یافته شود و ملکها و کوهها و ندیها
همه را ببینید و در ملک مسان و پلندان و سورسینان و پرستهولان و مدرکاو کرود
کیکه و کاندها و جونان و چین و پوندر و مالوان و بالهکان و رکبکان و چیسنان و پرم
چنان و توکهاران و برران و کیلان و کالیکان و کانبوجان و کهنسورتان اینهمه
با صحاری و جبال ببینید و از هماچل در دران خواهید شد و لودر کهند و در دیو وار
و بن که شال تمال و غیره آنجا بسیار است خواهید دید و در کهزان و جارنان و سدهان
و پتاچان و چچه و راچهس که در طرف اوتر میباشند ببینید و از انجا گذشته دور
از جنگل کوهی است بمقدار صد جوجن آنجا راون و سیتا را بجوئید و در کراتان و پلهوان
و پاشیالان سیتا را ببینید بعد از ان بر بهرک تنک کوه خواهید رفت آنجا
مها آشرم است که دیو و دانو آنرا می پرستند و آنجا کال نام کوه را خواهید دید و انجا
سیتا را نظر کنید و از انجا نامراکار است و از انجا گذشته هیم گربه نام کوه است

सर्ग-१०७

उत्तर दिशा का वर्णन

सुग्रीव ने पश्चिम की ओर अपने ससुर को भेजा और दुविधा में था कि उत्तर दिशा की ओर किसको भेजे। थोड़ी देर विचार करके शतबलि नामी वानर से कहा; ऐ जम के पुत्र ! हजार करोड़ वानरों के साथ उत्तर दिशा की ओर जाओ। और ऐ शतबलि ! और ऐ वानरों सारे पर्वत और वन में ढूढ़ों कि सीता और रावण का पता मालूम हो। हिमाचल पर्वत में ढूंढ़ो ताकि मैं राम का कार्य करके अपने दायित्व से मुक्त हो जाऊँ, और यदि राम का कार्य हो जाता है तो मेरा जीवन सफल है। ऐसा कुछ करो कि सीता मिल जाए। और देशों, पहाड़ों और नदियों सबको देखो और म्लेक्ष, पुलिंद, शूरसेन, प्रस्थल, मद्र, कुरु, वकीक, काम्बोज, यवन, चीन, पूनदर, मालवान, बालकहान, रखो, चीनान, परमचीनू, तूकहारों, बरबरो, कीलों, कालीकान, काबूजान और कहनसूरतान के देशों में वनों और पर्वतों सहित देखो। और तुम हिमाचल से दरदरान में जाओगे और लोदरकहन्द और देवदार और वन में जहां शाल और तमाल आदि बहुत हैं देखोगे, और कनरो, जारनो, सिद्धों, पिशाचों यक्ष और राक्षसों में जो उत्तर की ओर रहते हैं, देखो। और वहाँ से आगे जाकर वन से दूर एक पर्वत है सौ जोजन की दूरी पर, वहां भी सीता और रावण को ढूंढ़ो, और करातो, पलहुओं और पाश्यालान में सीता को देखो। उसके बाद बहक तंग पर्वत पर जाना। वहां महाआश्रम है। जिसको देव और दानव पूजते हैं और वहाँ काल नामक पर्वत को देखना और वहां भी सीता को देखना। वहां से आगे हेमकरभ नामी पर्वत है

دران سنو درشن نام کوهیست آنجا سیتا را و راون را خواهید دید و از انجا گذشته
دیو سبهنه نام کوهست و از انجا گذشته اکاش نام کوهست بمقدار صد جوجن و انجا
نه دریا نه درختان نه جانداری و آن از شعاع آفتاب میطپد آنجا آب را نوشید
آن صد جوجن را بشتاب طی کرده کیلاس نام کوه را خواهید دید آنجا مکان کبیر است
که برنگ سفید و از طلا آراسته بشوکرمان آنرا بنا نموده آنجا نیلوفر یا دندی های
دراز اند و هنس و کارند و ابستند و خاک آنجا از مروارید و بیدوریه ست آنجا راجه کبیر
با کنبکان با سایش میکند راند آنجا سیتا و راون را بجوئید و از انجا گذشته ترشرنگ
نام کوهست در زیر پایین او تالابی ست از طلا آراسته و از همانجا دریایی تیز رو سبز جو
می برآید و یک قله آن کوه از طلاست و یک قله از بیدوریه جواهر ست و یک قله از سیم سفید
و پس از آفرینش ذیحیات بشوکرمان آنرا آفریده و بر هر سه قله او سه آتش اند
و آنجا همه باشندگان صاحبدل اند و در قدیم آن تالاب مکان مهادیو بود و در انجا
کتلا نام ندی بآب صاف روان شده و دیوتا و گندهرب و پشاج و ماران بر آن کوه
گستاخی کردن نمیتوانند آنجا هم راون و سیتا را خواهید جست و از انجا گذشته کرونج
نام کوهست که مهادیو حراست آنجا میکند و دران کوه سوراخ ست که سده و چارن
در آنجا بدشواری رسند آن همه را با حسن طریق بجوئید و از انجا گذشته میناک نام

کوه است

उसमें सुदर्शन नामी एक पर्वत है, और वहां से भी आगे आकाश नामी पर्वत है सौ जोजन की दूरी पर। वहाँ न कोई नदी है न वृक्ष और न कोई जीवधारी और वह सूर्य की किरणों से तपता रहता है। वहां पानी पीकर और इस सौ जोजन की दूरी को शीघ्र तय करके कैलाश नामी पर्वत दिखाई देगा। वहां कुबेर का घर सफेद रंग का और सोने से सुसज्जित है। विश्वकर्मा ने उसे बनाया है। वहाँ लम्बे-लम्बे नीलोफर हैं और हंस और कारण्डव हैं वहां की मिट्टी मरवारीद और फिरोज़े की है वहाँ राजा कुबेर गुह्चकों के साथ सुख सुविधा के साथ रहता है। वहां भी सीता और रावण को ढूंढो। और वहाँ से आगे तरशरंग नाम का पर्वत है उसके नीचे एक तालाब है जो सोने से सुसज्जित है और वहीं से तेज धार सरजू नदी निकलती है। उस पर्वत की एक चोटी सोने की है, एक चोटी फिरोजे के रत्नों की है, एक चोट सफेद चांदी की है। जीवधारियों के जन्म से भी पहले विश्वकर्मा ने उसे बनाया है और उसकी तीन चोटियों पर तीन आग है। वहां के समस्त निवासी दिल वाले हैं। पहले वह तालाब महादेव का घर था और वहाँ से स्वच्छ जल वाली गतला नामी नदी निकली। देवता गन्धर्व, बशाज और सांप भी इस पर्वत पर धृष्टता करने का साहस नहीं करते। वहां भी सीता और रावण को ढूंढ़ना और वहां से आगे जाकर करूंज नामी पर्वत है जिसकी रक्षा महादेव करते हैं। इस पहाड़ में एक छिद्र है जहां सिद्ध और चारन कठिनाई से पहुंचते हैं। उन सबको अच्छी तरह देखना और वहां से आगे को मीनाक नामी पर्वत है

کوه است آنجا مکان مَی نام دانو است که خود کرده است آنجا درخت جنبو ست
که این جنبو دیپ را آنجا رهی ست آنرا اپسران هر روز میپرستند آنجا هم راون و ستیارا
بجویید و همانجا مکان زنانست که روی آنها مانند روی اسپ میباشد و آنجا رکهه ها مجرد رو
میباشند و هفت رکهه هم میباشند و از انجا گذشته کوهی ست که سده و بیکهانان
و بالکهلا و تپسویان در انجا میباشند و آنجا نیلوفر ها طلائی و هنس های زرین اند وآ
همه جا سیرگاه کبیر ست و فیلان با ماده های خود جمع می آیند و از انجا گذشته مکانی است
که روشنی مهر و ماه بنظر نمی آید و آسمان خالی از انجم و ابر میباشد و قدری آفتاب
شعاعی آنجا میتابد آنجا تپسویان و سدهان که بروشنی خود روشن اندمی باشند و از انجا
گذشته بمقدار مسافت شصت و چهار جوجن کوه کند هما دن ست آنجا شال و تمال
و تال و سرل هستند و دیوتا و دانوا آنجا میباشند و بر قله کوه جنبو نام سودرشن است
و از انجا گذشته مندر نام کوه ست برنگ برف و بر قله او مکانی پر آب صاف ست
و در انجا باغات ست انواع گل دارند و انواع نشیمن و مناظر دارند و آن مکان را
کهرب میندو نام ست که برهما آنرا دوست میدارد و همانجا دریای گنگا که بسته راه
میرو و از آسمان می افتد و از رشحات زور او که از فلک می افتد بسیار شور میشود
و آنجا از زور دریا سنگ بر سنگ میروند و آنجا سرساندی ست و مهر کهه آنجا

वहां भी नामी दानव का भवन है जिसे उसने स्वयं बनाया है। वहां जम्बू का वृक्ष है कि इस जम्बू द्वीप के लिये वहां एक मार्ग है। उसकी अप्सरायें प्रतिदिन पूजा करती हैं वहां भी रावण और सीता को ढूंढ़ना और वहीं ऐसी स्त्रियों का भवन है जिनके मुख घोड़े के मुख के समान होते हैं। और वहां ऋषि महर्षि रहते हैं और सात ऋषि रहते हैं वहां से आगे जाकर एक पर्वत है जहां सिद्ध, वैखानस, वालखिल्य और तपस्या करने वाले रहते हैं। वहाँ सोने के नीलोफर और रत्नजड़ित हंस हैं और वह समस्त स्थान कुबेर का पर्यटक स्थान है। वहाँ हाथी अपनी मादाओं के साथ एकत्र होकर आते हैं। वहाँ से आगे जाकर एक ऐसा घर है जहां चन्द्रमा सूर्य का प्रकाश दिखाई नहीं देता है और आकाश, सितारों और बादलों से रिक्त रहता है। सूर्य वहां अपनी थोड़ी सी किरणें चमकाता है। वहां तपस्या करने वाले और सिद्ध जो अपने प्रकाश से प्रकाशित हैं, रह रहे हैं और वहां से आगे जाकर चौसठ जोजन की दूरी पर गन्धमादन पर्वत है। वहाँ ताल शमाल, ताल और सरल है और देवता और दानव वहां रहते हैं और जम्बू पर्वत की चोटी पर सुदर्शन का नाम है। वहां से आगे मन्दिर नामी बर्फ के रंग का पर्वत है। उसकी चोटी पर स्वच्छ जल से भरा एक भवन है। वहां उपवन है जिनमें भांति – भांति के फूल हैं और विभिन्न प्रकार के घर और दृश्य हैं। उस स्थान का कहरब मेदूर नाम है जिसको ब्रह्मा प्रिय रखते हैं। और वहीं गंगा नदी जो तीन मार्गों पर जाती है आकाश से उतरती है और उसकी बूंदों के जोर से जो आकाश से गिरती है बहुत शोर होता है। वहां नदी के बल से पत्थर पर पत्थर चलते हैं। और वहां सरसा नदी है और महर्षि उस को अन्दर का मार्ग कहते हैं

راه اندر میکویند و دریا رکوشکی و دریا بتیرنی همانجاست و آنجا جپه و کند هرپ
و پشاچ و طیور و مار و غیره کالبد خود را میکذارند هر کاه مرگ نزدیک میرسد و آنجا وجود او
بنظر نمی آیند و از انجا کذشته اوترسندر را خواهید دید که موجهای کلان میزند آنجا
قدری آرام خواهید نمود و نزدیک آن کوهست با هزار قله طلائی و بالای آن سرور هست
تا آب خوب ملبب و آنجا جنکل اشتیر یعنی تیرنی هست و آنجا سام کارنک پیدا شده است
وانت کپل آنجاست و سر اسپ بدوا آنجا غرق میشود آنجا راون و ستیارا بجویید
و از انجا کذشته سیلووا نام دریاست که بر هر دو کناره کیچک نی هاست آنرا به تدبیر
عبور خواهید کرد که از اشنا نتوان کرد زیرا که هر که دست یا پا در و اندازد وجود او
از سنک کردد و بر سواحل او ناد و نیستان هست و از انجا کذشته شیانام نام
دریا خواهید دید و آنجا غسل خواهید کرد و پاک خواهید شد و اوترکورو آنجاست در آنجا
خواهید رفت و آنجا سردی و کرمی و پیری و آزار نمیباشد و غم و خوف و زدان نیست
و زمین آنجا که از دانه و کیاه سبز هست و سفید و خار و کاه آنجا نرم و صاف و درختان آنجا
چنان هستند که هر ثمر که از اینها خواهش کنند همان دهند و انواع گل دارند و طیور آن
زرین و نیلوفر هم زرین و نیلوتپل آنجا برنک بید و ریه نیله هست و رکت اوتپل فرندی
یاقوت دارند و طلائی اند و نلنی یعنی نیلوفر خورد جا آنجا و خوشبو میدهند و برکهای اینها

ازین

और कौशकी नदी और बेतरनी नदी वहीं है जिस समय उनकी मृत्यु निकट आती है वहां शरीर दिखाई नहीं देता है। वहां से आगे बढ़ते हुए उत्तर के समुद्र को देखोगे जो बड़ी-बड़ी लहरें मारता होगा। वहां थोड़ा विश्राम करना और उसके निकट एक पर्वत है। हजार सोने की चोटियों वाला और उसके ऊपर स्वच्छ पानी से भरा हुआ एक तालाब है और वह शेरों का वन अर्थात् तेरनी है। वहाँ सोम कार्तिक उत्पन्न हुआ है और अनन्त कपिल वहां है। और बड़वा घोड़े का सर वहां डूब जाता है वहां भी रावण और सीता को ढूंढ़ना और वहां से आगे सेलवा नाम की नदी पड़ती है उसको किसी योजना से पार करना क्योंकि उसमें तैरना संभव नहीं है। क्योंकि जो भी उसमें हाथ या पांव डालता है उसका शरीर पत्थर का हो जाता है। और उसके किनारे दूर तक नरकुलों का वन है। वहाँ से आगे बढ़कर शान्ता नाम की नदी दिखाई देगी वहाँ स्नान करना और पवित्र होना। ऊतर केरू वही है। वहाँ जाओगे। वहाँ सर्दी गर्मी, बुढ़ापा और कोई कष्ट नहीं होता है और चोरों का दुख व भय नहीं है वहाँ की धरती अनाज और घास के कारण हरी और सफेद है और वहाँ का कांटा और घास नरम और स्वच्छ है वहाँ के वृक्ष ऐसे हैं कि प्रत्येक वह फल जिसकी इच्छा करते हैं वही देते हैं और उन पर विभिन्न प्रकार के फूल हैं और रत्न जड़ित पक्षी, रत्न जड़ित नीलोफर और वहां का नीला तेल फिरोजे के रंग का नीला है और वहाँ के कुओं में याकूत होता है और वह सोने का है और छोटे-छोटे नलनी अर्थात् नीलोफर वहां जगह-जगह हैं और सुगंध देते हैं

از زمین ها یعنی یاقوت های قیمتی اند و این دولت در آنجا بسیار است و درها آنجان
هستند که رنگ آنها از زرست و تالاب های برف اند و از اقسام جواهر پر اند و کوه ها
از زر اند که انواع جواهر دارند و درختان از طلا اند و بمروارید و یاقوت آراسته
بعضی درختان همیشه گل دارند و باقسام رنگ ثمر می آرند و رنگارنگ پارچه ها از آنها
بطریق ثمر بر می آید و از دیگر درختان مروارید و بید وریه و اقسام و انواع انواع
پیرایه پیدا میشود و هفت رکهه انجا نیز اقامت دارند و منداکنی ندی آنجاست
و دیورکهه آنجا اند و چیتر تهه بن آنجاست و دریا های از شیر اند و گل آنجا دایم بشیر
آمیخته میباشد و بر نهها آنجا انواع درختان گل و مالا و کشیش یعنی نیلوفر خرد که صد برگ
دارد و باڈندی طلای رویانیده ست و آنجا انواع پوشیدنی و خوردنی است
و عورات آنجا بسیار خوبصورت و در عین جوانی میباشند و با آنها گندهرب و کنر
و بیدادهر و غیره صحبت میکنند و چنان دل بسته میشوند که هرگز جدا شدن آرزو
نمیکنند و آن عورات هم مردان را آنقدر میخواهند که هرگز جدا نمیشوند و مردان بسیار
دوست میدارند و نیز آنجا عورات از درختان بطور ثمر پیدا میشوند خوش شکل باقسام
پیرایه از درختان بوجود می آیند و مردان آنجا نیز خوبصورت و شیرین زبان و خوش
طلعت میباشند و همه نیک کردار و دوستدار یکدیگر میباشند و بانواع عیش با عورات

और उनकी पत्नियाँ मन अर्थात् बहुमूल्य याकूत की हैं और यह धन वहाँ बहुत है। वहाँ के कण ऐसे हैं कि उनकी रेत सोने की है और बर्फ के तालाब हैं। विभिन्न प्रकार के रत्न हैं और सोने के वृक्ष हैं तथा मुक्तामणि और याकूत से सुसज्जित हैं। कुछ वृक्षों पर सदा फूल रहते हैं और विभिन्न रंगों के फल देते हैं तथा रंगारंग वस्त्र उनसे फल के रूप में निकलते हैं। दूसरे वृक्षों से मुक्तामणि और फिरोजे तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्र और परिधान उत्पन्न होते हैं। वहाँ सात ऋषि भी रहते हैं और मन्दाकिनी नदी वहीं है तथा देवर्षि वहां है और चैत्ररथ वन भी वहीं है। दूध की नदी है तथा वहाँ की मिट्टी सदा दूध में मिली रहती है। ब्रह्मा ने वहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष, फूल, माला वाले और छोटे-छोटे नीलोफर जिनमें सैकड़ों पत्तियां होती हैं सोने की डण्डी के साथ उगाये हैं। वहाँ विभिन्न प्रकार के पहनने और खाने की सामग्री हैं और वहां की स्त्रियां बहुत सुन्दर एवं युवा होती हैं और उनसे गन्धर्व, कनीर, बेदाद और हर आदि सम्पर्क करते हैं तथा वह ऐसी दिल लुभावनी होती है कि कदापि उनसे अलग होना नहीं चाहती और वह पुरुषों को अधिक मित्र रखती है तथा वहां स्त्रियां वृक्षों से फल के रूप में उत्पन्न होती हैं। विभिन्न प्रकार के परिधान में सुन्दर, अच्छे रूप वाले वृक्षों से अस्तित्व में आती हैं और वहां के पुरुष भी सुन्दर, मीठी वाणी वाले एवं अच्छे रूप वाले होते हैं। सब अच्छे आचरण और एक दूसरे से प्रेम करने वाले होते हैं तथा विभिन्न प्रकार के सुख

بسیر میبرند و آنجا سرود دلخواه و آواز خوب شنیده میشود و آنجا هیچ گرسنه و ناستنک
یعنی کسیکه عاقبت را هیچ داند و بدکار نمی باشد و آنجا اندر اپسران را شاپ داده است
که در روز پیدا میشوند و انواع کار خوب و دلخواه میکنند و در شب جوان میشوند و آخر
هرگاه طلوع آفتاب نزدیک میرسد کهنه شده می افتند چنانچه هر روز پیدا میشوند و می میرند
دقتی اندر آنجا زنان جوان و خوبصورت را که خوش سرود و انواع پیرایه پوشیده بودند
دید که بازیها میکنند و از معاشرت آنجا اندر هم خانه خود فراموش کرد بنابران اندر شاپ
داد که دایم با پیری و مرگ خواهید بود و ازین شاپ اندر میمیرند و آن کوه ها یعنی غارها هر روز
خالی میشوند و تیره میگردند و کوه ها هزاران هستند و عقب آن کوه ها مکانها خوفناک هم اند
آنجا بتدبیر سیتا را بجوئید و از انجا گذشته کوه ها یعنی غار است که انواع درخت دارد و آنجا
اران بسیار اند بتدبیر تمام از انجا بگذرید و از انجا گذشته سوم گر نام کوهی است آنجا مکان ماه است
و آهنا که باندر لوک میروند و به برهم لوک میروند آن دیوتا اند و محافظت آن کوه میکنند و آنجا
آفتاب نمیرسد قدری شعاع روشن میشود و آنجا یازده استهانو پسران برهما می باشند و منو راجه رفت
بیاشند آنجا کال هر چهار طور است برای همه لوک آن سکانست و بطرف اوتر کرو هرگز نخواهید
که آنجا هیچ ذیحیات نمیرود و آن سوم گر کوه را شتاب نظر کرده برگشته خواهید آمد و برو اقامت
نخواهید کرد و آنجا که مکان ماه است راچس و سیتا را نظر کرده یک شب مانده زود خواهید آمد

अपनी स्त्रियों के साथ लूटते हैं। वहाँ अपनी इच्छा के गाने और मधुर आवाज सुनाई देती है तथा वहाँ कोई व्यक्ति भूखा और नास्तिक अर्थात् अन्त को तुच्छ समझने वाला एवं बुरे आचरण का नहीं होता है। वहां इन्द्र ने अप्सराओं को शाप दिया है कि दिन में जन्म होता है और विभिन्न प्रकार के अच्छे एवं अपने मन के कार्य करती है और रात्रि में युवा होती है एवं अंत में जिस समय सूर्य निकलता है बूढ़ी होकर मर जाती है। अतः प्रतिदिन जन्म होता है और मृत्यु होती है। किसी समय इन्द्र ने वहां युवा और सुन्दर स्त्रियों को जो कि अच्छा गाने वाली तथा विभिन्न प्रकार के वस्त्र पहने हुए थी देखा कि वह खेल रही है। उनके साथ में इन्द्र भी अपना घर भूल गये। इस कारण इन्द्र ने शाप दिया कि तुम सदा बुढ़ापे और मृत्यु के साथ रहोगी, इन्द्र ने इसी शाप से वह मर जाती है और वह पर्वत अर्थात् गुफा प्रतिदिन खाली हो जाती है तथा अंधकार में डूब जाते हैं वहॉ पर्वत हजारों हैं और उन पर्वतों के पीछे भयानक स्थान भी है। वहाँ किसी योजना से सीता की खोज करना और वहाँ से आगे पर्वत अर्थात् गुफा है। जहाँ विभिन्न प्रकार के वृक्ष हैं, वहां सांप बहुत हैं पूरी सतर्कता से वहां से जाना और वहां से आगे सोमकर नामी पर्वत है वहाँ चाँद का स्थान है। वह लोग जो इन्द्र लोक में जाते हैं, ब्रह्म लोक में जाते हैं, वह देवता हैं और इस पर्वत की रक्षा करते हैं। वहाँ सूर्य नहीं पहुँचता है कुछ किरणें चमकती हैं और वहाँ ग्यारह अस्तहानू ब्रह्मा के पुत्र रहते हैं और मनु राजा रहते हैं वहाँ काल चारों दिशा है। सब लोक के लिए वह स्थान है और उससे उत्तर की ओर कदापि मत जाना क्योंकि वहां कोई जीवधारी नहीं जाता है और इस सोमकर पर्वत को शीघ्र देखकर वापस आ जाना और वहाँ रुकना मत। और जो स्थान कि चांद की है वहां राक्षस और सीता को देखकर एक रात्रि रुककर शीघ्र आ जाना

و جاها که بیان نکرده ام آنجا هم بروید و زیاده از ماه نمانید والا کشتنی شوید و انجاها که بیان کرده ام
بروید و پیشتر از انجا که آفتاب آنجا نمیرسد من هم نمیدانم و اگر این کار را خواهید نمود مطلب دلخواه
رام خواهد شد و پیشتر مطلب من خواهد شد و من پرستش شما خواهم کرد و بسیار مدت با زن و فرزند
بوده عیش خواهید نمود بوزنه ها گفته سکریو را قبول کرده سر فرود نموده نمسکار کرده بسمت مکان

کبیر که او تربا شد روان شدند درینجا صورت رام و لچهمن و سکریو بدستور و بوزنه ها بر سر جهر دو
چار میکنند و بعضی دست بسته استاده و شتیل نام بوزنه هم دست بسته و عقب او فوج استاده
و یکطرف کوه و صحرا که از درختان عورات خوبصورت بجای ثمره آویخته اند

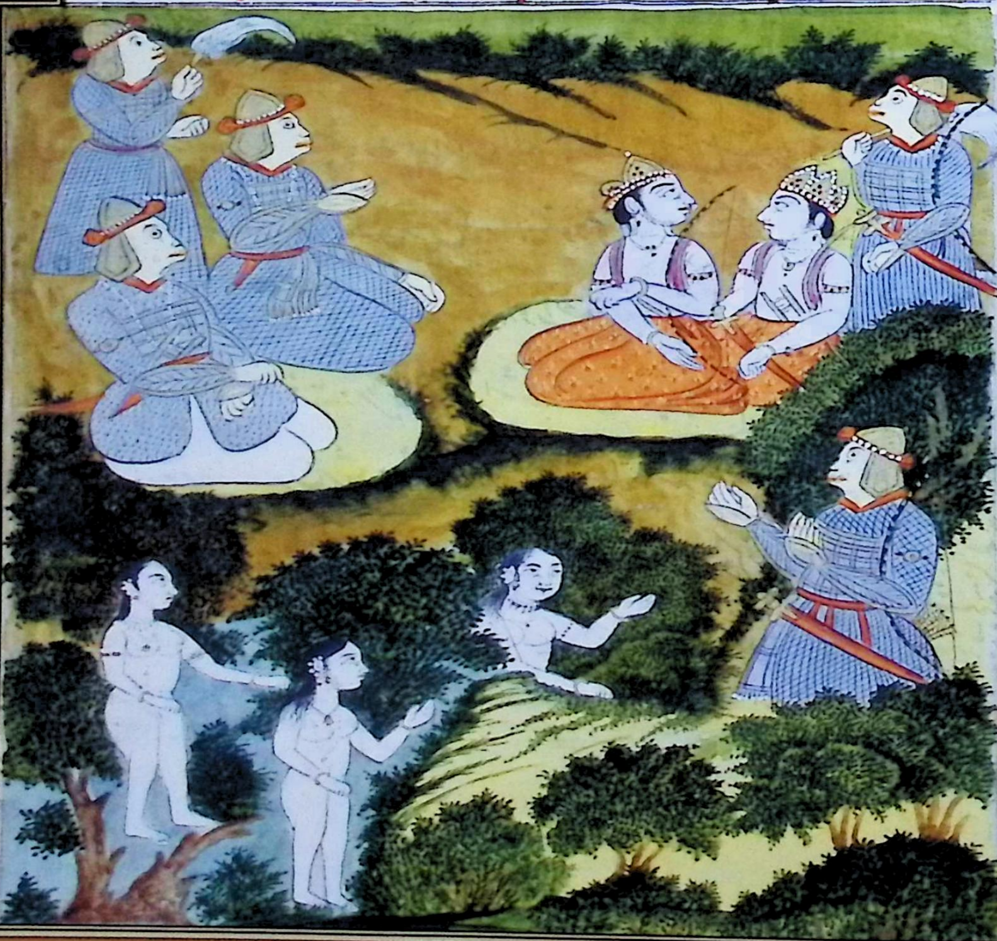

और जिन स्थानों का मैंने वर्णन नहीं किया है वहां भी जाना। एक महीने से अधिक समय मत लगाना अन्यथा मारे जाओगे और जिन स्थानों का मैंने वर्णन किया है वहां जाना और जहां कि सूर्य नहीं पहुँचता है उनको मैं भी नहीं जानता। यदि तुम यह कार्य कर दोगे तो राम का प्रिय उद्देश्य प्राप्त होगा तथा उससे पहले मेरा उद्देश्य प्राप्त होगा तथा मैं तुम्हारी पूजा करूंगा और बहुत समय तक पत्नी और बच्चों के साथ रहकर सुख भोगोगे। वानर सुग्रीव की बात स्वीकार करते हुए और सिर झुकाकर उसे नमस्कार करके उत्तर दिशा कुबेर के घर की ओर चल दिये।

राम लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र पूर्व यथावत। वानर दोनों के सिर पर मूर्छल हिला रहे हैं कुछ हाथ जोड़कर खड़े हैं। शीतल नामी वानर भी हाथ जोड़कर खड़ा है और उसके पीछे सेना खड़ी है। एक ओर पर्वत और वन है वृक्षों से फल के स्थान पर सुन्दर स्त्रियां लटकी हुई हैं।

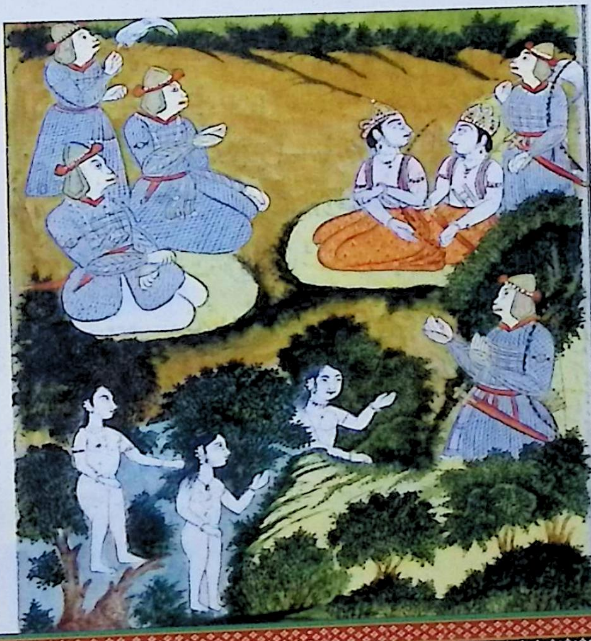

سرگذشت ماجرا سگریو القصه همه بوزنه بطرف قبول کرده خود ها روان شدند و شور کنان و راه شکنان و غران و دوان میرفتند و هر یک برائی خود بدین آئین سخن میکرد من سیتا را می آرم اگرچه در دهن مرگ هم رفته باشد و من تنها راون را میکشم چه جای تصدیع شما همه هست من از زیر پاتال یعنی اسفل السافلین هم سیتا را می آرم و درختان کلان را بشکنم و کوه ها را از جا بجنبانم و زمین را بردارم و سمدر را بر هم زنم من بجست بیست جوجن ها زغند میزنم و در تمام زمین و کوهستان و پاتال میگردم غرض که از نخوت و تکبر و زور هر یک بوزنه بدین نوع سخن مینمود القصه بوزنه ها باطراف خود مانند ملخ ها روان گشتند و رامچندر با لچهمن بر همان کوه پرسرون اقامت داشت و انتظار کذشتن آن ماه و خبر سیتا مینمود و بعد از آن که همه بوزنه ها از پیش سگریو رفتند رام بسگریو گفت تو چگونه اینقدر مندل روی زمین که بیان نمودی میدانستی گفت بشنوید هرگاه بابای نام دانو با بالی عداوت کرد و بر پلیه کوه او را تصدیع داد و آن دیت در غار پلیه درآمد رشد و عقب او بالی هم رفت و مرا بر در غار گذاشت و من در آنجا بودم که یکسال گذشت و بالی بر نیامد ناگاه تمام غار از خون پر شد دانستم که برادر من بمرد غمگین شدم و سنگی کلان بر در غار نهادم تا که آن دانو از آنجا بر نتوان آمد بشهر خود آمدم و راج را خود گرفتم و تارا و رومارا بتصرف خود آوردم و با اقربا و دوستان در شهر اقامت کردم قضارا بالی آن دانو را کشته باز بشهر آمد

सर्ग-१०८

सुग्रीव की कहानी

अतः वानर अपनी स्वीकार की हुई दिशा की ओर चले गये। वे शोर करते हुए, मार्ग तोड़ते हुए गुर्राते और दौड़ते हुए जा रहे थे। प्रत्येक अपने रूप से इस प्रकार बात करता जाता था कि मैं सीता को लाऊँगा चाहे वह मौत के मुँह में ही क्यों न चली गई हो। और मैं अकेले रावण की हत्या करूंगा क्योंकि वह आप सबके कष्ट का कारण है। मैं पाताल के नीचे असफल साफलीन से भी सीता को अवश्य लाऊँगा। बड़े-बड़े वृक्षों को तोड़ डालूंगा और पर्वतों को उनके स्थान से हिला दूंगा तथा पृथ्वी को उठा दूंगा और समुन्द्र को नष्ट भ्रष्ट कर दूंगा। मैं बीस - बीस योजन छलांगे मारूंगा और समस्त धरती तथा कोहिस्तान और पाताल में फिरूँगा। अतः गर्व, घमण्ड और बल के कारण प्रत्येक वानर इसी प्रकार की बातें करता था। अतः वानर अपनी दिशाओं की ओर टिड्डियों के समान चले और रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ उसी प्रस्नवण पर्वत पर रुके रहे। और इस महीने के बीतने और सीता का समाचार मिलने की प्रतीक्षा करते रहे और उसके बाद जबकि सारे वानर सुग्रीव के पास से चले गये। राम ने सुग्रीव से कहा कि तुम किस प्रकार धरती के इतने स्थान जो जिनका वर्णन तुमने किया, जानते हो। उसने कहा सुनिये जिस समय मायावी नामी दानव ने बालि के साथ शत्रुता की, मलय पर्वत पर उसको हानि पहुँचाया और वह दैत्य मलय पर्वत में प्रविष्ट हुआ, उसके पीछे बालि भी गया और मुझे गुफा के द्वार पर छोड़ गया। मैं वहीं था कि एक वर्ष बीत गया और बालि बाहर नहीं निकला। अचानक सम्पूर्ण गुफा रक्त से भर गयी। तो मैंने जाना कि मेरा भाई मर गया। मैं दुखी हुआ और एक बड़ा पत्थर गुफा के द्वार पर रख दिया। ताकि वह दानव उस स्थान से न निकल सके। फिर मैं अपने शहर आया और राज्य स्वयं ले लिया तथा तारा और रूमा दोनों को अपने सम्पर्क में लाया तथा सम्बन्धियों और मित्रों के साथ शहर में रहने लगा। भाग्य की बात कि बालि उस दानव की हत्या करके शहर में आया

ومرا راجه دانسته عزم کشتن من کرد من با منتریان خود بکریختم انواع دریا و شهرها دیدم
بسمت پورب رفتم و بطرف دچهن کذشتم و بسوی پچهم دیدم و بجانب اوتر رسیدم ناکاه هنومان
مرا کفت شنیده ام که رکهه موک جایی را متنک شاپ داده است که اکر بالی آنجا برود سرش صد پاره شود
ازین رو من در رکهه اقامت کزیدم و بالی از خوف شاپ متنک اینجا نیامد آن زمان من هندل
زمین دیده ام درینجا صورت رام و لچهمن با تیر و کمان و سکریو مقابل نشسته و یکی بوزنه
باجامر بسر هر دو استاده و لشکر بوزنه ها مسلح و مستعد استاده

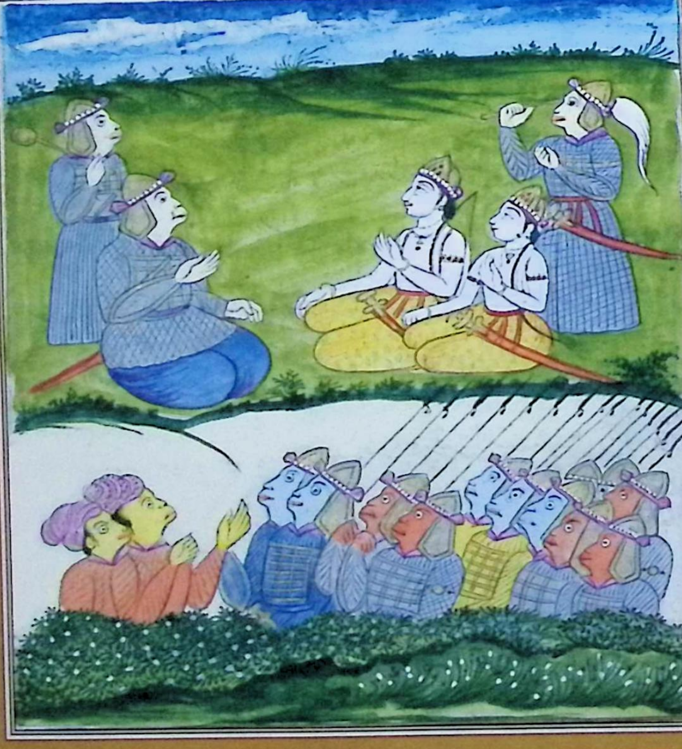

और मुझको राजा समझकर मेरी हत्या करने का निश्चय किया। मैं अपने मंत्रियों सहित भाग गया और मैंने विभिन्न प्रकार के नदी और शहर देखे। मैं पूरब की ओर गया, दक्षिण की ओर से गुजरा, पश्चिम की ओर दौड़ा और उत्तर दिशा पहुंचा। अचानक हनुमान ने मुझसे कहाः मैंने सुना है कि ऋष्य मूक के एक स्थान को मातंग का शाप है कि यदि बालि वहाँ जायेगा तो उसके सर के सौ टुकड़े हो जायेंगे इसी कारण से मैंने ऋष्यमूक में निवास किया और बालि मातंग के शाप के भय से यहाँ नहीं आया। उस समय मैंने पृथ्वी के स्थान देखे हैं।

राम और लक्ष्मण का चित्र जो धनुष बाण के साथ हैं और सुग्रीव सामने बैठे हैं तथा एक दो वानर मूरछल सहित दोनों के सिर की ओर खड़े हैं और वानरों की सेना हथियार से सुसज्जित तथा सतर्क खड़ी है।

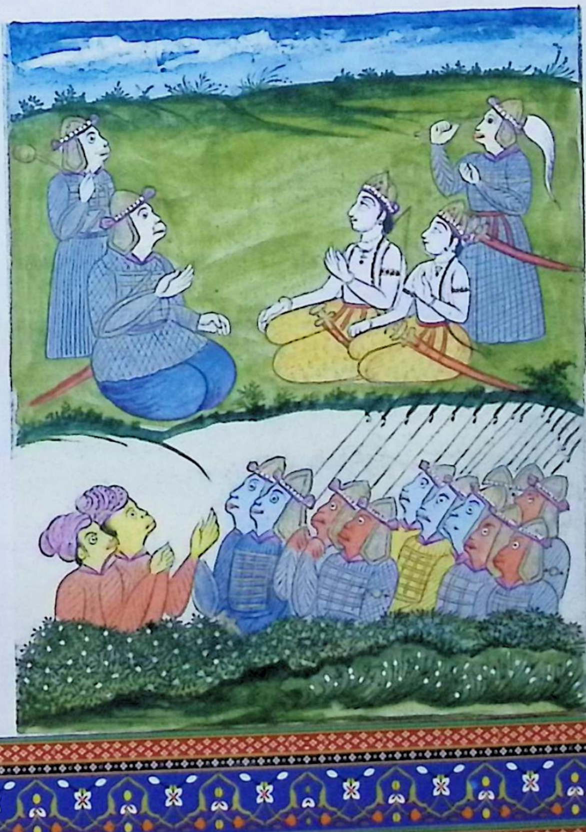

ذکر بازآمدن بوزنه ها القصه بسمت پورب نیت بوزنه با بسیار بوزنه ها رفت وبسمت دچهن با تار و انگد و دیگر بوزنه هنومان رفت وبسمت پچهم سکهین بوزنه با بسیار بوزنه ها رفت وبسمت اوتر شتبل بوزنه با بسیار بوزنه برفت و در سرانسی یعنی تالاب ها و دریا ها و کوه ها و صحراها جست و جو سر کردند در مکانها که سکریو گفته بود تفحص نمودند روز و شب در جست و جو گذراندند تا یکماه درین کار بسر بردند بعده برگردیدند چنانچه نیت بوزنه تمام سمت پورب را جست و جو نموده سیتا را نیافته با فوج خود برگشته آمد و شتبل بوزنه همه سمت اوتر را تفحص کرده با هم ایشان خود باز رسید و سکهین بطرف پچهم تبلاش سیتا کرائید پی بمقصود نبرده برگردید آمد همه ها نزد سکریو که برهمان کوه پرسرون بود رسیده نمسکار کرده گفتند که سمدرها و شهرها و بلاد ها و انواع کوه ها و غار ها جست و جو کردیم و درختان کلان برکندیدیم و بسیار ذیحیات را هلاک ساختیم و آنها را که راچهس دانستیم نیز کشتیم و بلاد و امصار و غیرهم بار بار جستیم لیکن بودن سیتا هیچ معلوم نکردیم و هنومان بر کار را چندر مستعد شده رفته است قوت و تهور و هنر و عقل نیک دارد او هم زود می آید و خبر سیتا می آرد زیرا که بدان سمت که سیتا را برده اند بهمان طرف هنومان رفته است

सर्ग-१०६

वानरों का वापस आना

अतः पूरब दिशा से नील वानर बहुत से वानरों के साथ गये, दक्षिण दिशा तारा, अंगद और दूसरे वानरों के साथ हनुमान गये और पश्चिम दिशा सुषेण वानर बहुत से वानरों के साथ गये। उत्तर दिशा शीतल वानर बहुत से वानरों के साथ गये और तालाबों, नदियों, पर्वतों तथा वनों में सीता को ढूंढ़ा। कठिन परिश्रम किया और जिन स्थानों में सुग्रीव ने बताया था वहां खोजबीन की। रात दिन संघर्ष कर ढूंढने में बिताया और एक महीना इसी काम में बीत गया। उसके बाद वे वापस आ गये। अतः नील वानर ने पूरब दिशा का सम्पूर्ण क्षेत्र देख डाला और परिश्रम किया लेकिन सीता को कहीं नहीं पाया तथा अपनी सेना सहित वापस आ गये। शीतल वानर पूरी उत्तर दिशा देख करके अपने साथियों सहित वापस आ गये और सुषेण ने पश्चिम दिशा सीता की खोज में परिश्रम किया लेकिन सफलता प्राप्त किये बिना वापस आ गये। समस्त वानरों ने सुग्रीव के पास जो उसी प्रस्रवण पर्वत पर था पहुँचकर उसे नमस्कार करते हुए कहा कि हमनें समुन्द्रों, शहरों, देशों और विभिन्न पर्वतों तथा गुफाओं में ढूंढा और बड़े-बड़े वृक्ष उखाड़ फेंके एवं बहुत से जीवधारियों की हत्या की। जिनको हमने राक्षस समझा उनकी भी हत्या की और देशों शहरों में ढूंढ़ा लेकिन सीता के होने के विषय में कुछ मालूम नहीं कर सके। हनुमान रामचन्द्र के काम पर दृढ़ होकर गये हैं। उसमें शक्ति, साहस, गुण और अच्छी बुद्धि सभी कुछ है। वह भी शीघ्र आ रहे हैं और सीता का समाचार लायेंगे क्योंकि जिस दिशा में सीता को ले गये हैं, हनुमान उसी दिशा में गये हैं।

درینجا صورت رام و لچهمن و سگریو بدستور سابق که هر بوزنه بر سر بردو
چامر میکنند و بر همان کوه پرشروون نشسته اند و سکهین و سیتن و نبت دست بسته
ایستاده سخن میگویند و دست بر داشته اشارت میکنند و عقب اینجا هزاران
بوزنه و لنگور و خرس با قسام اقسام سلاح مسلح و درخت ها در دست دارند و شکار میکنند

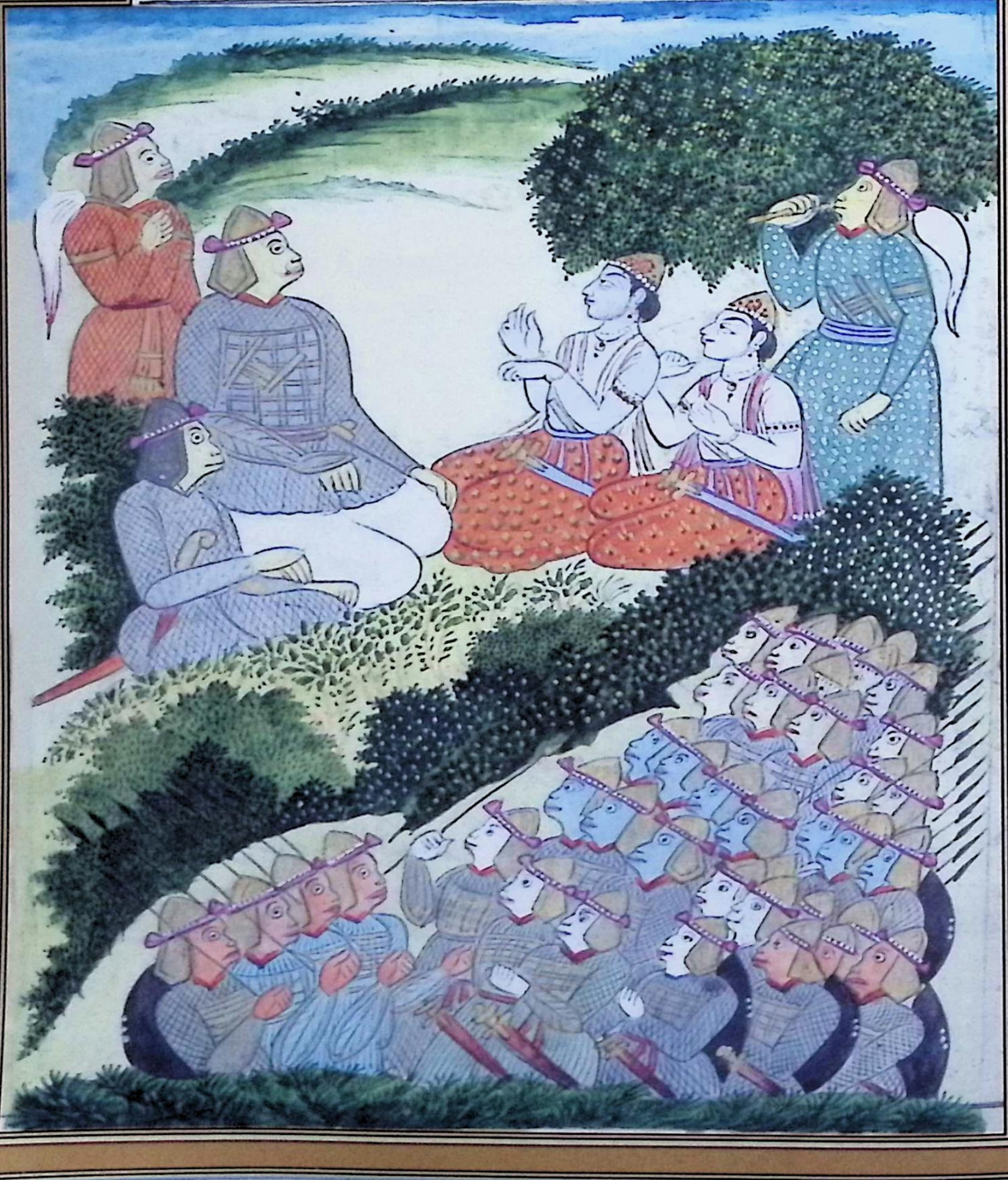

राम, लक्ष्मण और सुग्रीव का चित्र पूर्व के यथावत कि वानर दोनों के सर पर मूर्छल हिला रहे हैं, और वह इसी प्रस्रवण पर्वत पर बैठे हैं और सुषेण, शीतल और नील हाथ जोड़कर खड़े बातें कर रहे हैं और हाथ उठाकर संकेत कर रहे हैं। उनके पीछे हजारों वानर और लंगूर हर प्रकार के हथियार से सुसज्जित तथा हाथों में वृक्ष उठाये हुए नमस्कार कर रहे हैं।

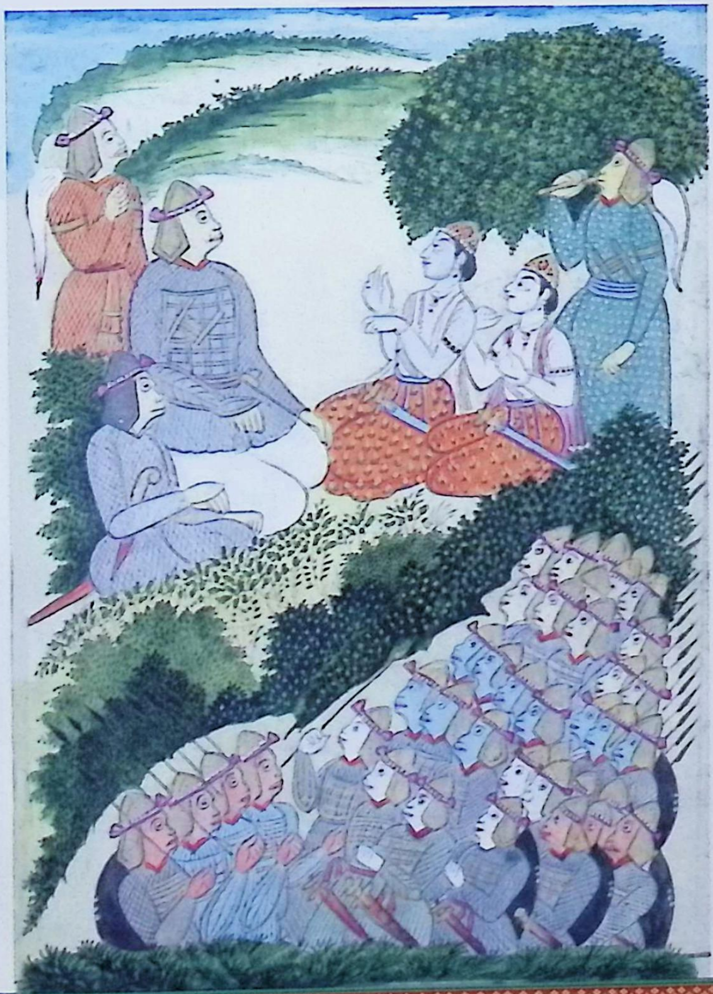

سرگ مشورت بوزنه ها القصه هنومان با انگد و تار و غیره همه بمکانها که سگریو نشان داده بود تفحص کرد چنانکه در کوهها بندها چل و قلعجات و کوهها و غارها و چپرکندها و درختان همه بوزنه ها داخل شدند و بدیدند اما سیتا را نیافتند و مول و پهل را تناول نموده همه وقت در تفحص بوده بآرام گذرانند چنانچه آنها را در همانجا روزهای بسیار گذشت و دیگر مکانها هم جستند و در مکانیکه آنجا درختان بی بار بودند و برگ و گل هم نمیداشتند و دریاها بی آب بودند و آنجا جاموس و آهو و فیلان و شیر و طیور وغیره هیچ نبود و خوشبوئی مانند نیلوفر وغیره بود بواسطه آنکه آنمکان را سنند نام رکهیه که پسر ده ساله او در انجا فوت کرده شاپ داده بود که هیچ درینجا نخواهد بود همه جا به را دیدند نشان سیتا و راون نیافتند برائی خوشی خاطر بار بار همه جا گشتند اما بمقصود نه پیوستند ناگاه در جنگله درختان وغیره رسیدند شخصی کلان قد قوی هیکل خوفناک دیدند گویا کوه ایستاده است او همه بوزنها را گفت باشید باشید وشت را البته بر بوزنه ها دوید انگد او را آمده دیده دانست که همین است راون طبانچه بر وزد که خون از دهن او فرو ریخت و مانند کوه بر زمین افتاد و جان داد بعد مردن او بوزنه ها آنهمه جاها دیدند و جستجو نموده حیران شده باز گشتند و از تفکر در زیر بیخ درختی نشستند که هیچ کار نشد

همچنین

सर्ग-११०

वानरों का परामर्श

अतः हनुमान ने अंगद और तारा आदि के साथ उन स्थानों में ढूंढ़ा जिनको सुग्रीव ने चिन्हित किया था। अतः विंध्याचल के पर्वतों और किलों तथा दूसरे पर्वतों छत्र गुफाओं और वृक्षों में सब में वानरों ने प्रवेश किया और देखा लेकिन सीता को नहीं पाया। मूल और फल खाकर सारा समय खोज में बिताया। अतः उन्हें उन्हीं स्थानों में बहुत दिन व्यतीत हो गये और दूसरे स्थानों में भी उन्होंने ढूंढ़ा। जिस स्थान पर वृक्ष बिना फल के थे और फूल पत्ती भी नहीं थी और नदी बिना जल के थी और जहां भैंस, हिरन, हाथी, शेर, पक्षी आदि कुछ नहीं थे और नीलोफर आदि के समान सुगन्ध थी। इस कारण कि उस स्थान को नन्दन नामी ऋषि ने, जिसके दस वर्ष के पुत्र की मृत्यु हुई थी, शाप दिया था कि इस स्थान पर कुछ नहीं रहेगा। उन्होंने वह सारे स्थान देखे लेकिन सीता और रावण का पता नहीं पाया। अपनी सन्तुष्टि के लिये वह बार-बार समस्त स्थानों पर घूमे, लेकिन उद्देश्य प्राप्त नहीं हुआ। वह वृक्षों आदि के वन में पहुंचे। एक भीमकाय और भयानक व्यक्ति को देखा, मानो कि एक पर्वत खड़ा है उसने सारे वानरों से कहा। ठहरो ! ठहरो ! और घूंसा तानकर वानरों पर दौड़ा। अंगद ने उसको आता हुआ जानकर समझा कि रावण यही है। उसको ऐसा तमाचा खींचकर मारा कि उसके मुख से रक्त बहने लगा और वह पर्वत के समान पृथ्वी पर गिर पड़ा तथा प्राण त्याग दिये। उसके मरने के बाद वानरों ने वह समस्त स्थान देखे और खोजा लेकिन चकित होकर वापस आ गये तथा यह सोचते हुए एक वृक्ष के नीचे बैठ गये कि कोई कार्य नहीं हुआ

وچند بن محنت رایگان بنظر آمد درینجا صورت هنومان وانگد ونیل و
سکهین وغیره بوزنه ها بسمت وچهن قریب چهار نفر پیش ایستاده وانگد طبانچه
بر شخص کلان قد تیز دندان قوی هیکل مهیب مشت بسته میزند وخون از دهان
شخص جاری شده اول همه انگد که طبانچه زده وعقب او سه بوزنه هنومان ونیل وگندمادن
وعقب اینها سرهای بوزنه باهم آمیخته بطریق فوج باید کرد وصورت درخت هم

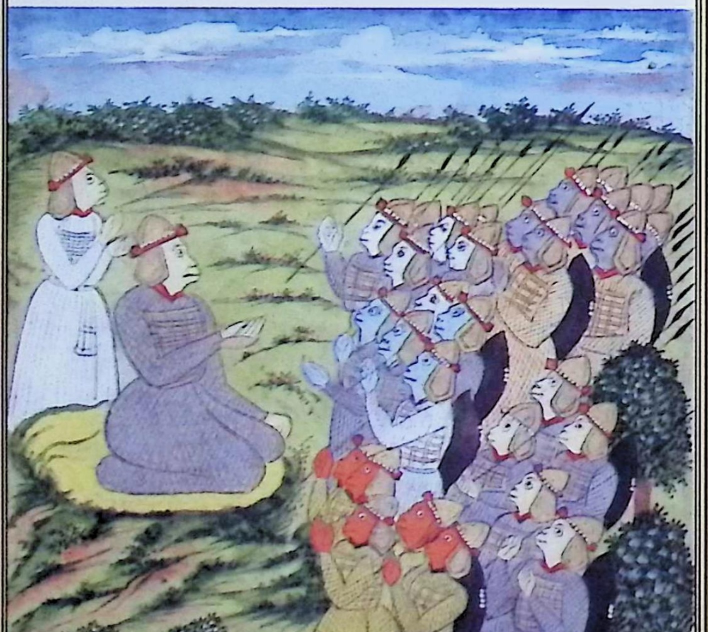

और इतना परिश्रम बेकार हुआ।

हनुमान, अंगद, नील और सुषेण आदि वानरों का चित्र दक्षिण दिशा। लगभग चार नफर खड़े हैं और अंगद बड़े कद वाले, तेज दांतों वाले, भीमकाय व्यक्ति पर घूंसा मार रहा है और उस व्यक्ति के मुंह से रक्त निकलने लगा। सबसे पहले अंगद है जिसने घूसा मारा और उसके पीछे तीन वानर हनुमान, नील और गंधमादन हैं और उनके पीछे वानरों के सिर आपस में सेना के समान मिले हुए हैं और वृक्ष का भी चित्र है।

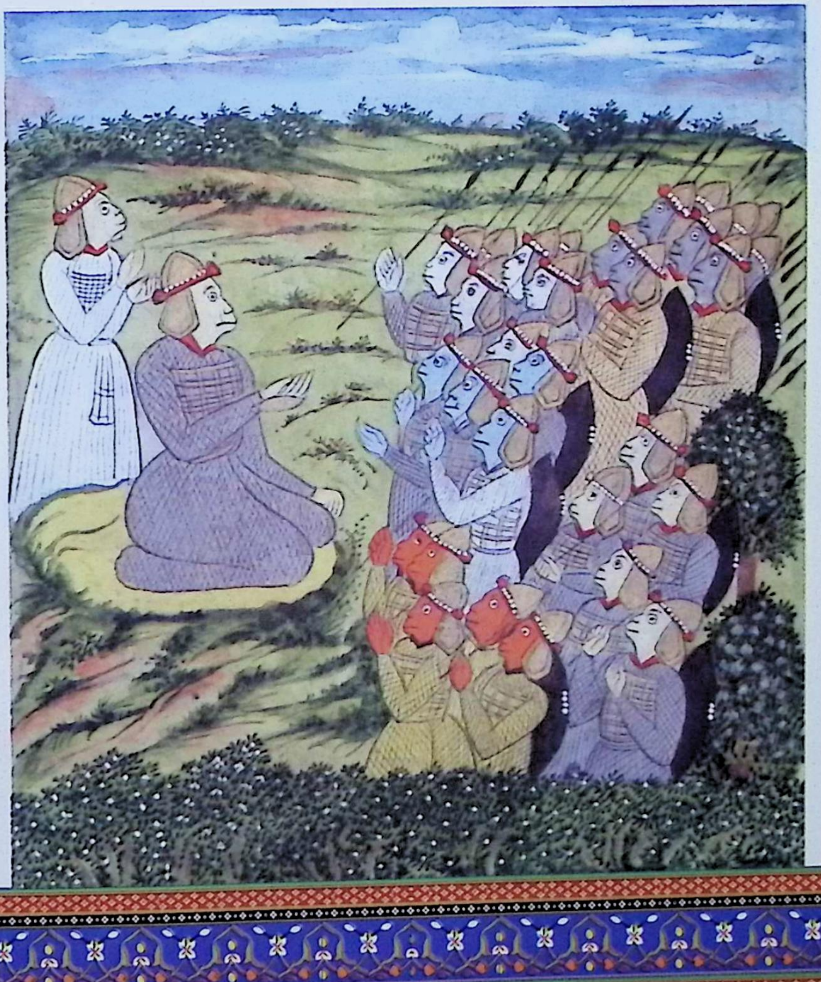

باز جستن بعد از ان هنومان به انگد و دیگر بوزنه ها را گفت تمام صحرا
و کوه جستیم و کاو خس را بشکستیم نه سیتا را دیدیم و نه راون را یافتیم و امکنه ها
که سگریو نشان داده بود و سوائی آنجا ها که بیان نکرده همه جستیم و بمقصود نه پیوستیم
یعنی برای سیتا که میگشتیم ندیدیم حالا چه کنیم انگد گفت از نیافتن سیتا بیدل
و متردد نباید شد اگرچه اینهمه جا ها را جستهایم بار دیگر به بینیم در کاریکه نفع خود
بنظر آید بیدل و سست نباید شد غصه کردن خوب نیست و سگریو که راجه ماست
بسیار غصه ور و سیاست پیشه است از و و از رام باید ترسید چون کار
ناکرده خواهیم رفت چها که نخواهد کرد بتخصیص که برای کار دوست خود آن سگریو
ما یان را فرستاده است من اینقدر نیکخواهی گفتم اگر بخاطر شما آید بکنید والا انچه بهتر
باشد بگوئید همه بوزنه ها گفته انگد را شنیده گند همادن بوزنه که از تشنگی مضطرب بود
گفت انگد انچه گفته همین سزاوار است و نیک است گفته این بکنید بار دیگر اینهمه
جاها بجوئیم بنوعیکه سگریو گفته است غرض که بار دیگر برخاستند تمام جنگل بند هاچل
سمت و چهن تفحص کردند بعد از ان بسرعت بردری منت نام کوه برآمدند انجا
لودهرین و سپت پرن بن را جستند آنجا [illegible] ز و گردیدن آنجا
[illegible] آمدند مانده گشته زیر تیح درخت جـ[illegible]ـتند بعد از جهورتی

بوتون

सर्ग-१११

पुनः खोज करना

उसके बाद हनुमान ने अंगद और दूसरे वानरों से कहा कि हमने पूरा पर्वत, वन छान मारा, घास और तिनके तक को देख डाला। न हमने सीता को देखा और न रावण को पाया। जिन स्थानों को सुग्रीव ने चिन्हित किया था और जिसका वर्णन नहीं किया था हमने समस्त स्थान पर ढूंढ़ा। लेकिन कुछ नहीं मिला अर्थात् सीता को जिनके लिये हम चारों ओर फिर रहे हैं नहीं देखा। अब हम क्या करें। अंगद ने कहा ''सीता के न मिलने से हमें निराश व दुखी नहीं होना चाहिये, यद्यपि उन समस्त स्थानों में ढूंढ़ चुके हैं, लेकिन पुनः फिर देखें। जिस कार्य में अपना लाभ दिखाई देता है उसमें हताश और उदासीन नहीं होना चाहिए। क्रोध करना उचित नहीं है सुग्रीव जो हमारा राजा है वह बहुत क्रोधी और राजनीतिज्ञ है। उससे और राम से डरना चाहिये। जब हम बिना कार्य किये जायेंगे तो वह क्या-क्या न करेगा। विशेष रूप से जबकि सुग्रीव ने अपने मित्र के कार्य के लिये भेजा है। मैंने भलाई के लिये यह बात कही है। यदि तुम्हारे मन में आये तो करो अन्यथा जो उचित हो बताओ। सारे वानर ने अंगद की बात सुनी। गन्धमादन वानर, जो प्यासा था उसने कहा' अंगद ने जो कुछ कहा यही उचित है, उसका कहा मानो। हम पुनः उन स्थानों में ढूंढ़ेंगे जिस प्रकार कि सुग्रीव ने कहा है अतः वह सब पुनः उठे और विन्ध्याचल के दक्षिण में सारा वन छान मारा। उसके बाद शीघ्रता से दरी नामक पर्वत पर आये वहां लोदहरन वन और सप्तावरण वन में ढूंढ़ा। वहां भी सीता को नहीं देखा और [illegible] जानकर नीचे आ गये, और थककर [illegible] के नीचे बैठ गये। [illegible] बाद थकान कुछ कम हुई और फिर उठकर दक्षिण दिशा की ओर देखने चल दिये।

چون قدري ماندکی رفع شد باز برخاسته تمام سمت وچهن دیدند

درینجا صورت انگد و هنومان و نیل و سکهین و کندهمادن و گج و گواچهه و شربهه
و تار و غیره یازده بوزنه سردار زیر درختی نشسته متفکرانه تدبیر میکنند و مقابل ایشان
صورت کوه و صحرا و درختان و وحوش و طیور و صورت هنومان و انگد بسمت وچهن

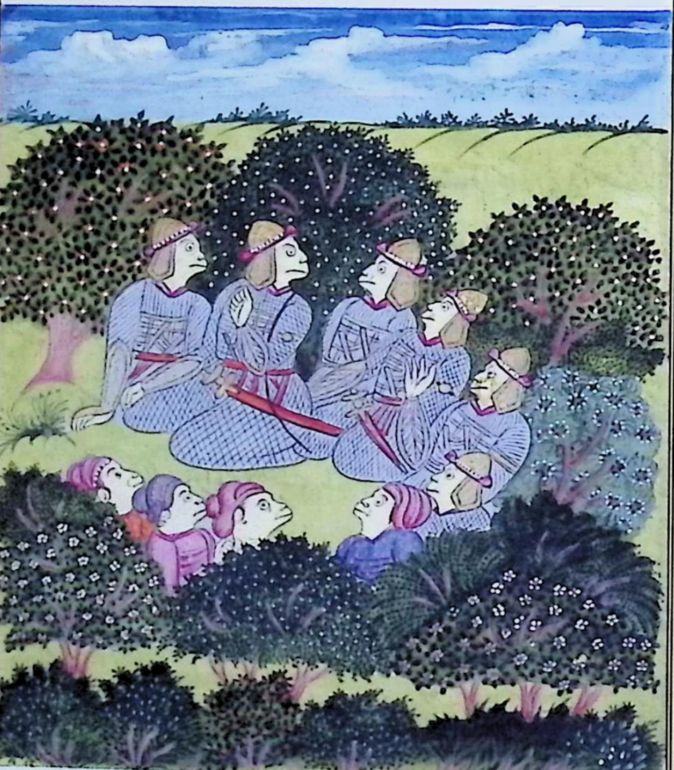

अंगद, हनुमान, नील, सुषेण, गंधमादन, गज, गवाक्ष, शरंभ और तार आदि ग्यारह सरदार वानर एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए योजना बना रहे हैं और उनके सामने पर्वत, वन, वृक्ष, जंगली पशु पक्षियों का चित्र है और हनुमान तथा अंगद दक्षिण ओर हैं।

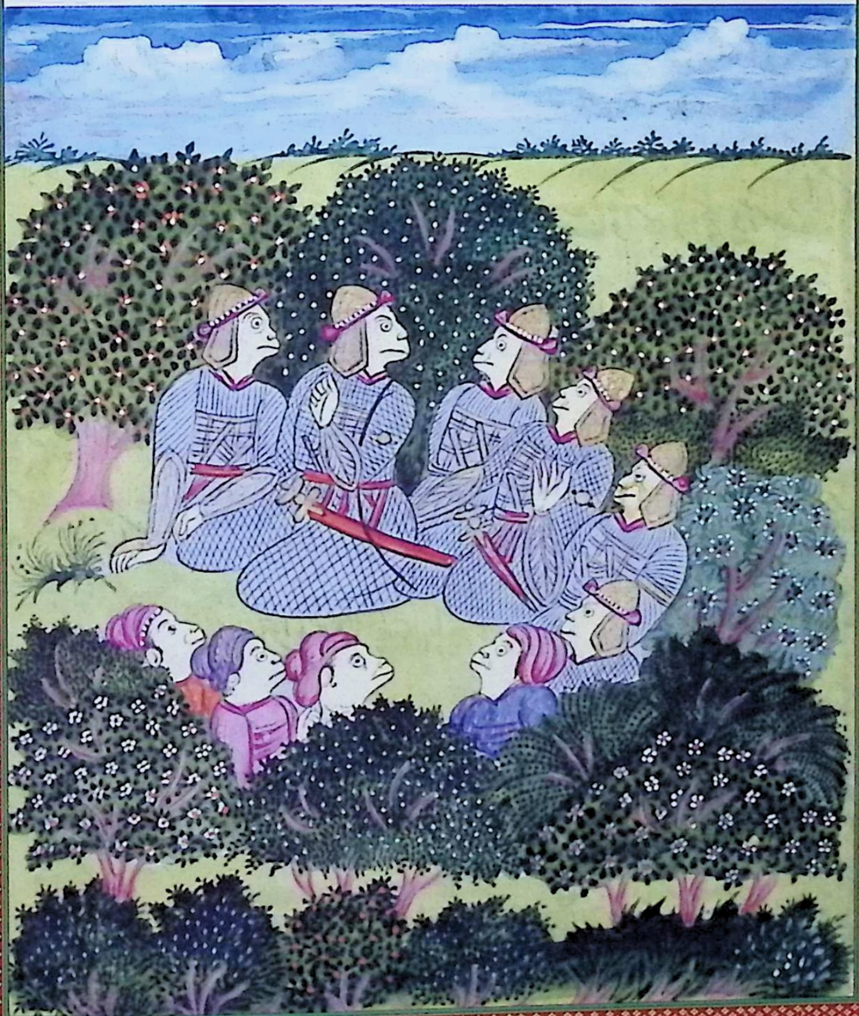

ذکر رفتن بسوراخ القصه هنومان با تار و انگد و تمام بوزنه جابه بندها چل و غیره
بجستند و همه بوزنه ها برای کار رامچندر از جان خود گذشته تفحص نمودند در غارها
درآمدند و قلعجات و گذها دیدند و مکان سخت گذار جستجو کردند بعد ازان هنومان
و گج و گواچبه و گویه و شربهه و کندهماون و میندو و دوبد و جانبوان و انگد و تار همه ها
جمع شدند و تمام آنجا را دیده از نا یافتن سیتا متردد شدند و از خوف سکریو ترسیدند
گرسنه و ماند شدند و تشنگی برایشان بسیار غلبه کرد خواهان آب گشتند یک
سوراخ کلان نظر کردند که از درختان انباشته است و آنجا کرونج و هنس و بلاک
و چکرواک و کلنگ و سارس و بجو و مرغابی و غیره جانوران آبی هستند هنومان
که مانند کوه دست بوزنه ها گفت کوهستان و صحراها را باز ملاحظه کردیم و برای کاریکه
آمدیم آن سیتا دیده نمیشود ازین سوراخ سارس و چکرواک و غیره جانوران از آب
می آیند البته درینجا آب خواهد بود یا چاهی یا تالابی خواهد بود که جانور آبی میگرایند ما همه درین
دررویم و راون عذاب کار و سیتا نیک کردار را بجوئیم القصه همه بوزنه ها دران سوراخ
تیره بشتافتند آن را تاریک تر و دور از نور مهر و ماه یافته دست یکدیگر را گرفته تا یک جوجن
اندر رفتند و همه بیحال و تشنه تا یکماه درانجا میرفتند و امید جان قطع کرده بودند ناگاه روشنی پدید
و درختان نظر آمدند که مانند چراغ تابان بودند و اشجار شال و تال و پیورلکا و چنپا و ناگ پشپ بودند

و اقسام

सर्ग-११२

छिद्र में जाना

संक्षेप में हनुमान ने तार और अंगद और समस्त वानरों के साथ मिलकर सम्पूर्ण विन्ध्याचल आदि छान मारा। समस्त वानरों ने रामचन्द्र के कार्य के लिये अपने प्राण की चिन्ता न करते हुए खोजा। गुफाओं में आये, किलों, में तालाबों को देखा और कठिन मार्गों पर ढूंढ़ा। उसके बाद हनुमान गज, गवाक्ष, गवय, शरभ, गंधमादन, मयन्द, द्विविद अंगद और तार सब एकत्र हुए। और वह समस्त स्थान देखते हुए सीता को न पाने से दुखी हुए और सुग्रीव के भय से डरे, भूखे हुए और थक गये तथा उनको बहुत प्यास लगी वह पानी के इच्छुक हुए। उन्होंने एक बड़ा छिद्र देखा जो वृक्षों से ढका था और वहां क्रौञ्च, हंस, बलाक, चक्रवाक, कलंग सारस बेजू और मुर्गाबी आदि जल वाले पक्षी हैं। हनुमान जो स्वयं पर्वत जैसे हैं उन्होंने वानरों से कहा-''पर्वतों, वनों को हमने पुनः देख लिया और जिस कार्य के लिये हम आये हैं वह सीता दिखाई नहीं देती। इस छिद्र से हंस, क्रौञ्च, सारस, चक्रवाक आदि पशु जल से भीगकर आ रहे हैं। निःसंदेह यहां पानी होगा या कुआं या तालाब होगा कि जल पक्षी यहां एकत्र हैं। हम सब इस छिद्र में चलें और पापी रावण और पवित्र आचरण वाली सीता की खोज करें। सारे वानर इस अंधेरे छिद्र में घुस गये उसको अंधेरी और चांद सूर्य के प्रकाश से दूर समझते हुए सबने एक दूसरे का हाथ पकड़ लिया और एक जोजन की दूरी तय करके अन्दर गये और सब निढाल और प्यासे होकर एक महीने तक चलते रहे। और वह अपने प्राण बचने की आशा छोड़ चुके थे। अचानक प्रकाश दिखाई दिया और वृक्ष दिखाई दिये जो चमकते चिराग के समान थे। और शाल, ताल पोरलका चम्पा और नाग, केशर, कनेर के वृक्ष देखे

واقسام طیور و درختان برنگ بید و ریه نیله بودند و کلها از طلا میداشتند و ماهیان و کشف همه زرین و بهان برای نشستن از طلا موجود و خانه از نقره نیز بود و کواچه یعنی شبکه از دام بافی مروارید بود و زمین از زر و سیم بود چون بوزنه‌ها در انجا بستر خواب منقش و آراسته دیدند و ظروف از زر و نقره یافتند و درختان شکفته پر از یاقوت و مرجان دیدند و از بهرمران آنجا بآواز زار سام بید شنیدند و پیرایه‌های خوشنما و سوپ‌های زیبا و کنبل یعنی شال‌های خوب و خوشبوی‌های مرغوب همه جا دیدند بعده عورتی تپسونی دیدند که چیرو کرشن اجن داشت کمخوار و از نور پر انوار بود و هنومان او را نمسکار کرده پیش ایستاد ناگاه آن عورت گفت تو کیستی و درینجا برای چیستی درینجا صورت انگند

وهنومان وغیره یازده بوزنه دست یکدگر گرفته داخل سوراخ میشوند چنانچه دو سه اندرون و باقی بیرون اند و سوراخ از درختان روپوش و جانوران مثل سارس و چکوا و کلنگ و مرغابی وغیره از ان بر می آیند

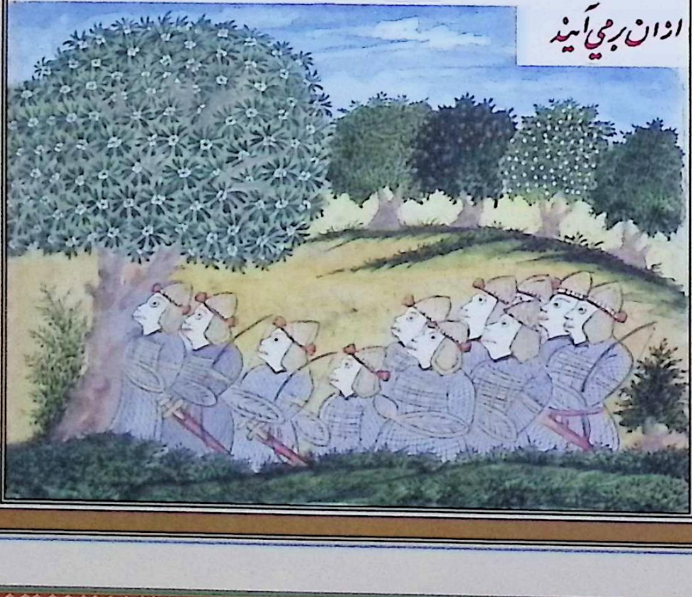

और विभिन्न प्रकार के पक्षी। वहां के वृक्ष फिरोज़े के समान नीले थे और उनके फूल सोने के थे। मछलियां सुनहरी थीं और बैठने के लिये सोने का आसन था महल भी चांदी का था, और गवाच्छ अर्थात् तख्त मुक्तामणि का बना हुआ था। पृथ्वी सोने चांदी की थी जब वानरों ने वहां कलाकारी और सुसज्जित स्वप्न का बिस्तर देखा और सोने चांदी के बर्तन देखे तथा वृक्षों को याकूत और मरजान से खिला हुआ पाया, चारों ओर आवाज सुनी और सुंदर वस्त्र तथा अच्छे कम्बल अर्थात् शाल और लुभावनी सुगन्ध सब जगह देखी। उसके बाद एक तपस्या वाली स्त्री देखी और चीर व केश जटा रखे हुए थी। वह कम भोजन करने वाली और प्रकाश से भरी थी। हनुमान उसे नमस्कार करके सामने खड़े हो गये। अचानक उस स्त्री ने कहा तुम कौन हो और यहां किस लिये आये हो ?

अंगद और हनुमान आदि ग्यारह वानर एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए छिद्र में प्रविष्ट हो रहे हैं। दो तीन अन्दर हैं और शेष बाहर हैं और छिद्र वृक्षों से ढका हुआ है, सारस, चकवा, क्रौञ्च आदि और पशु उस से निकल रहे हैं।

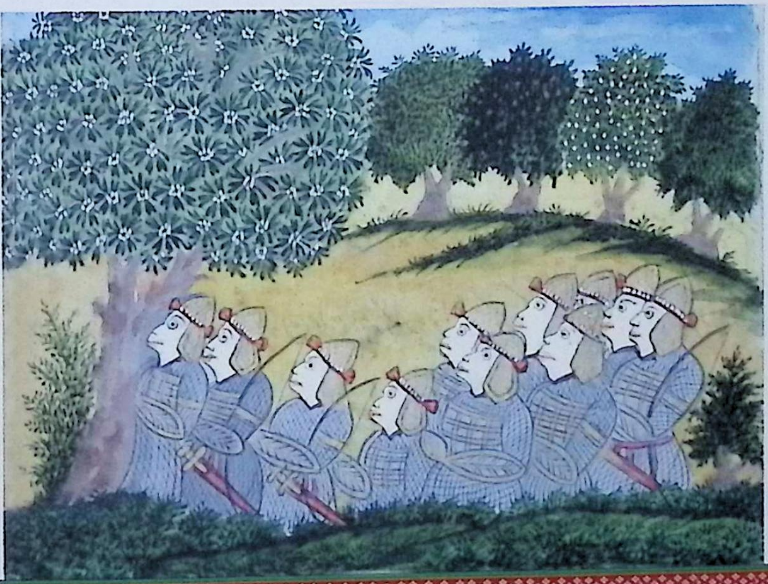

سرگ گفت کو باسیمرپها چون آن زن چنین پرسید منوهان گفت ما بوزنه
باشندگانِ صحرائیم و ناگاه درین سوراخ درآمده ایم گرسنه و تشنه مانده ایم
اینمقام عجیب را دیده بار دیگر آرام یافتیم ما را که اهیاکت یعنی مسافر آمده ایم بیان کن
این درختانِ طلا کراست و این بان ها از کیست و این خانه ها زر و سیم و شبکه
و مناظر بمروارید و غیره آراسته و این کشف و ماهی زرین از کیستند آنعورت
خیرخواه ذیحیات گفت که می نام دانوئی بود و هنرها را بسیار میدانست و آن هنرش
چنان است که هرچه خواهند از آن موجود کنند آن می دانو اینمکان را از مایا بار خود بنا ساخته
و قبل ازین که او در دانوان بجائی بشوکرمان بود و هزاران سال در صحرا تپ کرد
و از برهما بر یافت تا همه دشمنان بر و غالب نشوند و مرگ هم بر دوست نمی یافت او
با هیما نام اپسرا اخلاص نموده آشفته اوشد درینجا مدتی ماند تا وقتی بیرون آمد
اندر او را بکشت بعده برهما آن هیما اپسرا را برداد که اینجا خانه ها دایم از طلا و غیره چنانکه
هستند برقرار باشند و من خود دختر میرساورن ام و نام من سیمپرپهاست و هیما
سکهی یعنی اخلاصمند من بود و من او را برداده ام که نگاهبانی اینجا من خواهم کرد
لهذا محافظت میکنم و شمایان برائی چه کار و برای کدام کس در صحرا و کوه میگردیدید و ازین
سوراخ درینجا چگونه رسیدید این مول و پهل را بخورید و آب بنوشید بعد از ان

सर्ग-११३

स्वयंप्रभा से वार्ता

जब उस स्त्री ने यह पूछा तो हनुमान ने कहा ''हम वानर वन के रहने वाले हैं और संयोगवश इस छिद्र में प्रविष्ट हुए हैं। हम भूखे एवं प्यासे हैं। यह आश्चर्यजनक स्थान देखकर हमने पुनः शान्ति पायी। हम यहां यात्री आये हैं। वर्णन करो कि यह सोने के वृक्ष किसके हैं और यह विमान किसके हैं ?और यह सोने चांदी के महल और शबका और मुक्तामणि आदि से सुसज्जित दृश्य किसके हैं ?और यह कशफ और सुनहरी मछलियां किसकी हैं ?और जीवधारियों की शुभचिंतक स्त्री ने कहा कि मयासुर नामी दानव था और वन के बहुत से चमत्कार जानता था। वह चमत्कार ऐसे हैं कि जो कुछ चाहते हैं उनसे प्राप्त कर लेते हैं। उस दानव ने भी यह महल अपने वन से एकत्र किया है और इससे पहले जब वह दानवों में विश्वकर्मा के स्थान पर था, हजारों वर्ष उसने वन में तपस्या की और ब्रह्मा से वचन पाया कि सारे शत्रु भी उस पर भारी नहीं पड़ेंगे और मृत्यु का भी उस पर नियंत्रण नहीं होगा। वह हेमा नामी अप्सरा का सच्चे दिल से प्रेमी हो गया है और यहां काफी समय तक रहा। यहां तक कि एक बार जब वह बाहर आया तो इन्द्र ने वज्र से उसकी हत्या कर दी। उसके बाद ब्रह्मा ने उस हेमा अप्सरा को वचन दिया कि यहां के सोने आदि के महल आदि जैसे हैं सदा वैसे ही रहेंगे। और मैं स्वयं मेरूसावर्णि की पुत्री हूं मेरा नाम स्वयंप्रभा है और हेमा मेरी मित्र थी। और मैंने उसे वचन दिया है कि यहां की रक्षा मैं करूंगी। इसलिये रक्षा कर रही हूं और तुम लोग किस कार्य के लिये और व्यक्ति के लिये वन और पर्वत में घूम रहे हो ?और इस छिद्र से यहां कैसे पहुंचे ?यह मूल और फल खाओ तथा जल पियो।

احوال بیان کنید هنومان گفت ما سالمیم تو انچه میدهی از دست خود بده سنپهیا
این را شنیده اقسام ثمر و مول آورد بوزنه ها گرفتند و خوردند و آب نوشیدند همه آسوده
و خوشوقت شدند سرگ بیان حال بار دیگر آن عورت چون بوزنه ها را بخوشی آمده
و بآرام رسیده دید گفت اگر شما را تصدیع و ماندگی رفع شد پس انچه پرسیده ام بیان
کنید هنومان گفت راجه ایست مانند اندر و برتر رامچندر ولد دسرته او با لچهمن نام
برادر خود و سیتا نام اهلیه در صحراء دندک آمده در جن استهان اقامت گزیده از انجا عورت
او را راون نام راچهس گرفته برده است و سگریو نام راجه بوزنه ها با او دوستی کرده است
ما یان را برای تفحص سیتا و راون فرستاده و ما تمام سمت دچهن دیدیم و نیافتیم
تشنه و گرسنه و مانده گشته در زیر درختی اقامت کردیم و از خوف سگریو
دل گرفته گشتیم و در دریای فکرت غریق بودیم و کناره نمی یافتیم ناگاه این
سوراخ را بدرختان انباشته دیدیم و از انجا هنس وغیره طیور از آب تر بر آمده
نظر کردیم در خاطر من رسید که درین سوراخ داخل باید شد اینهمه بوزنه ها دیگر نیز
پیرو عقل من شدند چنانکه دست یکدیگر را محکم گرفته داخل شدیم و با تو ملاقی شدیم
که از رنج قریب مرگ نجات دادی بفرما تا در جلدوئی این کدام کار تو کنیم سیمپرپها
گفت من بر همه شمایان مهربان شدم که بطریق دهرم میروید و مرا

उसके बाद अपने विषय में बताओ।'' हनुमान ने कहा; हम भिक्षुक हैं आप जो कुछ दे रही हैं अपने हाथ से दीजिये। स्वयंप्रभा यह सुनकर विभिन्न प्रकार के फल और मूल लाई। वानरों ने ले लिया और खाया तथा पानी पिया सब सन्तुष्ट और प्रसन्न हुए।

जब उस स्त्री ने वानरों को प्रसन्नचित्त एवं सुखी मुद्रा में देखा तो कहा ''यदि आप लोगों की थकान और कष्ट दूर हो गया है तो मैंने जो कुछ आपसे पूछा था वह वर्णन कीजिये।'' हनुमान ने कहा ''इन्द्र और वरुण के समान एक राजा हैं, रामचन्द्र पुत्र दशरथ। वह अपने भाई लक्ष्मण और अपनी पत्नी सीता के साथ दण्डक के वन में आये थे और जिस स्थान पर निवास किया था वहां से उनकी पत्नी को रावण नामी राक्षस पकड़कर ले गया है। वानरों के राजा सुग्रीव ने राम से मित्रता कर ली है। उसने हम लोगों को सीता और रावण की खोज करने के लिये भेजा है। हमने दक्षिण दिशा का सम्पूर्ण भाग देख लिया लेकिन उसे नहीं पाया। भूखे, प्यासे और थके हुए होकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गये और सुग्रीव के भय से दुखी हुए। हम चिन्तन में डूबे थे और समाधान नहीं पा रहे थे कि अचानक यह छिद्र वृक्षों से ढका हुआ देखा। और वहां से हंस आदि पक्षी पानी भीगे हुए निकलते देखा। यह समस्त वानर और दूसरे भी मेरे विचार को माना। अतः एक दूसरे का हाथ पकड़कर हम प्रवेश कर गये और आपसे भेंट हुई कि आपने हमें मृत्यु के निकट पहुंचने के दुख से बचा लिया। आप आज्ञा कीजिये कि इसके बदले हम आपका कौन सा कार्य करें।'' स्वयंप्रभा ने कहा ''मैं तुम सबसे बहुत प्रसन्न हूं और तुम पर दयालु हूं क्योंकि तुम लोग न्याय के मार्ग पर चल रहे हो और मेरा कोई काम नहीं है।''

بهیچ کار نیست درینجا صورت سُمپربها بر تخت تکیه کرده نشسته
و هنومان دست بسته ایستاده باو سخن میگوید و عقب او انگد و دیگر بوزنه ها
استاده سخنان او میشنوند

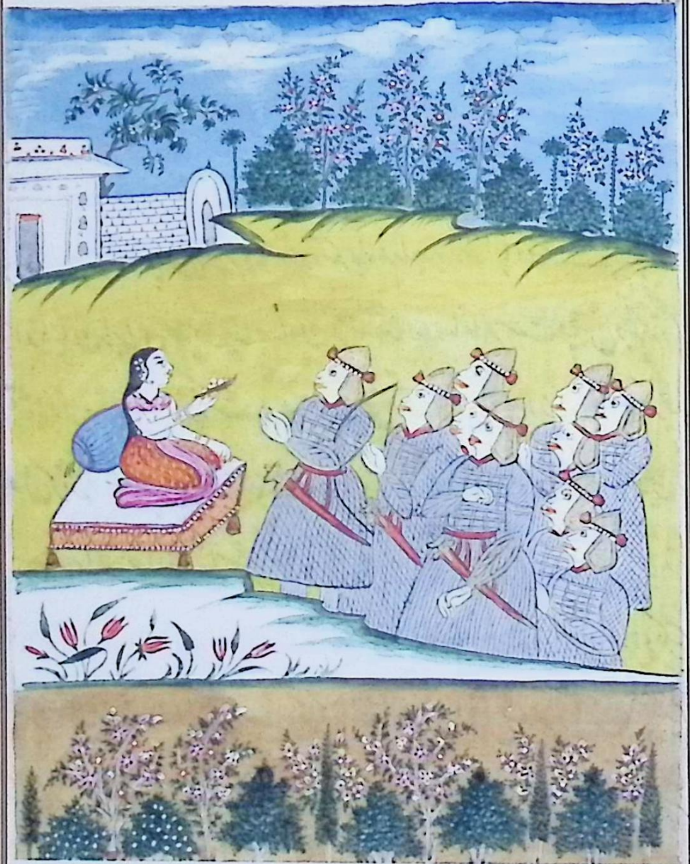

مرکب برامدن

स्वयंप्रभा का चित्र जो तख्त पर आसन लगाये बैठी हैं और हनुमान उसके सामने हाथ जोड़कर खड़े होकर बातें कर रहे हैं। उसके पीछे अंगद और दूसरे वानर खड़े उसकी बातें सुन रहे हैं।

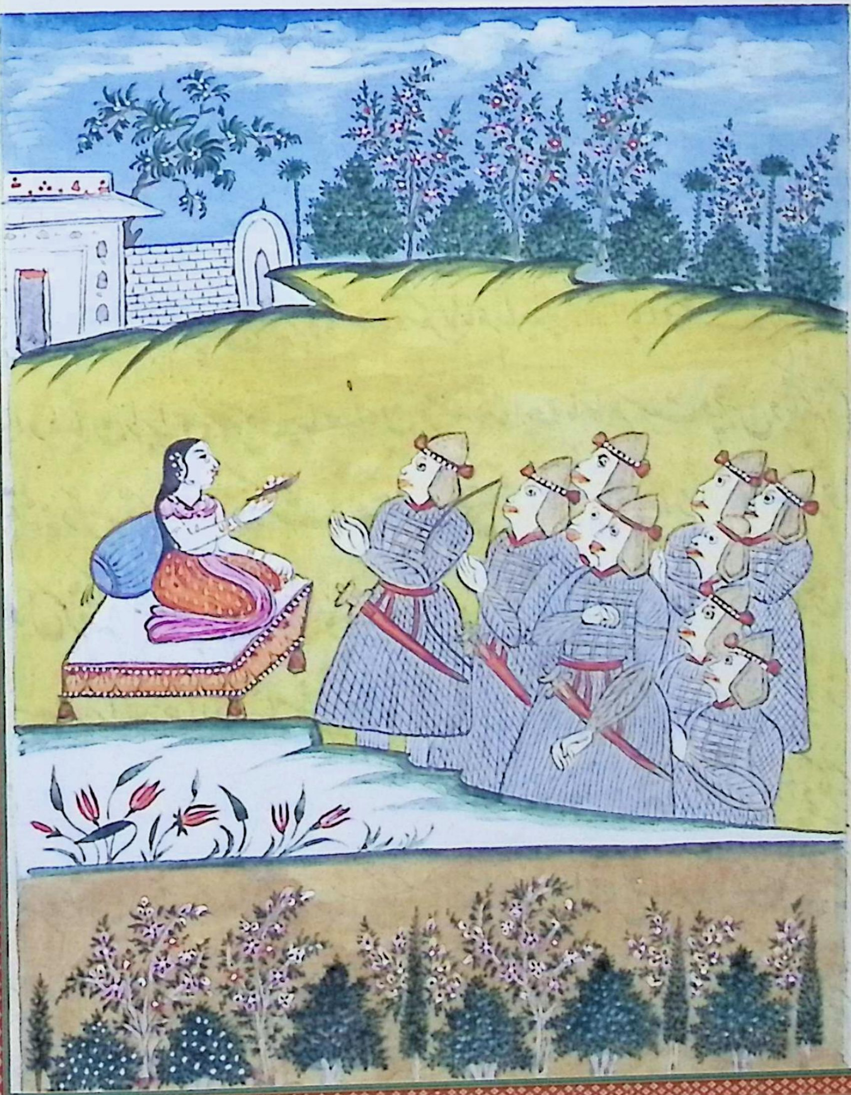

سرک برآمدن از سوراخ گفتار سنیپربها بدین آئین شنیده همه بوزنه ها دست بسته
گفتند اگر از روی خصائل میمونانه با تو گستاخی کرده باشیم عفو فرما و از تو چنین آرزو
داریم که بعمل آوردن آن سزاواری مایان را یکماه تمام که وعده بود درین سوراخ
گذشت و از جائیکه در آمده ایم از امیدانیم از شفقت تو امید بیرون رفتن داریم
که ملاذ و ملجای مائی و وعده که با سگریو کرده بودیم درینجا بآخر رسید لهذا
تو به بیرون آوردن ما سزاواری عورت گفت این سوراخ را اندر پیش ازین
از بحر که سلاح دست کرده است و هر که درینجا در آید باز زنده بیرون نرود
ولیکن من از زور تپ دنیم همه را بیرون می آرم اما چشم بپوشید که با چشم کشاده
برآمدن نتوانید بعد از ان آن همه بوزنه ها از انگشتهای دست خود
چشم بند کردند آنعورت همه را بیرون رسانیده گفت اینست بندها چل کوه
و این هست پرسرون و این هست نزدیک سمندر شما همه را خبر باد
من بمکان خود میروم این بگفت و سنیپربها دران سوراخ اندر رفت و بوزنه
دست ها بر روی نهاده در آنجا استاده ماندند درینجا صورت
همان سوراخ که درون آن رفته بودند و از انجا طایران آبی برمی آمدند
بر دروازه آن سوراخ انگد و هنومان دغیره یازده نفر مذکور بصورت مسطور

सर्ग-११४

छिद्र से बाहर आना

स्वयंप्रभा की ऐसी बातें सुनकर समस्त वानरों ने हाथ जोड़कर कहा "यदि हमने आप जैसे महान चरित्र वाले के साथ कोई अपमानजनक बात की हो तो अपने सद्‌भाव से आप हमें क्षमा करें और आपसे इतनी विनती है, जिसको करने में आप सक्षम हैं, कि हमको एक महीना पूरा जो निर्धारित था इस छिद्र में बीत गया और जिस स्थान से हम प्रविष्ठ हुए हैं उसको नहीं जानते आपकी दया से हम बाहर जाने की आशा रखते हैं। क्योंकि आप ही हमारी शरण स्थली और बहुत कुछ हैं और सुग्रीव से हमने जो प्रण किया था वह यहां समाप्त हो गया। अतः आप हमें बाहर निकाल दीजिये। स्त्री ने कहा इस छिद्र को इससे पहले वज्र से बन्द कर दिया है और जो यहां आता है वह पुनः बाहर जीवित नहीं जाता। लेकिन मैं अपनी तपस्या के बल से सबको बाहर लाती हूं अतः तुम लोग आंखे बंद कर लो क्योंकि खुली हुई आंखों के साथ बाहर नहीं निकल सकते।" उसके बाद उन समस्त वानरों ने अपने हाथ की उंगलियों से अपनी आंखें बंद कर लीं। उस स्त्री ने उन सबको बाहर पहुंचाकर कहा "यह है विंध्याचल पर्वत। और यही प्रस्रवणगिरि और यह समुन्द्र के निकट है तुम सबसे विदा होकर मैं अपने स्थान पर जा रही हूँ। स्वयंप्रभा ने कहा और इसी छिद्र में अन्दर चली गयी तथा वानर मुख पर हाथ रखे वहीं खड़े रह गयें।

उसी छिद्र का चित्र जिसके भीतर वह लोग गये थे और जहां से जल पक्षी बाहर निकल रहे थे। इस छिद्र के द्वार पर अंगद और हनुमान, उनके अतिरिक्त ग्यारह वानर उपरोक्त दशा में।

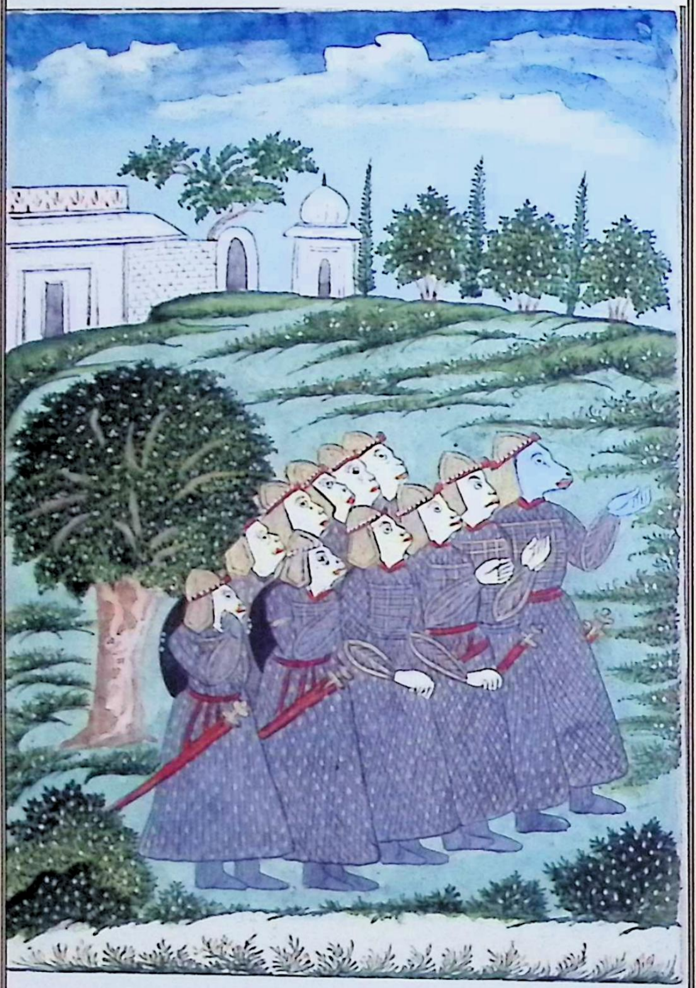

تصویر باید کرد بصورتی که از دستها چشم خود ها پوشیده اند

مرک گفته اند

और इस दशा में हैं कि हाथों से अपनी आंखें बंद कर रखी हैं।

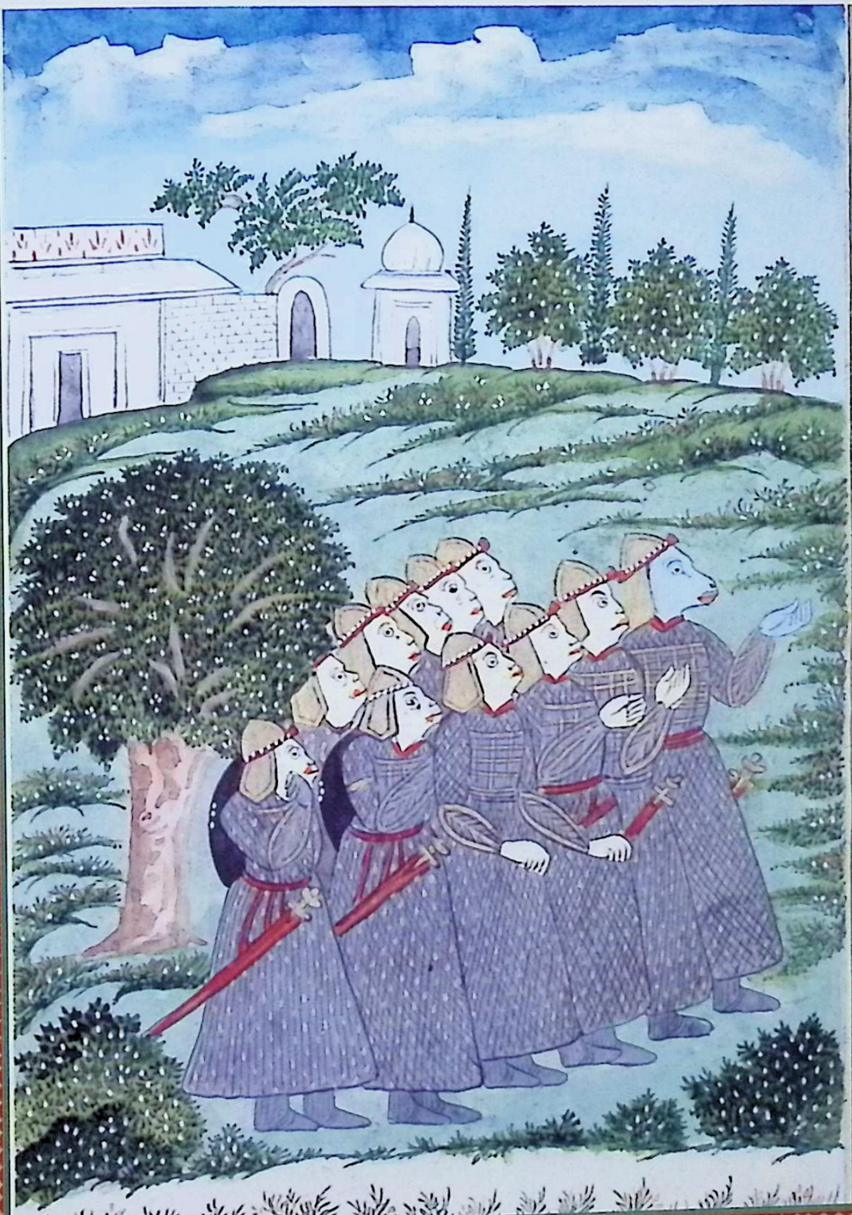

سخن گفتار انکد بوزنه‌ها بعد مشورت چون خشم گشاد و بسمت سمدر نظر کردند که
کنار او دیده نمیشود و انواع جانور آبی در وی هستند مشورت که ما با می دانو دیدیم
و یکماه که به سگریو وعده بود گذشت ناکاه انکد جوراج که دراز و پر کوشت کتف
و باز و مانند شیر و گاو دارد گفت مطابق امر شرط سگریو یکماه کامل رفت و او
سخت خو که برائی کار رام جان خود هم میدهد این تقصیر ما معاف نخواهد کرد از رفتن
سیتا تصدیع بر ما شد و مایان که عورت و دوستان و زر و خانه‌ها ترک
داده ایم از برگشته رفتن ما همه را خواهد کشت و از کشتن او ما را همین جا مردن
بهتر است و او مرا او از خود جوراج نکرده است اگر رام نمیگفت که انکد را پرورش
کن او هرگز نمیکرد و او عداوت اول بخاطر آورده باین بهانه از روی سیاست
خواهد کشت در کناره ساگر خواهیم گذراند گفت انکد را شنیده همه بوزنه‌ها گفتند
که فی الواقع سگریو سیاست پیشه است بعد گذشتن شرط کار رام ما همه را خواهد کشت
و راجه‌ها تقصیر پردهانان یعنی وزرا معاف نمیکنند و ما همه پردهانان سگریو ایم باز انکد
گفت شما همه غم مکنید در همین سوراخ که از وی برون آمده ایم باز اندرون
رویم اگر اینجا خطر شما آید همچنین کنید که اینمکان کلانست و بسیار خورشها دارد
اینجا اندر و غیره دیو تا هم مایان را نتوانند چه جائی رام و لچهمن و سگریو و دیگر بوزنه‌هاست

सर्ग-११५

अंगद की वार्ता

वानरों ने थोड़ी देर बाद जब आंखें खोलकर समुन्द्र की ओर देखा कि उसका किनारा दिखाई नहीं दे रहा है और भांति-भांति के जलचर उसमें हैं तो परामर्श किया कि हमने भी दानव के साथ देखा। और अब एक महीना, जिसका सुग्रीव से वचन था, बीत गया। उत्तराधिकारी अंगद जिसका कंधा चौड़ा और मांस से भरा है तथा उसकी भुजा शेर और बैल के समान है। वह इतना कठोर है कि राम के कार्य के लिये अपने प्राण भी दे देगा। वह हमारा यह अपराध क्षमा नहीं करेगा। सीता के जाने से कष्ट हमें हुआ और हम सबने स्त्री, मित्रों, धन-सम्पत्ति तथा घर छोड़ रखे हैं। वह हमारे वापस जाने से सबकी हत्या कर देगा, और उसके मारने से हमारा यहीं मर जाना उचित है, उसने मुझे स्वयं से उत्तराधिकारी नहीं बनाया। यदि राम यह न कहते कि अंगद का पालन करो तो वह कदापि नहीं करता। हम समुद्र के किनारे जीवन बिता देंगे। अंगद की बात सुनकर समस्त वानरों ने कहा कि वास्तव में सुग्रीव राजनीतिज्ञ हैं। वह राम के कार्य की अवधि बीतने के बाद हम सबको मार डालेगा और राजा अपने मंत्रियों की त्रुटि को क्षमा नहीं करते, और हम सुग्रीव के मंत्री हैं। फिर अंगद ने कहा ''तुम सब दुखी मत हो उसी छिद्र में जिसमें हम बाहर निकले हैं फिर अंदर चलते हैं। यदि तुम्हारे हृदय में आये तो यह करो। यह बड़ा स्थान है और खाने की बहुत सी वस्तुए हैं। यहां इन्द्र आदि देवता भी हमें नहीं पा सकते तो राम, लक्ष्मण और सुग्रीव तथा दूसरे वानर

گفته انگد را شنیده همه بوزنه ها گفتند بطوریکه خراب نشویم تدبیر بکنید

درینجا صورت صحرا و کوه و دره اشجار و وحوش و طیور و سمدر و انگد قوی بازو
چون شیر و کتف مانند گاو و هنومان که این هر دو مقابل نشسته اند و دیگر بوزنه ها
گرد و پیش دست بسته نشسته اند

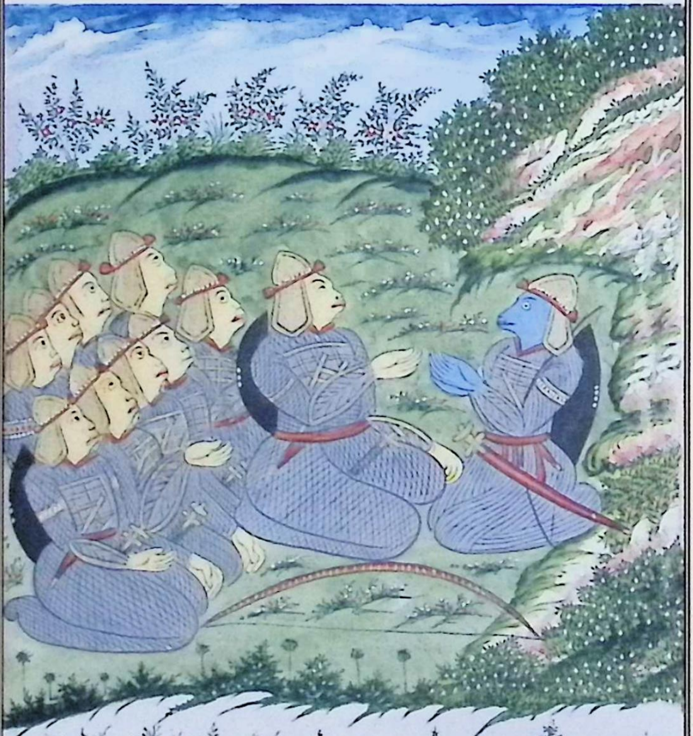

مرا کشتار بنومان

अंगद की क्या बात है। यह बात सुनकर सारे वानरों से कहा; ऐसी विधि करो कि हम मारे न जायें।

वन, पर्वत, वृक्ष, जंगली पशु पक्षी और समुन्द्र का चित्र और अंगद मजबूत शेर जैसी भुजा और कंधा गाय जैसा है और हनुमान, यह दोनों आमने सामने बैठे हैं। दूसरे वानर आसपास हाथ जोड़े बैठे हुए हैं।

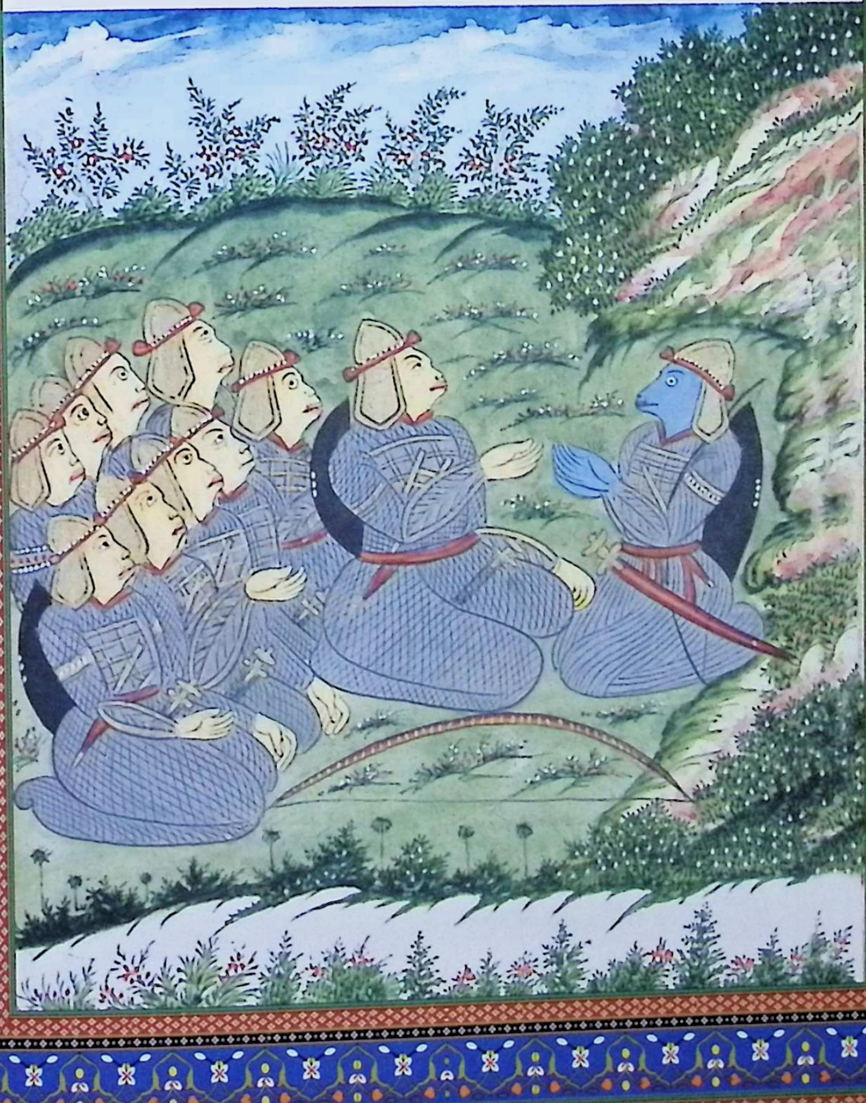

سرگفتار هنومان گفته انگد را هنومان ناسزاوار دانسته گفت تو که بعقل هشت
قسم آراسته و انواع هنرداری و بچهارده علم درستی و کیرت کمال داری و داد دولت
مانند تو در ترقی هستی و در دانش چون برسپت و در خدمت بجا آوردن گرو یعنی پیر
چون اندر هستی و در کار خداوند خود چستی و دانندهٔ شناساتر هستی اینقدر گفته
چون بوزنه ها متفرق شدند بعده در خلوت به انگد گفت تو بقوت مانند پدر هستی
و نگاهداشتن بوزنه ها سزاواری اینکه باز برفتن سوراخ میگوئی بوزنه ها هرگاه
از پسران و زنان خود جدا خواهند شد در حکم تو نخواهند ماند و صریح میگویم چنانچه
من و تار و نیل از عهدهٔ پدرت نمیتوانستیم برآمد همچنین از سکریو انحراف
نتوانیم ورزید لهذا این عقل که بمی فطنت نفس خود کرده هیچ است و اگر میخواهی
که در سوراخی که مَی نام دانو کرده است اقامت گزینی تیرهای لچهمن این را هم میتوانند
شکافت و برآورند و اندر را ز بجر یک سوراخ کرده و لچهمن را مثل این بسیار است تیرها
هستند و اگر همین جا بودن اختیار میکنی بسیاران بوزنه پسران و زنان را یاد کرده
بمفارقت تو بگذارند و بی برادران و خیرخواهان از کاهم خوفناک خواهی شد و سکریو
درجه بدرجه تاراج خواهد داد و بر ما نمانست و بر برت محکم و پاک رو و راست نیت
پر ننگ است و خواهان والدهٔ تست و زندگی خود بسبب او میداند و او را پسری هم

सर्ग-११६

हनुमान की वार्ता

अंगद की बात को हनुमान ने अनुचित जानकर कहा "तुम जो आठ प्रकार की बुद्धि रखते हो और भांति-भांति के चमत्कार रखते हो, चौदह कलाओं में निपुण हो, कीर्ति रखते हो, धन से उन्नति पर हो, बुद्धि में बृहस्पति के समान हो, गुरू की सेवा करने में इन्द्र के समान हो, अपने भगवान के कार्य में तत्पर हो और शास्त्र जानने वाले हो। उसने इतना कहा फिर जब वानर अलग हो गये तो एकांत में अंगद से कहा; तू शक्ति में पिता के समान है और वानरों की रक्षा करने योग्य है। वानर जिस समय अपने पुत्रों और स्त्रियों से अलग हो जायेंगे तो तुम्हारे नियंत्रण में नहीं रहेंगे। मैं स्पष्ट रूप से कहता हूँ कि जिस प्रकार मैं तारा और नील तुम्हारे पिता के आदेशों के विपरीत नहीं जा सकते उसी प्रकार सुग्रीव से भी मुकर नहीं सकते। अतः यह योजना जो तुमने अपनी इद्रियों की रक्षा के लिये की है, तुच्छ है। सत्य मानो तो लक्ष्मण के बाण उसमें भी छिद्र कर सकते हैं और बाहर ला सकते हैं। इन्द्र ने वज्र से एक छिद्र किया है और लक्ष्मण के पास ऐसे बहुत से अस्त्र हैं। यदि तुम यहीं रहना चाहोगे तो बहुत से वानर बच्चों और पत्नियों को याद करके तुम्हारा साथ छोड़ देंगे तथा बिना मित्रों और शुभचिन्तकों के तुम घास से भी डरोगे। सुग्रीव तुमको क्रमबद्ध राज्य देगा, वह न्यायी और धर्मात्मा है तथा अपने वचन पर दृढ़ है। पवित्र और सही प्रयास करने वाला है तथा तुम्हारी माता को प्रेम करने वाला है और अपना जीवन इसी के कारण जानता है एवं उसके और कोई पुत्र भी नहीं है

بنابران آنجا باید رفت ورآم ولچهمن هرگز نخواهند گشت بعد رفتن وبیکسینی
پیش ایستادن سرگ طیش انگد گفته هنومان راشنیده بازانگد گفت
تحمل ودهرم وغصه نکردن وقوت وراستی درسگریو هیچ نیست همه دروغست کجا دهرم
میداند اگر دهرم دانستی کلان برادر را که بالی باشد درسوراخ رفته گذاشته وآنرا از سنگ
انباشته بی وسواس بخانه آمده وعورت برادر کلان را با وجود زندگی او که بجای والده
سگریو بود آنرا اهلیه خود کرده ودوست رفیق رامچندر را که دوست اوراگرفته واحسان
کرده فراموش نموده او چگونه نیکوکردار باشد وحکم رای تفحص سیتا از خوف لچهمن کرد
نه که از خوف دهرم آن عذاب کار وکرت کهن وناشاستردان وبددل را دانا
کجا دل نهاده شود ومرا سگریو جوراج نکرده رامچندر کرده است ورآم گفته که راج انگدرا
بده خواه هنرمند ست خواه بی هنر تو خلاف مصلحت فنون او چرا گفتی او مایان را
خواهد بست لهذا درسوراخ رفتن بهترست که در کشکندها دربند سگریو ماندن او از سیاست
وبستن مرا خراب خواهد کرد او دغاباز وغصه دار وکرت کهن ست بسبب راج خواهد بست
وکشت بنابران نیک ست درسوراخ رفتن وهمه بوزنه ها بخانه های خود بروند ومن خود
بغیر کار کرده نخواهم رفت همین جا میباشم مردن من خوبست وشما اقربا را از من نمسکار
خواهید گفت وسگریو را دعا وروما والده مرا نیز وتارا والده مرا تسلی نمایید که مادرانه

بسیار

इस कारण वहां जाना चाहिए और राम लक्ष्मण जाने और विवशता से सामने खड़े होने के बाद कदापि हत्या नहीं करेंगे।

सर्ग–११७

अंगद का उत्साह

हनुमान की बात सुनकर अंगद ने पुनः कहा ''सहनशक्ति, न्याय, क्रोध न करना और शक्ति व सच्चाई सुग्रीव में कुछ नहीं है यह सब झूठ है। और वह धर्म कहां जानता है ?यदि वह धर्म जानता तो जिसने अपने बड़े भाई बालि को छिद्र में गया हुआ छोड़कर और उसको पत्थर से बंद करके बिना खटके घर आकर और अपने बड़े भाई की पत्नी को जो सुग्रीव की मां समान थी भाई के जीवन काल में ही अपनी पत्नी कैसे बना लेता ?और अपने मित्र रामचन्द्र को, जिसने उसका हाथ पकड़ा और उपकार किया, कैसे भुला देता। वह अच्छे चरित्र वाला कैसे हो सकता है ?उसने सीता की खोज करने का आदेश लक्ष्मण के भय से दिया है न कि धर्म के भय से। वह अत्याचारी, वचन तोड़ने वाला और शास्त्र न जानने वाला है। मुझे सुग्रीव ने उत्तराधिकारी नहीं बनाया है अपितु राम ने बनाया है, और राम ने कहा है कि राज्य अंगद को दो चाहे वह गुणी हो या अवगुणी। अतः छिद्र में जाना उचित है कि कन्दरा में सुग्रीव की कैद में ?वह अपनी राजनीति और कैद से मुझे नष्ट कर देगा। वह धोखेबाज़, क्रोधी और वचन तोड़ने वाला है वह राज्य के लिये हमें कैद करके मार डालेगा। अतः छिद्र में जाना ही अच्छा है। सारे वानर अपने-अपने घर चले गये। मैं बिना काम किये नहीं जाऊँगा। यहीं रहूंगा मेरा मर जाना अच्छा है। तुम लोग सम्बन्धियों से मेरा सलाम कहना और सुग्रीव को दुआ तथा मेरी माता रूमा को भी। मेरी माता तारा को सांत्वना देना

بسیار مرا عزیز میدارد و از غم بالی و من هر آینه جان خواهد داد انگد اینقدر گفته و بزرگا
نمسکار کرده باراده بیرون رفتن بسمت غار گریه کنان رفت بوزنه ها اینحال را بچشم خود دیده
اشک ریختند و نکوهش سگریو کردند و بالی را یاد نمودند و همه اقربا انگد وغیره همراه او شدند
و عزم مصمم انگد را دانسته همگنان غسل کردند و در بیه ها سر را بسمت او تر کرده از غربت
و دلگرفتگی گریه آغاز نمودند و مقرر کردند که با انگد خواهیم مرد از گریه و شور در رفتن آنها

غلغله عظیم شد چنانچه میغ بغرش در آید درینجا صورت انگد بهمان طور و گریان بسوراخ مرد
و هنومان متفکر ایستاده و بعضی بوزنه غسل میکنند و بعضی گریه کرده بطرف او تر ایستاده
و بعضی سوراخ را نمسکار میکنند

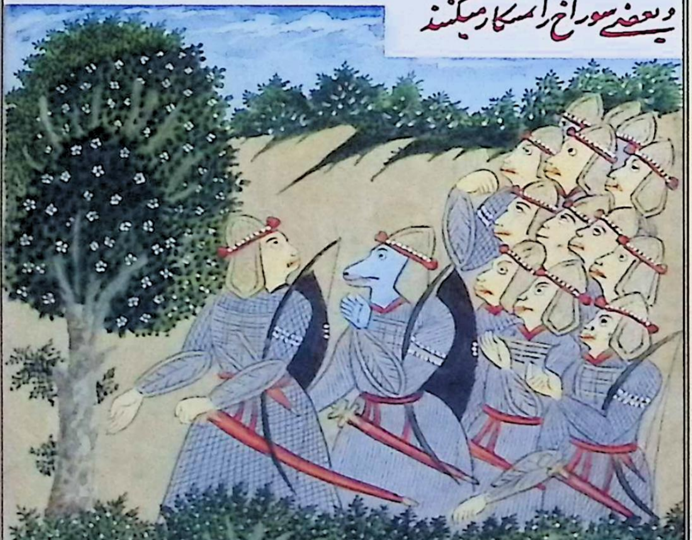

कि वह मातृत्व से मुझे प्रिय रखती है। बालि और मेरे दुख से वास्तव में वह प्राण दे देगी। अंगद इतना कहकर और वृद्धों को सलाम करके अंदर जाने के विचार से गुफा की ओर रोता हुआ गया। वानरों ने यह दशा अपनी आंखों से देखकर आंसू बहाये और सुग्रीव की निन्दा की तथा बालि को याद किया और अंगद के सारे संबंधी उसके साथ हो गये। अंगद का दृढ़ निश्चय जानकर सबने स्नान किया और नदी में सिर उत्तर दिशा की ओर करके दयनीय और निर्धनता व विवशता के कारण शोक करना आरंभ किया और निश्चय किया कि विलाप व शोर के कारण उनके जाने में ऐसा कोलाहल उत्पन्न हुआ जैसा कि बादल बरसते हैं।

अंगद का चित्र पहले जैसा वह रोता हुआ छिद्र में जा रहा है और हनुमान चिन्तित खड़े हैं कुछ वानर स्नान कर रहे हैं और कुछ करके उत्तर की ओर खड़े हैं और कुछ छिद्र को नमस्कार कर रहे हैं।

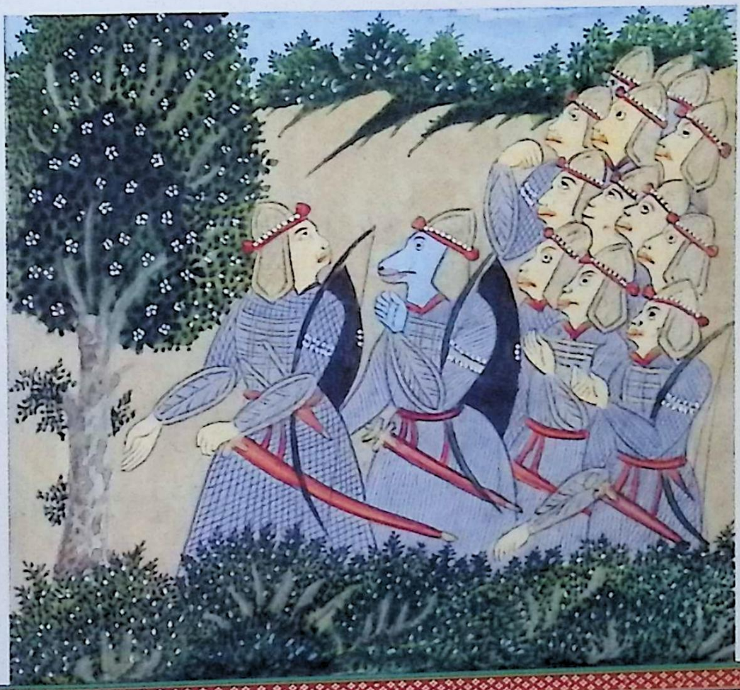

کر دیدن سنپاتی ناگاه سنپاتی نام راجه کدها که برادر جتایو دراز
عمر بود از کوها یعنی غار بیرون خرامیده بالائی کوه بندها چون نشست بوزنه ها را
دیده چنین گفت پیدا کننده بزرگ جهانست ستایش او میکنم که اینقدر طعام برای
خوردن مهیا آورد بار دیگر از خوشوقتی گفت که گوشت یک یک بوزنه خواهم خورد
گفت او را شنیده انگد بهنومان گفت ببینید که چون از تلاش سیتا رو برتافتیم
صریح جم برای کشتن ما رسیده نه کار رام نمودیم و نه گفته راجه خود نمودیم اینک بر بوزنها
بلای ناگهانی رسید و کار را خود جتایو کده کرد که راون از را بجنگ کشت چنانچه
طیوران کار رام کردند ما چنان هم نکردیم برای رام ترک جان کرده در صحاری و جبال
گردیدیم و سیتا را ندیدیم آفرین بر جتایو کده که کت نیک یافت و راون بخبر دو سیتا را
برای هلاک پدر من و بوزنه ها برد که این همه بوزنه ها را خواهد خورد بالی و جتایو و راجه دسرته
هر سه مردند آفرین بر مردن جتایو که برای کار رام بدست راون جان داد و فقط کار ز
کرد که نسل خود و ما را گشت از سبب کیکی دشرته پسر را بدندک فرستاد و خود بسر کرفت
و عورت پسر او را راون برد تحسین بر جتایو که در آنجا بکار آمد همون رام با سگریو دوستی
کرده از یک تیر بالی را کشته به سگریو راج داد و او برای جستن سیتا ما یان را باطراف
فرستاد ما اطراف جستیم و با او نه پیوستیم که این بلا ناگهانی رسید ما همه که عورات

सर्ग-११८

सम्पाती को देखना

अचानक सम्पाती नामी गिद्धों का राजा जो जटायु का भाई था और लम्बी आयु वाला था, पर्वतों अर्थात् गुफाओं से बाहर टहलता हुआ विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर बैठ गया। उसने वानरों को देखकर कहा वह उत्पन्न करने वाला संसार का वयोवृद्ध है मैं उसकी प्रशंसा करता हूं कि उसने इतना खाना खाने के लिए एकत्र किया। फिर उसने प्रसन्न होकर कहा कि मैं एक-एक वानर का मांस खाऊंगा। उसकी बात सुनकर अंगद ने हनुमान से कहा ''देखो क्योंकि जैसे ही हमने सीता की खोज का कार्य छोड़ा, यम हमें मारने के लिये पहुंच गया। न हमने राम का कार्य किया और न अपने राजा का कहा हुआ किया देखो वानरों पर दैवीय आपदा आ पहुंची और कार्य तो स्वयं जटायु गिद्ध ने किया कि रावण ने युद्ध में उसे मार डाला। जैसा पक्षियों ने राम का कार्य किया वैसा तो हमने भी नहीं किया। राम के लिये हम प्राण हथेली पर लिये हुए वनों और पर्वतों में फिरे और सीता को नहीं देख सके। भाग्यशाली है जटायु गिद्ध कि उसने अच्छा अन्त पाया और कम बुद्धि रावण सीता को मेरे पिता और वानरों की हत्या करने के लिये ले गया कि यह सारे वानरों को खा जायेगा। बालि जटायु और राजा दशरथ तीनों मर गये। धन्य है जटायु के मरने पर कि राम के काम के लिये उसने राम के हाथ पर प्राण त्यागे। उसने बस यह बुरा किया कि अपने वंश को और हमको मार डाला। कैकेयी के कारण दशरथ ने पुत्र को दण्डक भेजा और स्वयं स्वर्ग चले गये तथा उनके पुत्र की पत्नी को रावण ले गया। धन्य हो जटायु कि वहां काम आया । राम ने सुग्रीव से मित्रता करके एक ही बाण से बालि को मारकर सुग्रीव को राज्य दे दिया और उसने सीता की खोज करने के लिये हम सबको चारों ओर भेजा। हमने सब स्थानों पर ढूंढ़ा लेकिन उनका निशान नहीं पाया कि यह विपदा आ गयी। हम सब जो अपनी पत्नी बच्चों और संबंधियों को छोड़े हुए हैं

و پسران و قربان گذاشته ایم و بخور و خوابیم و جانها میدهیم دریغا که این نسل را کیکی گشت نسل بوزنه آدمیان و طیوران گفته انگد را شنیده سنپاتی بسبب الفت برادری سر برداشت و گفت جتایو برادر عزیز از جان من بود او را که گشت این واقعه را شنیدن آرزو دارم آن برادر من در جن استهان میماند چگونه کشته شد با رام چه داشت و با راون چسان معرکه شد او اگرچه خرد بود اما بهنر بزرگ بود نام او بعد مدتی شنیدم و او دوست دشرته بود رام پسر او با اهلیه و لچهمن چگونه بصحرا و سیتا را کسی چگونه برد مرا که پر و بال از تاب آفتاب سوخته است و از جا نمیتوانم جنبید آرزو دارم که شما ازین کوه مرا فرود آرید درینجا صورت هنومان و غیره یازده بوزنه بدستور سابق متفکر استاده و بالای کوه سنپاتی نام کده قوی هیکل برادر جتایو بی بال و پر نشسته

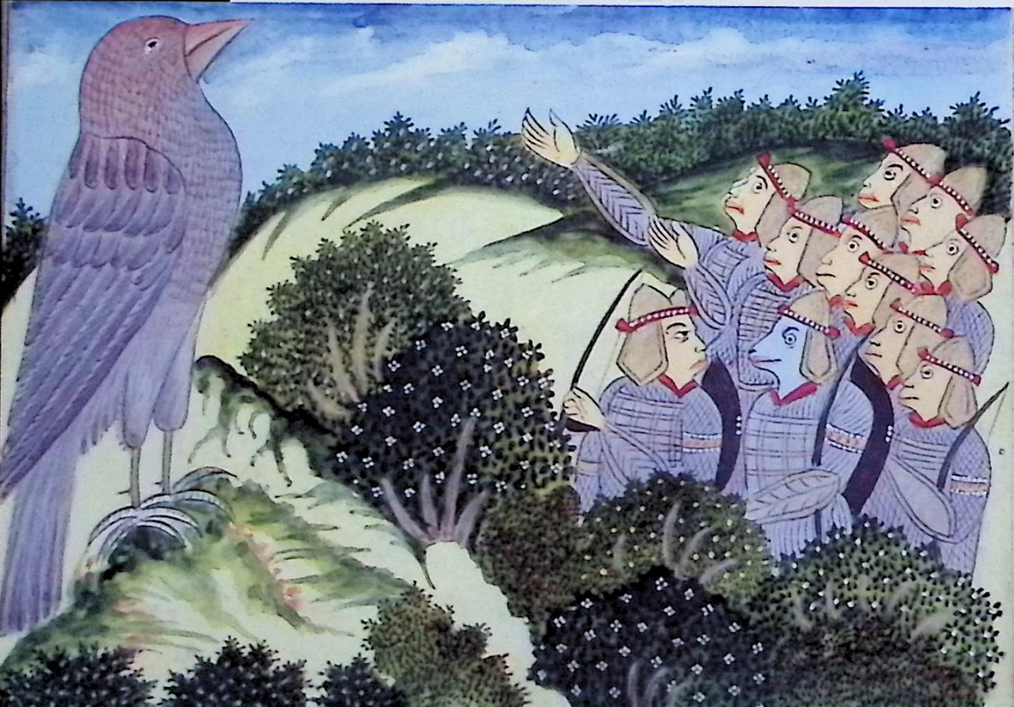

और बिना भोजन किये और सोये हुए हैं और प्राण दे रहे हैं। दुख है कि कैकेयी ने तीन वंशों को मार डाला। वानरों का वंश, मनुष्यों और पक्षियों के वंश को। अंगद की बात सुनकर सम्पाति ने भाई के प्रेम के कारण सिर उठाया और कहा ''जटायु मेरा प्राण प्रिय भाई था, उसको किसने मारा मैं यह कथा सुनना चाहता हूं। मेरा वह भाई जिस स्थान पर रहता था, किस प्रकार मारा गया ?राम से उसका क्या सम्बन्ध था और रावण के साथ कैसा युद्ध हुआ ?वह यद्यपि छोटा था लेकिन गुण व योग्यता में बड़ा था। मैंने उसका नाम एक समय बाद सुना। वह दशरथ का मित्र था, उनके पुत्र राम अपनी पत्नी और लक्ष्मण के साथ कैसे वन में गये तथा सीता को रावण कैसे उठा ले गया। मेरे बाल व पर सूर्य की गर्मी से जल गये हैं और मैं अपने स्थान से हिल भी नहीं सकता हूँ मैं चाहता हूं कि तुम मुझे इस पर्वत से नीचे उतारो।''

हनुमान और ग्यारह वानरों का चित्र यथावत जो चिन्तित खड़े हैं और पर्वत के ऊपर सम्पाति नामी जटायु का भाई भीमकाय गिद्ध बिना बाल व पर के बैठा हुआ है।

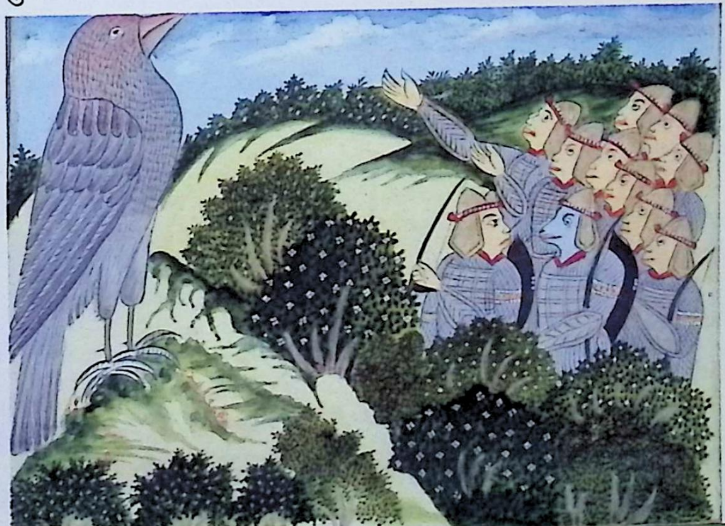

سرگ گفت را انگد بوزنه ها گفته او را شنیده تهیه او را فهمیده گفتند اگر این تن ما همه را
میخورد مقصود ما حاصل است زود بطریق سدهان میرویم بدین اراده او را از کوه
فرود آوردند بعد ازان انگد گفت از نسب اچهواکو دشرته نام راجه تمام جهان بود رامچندر
نام پسر کلان او که بجمیع فنون آراسته است با لچهمن نام برادر و سیتا اهلیه خود در دندک
بن بموجب امر پدر و نگاهبانی دهرم بودن اختیار کرد راون راچهس سیتا را براه آسمان
گرفته میبرد جتایو نام کده که اخلاصمند پدر رام بود اینحالت را دیده راون را بی رتهه ساخته
سیتا را رها نمود چونکه پیر و مانده شده بود راون او را بکشت و سیتا را برد و رام سنسکار
او کرد بیشک بسرگ رفته باشد و بیرج نام راجه بوزنه ها بود که دهرماتمان و جد منست
او را دو پسر شدند بالی و سگریو پدر من بالی راجه بوزنه ها بود مشهور جهان و رام را با سگریو عموی
اتفاق سوده افتاد و پدر مرا کشته او را راج داده و او مایان را برای تجسس سیتا فرستاده
چون از نادانستگی در سوراخ زیر زمین داخل شده بودیم آنجا مکان می دانو که از مایا ساخته
بدیدیم درین کار یکماه که با سگریو وعده مراجعت بود آخر شد حالا از ترس سگریو باز عزم
رفتن سوراخ داریم لهذا تو از کالبدهای ما کار خود بآسانی کن و بخور که بعد برگشته رفتن
از غضب سگریو و رام و لچهمن زندگی ما دشوار است این راز است معلوم کن **سرگ گفت سنپاتی**
چون بوزنه ها ترک جان نموده کلمات بیچارگی گفتند سنپاتی گریه کرده گفت آن جتایو

सर्ग-११९

अंगद की वार्ता

वानरों ने उसकी बात सुनकर उसके विचार जान लिये और कहा "यदि यह हम सबके शरीर को खा जाता है तो हमारा उद्देश्य प्राप्त होगा। हम अति शीघ्र सिद्धों के मार्ग पर चले जायेंगे। इस विचार से वे उसको पर्वत से नीचे लाये और उसके बाद अंगद ने कहा इक्ष्वाकु के परिवार से दशरथ नामी सारे संसार का एक राजा था रामचन्द्र उनके बड़े पुत्र का नाम है जो समस्त कलाओं से सुसज्जित हैं। उन्होंने भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ दण्डक वन में पिता के आज्ञानुसार धर्म की रक्षा के लिये रहना स्वीकार किया। रावण राक्षस सीता को आकाश के मार्ग पकड़कर ले जा रहा था। जटायु नामी गिद्ध ने, जो राम के पिता का सहयोगी था, इस स्थिति को देखकर रावण को बिना रथ के करके सीता को स्वतंत्र कर दिया लेकिन चूंकि वह बूढ़ा था और थक चुका था। इसलिये रावण ने उसे मार डाला तथा सीता को ले गया और राम ने जटायु का अंतिम संस्कार कर दिया। निःसंदेह वह स्वर्ग में गया होगा। बीरज नाम का वानरों का एक राजा था जो धर्मात्मा और मेरा दादा है। उसके दो पुत्र हुए बालि और सुग्रीव। मेरे पिता बालि वानरों के राजा थे, और संसार में प्रसिद्ध थे। राम को मेरे चाचा सुग्रीव से प्रेम और मित्रता हो गयी और उन्होंने मेरे पिता को मारकर राज्य उन्हें दे दिया। उन्होंने हम सबको सीता की खोज करने के लिये यहाँ भेजा है। पृथ्वी के अन्दर छिद्र में हम सब प्रविष्ट हुए थे। वहां हमने भी दानव का वह स्थान देखा जो उसने माया से बनाया है। इस कार्य में एक महीना, जिसमें सुग्रीव से हम ने वापस लौटने का प्रण लिया था, पूरा हो गया। इसलिए हम सब फिर सुग्रीव के भय से छिद्र में जाने का विचार रखते हैं। अतः तुम हमारे शरीर से अपना काम सरल कर लो और हमें खा लो। क्योंकि वापस जाने के बाद सुग्रीव और राम लक्ष्मण के क्रोध से हमारा जीवन कठिन है।

सर्ग-१२०

सम्पाति की वार्ता

जब वानरों ने प्राण हथेली पर रखकर विवशता की बातें कीं तो सम्पाति ने रोते हुए कहा

برادر خورد منست که راون او را کشته و بسبب پیری و بیطاقتی مرا طاقت انتقام نیست
در دل غصه میخورم و پیش ازین هنگام کشتن بریتر راچهس که اندر بکشت من و آن برادر من
جوان و قوتمند بودیم بسمت فلک پریدیم و بطرف آفتاب که چون گل جپا سرخ طلوع
کرده بود دویدیم چون نزدیک رسیدیم جتایو سست و ماند و بیحال گشت و شعاع خورشید
در و اثر کرد من از مهر برادری از پرهای خود بر و سایه کردم و محافظت نمودم چون پر من
سوخته شده برین کوه بینده‌ها چل در افتادم انگد گفت تو بسیار دانا هستی اگر مکان راون
میدانی بیان کن نزدیک باشد یا دور بگو سمپاتی گفت پر و بال سوخته و مبتلا و
کم زور شده ام و از گفتار مرا در کار رام اعانت نمودن احسن است سیتا نوجوان
خوب صورت با پیرایه آراسته بوده من دیده ام که راون براه هوا میبرد و او
رام رام و لچهمن ندا میکرد و از تن خود پیرایه‌ها را فرو می‌هشت و او با پارچه زرد با راون
چنان مینمود که برق در میغ پنهان شود من از رام رام گفتن آن را سیتا میشناسم
و بشنو مکان راون هم میگویم که او پسر بشروا رکهه است و برادر حقیقی کبیر است و در شهر لنکا
میباشد و از کنار سمند یکصد جوجن یعنی چهارصد کروه مسافت است و آن شهر را بشوکرمان
بنا کرده است آنجا سیتا هست زرد پارچه پوشیده در قید عورات راچهسان و گرد لنکا سمندر است
و بر کوه ترکوت قلعه لنکا ست قوت بکنید و بسمت دچهن سمندر را عبور کنید و از روی دانش

‘‘वह जटायु मेरा छोटा भाई है जिसको रावण ने मारा है और वृद्ध तथा शक्तिहीनता के कारण मुझमें बदला लेने की क्षमता नहीं है। मैं क्रोधित होता रहता हूँ। इससे पहले वृत्तासुर राक्षस को मारने के समय, जिसे इन्द्र ने मारा है, मैं और मेरा वह भाई युवा और शक्तिशली थे हम आकाश की ओर उड़ गये और सूर्य की ओर, जो चम्पा के फूल के समान निकला हुआ था, हम दौड़े और जब निकट पहुंचे तो जटायु धीमा और दयनीय हो गया तथा सूर्य की किरणों ने उस पर अपना प्रभाव डाला। मैंने भाई के प्रेम के कारण अपने परों से उस पर छाया की और रक्षा की। जब मेरे पर जल गये तब मैं विन्ध्याचल पर्वत पर गिर पड़ा। अंगद ने कहा आप बहुत बुद्धिमान हैं। यदि रावण का स्थान जानते हैं तो बताइये। निकट हो या दूर आप बताइये। सम्पाति ने कहा मेरे बाल व पर जल चुके हैं और मैं कष्टदायी और दुर्बल हो चुका हूं, मेरे लिये बातों से राम के कार्य में सहायता करना अधिक अच्छा है। सीता युवा सुन्दर और वस्त्रों से सुसज्जित थी। मैंने देखा है कि रावण हवाई मार्ग से उन्हें ले जा रहा था और वह राम-राम और लक्ष्मण पुकार रही थी तथा अपने शरीर से वस्त्र गिराती जा रही थी। वह पीले वस्त्र में रावण के साथ ऐसी लग रही थी जैसे कि बिजली बादलों में होती है। मैं राम-राम कहने से उनको सीता के रूप में पहचानता हूँ। और सुनो मैं रावण के स्थान को भी बताता हूं कि वह विश्रवा ऋषि का पुत्र है और कुबेर का वास्तविक भाई है। लंका शहर में रहता है। समुन्द्र तट से उसकी दूरी एक सौ जोजन अर्थात् चार सौ कोस है। यह शहर विश्वकर्मा ने बसाया है। वहीं पर सीता पीला वस्त्र पहने हुए और राक्षसों की स्त्रियों की कैद में हैं। लंका के चारों ओर समुन्द्र है। त्रिकूट पर्वत पर लंका का किला है। बल का प्रयोग करो और दक्षिण दिशा से समुन्द्र को पार करो। मैं बुद्धि के बल

معلوم میکنم که سیتا را دیده باز خواهید آمد و این اول راه پولند انست یعنی آنانکه غله میخورند
وراه دوم خورند کان بل ست آنانکه بر درخت می نشینند وراه سیوم کرونج و کلنک وغیره است
وچهارم راه شین ست که قسمی از جانوران باشد و پنجم راه کده ست که قسمی از زغن وغیره باشد
وششم راه هنسان و هفتم راه گرر ست چون من از گرر پیدا شده ام و مراد بشت هست یعنی بسیار
دور بیني و قوت هم دارم و از همین جا راون و سیتا را می بینم راون کار بد کرد که سیتا را برد
شما را از خوردن خود رها کردم و هم تمام سمدر را از همین جا تا صد جوجن نظر میکنم شما تدبیر عبور نمائید
و سیتا را دیده کار کرده بیائید و مرا خواهش نزدیک رفتن سمدر ست که بنام برادر خود آب دهم
بوزنه ها او را قریب بردند او آب داد و بوزنه ها از یافتن نشان سیتا خوشوقت میشدند در ینجا صورت انگد

وغیره بوزنه ده نفر که سنپاتی را برداشته کنار سمدر آورده و صورت او کلان بی بال و پر

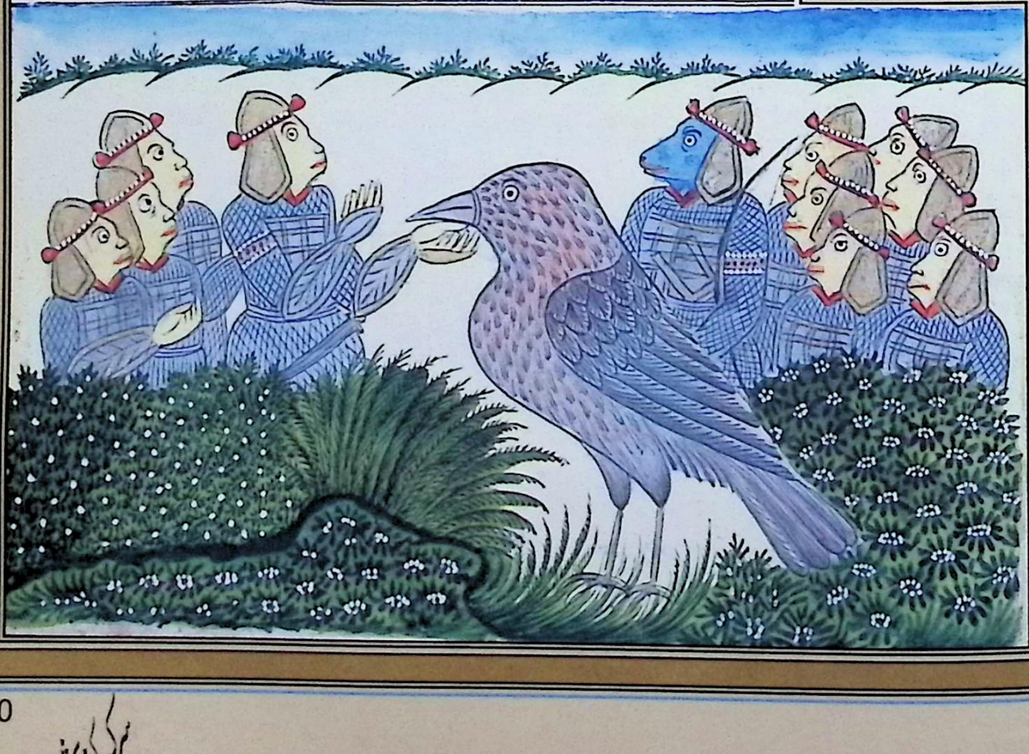

سر گفت و شنود

पर ज्ञान करता हूं कि तुम लोग सीता को देखकर वापस आओगे। आकाश का पहला मार्ग यह ओल पोलिन्दों (गौरैयों और कबूतर) का मार्ग है, वह लोग जो अन्न आदि खाते हैं। दूसरा मार्ग फल के खाने वालों का है, वह लोग जो वृक्ष पर बैठते हैं, तीसरा मार्ग चील और क्रौंच आदि का है, चौथा शीन (बाज) का मार्ग है जो पशुओं की एक जाति होती है, पांचवा गिद्धों का मार्ग है, जो कौए आदि की एक जाति है, और छठा हंसों का मार्ग है तथा सांतवा गरुड़ का मार्ग है। चूंकि मैं गरुड़ से उत्पन्न हुआ हूँ। और मुझे वन की अधिक जानकारी है, मुझमें बहुत दूरदर्शिता और शक्ति भी है इसलिये मैं उसी स्थान से रावण और सीता को देख रहा हूं। रावण ने बुरा कार्य किया कि सीता को ले गया। तुम सबको मैंने अपने द्वारा खाने से मुक्त किया और मैं समस्त समुद्र को इसी स्थान से सौ जोजन तक देख लेता हूं वानर उसको निकट ले गये और उसने जल दिया तथा समस्त वानर सीता का पता पाने से बहुत प्रसन्न हुए।

अंगद आदि दस वानरों का चित्र जो सम्पाति को उठाकर समुद्र के निकट लाए हैं। उसका चित्र बड़ी लम्बाई वाला, बिना बाल और पर के।

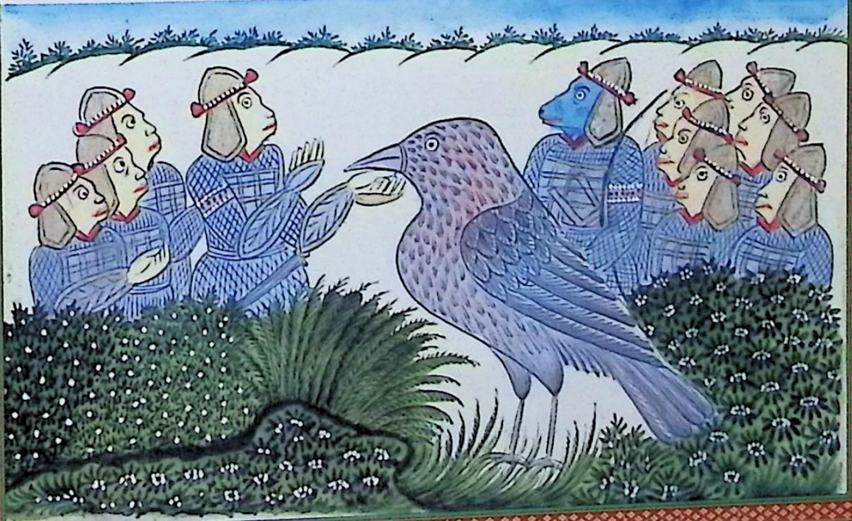

سرک گفت و شنود جانبوان از گفتگوی سنپاتی که مانند مرت بود جانبوان یکایک از جا
برخاسته گفت کجا سیتا که دید و کدام برد همه را مفصل بگو تو پناه مائی و ما براه جم ایستاده‌ایم
اینحرف ما را بجای دولت هست بار دیگر سنپاتی گفت بشنوید من درین غار که بمقدار چهار کروه
دراز هست از دیر در ینجا افتاده ام و بی پر مانده ام و مرا پسری عزیز هست سوپارشو نام دارد
وقتی نزد والده خود که بر جاچل هست رفته بود و هنگام طعام بگذشت و زمانی که آفتاب
بغروب رسیده بود پسرم بیامد من برو بسبب تشنگی و گرسنگی غصه کردم او منفعل شده بعد
گفت من برای تو بر فلک پریدم و بر در غار مهیندر کوه ایستادم و آن هزاران جاندار را
ناسمدر یک راه گذر هست و باراده گوشت برای خوراک تو من راه را بند کرده ایستاده
گزیدم آنجا شخصی دیدم برنگ ابر سیاه عورتی را گرفته میبرد و این کار نیکان نیست او مشغله بود
از من راه خواست و بازوی چپ مرا گرفته گفت برو این راه را کسی بند نمیکند و او شتاب
براه هوا رفت و من او را دیده ام که زنده است و مهرکیه میگفتند که آن عورت کسی هست
که برنده را نیک نخواهد شد و چهره در اچهس میگفتند که آن راون است و سیتا نام اهلیه
پسر دشرتهه هست و او موی پراگنده رام و لچمن گویان میرفت و پیرایه از اندامش می افتاد
ازین رو مرا درنگ شد اینقدر مرا سوپارشو گفته بود من گفتم حکیم که بی بال و پرم والا ازینها
برنده سیتا را قید کردمی و او را ملامت کردم که چرا محافظت سیتا نکردی که مرا محبت دشرتهه

सर्ग-१२१

जाम्बवान की वार्तालाप

सम्पाति की वार्ता से प्रभावित होकर जो अमृत के समान थी जाम्बवान ने अचानक अपने स्थान से उठकर कहा; कहाँ हैं सीता ?किसने देखा और कौन ले गया ?सब विस्तार से बताओ। तुम हमारी शरण में हो और हम इस समय मृत्यु के मार्ग पर खड़े हैं यह बात हमारे लिये धन के स्थान पर है। पुनः सम्पाति ने कहा; सुनो मैं इस गुफा में जो लगभग चार कोस लम्बा है देर से इसी स्थान पर पड़ा हुआ हूँ और बिना पर के हो गया हूँ, मेरा एक प्रिय पुत्र है उसका नाम सुपार्श्व है। एक बार वह अपनी माता के पास जो हिमांचल पर है गया हुआ था और खाने का समय बीत गया, जब सूर्य अस्त हो गया तो मेरा पुत्र आया। मैंने उस पर कष्ट और भूख के कारण क्रोध किया वह लज्जित हुआ। उसके बाद उसने कहा; मैं आपके लिए आकाश पर उड़ा था और महेन्द्र गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। वह समुन्द्र तक हजारों जीवधारियों का एक मार्ग है। आपके भोजन के लिए मांस लेने के विचार से मैं मार्ग बन्द करके वहीं बैठ गया। मैंने वहाँ एक व्यक्ति को देखा। नीले बादल जैसा वह एक स्त्री को पकड़कर ले जा रहा था। यह अच्छे लोगों का कार्य नहीं है। वह धूर्त था उसने मुझसे मार्ग चाहा और मेरी बायी भुजा पकड़कर कहा; जाओ यह मार्ग कोई बन्द नहीं करता है। और वह शीघ्र हवाई मार्ग से चला गया। मैंने उसको देखा है कि वह जीवित है और महर्षि कहते थे कि वह स्त्री किसी ऐसे व्यक्ति की है कि उसको ले जाने वाले के पक्ष में अच्छा नहीं होगा और यक्ष और राक्षस कहते थे कि वह रावण है। सीता दशरथ की बहू है और वह केश बिखेरे हुए राम और लक्ष्मण का नाम लेते हुए जा रही थी और अपने शरीर से वस्त्र फेंकती जा रही थी। इसी कारण मुझे देर हो गयी। इतनी बात मुझे सुपार्श्व ने बताई थी। मैंने कहा कि मैं क्या करूँ कि मैं बिना बाल व पर के हूँ अन्यथा मैं परों के द्वारा सीता को ले जाने वाले को क़ैद कर देता और उसकी निन्दा करता कि क्यों तुमने सीता की रक्षा नहीं की।

از پسران زیاده تر است و بار دیگر میگویم که او پسر پشروا و برادر کبیر است و در جزیره سمد
که ازینجا صد جوجن شهر لنکاست آنجا میباشد و آنجا سیتا هم هست آن تصدیع
که بر رام ست کو یار بنست و شما همه قوتمند و بسیار تدبیر کننده اید از شما کاری
دشواری نیست در رام و لچهمن بگرفتن و سزا دادن هر سه لوک سزاوار اند چه جایی راون
و عاقلان در کار سستی نکنند و در سوراخ خزیدن سزاوار شما نیست قصد رفتن لنکا کنید

که درین کار هم مردن شما نمیشود درینجا همان صورت جنگل و سنپاتی و ده بوزینه انگد و
و هنومان و نیل و تار و کند همادن و غیر آن استاده و جانبوان راجه خرس از سنپاتی
حقیقت می پرسد

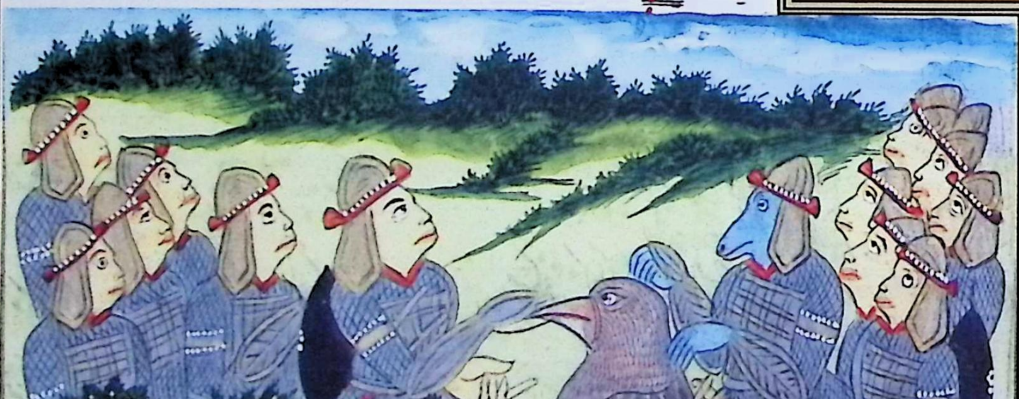

क्योंकि मुझे दशरथ के पुत्रों से अधिक प्रेम है और मैं पुनः कहता हूँ कि वह विश्रवा का पुत्र और कुबेर का भाई है और समुन्द्र के द्वीप में जो यहाँ से सौ जोजन लंका शहर है वहाँ रहता है। और वहीं सीता भी हैं। वह कष्ट जो राम को है, मानों मुझे है। तुम सब शक्तिशाली और बहुत योजनायें करने वाले हो तुम से कोई काम कठिन नहीं है। राम और लक्ष्मण तीनों लोक को पकड़ने और दण्ड देने के योग्य है न कि रावण। बुद्धिमान लोग कार्य में आलस नहीं करते हैं। छिद्र में घुसना तुम्हारे लिये उचित नहीं है। लंका जाने का विचार करो कि इस कार्य में तुम्हारी मृत्यु भी नहीं होगी।

इसी वन और सम्पाति का चित्र, और दस वानर, अंगद, सुषेण, हनुमान, नील और तारा और गन्धमादन आदि खड़े हैं और ऋक्षों का राजा जाम्बवान सम्पाती से वास्तविकता मालूम कर रहा है।

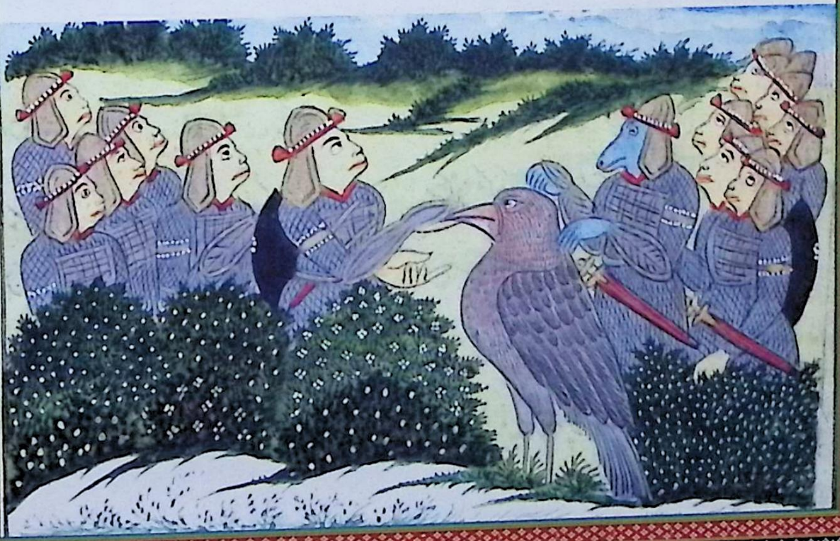

سرکڈ بدن نشاکر رکهه سنپاتی بنام برادر آب داده غسل کرده بجای خود
نشست و بانکد و غیره گفت بشنوید بغور سخن میگویم و بنوعیکه سیتا را
میدانم چون قبل ازین از شعاع آفتاب پر و بال سوخته شده برین کوه بندها چل
افتادم بعد شش شب بخویش آمدم اطراف و جوانب نظر کردم و ساگر و کوه
و صحرا و سرور و ندی همه را تجویز نمود د یاد کردم فهمیدم که این کوه بندها چلست
که نزدیک سمدر و چهن ست و اینجا آشرم ست آنجا نشاکر نام من تپسوی بود
که من وقتی همراه او تا هشت هزار سال یکجا ماندم و او بسرگ رفت و یکصد سال
گذشت و مرا دو صد سال میگذرد که اینجا افتاده ام القصه چون پر و بال سوخته
درینجا افتادم آرزوی دیدن آن نشاکر داشتم و همراه جٹایو آمده او را پیشتر
ازین دیده بودم این بار که افتادم آشرم او را دانسته اقامت کردم و انتظار
آمدن او نمودم ناگاه از دور دیدم که غسل کرده می آید و شیر و خرس
و افعی و آهو و غیره گرد او میند چنانچه پسران با مادران باشند چون رکهه
با آشرم داخل شد جانوران جا بجا رفتند و مرا نظر کرده هیچ ندانست
و داخل آشرم شد من پر و بال سوخته نشسته ماندم بعد از مهورت آن رکهه
بیرون آمده گفت اینجا دو طیور بودند که سنپاتی کلان بود و جٹایو ازو خورد

सर्ग-१२२

निशाकर ऋषि को देखना

सम्पाति, भाई के नाम का जल देकर और स्नान करके अपने स्थान पर बैठ गया और अंगद आदि से कहा; ''सुनो कि मैं एक विशेष बात बताता हूँ। मैं सीता को जानता हूँ। जब इससे पहले सूर्य की किरणों से मेरे बाल व पर जल गये थे तो मैं उसी विन्ध्याचल पर गिराया। छः रातों के बाद मैं होश में आया और चारों ओर आस पास देखा, सागर, पर्वत, वन, तालाब और नदी सबको याद किया। तब मैं समझा कि यह विन्ध्याचल पर्वत है। जो दक्षिण के समुन्द्र के निकट है और यहाँ आश्रम है। वहाँ निशाकर नामी मुनि तपस्या करने वाले थे। मैं कभी उनके साथ आठ हजार वर्ष तक साथ रहा हूँ। अब वह स्वर्ग में चले गये अब एक सौ वर्ष बीत गया। मुझे दो वर्ष बीत रहे हैं कि मैं यहाँ पड़ा हुआ हूँ। अतः जब बाल व पर जलने के बाद मैं यहाँ गिरा तो मुझे उस निशाकर को देखने की इच्छा थी और मैंने जटायु के साथ आकर इससे पहले उसको देखा भी था। इस बार जब मैं गिरा तो उसका आश्रम समझकर रहने लगा और उसके आने की मैंने प्रतीक्षा की। अचानक मैंने दूर से देखा कि वह स्नान करके आ रहा है और शेर, खरस और हिरन आदि उसके चारों ओर हैं जैसे कि हमारे पुत्र हमारे साथ रहते हैं। जब ऋषि आश्रम में प्रविष्ट हो गये तो पशु चले गये। उसने मेरी ओर दृष्टि करके कुछ नहीं समझा और आश्रम में चले गये। मैं पर व बाल जला हुआ ऐसे ही बैठा रह गया। एक क्षण बाद उस ऋषि ने बाहर आकर कहा; यहाँ दो पक्षी थे कि सम्पाती बड़ा था और जटायु उससे छोटा।

نظیر آنان در قوت و زور در تمام عالم ندیدم و در جهان کسی مانند آنان نیست
تو کیستی و این تصدیع ترا چسان شده است و در پرهائی تو این زحمت چسان
گشته کسی بر تو سیاست کرده این همه را بگو درینجا صورت بندها چیل کوه و برد
آشرم برکهه و پیش آشرم سنپاتی قوی هیکل بال و پر سوخته افتاده و نشکر رکهه انکیده کور
حقیقت میپرسد و گرد بگرد آن رکهه شیر و وحوش و افعی و آهو ایستاده اند و صورت درختان
جنگل

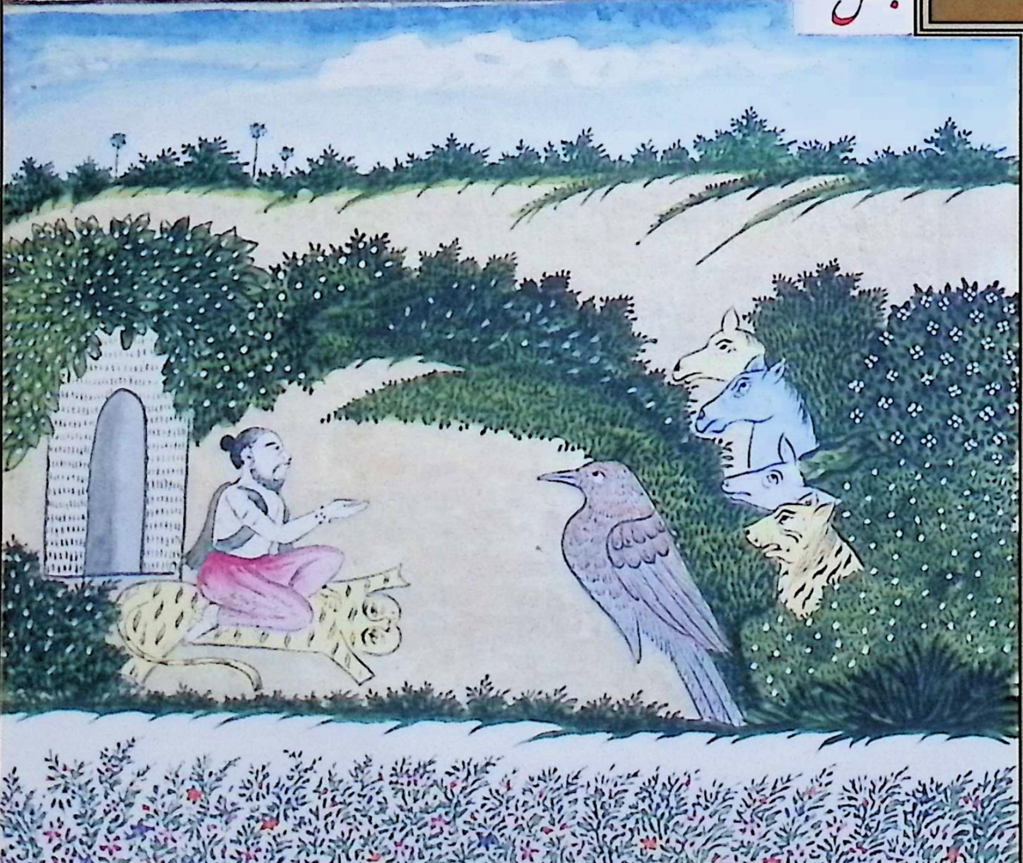

मैंने शक्ति में इन लोगों के समान पूरे संसार में किसी दूसरे को नही देखा और संसार में कोई इन के जैसा नही है तो भला तुम कौन हो और यह कष्ट तुम को क्यों हो गया है और तुम्हारे परों मे यह शक्ति कहां से आ गई है? क्या किसी ने तुम पर जादू टोना (सियासत) किया है?सब वर्णन करो!

विंध्याचल पहाड़ का चित्र इस पर रख का आश्रम है और आश्रम के सामने संपाती, देव समान, और बाल एवं पर जले हुए पड़ा हुआ है और निशाकर रख गिद्ध से वास्तविकता पूछ रहा है और उस के चारों और जंगली जानवर सांप और हिरन आदि बैठे हुए है।

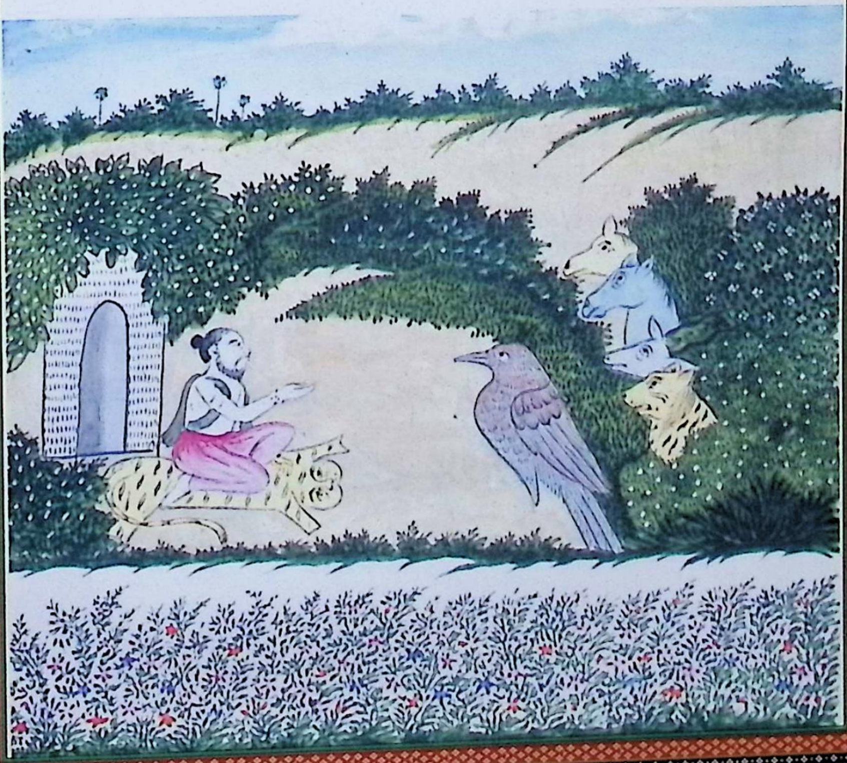

سرگ ماجرای سنپاتی چون نشاکر چنین گفت من گفتم که از انفعال وسکرفته ام
و بسبب غلبهٔ گریه بار بار حرف زدن نمیتوانم آن سنپاتی منم برادر کلان جتایو من
از غرور خودی تقصیری کردم آفریدگار سزا داد من و جتایو از غرور بهوا پریدیم
تا قوت پریدن خود بدانیم و بحضور منیشران برکوه کیلاس شرط بالا برآمدن و
راج کردیم و بسمت آفتاب روان شدیم چون دور رفته نظر کردیم شهرها مثل نشان
رتهه بنظر می آمدند و دریا های کلان مانند نشان قلبه و نکهند کوه و همکوت و مالوان
همچو خطوط دیده میشدند و بر آسمان رسیده هزاران راه سدها و اپسران را بانواع
پیرایه آراسته میدیدیم و بسرعت در راه آفتاب میرفتیم و زمین ها بانواع گیاه
آراسته میدیدیم و هماچل و بندهاچل و نکهند و پوشکرها میدیدیم که ناگاه مایان را
خوفی رسید و بیهوشی غالب گردید پورب و پچهم و دچهن و اوتر هیچ نمیدانستیم و
آفتاب بر فلک مانند آتش عاقبت نیله و سرخ بنظر می آمد و مندل آفتاب
بسیار کلان دیده میشد اما بعد از بسیار تدبیر بسمت فلک نظر کردیم برابر سطح زمین
آفتاب بنظر می آمد جتایو از بیهوشی بفرود گرائید من از پر و بال بر و سایه کردم
آخرش از شعاع آفتاب پر و بال همه گر سوخته شد جتایو در مکان جن استهان
و من در بندهاچل افتادم حالا از راج و از برادر و از قوت دور افتاده مرگ خود

सर्ग-१२३

संपाती का वृतान्त

जब निशाकर ने यह बात कही तो मैने कहा कि मै लज्जा के कारण दुखी हूं और विलाप के कारण बार-बार बोल नही सकता। मैं वही संपाती हूं जटायु का बड़ा भाई । मैंने अहंकार के कारण गलती की। ईश्वर ने मुझे इसकी सजा दी। मैं और जटायु अहंकार के कारण हवा में उडे ताकि अपने उड़ने की शक्ति मालूम करें और हम ने मुनीश्वरो के सामने कैलाश पहाड़ पर जाने और राज करने की बाज़ी लगाई और सूर्य की ओर प्रस्थान किया। जब हमने कुछ दूर जाकर देखा तो हमें बड़े-बड़े शेर रथों के समान दिखाई दिये और बड़ी-बड़ी नदियां क़लबा एवं नकहद पहाड़ और पुशकर दिखाई दिये, और आसमान की ओर जा कर हजारों अपसरायें भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्रों से सुसज्जित दिखाई पड़ती थी और हम बड़ी तेजी से सूर्य की ओर चले जा रहे थे, और भूमि को भिन्न-भिन्न प्रकार की घास ओर पेड़-पौधे देखे, और हम हिमाचल , विंध्याचल, नकहद और पुशकर देखते थे कि अचानक जंगल पर भय का वातावरण छा गया और हम पर बेहोशी छा गयी । उस समय पूरब, पच्छिम, दक्किन, उत्तर की कोई सुध न थी और सूर्य आसमान पर आग की तरह दिखाई पड़ता था और सूर्य का गोला बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था । बहरहाल हम अनेको उपाय करने के बाद हमने आसमान की ओर देखा। बादल भूतल से सूर्य तक उठता दिखाई देता था । जटायु बेहोशी में रोता दिखाई दिया मैने अपने बालो और पर से उस पर छाव कर ली लेकिन सूर्य की गर्मी और जलन ने मेरे बाल एवं पर जला दिये। जटायु किसी ओर जगह जा गिरा और मैं विंध्याचल में गिरा। अब मैं राज्य, भाई और शक्ति से वंचित हूं।

میخواهم واز کوه فرو می افتم که طیور بی پر و بال چسان زیست نماید چنانچه چوب
یا کریوه باشد سرکبال او پر یافتن سنپاتی من اینقدر گفته الم و گریه کردم نشاکر مرا گریان
دیده مهورت دهیان کرده یعنی در مراقبه شده چنان گفت که ترا پر هم خواهد شد
و بینای چشم و قوت خواهد شد و تو کار عظیم کنی این را من در پران شنیده ام واز زور تپ
هم می که کسی در اولاد اچهواکو دسرتهه نام راجه خواهد شد و پسر او رام نام خواهد شد او با برادر
و عورت بموجب امر پدر خود در صحرا خواهد ماند و از مکان جن استهان راون نام
عورت او را گرفته خواهد برد و او انواع طعام را در انجا نخواهد خورد و آندر او را پرم ان
خواهد داد و آن قسمی از امرت باشد او اول بنام رام و لچهمن بر زمین خواهد انداخت
و خواهد خورد بعد از ان بوزنه ها در جست و جوی او خواهند رفت تو آنها را از سیتا
که عورت اوست نشان خواهی داد و پر و بال و غیره ترا خواهد شد بنا بران همین جا اقامت
گزین و تا اندک مدت انتظار بکن و من هم میخواهم که ترا پر ها شود و همین جا تو کار کلان
خواهی نمود بدین آیین مرا آن رکهه تسلی کرده در آشرم در آمد شد و من گفته رکهه شنیده
ارزوی دیدن رام و لچهمن دارم و زنده مانده ام و کالبد خود نگذاشته ام واز کوه یعنی غار
برآمده اینجا می نشینم و آهسته آهسته باز از پا در انجا رفته اقامت میکنم و انتظار آنها را
داشتم و حالا صد سال در انتظار گذشته است من گفته نشاکر یاد دارم و او بسرگ رفت

सर्ग-१२३

सम्पाति का बाल व पर पाना

मैं इतना कहकर दुख से रो पड़ा। निशाकर ने मुझे रोता हुआ देखकर एक क्षण ध्यान किया अर्थात् ध्यानमग्न हो गया। फिर कहा कि तुम्हारे पर भी होगे और आंखों में प्रकाश और शक्ति भी होगी। और तुम बड़ा कार्य करोगे। मैंने यह पुराण में सुना है। और मैं यह अपनी तपस्या के बल पर भी जानता हूँ कि कोई इक्ष्वाकु की सन्तान में दशरथ नाम का राजा होगा। उसके पुत्र का नाम राम होगा। वह अपने भाई एवं पत्नी के साथ पिता के आदेशानुसार वन में रहेगा। जन स्थान के घर से रावण नामी एक राक्षस उसकी स्त्री को पकड़कर ले जायेगा। वह वहाँ विभिन्न प्रकार के खाना नहीं खायेगी और इन्द्र उसको दिव्य अन्न देंगे जो अमृत का एक रूप होता है। पहले वह उसको राम और लक्ष्मण के नाम पर पृथ्वी पर फेंक देगी और फिर खा लेगी। उसके बाद वानर उसकी खोज में जायेंगे। तुम उनको सीता के बारे में जो उसकी पत्नी है पता बताओगे और तुम्हारे बाल व पर उत्पन्न हो जायेंगे। अतः यहीं रहो और कुछ समय तक प्रतीक्षा करो और मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पर निकल आये और तुम इसी स्थान पर बड़ा कार्य करोगे। इस प्रकार मुझे सान्त्वना देकर वह ऋषि आश्रम में प्रविष्ठ हो गये। मैं ऋषि की बात सुनकर राम और लक्ष्मण को देखने की इच्छा रखता हूँ और जीवित हूँ। मैंने अपना शरीर नहीं छोड़ा है और गुफाओं से निकलकर यहाँ बैठता हूँ तथा धीरे-धीरे पाँव से चलकर वहाँ रहता हूँ और उस क्षण की प्रतीक्षा करता हूँ। इस समय तक सौ वर्ष प्रतीक्षा में बीत चुके हैं। मुझे निशाकर की वार्ता याद है। वह स्वर्ग में चला गया।

و پسر من با نواعِ خوردني پرورش من میکنند اکنون لطیفهٔ به بینید
که پر و بال من دمیدن آغاز کردند و قوت هم بر حالت اصلی شد بار دیگر خود را جوان
مي بنيم و از دل خود میدانم و دل من میگوید که اینک ستیا را در شوک بن نشسته
می بنیم حالا من اراده رفتن میکنم شما هم بمقصود خود برساد بوزنه‌ها این لطیفه را
دیده خوشوقت شدند و جواني سنپاتي لطیفه دانستند درینجا صورت صحرا

د درختان و سنپاتی که از سر نو پر و بال برآورده جوان شده و از بوزنه‌ها نشسته لمس کردند
سخن میگوید و انگد و غیره ده نفر دیده و شنیده متعجب و شاد شدند و بعضی پر او را

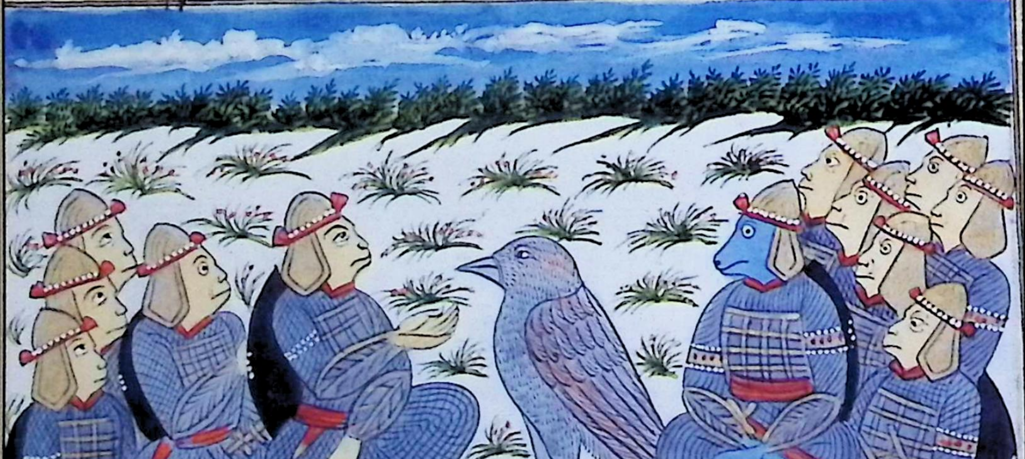

और मेरा पुत्र विभिन्न प्रकार के भोजन से मेरा पालन करता है। अब एक बात देखो कि मेरे बाल व पर उगने लगे हैं और शक्ति भी पहले जैसी आ गयी। मैं पुनः अपने को युवा देखता हूँ और मैं अपने दिल से जानता हूँ। मेरा दिल कहता है कि मैं इस समय भी सीता को शोक वन में बैठा हुआ देख रहा हूँ। अब मैं जाने का विचार करता हूँ तुम भी अपने उद्देश्य को पहुँचो। वानर सम्पाति के युवा होने को देखकर बहुत प्रसन्न हुए ।

वन, वृक्षों और सम्पाति गिद्धों का चित्र। जिसके पुनः बाल व पर उग आने से वह युवा हो गया है और वानरों के साथ बैठा बातें कर रहा है। अंगद आदि दस वानर देखकर और सुनकर प्रसन्न व चकित हुए कुछ ने उसके परों को भी छुआ।

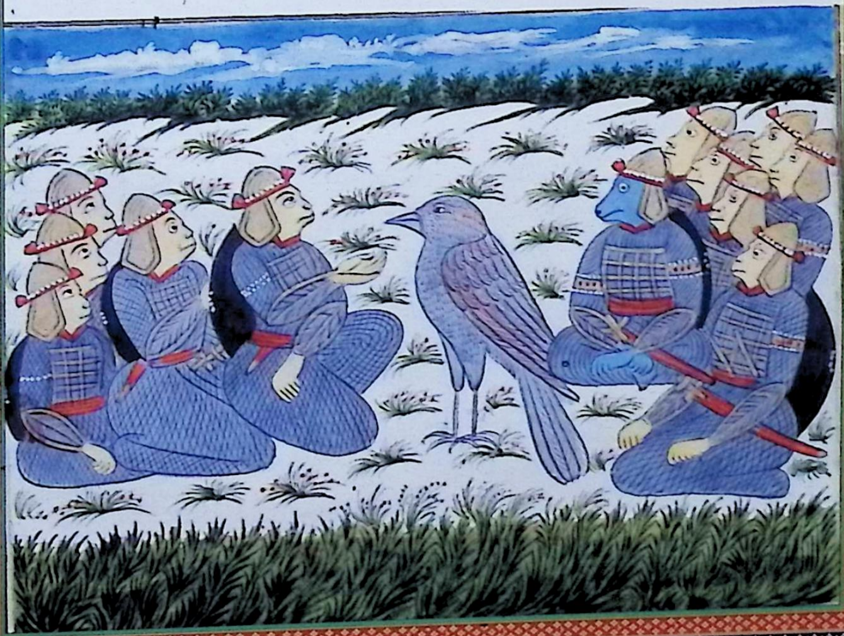

سرک آمدن سوپارشو درین کفت و شنود سنپاتی را بحضور بوزنه ها بال و پر
پیدا شدند و او خوشوقت شده به بوزنه ها کفت بموجب فرموده نشاکر هر دو بال و پر من
پیدا آمدند این بکفت و از کوه پریده بر قله کوه نشست بوزنه ها این عجائبات را دیدند
بار دیکر سنپاتی کفت بموجب فرموده نشاکر پر و بال که از آفتاب سوخته شده بودند
باز بر آمدند و جوان شدم ای بوزنه ها شما تدبیر دیدن سیتا بکنید از ینجا یک کروه ست
پیاده رفت بعد ازان صد جوجن سمدر عبور بکنید در انجا بر کوه ترکوت لنکا مکان راون
و آنجا سیتا در قید راچهسیان خوفناک هست و او را میترسانند او را دیده در لنکا فساد کرده
باز بیائید و مرا خود چندان شعور نیست از لطف نشاکر من اینقدر معلوم میکنم
و من حالا بر کوه هماچل که مکان مهادیو هست میروم آنجا ماده من آشیانه دارد
و شما نزدیک سمدر بروید و هر که صد جوجن بر هوا خواهد رفت از میان خود ها
تجویز بکنید درین اثنا جانبوان کفت تو همه نیک و خوب کفتی که خیرخواهی نسل رکهو
هست اما مایان را اینقدر تردد هست که سمدر را چکونه عبور خواهیم کرد ازین سبب در
تذبذب ایم درین کار اعانت و امداد بکن کفت جانبوان خرس را شنیده سنپاتی
کفت من آن راون بد اندیش را میکشتم اکر پرهائی من از آتش سوخته نبودی
و حالا تازه بر آمده هست و اینقدر تحقیق در خاطر منست که او نخواهد زیست و من خود

सर्ग-१२४

सुपार्श्व का आना

इसी वार्तालाप में वानरों के सामने सम्पाती के बाल व पर उग आये और उसने प्रसन्न होकर वानरों से कहा; निशाकर के कथनानुसार मेरे बाल व पर दोनों आ गये। उसने यह कहा और पर्वत से उड़कर पहाड़ की चोटी पर बैठ गया। वानरों ने यह चमत्कार देखा। पुनः सम्पाति ने कहा निशाकर के कथनानुसार पर व बाल जो सूर्य से जल गये थे पुनः उग आये और मैं युवा हो गया। ऐ वानरों तुम सीता को देखने की योजना बनाओ। यहाँ से एक कोस पैदल चलना है। उसके बाद सौ जोजन समुन्द्र पार करो। वहाँ त्रिकूट पर्वत पर रावण का घर लंका है और वहाँ सीता भयानक राक्षसनियों की कैद में हैं। वे उनको डराती है। उनको देखकर लंका में उपद्रव करके वापस आ जाओ और मुझे स्वयं कुछ ज्ञान नहीं है। निशाकर की कृपा से मैं इतना ज्ञात कर लेता हूँ और अब मैं हिमाचल पर्वत पर जो महादेव का स्थान है, जा रहा हूँ वहाँ मेरी पत्नी का मकान है। तुम समुन्द्र के निकट चलो। जो सौ जोजन हवा पर चले वह स्वयं ही योजना बनाते। इसी मध्य जाम्बवान ने कहा' तुमने सब अच्छा और खूब कहा। जो ऋषियों के वंश की भलाई है। हमें इसकी दुविधा है कि हम समुन्द्र को किस प्रकार पार कर करेंगे?इसी कारण हम केवल इस चिंता में हैं कि हम समुन्द्र को इस कार्य में कैसे पार करेंगे। जाम्बवान ऋक्ष की बात सुनकर सम्पाती ने कहा मैं उस दुष्ट रावण की हत्या कर देता यदि मेरे पर आग से न जल गये होते। अब नये निकल आये हैं और इतना विश्वास मेरे मन में है कि वह जीवित नहीं बचेगा। और मैं

بسبب پیری بیطاقت شده ام و سَوپارشو نام پسر من شما را بلنکا تواند برد
این بگفت و پسر را در دل یاد کرد که پسر او در رسید چنانکه از باد پرهای او
درختان افتادن گرفتند و در شکل از پدر افزون تر بود گویا کوه کلان هست
نشست و به پدر گفت مرا چرا یاد کرده اید سنپاتی تمام سرگذشت بشرح و بسط
بیان نموده برائی عبور سمدر و رسانیدن بوزنه ها امر کرد سوپارشو گفت
این فکر را از دل برطرف کن من سمدر را عبور خواهم کرد قوت و سرعت رفتن من
بی نهایت هست و از قله کوه مهیندر صد جوجن بمسافت لنکا ست که آنجا
راون هست لهذا ای بوزنه ها بر پشت من زود سوار شوید که شتاب
بآن طرف سمدر میرسانم اینچنین گفتار را شنیده انگد گفت تو نزد اوا
قوت و صورت خود گفتی تو خود گویا این کار نمودی که بر این مستعد
بودی ولیکن بوزنه ها با قوت و زور بسیار هستند از کوه
مهیندر سمدر را عبور خواهند کرد تو با پدر خود باری آرام
بکن و ما رفتن مکان راون مقرر کردیم القصه سنپاتی براه هوا
بر فلک پریدن گرفت و با پسر برفت بعد از ان انگد به بوزنه ها گفت
سنپاتی نشان زندگی سیتا بیان کرد و برفت حالا بیائید که سمت

स्वयं वृद्ध होने के कारण शक्तिहीन हो चुका हूँ और मेरा पुत्र सुपार्श्व तुमको लंका ले जा सकता है। उसने यह कहते हुए पुत्र को मन में याद किया कि इतने मे उसका पुत्र पहुंच गया। इस प्रकार से पहुँचा कि उसके परों की हवा से वृक्ष गिरने लगे। वह रूप में अपने पिता से अधिक था मानों बहुत बड़ा पर्वत है। उसने बैठते हुए पिता से कहा आपने मुझे क्यों याद किया है?सम्पाति ने पूरी गाथा का वर्णन करते हुए समुन्द्र पार करने और वानरों को पहुंचाने का आदेश दिया। सुपार्श्व ने कहा' आप इसकी चिन्ता छोड़ दीजिये। मैं समुन्द्र पार करूंगा, मेरी शक्ति और चलने की गति अति तीव्र है और महेन्द्र पर्वत की चोटी से लंका की दूरी सौ जोजन है जहां रावण है। अतः ऐ वानरों ! तुम लोग शीघ्रता से मेरी पीठ पर सवार हो जाओ ताकि मैं शीघ्रता से समुन्द्र के उस पार पहुंचा दूं। इतनी बात सुनकर अंगद ने कहा तुमने अपनी शक्ति और योग्यता स्वयं बताई और उनका बल भी बहुत है। वे महेन्द्र पर्वत से समुन्द्र पार कर लेंगे। तुम पिता के साथ थोड़ा विश्राम करो और हमने रावण के स्थान पर जाने का निश्चय कर लिया है। अतः सम्पाति हवाई मार्ग से आकाश पर उड़ने लगा और पुत्र के साथ चला गया। उसके बाद अंगद ने वानरों से कहा सम्पाति ने सीता के जीवन का पता बता दिया और चला गया।

سمدر وچهن برویم وتدبیر رفتنِ انطرف بکنیم آخرش بوزنه با تهیه رفتنِ
سمت وچهن کردند درینجا صورت سنپاتی که از سر نو پر آورد و دو جوان گشته
وصورت سوپارشو پسر سنپاتی وصورت انگد و جامبوان راجه خرسان و دیگر بوزینه گان
عقب همدیگر

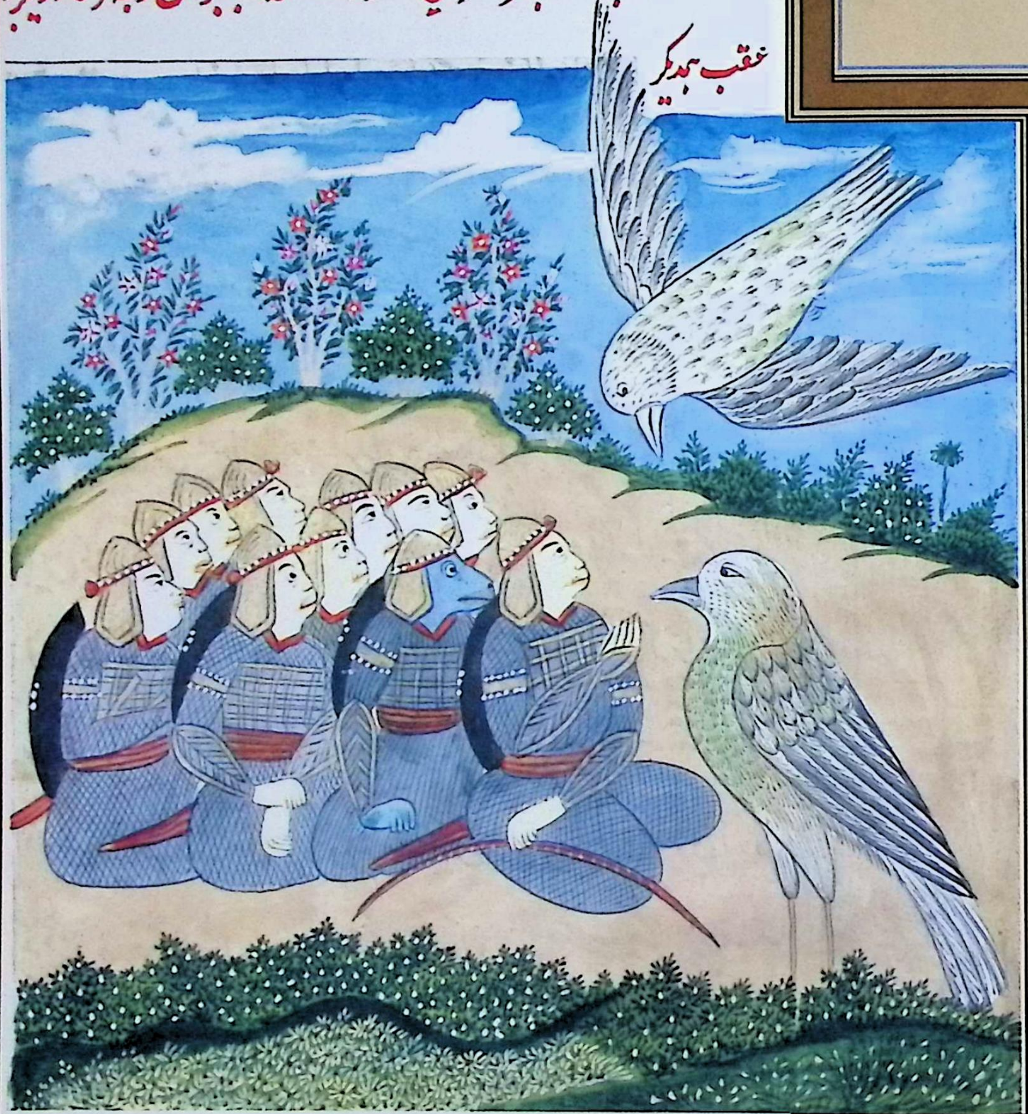

نزد شورت

अब आओ दक्षिण दिशा के समुन्द्र की ओर चलें और उस ओर चलने की कोई योजना बनायें।

अंत में वानरों ने दक्षिण की ओर जाने का निश्चय किया।

सम्पाति गिद्ध का चित्र जिसके पर पुनः उग आये और वह युवा हो गया है। सम्पाति के पुत्र सुपार्श्व का चित्र और अंगद तथा ऋक्षों के राजा जाम्बवान् का चित्र और एक दूसरे के पीछे दूसरे वानरों का चित्र।

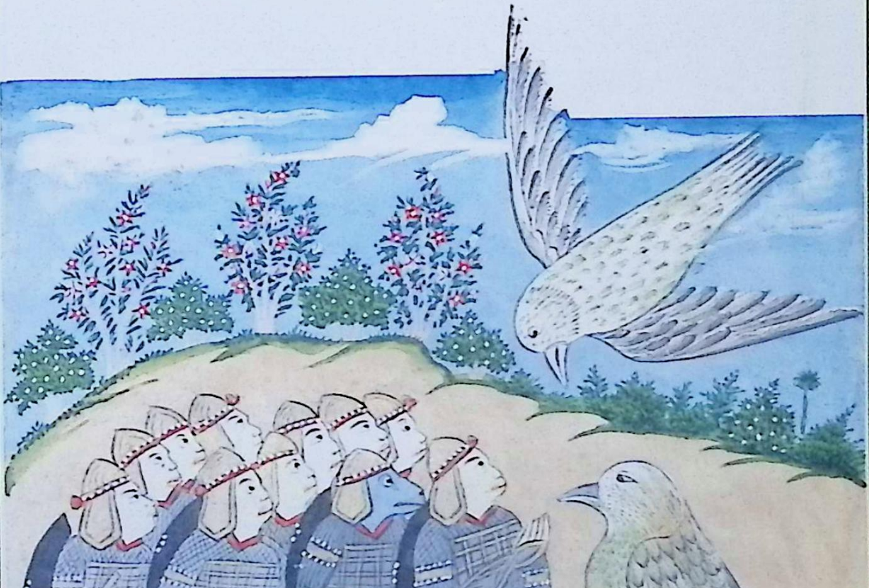

سرگ شورت بوزنه ها بعد نشان دادن سیتا پتی بوزنه ها روان شدند شب و روز
جست و جو کنان در یازده شب نزدیک سمدر رسیدند بمکانی اقامت گزیدند سمدر را
پر آب ترسناک دیدند گویا آسمان است و از بسیار جانداران پر است موجهای
جواهر ریزان می آیند هرگاه موج چون کوه برمیخیزد دانوان باشند کان پاتال را برهم
و مثل آسمان ساحل بنظر نمی آید دریا را دیده همه بوزنه در شور آمدند و متردد شدند
که این را چه طور عبور باید کرد بعد از ان انگد بوزنه هایی دراز عمر را جمع کرده بمصلحت
درآمد چنانچه انگدر بادیو تا بکنکایش درآید و بوزنه های مضطرب را گفت اضطراب نباید کرد
که اضطرار چون زهر است و مضطرب کار خوب نمیکند حالا بگوئید که کدام کس این
سمدر را عبور خواهد کرد سوای انگد و دوبده و میند و هنومان همه ها گفتند که شب را
باید گذراند صبح تدبیر خواهیم کرد چون شب بگذشت بگاه تر انگد با جمیع بوزنه بر سر کوه نشست
و مصلحت جست که امر سگریو کدام بجا خواهد آورد هیچکس جواب انگد نگفت و از خوف
خاموش ماندند باز انگد گفت شما همه قوت خود در عبور سمدر بیان نمائید تا کدام کس
این لشکر را از خوف سگریو نجات خواهد داد و بدولت کدام شخص ها روی عورات
و خانه و برادران را خواهیم دید و از لطف کدام کس نزد رام و لچهمن و سگریو خوشوقت شده
خواهیم رفت و کدام کس کار رام خواهد کرد و در لنکا رفته سیتا را دیده باز که خواهد آمد

सर्ग-१२५

वानरों का परामर्श

सम्पाति के पता बताने के बाद वानर चल दिये और रात दिन संघर्ष करते हुए ग्यारह दिन में समुन्द्र के निकट पहुंचे। एक स्थान पर रुके। समुन्द्र को भयानक पानी से भरा देखा मानों वह आकाश है और अधिकांश जीवधारियों से भरा है। रत्न बिखेरने वाली लहरें आ रही हैं जब भी पहाड़ जैसी कोई लहर उठती है तो पाताल के रहने वाले दानव में उथल पुथल कर देती है और अकाश जैसा विस्तृत तट दिखाई नहीं देता है। नदी को देखकर समस्त वानर शोर मचाने लगे और दुविधा में पड़े कि इसको कैसे पार किया जाए। इसके बाद अंगद ने लम्बी आयु वाले वानरों को एकत्र करके परामर्श किया जैसे कि इन्द्र बकंकायश देवता के साथ परामर्श करते हैं। चिन्तित वानरों से कहा; चिन्तित नहीं होना चाहिए क्योंकि चिन्ता और व्याकुलता विष के समान है। चिन्तित व्यक्ति कार्य अच्छा नहीं करता है अब यह बताओ कि कौन यह समुन्द्र पार करेगा। अंगद, द्विविद, मयन्द और हनुमान के अतिरिक्त सबने कहा कि रात्रि बीत जाने दीजिये। प्रातः समय कोई योजना बनायेंगे। जब रात्रि बीत गयी तो प्रातः ही अंगद सारे समस्त वानरों के साथ पर्वत के ऊपर बैठ गया और परामर्श किया कि सुग्रीव की आज्ञा का पालन कौन करेगा किसी ने अंगद का उत्तर नहीं दिया और डर के कारण शान्त रहे। फिर अंगद ने कहा तुम सब समुद्र पार करने के विषय अपनी क्षमता का वर्णन करो कि कौन इस सेना को सुग्रीव के भय से मुक्ति दिलायेगा और किस व्यक्ति के कारण हम पुनः अपनी स्त्रियों, घर और भाईयों मित्रों को देख सकेंगे। किसकी दया से हम राम, लक्ष्मण और सुग्रीव के पास प्रसन्न होकर जायेंगे और कौन राम का कार्य करेगा तथा लंका जाकर सीता को देखकर वापस आयेगा।

شما همه قوت مند و زورآور اید طاقت خود بیان کنید و مقدار زور ظاهر سازید
چنانچه کسی از دست اندر و برهما امرت آرد یا از ماه روشنی بگیرد یا از خورشید
گرمی ستاند همچنین در لنکا رفتن و باز آمدن هست اینقدر گفتار انگد را شنیده
هر یک بوزنه قوت خود به بیان آورد چنانچه گج نام بوزنه گفت که قوت زغند
ده جوجن دارم گواچه گفت که من قوت زغند بیست جوجن دارم شربه گفت
که من قوت سی جوجن دارم و رکهبه گفت که من چهل جوجن دارم و گندمادن گفت
که من قوت پنجاه جوجن دارم و میند گفت که من قوت شصت جوجن دارم
و دَوِبده گفت که من قوت هفتاد جوجن دارم و سکهین نام بوزنه گفت که
من قوت هشتاد جوجن دارم و جانبوان که پیر بود و عاقل اینهمه را شنیده
گفت پیشتر مرا قوت رفتن بسیار بود و حالا از پیری کم شده و بینائی هم کم شده
و رفتن گرد برائی امرت و جنگ او یاد دارم و جنگ دیوتا و دیت بسیار دیده ام
و درین امر حالا جرات نمیتوانم کرد اگر راجه بوزنه ها برای این کار خواه مخواه بجد
میشود راست میگویم و دروغ نمیگویم که نود جوجن سمدر من عبور توانم کرد اگرچه حالا
قوت من کم است اما آنچه در جوانی کرده ام بشنوید اگرچه در پیری گفتار کار جوانی
باعث خنده است که من و سکهین در جگ راجه بل هر سه قدم بشن را ۲۱ بار

तुम सब शक्तिशाली और बलवान हो अपनी-अपनी शक्ति बताओ और शक्ति का माप प्रकट करो जैसे कि कोई व्यक्ति इन्द्र और ब्रह्मा के हाथ से अमृत लाता है। या चांद से प्रकाश लेता है या सूर्य से लेता है ऐसे ही लंका जाना और वापस आना है। अंगद की यह बात सुनकर प्रत्येक वानर ने अपनी शक्ति का वर्णन किया। अतः गजनामी वानर ने कहा कि मैं दस जोजन छलांग मारने की क्षमता रखता हूँ। गवाक्ष ने कहा कि मुझमें बीस जोजन छलांग लगाने की क्षमता है। शरभ ने कहा कि मैं तीस जोजन की क्षमता रखता हूँ और ऋषभ ने कहा कि मैं चालीस जोजन की क्षमता रखता हूँ और गन्धमादन ने कहा कि मैं पचास जोजन की क्षमता रखता हूँ। और मैन्द ने कहा कि मैं साठ जोजन की क्षमता रखता हूँ और द्विविद ने कहा कि मैं सत्तर जोजन की शक्ति रखता हूँ और सुषेण नामी वानर ने कहा कि मैं अस्सी योजन की शक्ति रखता हूँ और जाम्बवान जो वृद्ध और बुद्धिमान था उसने यह सब सुनकर कहा कि पहले मेरे अंदर चलने की शक्ति बहुत थी अब वृद्ध होने के कारण कम हो गयी है और देखने की क्षमता भी कम हो गयी और मुझे गरूड़ के अमृत के लिये जाने और उसकी लड़ाई याद और मैंने देवता और दैत्य की लड़ाई बहुत देखी है अब मैं इस विषय में साहस नहीं कर सकता और यदि वानरों का राजा इस कार्य के लिये अनावश्यक कहा जाता है तो मैं सच कहता हूँ और झूठ नहीं बोलता कि मैं नब्बे योजन समुद्र पार कर सकता हूँ। यद्यपि अब मेरी शक्ति कम है लेकिन जो कुछ युवावस्था में मैंने किया है वह सुनो। यद्यपि वृद्धावस्था में युवा के काम की बात करना हंसी का कारण है कि मैंने और सुषेण ने राजा बलि के युग में विष्णु के तीन पगों का तीन बार चक्कर किया

پردچهنا کردیم و بیست و یکبا تمام زمین را پردچهنا کردیم یعنی گرد گرد دیدیم و بکیلاس و در خانه
دیوتا رفته ایم و وقتی دیت کوه را از فلک بر زمین انداخت من آنرا بر زانو گرفتم ازان
باعث زانوی من شکسته شد و زورم کم گشت بنابران قوت زغنده کم صد جوجن
گفتم بعد ازان نل گفت که من نود و هفت جوجن عبور توانم کرد و هنومان خاموش بود
و هیچ نگفت بعد ازان انگد گفت در جواب همه که صد جوجن تمام عبور خواهم کرد و در هنگام
برگشتن عقل استقلال نمی پذیرد چونکه کودکم و در سایه پدر پرورش یافته ام لهذا
اینچنین گفتم بعده جانبوان به انگد گفت تو فکر رفتن از خاطر بدر کن که تو والی بوزنه ها و جمه اسبها
و پسر بالی هستی ترا قوت عبور هزار جوجن شود روا است بنوعیکه بالی و سکریو در قوت اما
همچنان تو هستی تو مایان را بفرست همه فرمانبردار تو ایم از حکم تو سیتا را خواهیم و اگر تو
در میان ما نخواهی بود کسی گفته کسی را نخواهد شنید چاکر را خداوند نام نتوان نمود تو ما همه را
پرورش کن تو والی ما هستی تو بیخ لشکر مایان هستی و از بیخ ثمر و گل و غیره بظهور می آید
و ما همه شاخهای تو ایم و نوکر و پسر تو هستی ما همه در پناه تو ایم چون جانبوان چنین گفت
انگد در جواب گفت که بار دیگر مایان را بسوراخ باید رفت زیرا که کار ناکرده رفتن زندگی خود
نمی بینیم که خداوند بوزنه ها غصه دار ست بنوعیکه این کار شود تدبیر بکنید بار دیگر جانبوان به پسر بالی
گفت من ترا بگویم کسیکه کار خواهد کرد آن هنومان ست که با سود کی بگوشه نشسته ست این او را

और इक्कीस बार पूरी धरती का चक्कर लगाया था अर्थात् उसके चारों ओर घूमा और मैं कैलाश पर तथा देवता के घर में गया हूँ। एक बार दैत्य ने पर्वत को उठाकर धरती पर पटक दिया मैंने उसे अपनी जांघों पर ले लिया इस कारण से मेरी जांघ टूट गयी और बल कम हो गया इस कारण मैंने छलांग मारने की शक्ति दस कम सौ जोजन बताई। उसके बाद नल ने कहा कि मैं सन्तानवे जोजन पार कर सकता हूं और हनुमान चुप थे और उसने कुछ नहीं कहा उसके बाद अंगद ने सबके उत्तर में कहा कि मैं पूरे सौ जोजन पार करूंगा और वापसी के समय बुद्धि ठीक नहीं रहेगी। अतः मैंने यह कहा इसके बाद जाम्बवान ने अंगद से कहा कि आप जाने की चिन्ता ह्दय से निकाल दे कि आप वानरों, ऋक्षों के संरक्षक और बालि के पुत्र हैं। आप में हजार जोजन पार करने की क्षमता हो तो ठीक है। जिस प्रकार कि बालि और सुग्रीव शक्ति में हैं उसी प्रकार आप हैं आप हमें भेजिये। हम सब आपके आज्ञाकारी हैं। आपके आदेश से हम सीता को ले आयेंगे। और यदि आप हमारे बीच नहीं रहेंगे तो कोई किसी की बात नहीं सुनेगा। नौकर को मालिक नहीं बनना चाहिए। आप हम सबकी देखभाल कीजिये। आप हमारे मालिक हैं आप हमारे सेना के सेनापति हैं और मूल (जड़) से फल और फूल आदि उत्पन्न होते हैं और हम सब आपकी शाखें हैं और आप गुरू और गुरु के पुत्र हैं हम सब आपकी शरण में हैं जब जाम्बवान ने यह बात कही तो अंगद ने उत्तर में कहा कि पुनः हम सबको छिद्र में चलना चाहिए। क्योंकि बिना काम किये जाने में अपना जीवन नहीं देखता हूं इसलिए कि वानरों का राजा क्रोधी है जिस प्रकार भी यह कार्य हो योजना बनाओ। पुनः जाम्बवान ने बालि के पुत्र से कहा; मैं आपसे कहता हूँ कि जो यह कार्य करेगा वह हनुमान है जो निश्चिन्त एक कोने में बैठे हैं

پیغام برسانم درینجا بطرف بالا صورت کوه و برو انگد وغیره نه نفر نشسته
و یک خرس راجه خرسها با انگد سخن میگوید و هنومان غریبانه بگوشه نشسته و جانبوان
راجه خرسها اشارت انگشت بطرف او میکند و طرف زیرین صورت سمدر ناپیدا کنار
و دران کشف کلان و نهنگ و مگر وغیره مرغان آبی میکردند و گشت میکنند

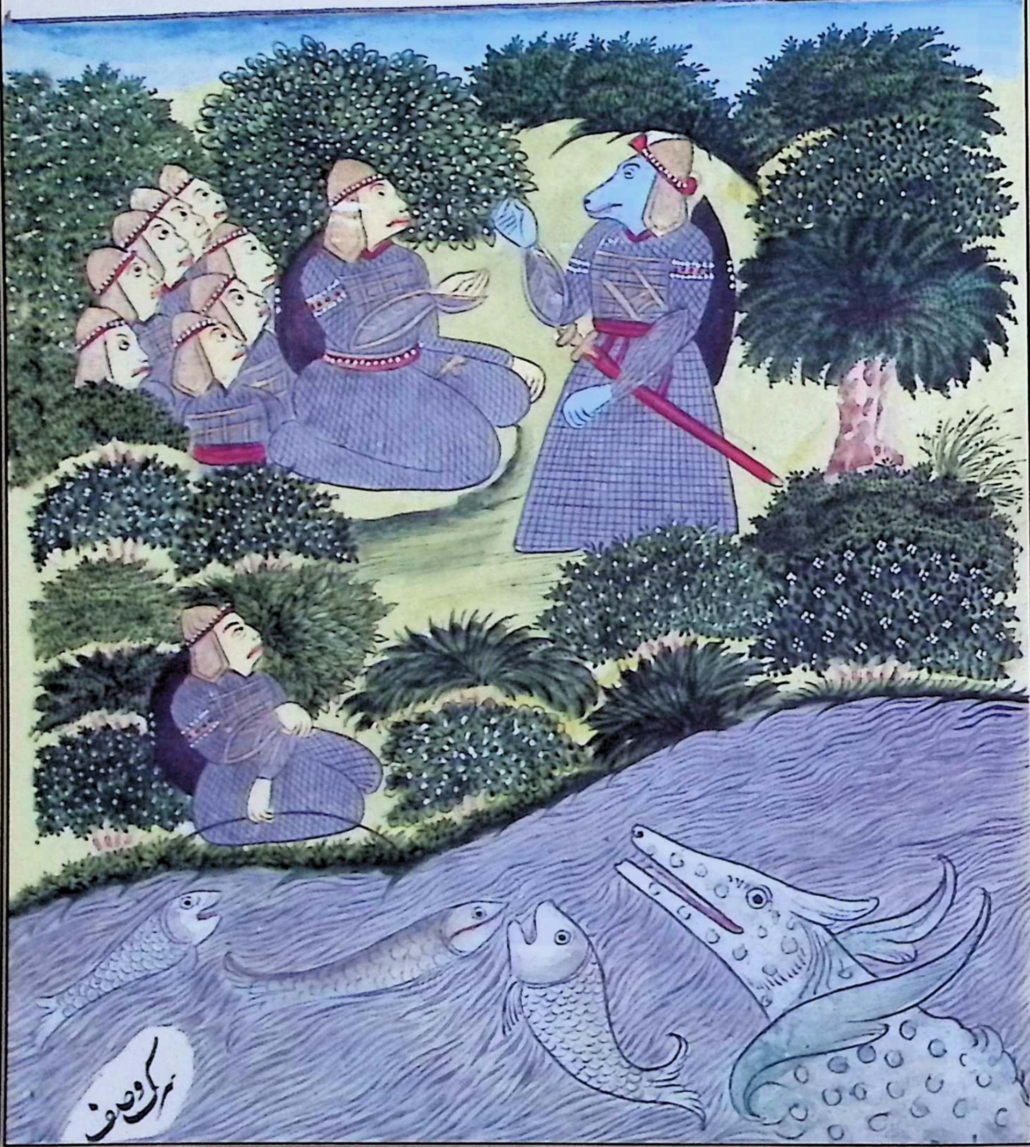

मैं उसको संदेश पहुंचाता हूँ।

ऊपर की ओर पर्वत का चित्र जिस पर अंगद आदि नौ वानर बैठे हुए हैं और एक ऋक्ष, ऋक्षों का राजा अंगद से बात कर रहा है और हनुमान एक कोने में बैठे हुए हैं और ऋक्षों का राजा उसकी ओर उंगली से संकेत कर रहा है और नीचे की ओर समुन्द्र है और उसमें बड़े-बड़े मगरमच्छ और मगर आदि है जल पक्षी घूम रहे हैं और चक्कर लगा रहे हैं।

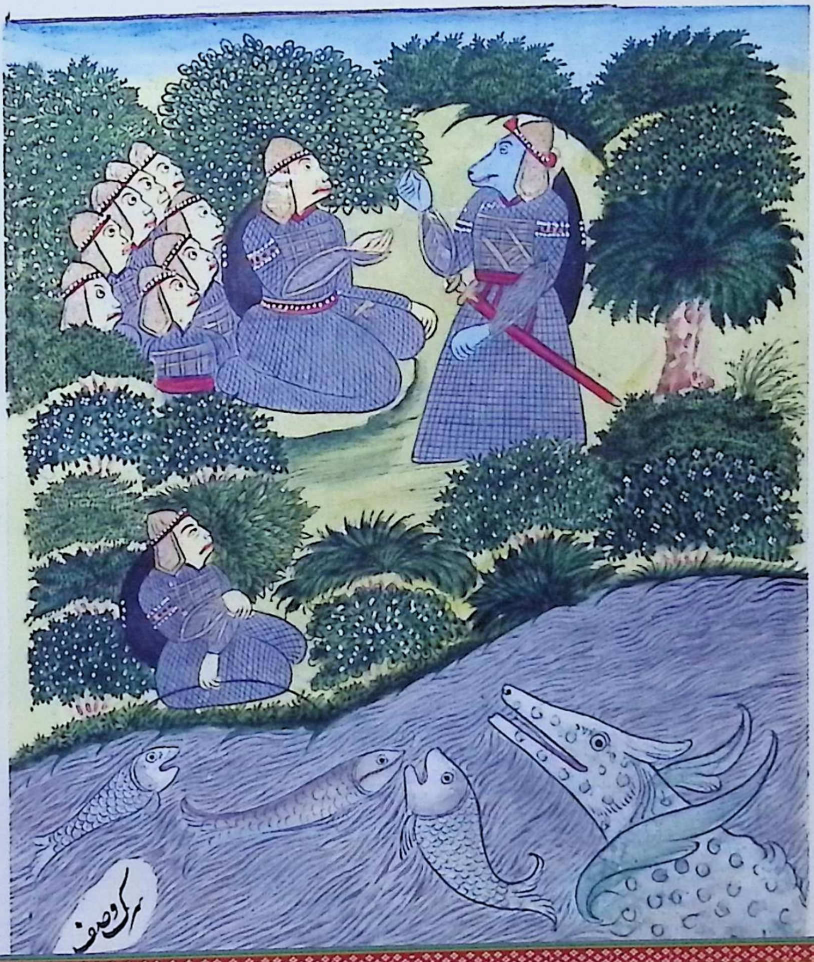

برک وصف هنومان جانبوان هزاران بوزنه ها را نظر کرده به هنومان گفت سردار جمیع
بوزنه ها و دانند دهرم و اره که هنومان هست چرا سخن نمیگوید و آن سرور بوزنه ها نظیر
سکریو هست و از قوت و شوکت مثل رام و لچهمن هست و پسر ارشت نمی که راست در همه
طیور سردار مشهور هست من بسیار دیده ام که از سمدر مارها گرفته بهوا میپرد و آنقدار زور که
در بال اوست در بازوی هنومان هست ای هنومان در تو قوت و شوکت و استعداد
همه هست تو خود را چرا نمیفهمی و تو از باد پیدا شده و آنچنا نست که پوندک استهلا نام اپسرا
مشهور بود از سبب شاپ وجود ماده بوزنه یافت و انجنی نام شد که عورت کیسری نام بوزنه
گشت و آن انجنی دختر کنجر نام بوزنه هست که بعد آخر گشتن شاپ باز عورت شده برکو
رفت وقتی در هنگامیکه ماده بوزنه بود صورت آدمی شده بر کوه میگذشت و پیرایه
خوب داشت و پارچه های نغز زرد پوشیده بود که بر کوه بالا بر آمد ناگاه باد او را نظر کرد
دید پستان نو خاسته و بینی خوب و خوش رو و تن نیکو و ریاضت کش هست ناگاه
باد را شهوه غالب شد هر دو دست او را بگرفت و گفت برت ایک پتی یعنی سوای
یک عورت با کسی صحبت نکند این برت که دور خواهد کرد و ترا هیچ نمیگویم تو از من مترس
با من صحبت بکن ترا پسری قوتمند پیدا خواهد شد و کیسری شهرت یابد و بقوت مانند من شود
بنابران ای هنومان تو پسر کیسری از باد پیدا شده وقتی تو طفل بودی و آفتاب بر آمد تو

सर्ग-१२६

हनुमान के गुण

जाम्बवान ने हज़ारों वानरों की ओर दृष्टि डालते हुए हनुमान से कहा; ''समस्त वानरों के सरदार और धर्म और अर्थ जानने वाले हनुमान कुछ बोलते क्यों नहीं ?यह वानरों के सरदार सुग्रीव का दूसरा रूप है और शक्ति में राम और लक्ष्मण जैसे हैं और अरिष्टनेमि का पुत्र गरुड़ सारे पक्षियों में सरदार प्रसिद्ध है। मैंने कई बार देखा है कि वह समुन्द्र से साँप पकड़कर हवा में उड़ जाता है। जितना बल उसके उड़ान में है उतना ही हनुमान की भुजाओं में है। ऐ हनुमान ! आप में शक्ति सक्षमता और योग्यता सब कुछ है आप अपने को समझते क्यों नहीं ?और आप हवा से उत्पन्न होकर ऐसे प्रसिद्ध हैं जैसे कि पुंजिकस्थला नामी अप्सरा प्रसिद्ध थी। उसने अभिशाप के कारण एक बन्दरिया के अस्तित्व में आई और अंजना उसका नाम रखा। वह केसरी नामी वानर की पत्नी हुई। वह अंजना कुंजर नामी वानर की पुत्री है जो अभिशाप पूर्ण होने के बाद फिर से स्त्री बनकर स्वर्ग को चली गयी। एक बार जिस समय वह वानरी पुरुष का रूप अपनाकर पर्वत पर से जा रही थी, और अच्छे वस्त्र पहने हुए थी, पीले रंग के बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए थी, वह पर्वत के ऊपर आयी। अचानक वायु ने उसे देख लिया। उसने देखा कि उसके स्तन उठे हुए नाक सुन्दर, मुखड़ा आकर्षक और शरीर अच्छा और तपस्या करने वाला। अचानक वायु पर कामवासना का आधिपत्य हो गया। उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और कहा; स्त्री एक के अतिरिक्त और किसी के साथ संभोग नहीं करती है। लेकिन यह संभोग कौन दूर करेगा ?मैं तुझे कुछ नहीं कहता। तू मुझसे मत डर। मेरे साथ संभोग कर तेरे एक शक्तिशाली पुत्र उत्पन्न होगा और केसरी का पुत्र प्रसिद्ध होगा तथा शक्ति में मुझ जैसा होगा। इस कारण ऐ हनुमान! तुम केसरी के पुत्र हनुमान से उत्पन्न हुए हो। एक समय तुम बच्चे थे और सूर्य निकला तुमने खेल-खेल में

بطریق بازی برای گرفتن آسمان زغند زدی و همان روز قضارا راه یعنی راس آفتاب
گرفته بود یعنی کسوف شده بود از خوف تو راه آفتاب را گذاشته بگریخت و پیش اندر رفت
و اندر را بر فیل ایراوت سوار کرده همراه گرفته باز آمد اندر ترا بسمت فلک آمده دید
سلاح بجر بر تو رها کرد و تو سیصد جوجن بالا رفته بودی که او بجر زد و فرود افتادی
و از قله کوه هنو یعنی زیر زنخ تو بشکست لهذا نام تو هنومان شد هنو در شاستر زیر زنخ و مان
مقدار را گویند و هنون هست همین ایمعنی دارد و زنخ شکسته را هنونت گویند و باد بحالت
افتادن ترا دیده از هیجا خود را در کشید چنانچه دم همه جانداران بند شد بعد از ملن دیوتا
و کندهرپ و اسر برهما را پیشوا کرده نزد باد آمدند برهما بطریق بر گفت این هنومان پسر تو
ابد همه خواهد شد یعنی هیچ جاندار و هیچ استر این را نتواند کشت و قوتمند و تومند خواهد شد
لهذا تو فکر مکن که اینقدر بر از برهما یافته دیوتا و غیره و برهما و باد پدر تو بدستور معمول
بکار خود رفتند و تو هم مانند باد در رفتن هستی و زندگی ما همه اکنون در اختیار تست و تو
در قوت و شوکت مانند گرز هستی و من خود پیر شده ام و قوت زغند کم دارم از تو پناه میجویم
تو تهیه رفتن کن و هر که در شاستر و جوک و قوت و دیگر امور قابل شود او متحمل بار دیگران شود و اقربا
و برادران بدو التجا کنند گفته جانبوان را شنیده بوزنه های دیگر گفتند قوت و زور او در عبور سمندر بسیار
زیاده است تمام جهان میتواند گشت و ای هنومان سیتا که از دیر گم شده است نشان او پیدا نمو

उसको पकड़ने के लिए आकाश पर छलांग लगाई। संयोग से उसी दिन सूर्य को ग्रहण लगा था तुम्हारे भय से सूर्य ग्रहण को छोड़कर भाग गया। इन्द्र के पास गया और इन्द्र को एरावत हाथी पर सवार करके अपने साथ लेकर पुनः आया। इन्द्र ने तुमको आकाश की ओर आता देखकर तुम पर वज्र अस्त्र छोड़ और तुम अभी तीन हज़ार जोजन ऊपर गये ही थे कि उसने वज्र मारा और तुम नीचे आ गये और पर्वत की चोटी से टकराकर हनु अर्थात् तुम्हारी ठोढ़ी के नीचे का भाग टूट गया इसलिये तुम्हारा नाम हनुमान पड़ा। हनु शास्त्र में ठोढ़ी के निचले भाग को कहते हैं और मान का अर्थ माप के है और हनु मत के भी यही अर्थ हैं। और जिसकी ठोढ़ी टूटी हो उसे हनूनत कहते हैं। और वायु ने तुमको गिरने की दशा में देखकर समस्त स्थान से अपने को खींच लिया जिससे समस्त जीवधारियों की सांस रुक गयी। उसके बाद देवता गन्धर्व और असुर ब्रह्मा को अपना अगुवा बनाकर वायु के पास आए ब्रह्मा ने वचन देने के रूप में कहा। तुम्हारा यह पुत्र हनुमान अवध्य होगा अर्थात् उसे कोई जीवधारी और कोई अस्त्र मार नहीं सकेगा तथा यह शक्तिशाली और स्वस्थ होगा। अतः तुम चिन्ता मत करो। ब्रह्मा से इतना वचन पाकर देवता आदि ब्रह्मा और तुम्हारे पिता वायु सब यथावत अपने कार्य पर चले गये और तुम भी चलने में वायु के समान हो, अब हम सबका जीवन तुम्हारे हाथ में हैं। तुम शक्ति व भव्यता में करर के समान हो और मैं स्वयं बूढ़ा हो गया हूँ और छलांग लगाने की शक्ति कम रखता हूँ। मैं तुमसे विनती करता हूँ। तुम जाने का निश्चय कर लो। जो शास्त्र जोक, शक्ति और दूसरे कार्यों में योग्य होता है वह दूसरों के भार के योग्य होता है। सम्बन्धी और मित्र उस पर विश्वास करते हैं जाम्बवान की बात सुनकर वानरों ने कहा; समुन्द्र के पार करने में उसका बल और शक्ति बहुत अधिक है। यह सम्पूर्ण संसार के चारों ओर चक्कर लगा सकता है और ऐ हनुमान ! सीता जो काफी समय से खो गयी है तुम उनका

کن و کسان جش و پون تو در هر سه لوک خواهند گفت و این عبور سمدر عجب کاریست تو کیرت خود مشهور کن و از این کار رام همه بوزنه ها در تصدیع اند تو چه می بینی مثل بشن تریکرم تو زور بکن و تو مانند باد این راطی توانی کرد و جمیع بوزنه ها آرزوی دیدن زور تو دارند برخیز و عبور سمدر کن باد و هم مانند تو نتوانند رفت بعد از ان هنومان خود بلباس رفتن پرداخت و همه بوزنه ها را شاد ساخت

درینجا صورت کوه و نه بوزنه بدستور سابق بطرف بالا و در یک گوشه تنها هنومان نشسته و جانبوان دست بسته ایستاده سخن میگوید

و بطرف زیر صورت سمدر و جانوران آبی

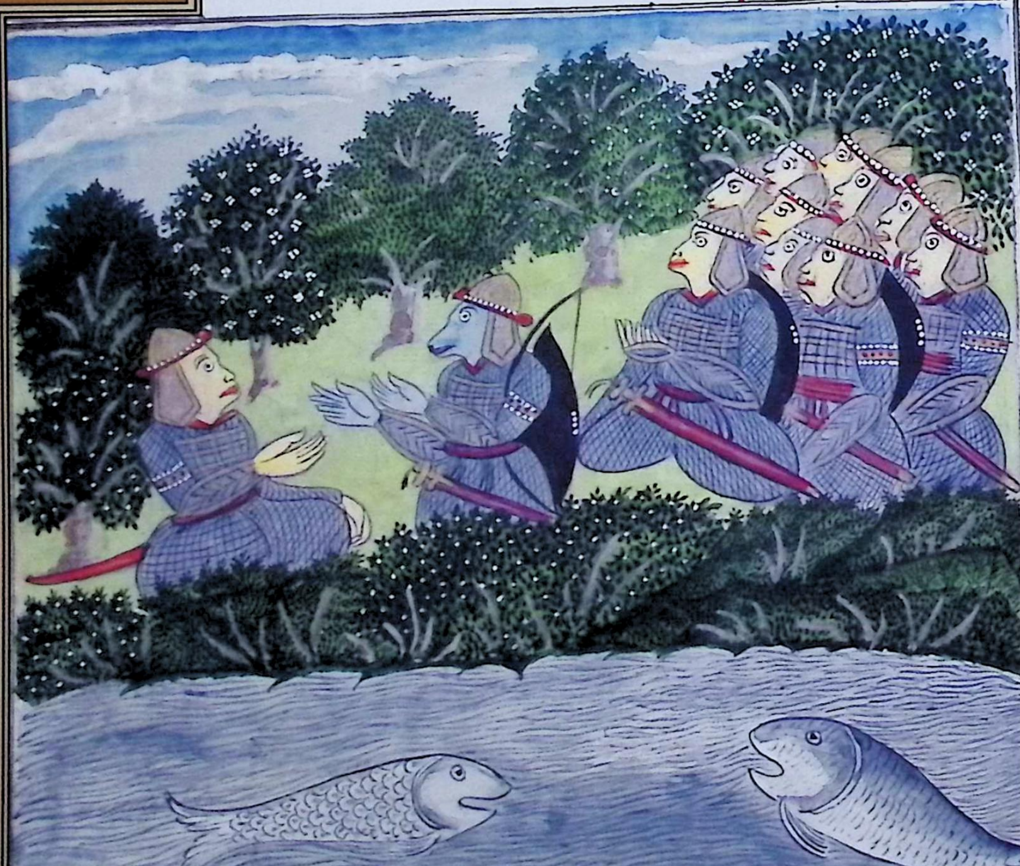

पता लगाओ और लोग तीनों लोक में तुम्हारी प्रशंसा करेंगे, प्रशंसनीय कविता पढ़ेंगे और समुन्द्र को पार करना आश्चर्य कार्य है। तुम अपना कीर्ति प्रसिद्ध करो और राम के इस कार्य के कारण से सारे वानर कष्ट में है। तुम क्या देखते हो विष्णु के समान बल लगाओ और तुम वायु के समान उसको पार कर सकते हो। सारे वानर तुम्हारी शक्ति को देखने की इच्छा रखते हैं। उठो और समुन्द्र पार करो। वायु भी तुम्हारे समान नहीं चल सकती। उसके बाद हनुमान ने जाने के कपड़े पहने और समस्त वानरों को प्रसन्न कर दिया।

पर्वत और यथावत् ऊपरकी ओर नौ वानरों का चित्र। एक कोने में हनुमान अकेले बैठे हैं और जाम्बवान हाथ जोड़कर खड़े होकर बातें कर रहे हैं तथा नीचे समुन्द्र और जल पशुओं का चित्र।

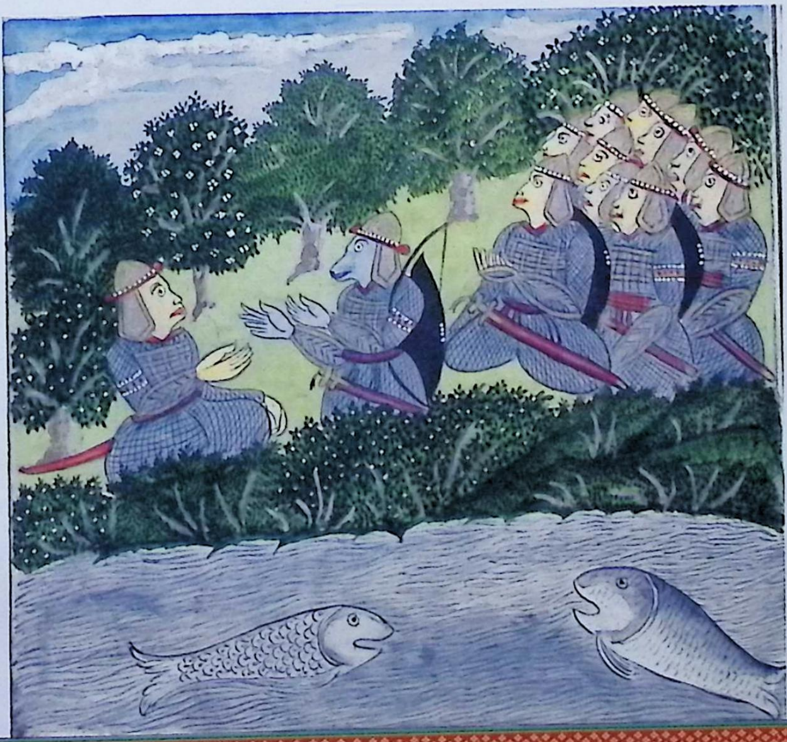

سرگ گفتار هنومان از استماع این ستایش هنومان قد خود کلان و دم و پای را
دراز کرده بطلعت خوب شد که روز پورنماسی یعنی شب چهاردهم سمدر در افزایش باشد
و مانند آفتاب و آتش بیدود نمود آمد از خوشوقتی مو بر تن او خاست و از میان
بوزنه ها برخاسته همه را نمسکار کرده گفت من این صد جوجن را برائی خاطر بوزنه ها
صد بار عبور توانم نمود میروم کار کرده می آیم زور و قوت من و پدر من که باد بود
همه بشنوید که برائی خوشی خاطر شما میگویم نه بطریق عجابات و غیره میگویم این کیسری
بوزنه که پدر منست تولد من بنوعیکه در خانه او شد بشنوید بسمت پچهم سمدر پربهاس نام
تیرتهه ست آنجا سنکهه سبل نام فیلی بود هرگاه رکهه برائی غسل میرفتند آنها را می گشت
وقتی بهردواج رکهه غسل نموده میرفت که آن فیل تعاقب او نمود ناگاه کیسری پدر من
که بر کوه نشسته اینحالت دید شور نموده زغند زده بر پشت او رسیده از ناخن
و دندان آنرا مجروح کرد و از دهن او هر دو دندان برکشید درخت شال از
بیخ برکنده تمام وجود فیل را بشکست بعد کشتن او پدر من همراه بهردواج بخانه آمد
و او با دیگر رکهیشران کیفیت قتل فیل بیان کرد و گفت که این کیسری بوزنه را
بر دهید رکهیشران پدر مرا بر گرفتن گفتند پدر من گفت میخواهم که پسری شود بقوت
مانند باد و کامروپ یعنی بهر صورت شونده رکهیشران گفتند اینچنین باد ناگاه وقتی

सर्ग १२७

हनुमान की वार्ता

यह प्रशंसा सुनकर हनुमान ने अपना कद बड़ा और अपनी दुम तथा पाँव को लम्बा किया और ऐसा सुन्दर रूप अपनाया जैसे कि चौदहवीं रात में समुन्द्र बहाव पर आता है। सूर्य और बिना धुएँ की अग्नि के समान प्रकट हुए प्रसन्नता से उसके शरीर के बाल खड़े हो गये। और वानरों के मध्य से उठकर सबको नमस्कार करते हुए उन्होंने कहा; मैं इस सौ जोजन को वानरों के लिए सौ बार पा सकता हूँ मैं जा रहा हूँ और कार्य करके आऊँगा। मेरा बल और शक्ति और मेरे पिता वायु की शक्ति सुनो जो मैं तुम्हारी प्रसन्नता के लिए बता रहा हूँ न कि चमत्कार आदि के रूप में वर्णन करता हूँ। यह केसरी वानर जो मेरा पिता है मेरा जन्म उसके घर कैसे हुआ वह सुनो। समुन्द्र के पश्चिम की ओर बहास नामी तीर्थ है वहाँ संख नील नामी एक हाथी था। जब ऋषि लोग स्नान के लिये जाते तो वह उन्हें मार डालता था। एक बार भरद्वाज ऋषि स्नान करके जा रहे थे कि उस हाथी ने उनका पीछा किया। अचानक मेरे पिता केसरी जो पर्वत पर बैठे यह सब देख रहे थे छलांग मारकर उसकी पीठ पर बैठ गये। अपने नाखून और दाँतों से उसे घायल कर दिया और उसके मुख से दोनों दाँत उखाड़ लिये तथा एक शाल का वृक्ष जड़ से उखाड़कर हाथी के सम्पूर्ण शरीर को उससे कुचल डाला। उसको मारने के बाद मेरे पिता भरद्वाज के साथ घर आये उसने दूसरे ऋषीश्वरों से हाथी को मारने का वर्णन किया और कहा कि इस केसरी वानर को वचन दो। मेरे पिता से वचन लेने के लिए कहा। मेरे पिता ने कहा ‘‘मैं चाहता हूँ कि मेरे एक ऐसा पुत्र हो जो शक्ति में वायु के समान हो और प्रत्येक रूप बदलने वाला हो।’’ एक बार संयोग से

مادر من آنجنی که دختر کنجر بوزنه است در عین جوانی برکوه ملیه میکشت قضارا در ساکر
از سر غسل نمود موی سر را پریشان ساخته برکوه استاده خشک میکرد باد اورا در
کمال حسن وخوبی وعین جوانی نظر کرده دست بسته گفت من باد هستم و پران همه
ذیحیات منم مغلوب شهوتم با من یکجا شو واز صحبت من ترا هیچ گناه نخواهد شد
بعد ازان من از باد وانجنی پیدا شده ام پسر بادم ومثل من کسی بر رفتن نیست
هزاران میتوانم که برکوه سمیر رسم واز جایی که خورشید طلوع میکند وآنجا که غروب میشود
به تک زدن بروم واز دچهن باوتر بجودک برسم همچنین تمام زمین بازکشته
بیایم وبجایی که کرر بر فلک میپرد هزاران بار بروم ومیتوانم که کوه ها بکنم وبر فلک زنم
وبر زمین بفکنم ومیتوانم که از موج آب سمدر لوکهار با کوه وصحرا غرق کنم وساکر را
برهم زنم وزمین بدرم وکوهها را بر افکنم واز زور زانو ودست سمدر را عبور میکنم
وآسمان مرا در دست خود آویخته بنظر می آید هنگام زغند ابرها را خواهم درید
وکوهها را خواهم لرزانید وسیتا را پیش رام ولچهمن در رکهه موک می آرم چنانچه
کرر مار را از ساکر بر آرد شما همه بوزنه ها همین جا منتظر من باشید ومن این صد
جوجن سمدر را عبور میکنم در چنین رفتن یا کرر را یا باد را یا مرا قوت هست وسوای
این هردو دردکر نمی بینم که با من برسد در یک چشم زدن در تمام فلک بگذرم چنانچه

मेरी माँ अंजना जो कुञ्जर वानर की पुत्री है युवावस्था में मलय पर्वत पर घूम रही थी। भाग्य की बात कि समुन्द्र में सिर से स्नान करके भीगे बालों को बिखेर कर पर्वत पर खड़ी सुखा रही थी। वायु ने उसे सम्पूर्ण सुंदरता और यौवन में देखकर हाथ जोड़कर कहा; मैं वायु हूँ और समस्त जीवधारियों के प्राण में हूँ मुझ पर इस समय कामवासना का प्रभुत्व है। मेरे साथ मिल जा और मेरे साथ सम्पर्क करने से तुम्हें कोई पाप नहीं होगा। उसके बाद मैं वायु और अंजना से उत्पन्न हुआ हूँ। मैं वायु का पुत्र हूँ और चलने में कोई मेरे समान नहीं है। मैं हजार बार उसकी शक्ति रखता हूँ कि समीर पर्वत पर जाऊँ और जहाँ से सूर्य उदय होता है और जहाँ अस्त होता है वहाँ एक छलांग में पहुँच जाऊँ। इसी प्रकार सम्पूर्ण संसार घूमकर आ सकता हूँ और आकाश पर जहाँ गरूड़ उड़ता है मैं वहां हजारों बार जा सकता हूँ। पर्वतों को उखाड़कर आकाश पर ले जा सकता हूँ और धरती पर डाल सकता हूँ। मेरे अंदर वह शक्ति है कि समुन्द्र के पानी की लहरों से मैं पर्वत और वन को डुबों दूँ तथा समुद्र को नष्ट कर दूँ। धरती को फाड़ दूं और पर्वतों को उखाड़ दूँ तथा मैं अपनी जांघों और हाथ की शक्ति से समुन्द्र पार कर सकता हूँ और आकाश मुझको अपने हाथ में लटका हुआ दिखाई देता है। मैं छलांग लगाने के समय बादलों को फाड़ दूंगा और पर्वतों को हिला डालूंगा तथा सीता को राम और लक्ष्मण के सामने ऋष्यमूक में लाऊँगा जैसे कि गरूड़ सांप को समुन्द्र से लाता है। तुम सारे वानर इसी स्थान पर मेरी प्रतीक्षा करो। मैं इस सौ जोजन समुन्द्र को पार करता हूँ। इस प्रकार चलने की शक्ति या तो गरुड़ है या वायु को या फिर मुझको और इन दो के अतिरिक्त मैं और किसी में यह शक्ति नहीं देखता हूँ कि वह मुझ तक पहुँचे। मैं पल भर में पूरे आकाश से इस प्रकार जा सकता हूँ

برق بگذرد و شکل من در عبور ساگر مثل ترشن زبکرم بقوت خواهد شد چنانچه روشنی
از ماه برود و شعاع از آفتاب دور شود همچنین لنکا را خراب سیکنم چون هنومان چنان
برزبان راند همه بوزنه ها گفتند تو پسر باد هستی و کمال تصدیع همچنان خود
د در کردی برای خیریت تو بوزنه ها منگل میکنند یعنی کلمات نیک میگویند از مهربانی
راجه بوزنه ها و شفقت کرد یعنی استاده سمدر را عبور کن ما همه منتظر یکپا ایستاده ایم
و جان ما یان همراه تست چون این سخن بشنید هنومان بوزنه ها را نمسکار کرده بخوشوقتی
هر طرف نظر برگماشت و شتاب برخاست و گفت در لنکا رسیدن و برگردید می آیم
سیتا را در کنار گرفته و راون را بسته می آرم اینقدر گفته از بوزنه ها مشورت گرفته
برای زغند زدن بکوه برآمد و دل را برقرار کرده از راه دل خود را بلنکا رسانید
سرگ دعائیه بعد از آن بوزنه ها خوشوقت گشته فنون هنومان را بیان کرده اشیرباد
یعنی دعائیه سرکردند از شوکتی که در جنگ دیوتا و دیت اندر سر آمد شد همچنان تو شوی
و چنانچه ترشن بسبه قدم زمین ورنوشت تو نیز آنچنان باشی و چنانچه جوکیان هنگام جنگ
اندر را منگل کردند همچنان ترا شود و هنگام گشتن زیور دیت دولتی که شنکر را رسیده ترا رساد
و مروت را هنگام معرکه منگلها یعنی دعاها که شده بود ترا همراه باد و زوریکه اشونی کمار
و آفتاب دارند بآن زور تو دریا را عبور کنی و چنانچه دیوتا و دانوا در که و بشاخ ورا جهسر

وماه ونهم

जैसे बिजली चमकती है और मुझ जैसा समुन्द्र पार करने में शक्ति में विष्णु के समान होगा। जिस प्रकार चांद से प्रकाश चला जाता है और सूर्य से किरणें दूर हो जाती है उसी प्रकार मैं लंका को नष्ट कर दूंगा। जब हनुमान ने यह बात कही तो सारे वानरों ने कहा; तुम पवन पुत्र हो और तुमने अपनी जाति के समस्त कष्ट दूर कर दिये। तुम्हारी कुशलता के लिए वानर मंगल कहते हैं। वानरों के राजा की दया और अपने गुरु के आशीर्वाद से समुन्द्र पार करो। हम सब प्रतीक्षा में एक पांव पर खड़े हैं और हम सबके प्राण तुम्हारे साथ हैं। जब यह बात सुनी तो हनुमान ने वानरों को नमस्कार करते हुए प्रसन्नता से चारों ओर दृष्टि डाली और शीघ्र उठ गये और कहा मैं लंका में पहुंचकर शीघ्र वापस आऊँगा और सीता को बगल में लेकर रावण को बांधकर लाऊँगा। यह कहकर वानरों से परामर्श लेते हुए छलांग मारने के लिये वह पर्वत के ऊपर आये और दिल को एकाग्र करके हृदय के द्वार से स्वयं को लंका में पहुँचा दिया।

सर्ग-१२८

आशीर्वाद

इसके बाद उन वानरों ने प्रसन्न होकर हनुमान के चमत्कारों का वर्णन किया एवं उसे आशीर्वाद दिया कि उस भव्य के कारण जिससे देवता और दैत्य के युद्ध में इन्द्र की विजय हुई थी। उसी प्रकार तुमको भी विजय हो और जिस प्रकार विष्णु ने तीन पग में पूरी धरती नाप ली उसी प्रकार तुम भी वहाँ पहुँचो। जिस प्रकार जोगियों ने युद्ध के समय इन्द्र को आशीर्वाद दिया उसी प्रकार तुमको भी प्राप्ति हो और त्रिवर दैत्य की हत्या करते समय जो धन शंकर को पहुँचा था वह तुम्हें पहुँचे। युद्ध के समय मरदत का आशीर्वाद तुम्हारे साथ रहे और वायु तुम्हारे साथ रहे। जो शक्ति अश्वनी कुमार और सूर्य रखते हैं उसी बल से तुम समुन्द्र को पार करो। जिस प्रकार देवता, दानव, ऋषि, पिशाच राक्षस

ماه و مهر در هوا میروند همچنان تو بروي بدینگونه هنومان را بوزنه ها اشیرباد

داوند چنانچه با من از رکهه ها در جگ ستوده شده بود همچنان از بوزنه ها

هنومان ستوده شد در پنجانه بوزنه ند ستوار استاده و انگد و جانبوان برابر استاده

و هنومان بقد کلان پشم دار و پا دراز بصورت مهر و ماه همه را نمسکار میکند و همه او را دعا میکنند

و صورت سمدر متواج و جانوران آب

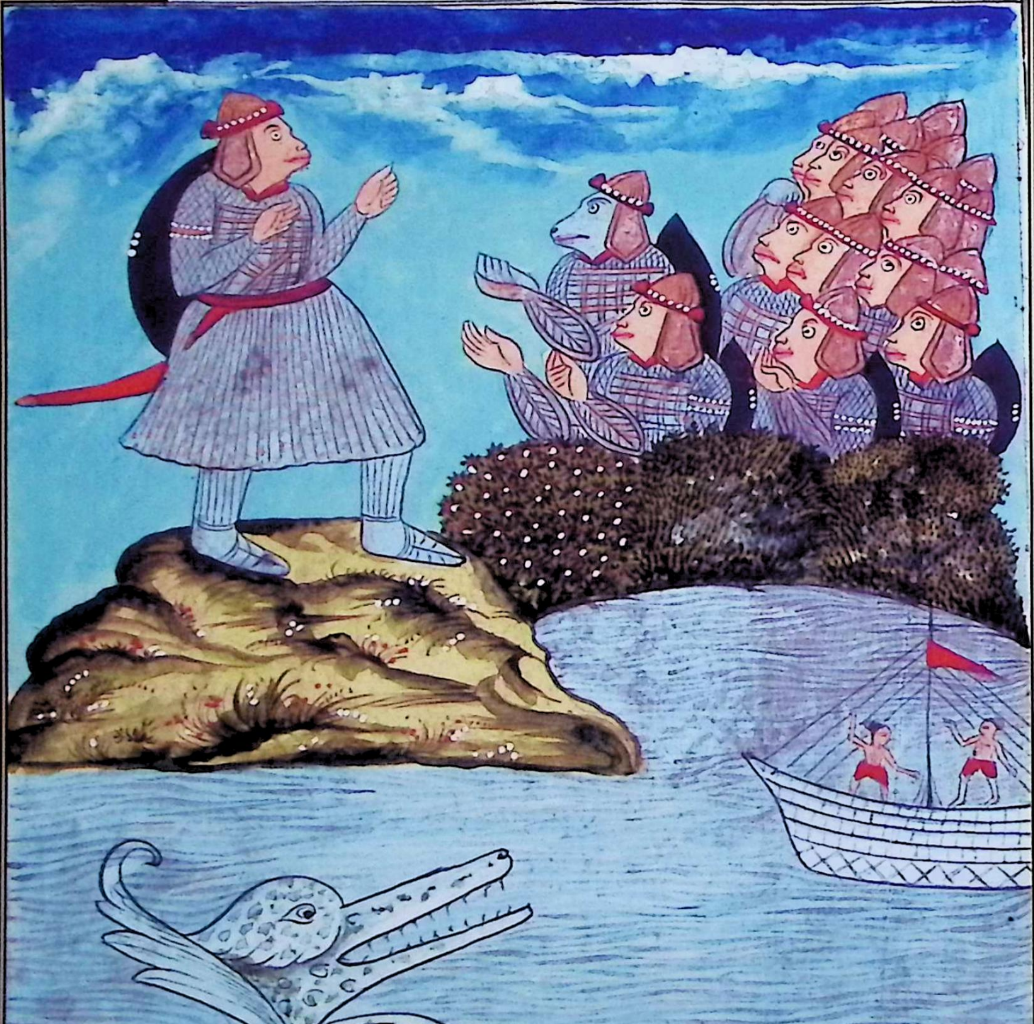

और सूर्य चांद हवा में चलते हैं उसी प्रकार तुम चलो। इस प्रकार वानरों ने हनुमान को आशीर्वाद दिया और जिस प्रकार बामन के ऋषि की ओर से जग की प्रशंसा हुई थी उसी प्रकार वानरों की ओर से हनुमान की प्रशंसा हुई।

वानर यथावत खड़े हैं, और अगंद और जाम्बबान साथ खड़े हैं और हनुमान लम्बे कद और लंबे पांव के साथ सूर्य, चन्द्रमा की तरह सबको नमस्कार कर रहे हैं। सब आशीर्वाद दे रहे हैं और लहरे मारते हुए समुन्द्र और जल पक्षियों का चित्र।

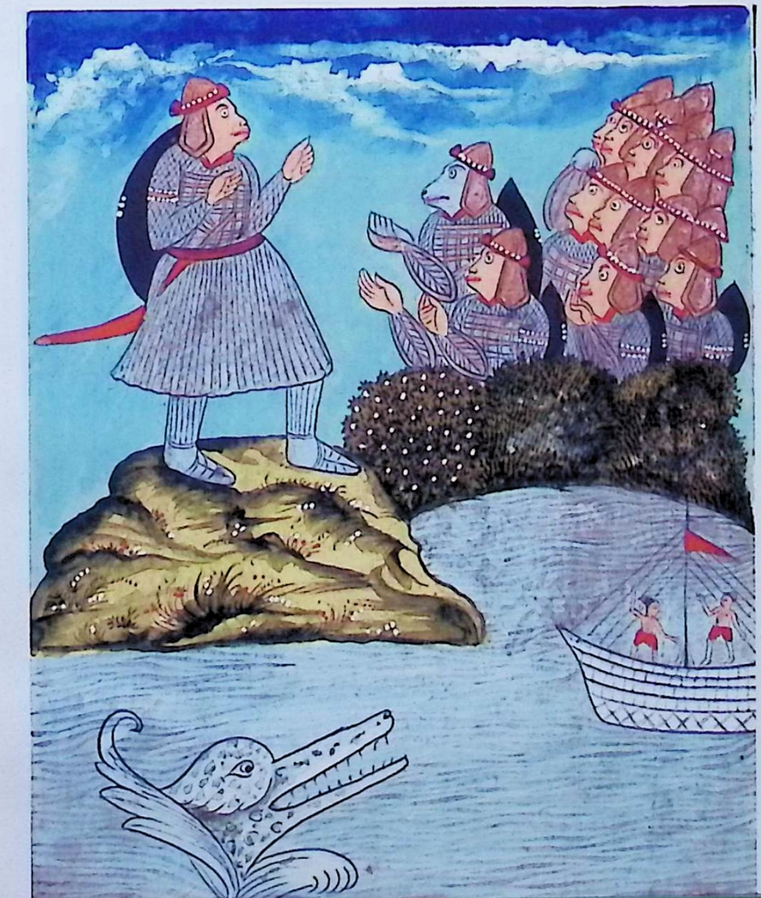

سرگ دواع بعد ازان هنومان بهمه بوزنه ها گفت این کوه دور مرا نتواند برداشت
بالای قله این کوه می برآیم اگرچه از اقدام من سوده خواهد شد هنومان چون
چنان بر زبان راند همه بوزنه ها اورا نمسکار کردند چنانچه اندر را دیوتا کنند
و مالاهای گلها در گردن او انداختند و هنومان با آنهمه بوزنه ها برآمد دید که خوان
درخت دارد و سار و دول و آهوان هستند و لیوران مست جمع اند و قله ها بلند
دارد و هنومان چنان بر کوه نمودار گشت که کوه دوم بر کوه برآید بعد ازان هنومان
ساگر را نظر کرد که نکرو مارها دارد و از آب در غرش است و او مانند ترکرم گشتن گرفته بجا
تمام زمین را بگیرد بر کوه برایستاد و قدری در سبزه و آب آنجا گردش نمود طیوران
ترسیدند و آهوان رمیدند و کوه را از دهات ها که اصلی پیوسته اند آراسته یافت
هنومان بر آن کوه ایستاد و اندر و آفتاب و برهما را نمسکار کرد و انجلی یعنی دست بستن
رو بروی همجنسان خود نمود و دل او در رامچندر و لچهمن به بست و ساگر را نمسکار
نمود ابنای جنس و ذات خود را تسلی کرده پردچهنا نمود و گفت که همین جا باشید و چنانچه
تیر رام میرود همچنان ملک لنکا شهر راون خواهم رفت و اگر آنجا سیتا را نمی یابم
بهمین سرعت بدیولوک میروم و اگر آنجا هم سیتا را نمی بینم راون را بسته می آرم
بهر نوع کار میکنم یا تمام شهر لنکا را از بیخ برکنده معه راون می آرم دریغا

صورت

सर्ग-१२९

विदाई

उसके बाद हनुमान ने समस्त वानरों से कहा, यह पर्वत मेरा भार नहीं उठा सकता है। मैं उस पर्वत की चोटी पर आता हूँ यद्यपि मेरे चरणों से वह काला हो जायेगा। हनुमान ने जैसे ही यह बात कही समस्त वानरों ने उसे नमस्कार किया जैसे कि इन्द्र को देवता नमस्कार करते हैं। उसके गले में फूलों की माला डाली और हनुमान उन समस्त वानरों के साथ बाहर आये। देखा कि उस पर्वत पर विभिन्न प्रकार के वृक्ष हैं, शार्दूल, हिरन और मस्त पक्षी एकत्र हैं। ऊँची-ऊँची चोटियां। हनुमान उस पर्वत पर ऐसे प्रकट हुए जैसे कि दूसरा पर्वत उस पर्वत पर आ गया हो। उसके बाद हनुमान ने समुद्र को देखा कि उसमें मगरमच्छ और सांप हैं तथा जल से भरा हुआ है। वह विष्णु के समान है जो समस्त धरती को अपनी गोद में ले लेता है और पर्वत पर खड़े हो गये तथा वहाँ थोड़ा पानी और हरियाली भी थी। पक्षी सब डर गये, हिरन भाग गये और पर्वत जो असली धातुओं से भरा था उसे सुसज्जित पाया। हनुमान उस पर्वत पर खड़े हो गये और इन्द्र, सूर्य तथा ब्रह्मा को नमस्कार किया, अंजलि किया अर्थात् हाथ बांधकर हृदय में राम और लक्ष्मण का स्मरण किया तथा समुन्द्र को नमस्कार किया और अपने तन मन धन से स्वयं सांत्वना देते हुए परिक्रमा किया और कहा ''तुम लोग यहीं रहो और जिस प्रकार राम का बाण जाता है उसी प्रकार मैं रावण के शहर लंका में जाऊँगा और यदि सीता को वहां नहीं पाऊँगा तो रावण को बांधकर लाऊँगा। अन्ततः किसी न किसी प्रकार कार्य करूंगा या सम्पूर्ण लंका शहर को जड़ से उखाड़कर रावण सहित लाऊँगा।''

صورت انگد و غیره نه بوزنه و دهم جانبوان که مالا گلها در دست دارند بعضی
در گلوئی هنومان انداخته اند و بعضی می اندازند و بعضی نمسکار میکنند
و هنومان بر قله کوه مالای در گلو مستعد استاده و صورت سمدر ناپیدا کنار

و مگر و ماهی و کشف و کاه و مار بسیار

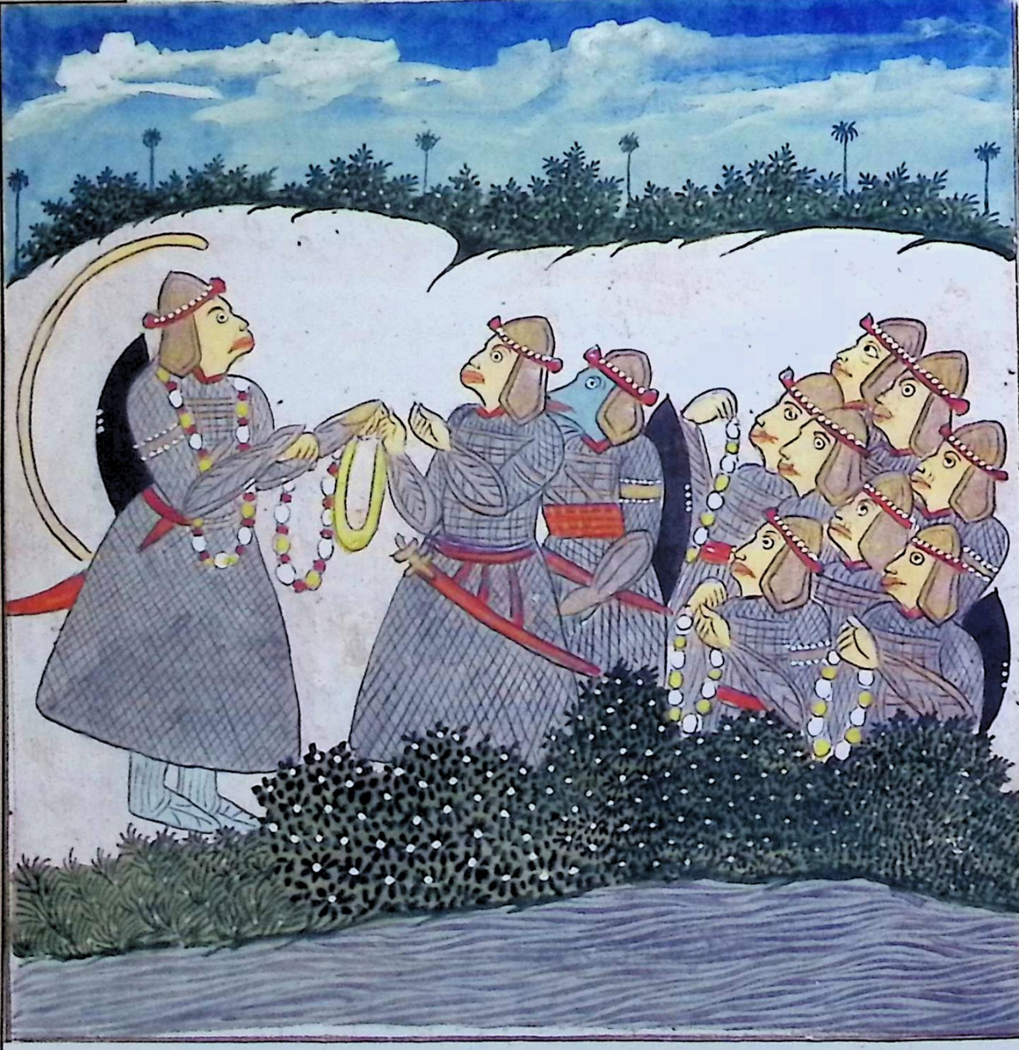

अंगद आदि नौ वानरों का चित्र और जाम्बवान का जो सबके सब हाथों में फूलों के हार लिये हुए है कुछ हनुमान के गले में डाल चुके हैं और कुछ डाल रहे हैं। कुछ नमस्कार कर रहे हैं और हनुमान पर्वत की चोटी पर माला गले में डाले तैयार खड़े हैं। अथाह समुन्द्र और घड़ियाल तथा मछलियों का चित्र जहां घास और सांप बहुत हैं।

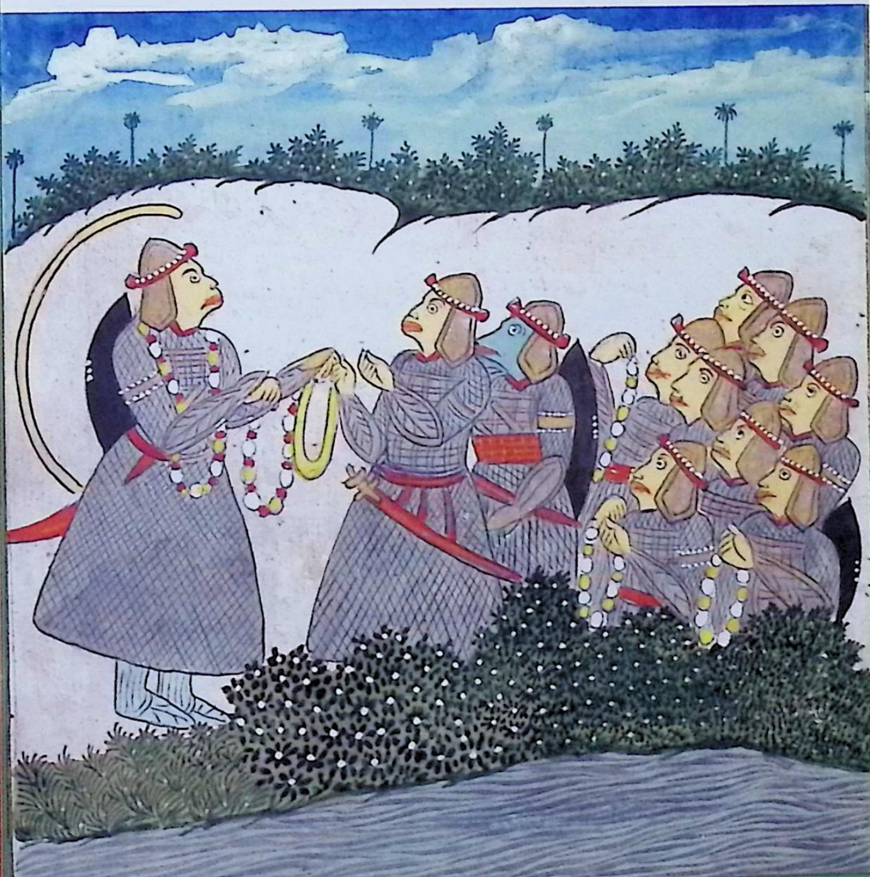

هرگز عند زدن این بگفت و سمت دچهن رو در افزایش آورد و از خرمی بهوا
برآوردن عزم کرد از دست و پا کوه را بفشرد چنانچه کوه در لرزه آمد و شیران و غیر آن
بگریختن درآمدند و عرقهای رنگارنگ بچکیدن درآمد درختان و طیوران و سنگها سنگ
بافتادن درآمدند و از آن شور دریای شور به برهم شدن درآمد ماران زهردار از زیر
برآمدند و از انفاس آنها آتش باد و در روشن شد و ماران بزهر خود سنگها را زخم
میزدند که هزار پاره میشد و ادویه که در کوه بود از آن زهرهای آنها بعضی جا کارگر نمیشد
و با چیدن و عرقها و زرها آب آلوده بر می آمد و بعضی ماران کلان زهر قی میکردند و در
چشمهای آب می افتاد و آب هم جا بجا از کوه روان شدن گرفت و از سرهای کوه بعضی جا
گوناگون مالا بنظر می آمد و بعضی قطرات آب مانند مروارید بنظر مینمود قلههای کوه که
بر و ستده و چارن و کنر اقامت میداشتند بلرزیدند و گلهایی که از درختان بر افتادند
تمام کوه پر از گل گشت و هر سو جانداران شورها نموده بغارها در رفتند زمین و غارها
بلرزش آمدند و بیدیادهر و غیره ازین خوف که این کوه میدرد بفلک رفتند و اشربه و اطعمه
ظروف طلا و نقره و مالا و غیره همه بگذاشتند و سپرها و شمشیرها ترک دادند و
و نو پرو کبوتر یعنی باز و بند و غیره عورات برگذاشتند و دیوتا و غیره از آسمان تماشا نموده
حیران ماندند و رکهبها و غیره با یکدیگر میگفتند اینک هنومان اراده عبور سمندر دارد

सर्ग-१३०

छलांग मारना

हनुमान ने यह कहते हुए दक्षिण की ओर मुंह बढ़ाया और प्रसन्नता से हवा में उड़ने का निश्चय किया। अपने हाथ पांव पर्वत पर रगड़े जिससे पर्वत हिलने लगा और उस पर रहने वाले शेर आदि भाग खड़े हुए। विभिन्न प्रकार के अरक़ टपके, वृक्ष, पक्षी और संख गिर गये और इसके शोर से समुन्द्र में भूचाल आ गया। पत्थरों के नीचे से विषैले सांप निकल आये और उनकी फुंकों से धुएं वाली आग जल गयी और सर्प अपने विष से संखों को घायल कर रहे थे जिनके हजारों टुकड़े हो जाते थे। जो औषधियां पर्वतों पर थीं वह उनके विष से कुछ स्थान पर लाभदायक नहीं सिद्ध होती थीं। चन्दन, अर्क और सोने के साथ गंदा पानी निकलता था। बड़े-बड़े सांप विष की उल्टी करते थे और पानी की लहरों में डाल देते थे तथा पानी भी पर्वत के स्थान से निकलना आरंभ हो गया और सरमू के कारण कुछ स्थानों पर विभिन्न प्रकार की माला दिखाई दे रही थी। पानी की कुछ बूंदें मुक्तामणि के समान दिखाई देते थे और पर्वत की चोटियों जिन पर सिद्ध चारण और किन्नर का निवास था हिलने लगी। वृक्षों से गिरने वाले फूलों के कारण से पूरा पर्वत फूलों से भर गया और जीवधारी चारों ओर कोलाहल करते हुए गुफाओं में छुप रहे थे। धरती और गुफा भी हिलने लगी ओर वैद या दहर आदि इस भय से कि पर्वत फट रहा है आकाश पर चले गये और खाने-पीने की वस्तुएं, सोने चांदी के बर्तन और माला आदि सब छोड़ गये तथा ढालें और तलवार भी छोड़ गये। स्त्रियों ने अपनी माला, भुजा पर पहनने वाले आभूषण और अन्य आभूषण छोड़ दिये।

و برای کار نمودن رام و خراب کردن راون آنطرف سمدر میرود همه دیوتا و رکهه
و دیگران این تماشا ملاحظه میکردند بعد ازان هنومان شور بلند مانند ابر نمود و دم
پشم دار بر داشت و بر افکند چنانچه گر مار کلان را بر گرداند و پای ها مانند شنکو که چوب همواران
سایه پیدا شد نموده هر دم دست بر آن گذاشت و بازوان نخود در کشید و همچنین
کلو را جمع گردانید و از زور و قوت و شکوه بهوا در آمد و مانند گرز روان شد و گوشها
نخود کشیده در جود ک شد و مانند روان شد گلهای درختان که از باد بر وجود او
می افتاد چنان مینمود که گویا فلک از انجم آراسته است و دست و پا و روی او چنان
مینمود که از کوه مار پنج سر ها بیرون کشد و چنان از شکوه بنظر می آمد که سمدر را خواهد نوشید
یا فلک را خواهد درید و هر دو چشم در جسم کلانش بوضعی که آتش در کوه باشد و یا هر دو چشم زرد او
در وجود زردش چنان مینمود که شنیچر و بده یعنی زحل و عطارد بر آسمان بود و روی
سرخ با دهن و بینی سرخ برنگ آفتاب قریب غروب مینمود و ذنب یعنی دم مثل
دهوجا اندر بلند دیده میشد وقتیکه دم را گرد میگرداند مانند خورشید پرکار نشان
معلوم میشد و از زور رفتن باد هر سو چون رعد می غرید و او چون گرز که فیل و کشف را
ببرد میرفت و بسبب سایه کالبد خود که در آب می افتاد مانند کشتی نشین نمایان میشد
و هر جا که بسمدر رسید از باد وجود خود موج شکن گردید و از زور او سمدر میلرزید

रावण की हत्या करने के लिये समुन्द्र के उस ओर जा रहा है और समस्त देवता, ऋषि और दूसरों ने यह दृश्य देखा। उसके बाद हनुमान ने बादल के समान शोर किया और अपनी दुम उठाने और गिराने लगे जिस प्रकार गरुड़ बड़े-बड़े सांपों को घुमाता है और शंकु अर्थात् साया नापने की लकड़ी के समान अपने पांव उठाकर उस पर अपना हाथ रख लिया और भुजाएं समेट लीं, इसी प्रकार गले को भी समेटा और सम्पूर्ण शक्ति तथा भव्यता के साथ वातावरण में आया, और गरूड़ के समान उड़ने लगा। वृक्षों के फूल जो वायु से उसके शरीर पर गिर रहे थे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानों आकाश सितारों से सजा हुआ है। उसका हाथ, पांव और मुख ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पांच सिरों वाला सर्प पर्वत से सिर निकालता है। वह ऊँचाई पर ऐसा दिखाई दे रहा था मानों समुन्द्र को पी जायेगा या आकाश फाड़ देगा। उसके ऊँचे शरीर में उसकी दोनों आंखें ऐसी लग रही थी जैसे कि पर्वत पर आग जल रही हो या उसकी दोनों पीली आंखें उसके पीले अस्तित्व पर ऐसी दिखाई देती थी जैसे कि चन्द्रमा और सूर्य आकाश पर होते हैं। लाल मुंह और नाक के साथ उसका लाल मुखड़ा ऐसा लग रहा था जैसे कि सूर्य अस्त के निकट सूर्य का रंग होता है। दुम अन्दर के ज्ञान के समान श्रेष्ठ दिखाई देती थी जिस समय वह अपनी दुम घुमाता तो सूर्य के समान चमकती हुई लगती थी। उसके चलने से वायु चारों ओर बिजली की भांति कड़क रही थी। वह गरुड़ के समान जो हाथी और कच्छप को ले जाता है चल रहा था। अपने शरीर की छाया के कारण जो पानी पर पड़ रहा था नाव में बैठे व्यक्ति की भांति लग रहा था। जहां वह समुन्द्र में पहुंचता है अपने शरीर की वायु के कारण समुन्द्र की लहरों को तोड़ने वाला बन जाता था और उसके बल से समुन्द्र कांपता था

था

وازامواج او که مانند سمیر و مندر بود عبور کرد و از سایهٔ او که در آب می افتاد تمدها
و ملچی و غیره جانداران آبی از خوف میگریختند و او در هوا چون کوه پرواز بنظر می آمد
و بهر جا که میگذشت از زور تکو داو در آب چاه طوری میگشت و جابجا در هوا ابرها متفرق
میگردد و از آن سفید و سرخ و نیله و دیگران ابرها نمودار میگردید دیوتا انقدر کار او دید
کلها باریدند و آفتاب هم برای راحت او تپش خود کم کرد و باد خنک وزیدن گرفت زیراکه
برای کار رام میرفت و رکهه بر فلک رحمت کنان گشتند و ماران و چچهها و سپرمان یعنی
اولاد کدرو راچهسان و طیوران و دیوتا تماشا میکردند همین سمدر که ساگر است برای اعزاز
و اکرام اولاد اچهواکو در خاطر تردد نمود که مرا راجه سگر که از اولاد اچهواکو بود افزایش
درجه نمود یعنی اولاد او کنده ساگر نام کردند و این بوزنه از سنجوان یعنی وزرای رام
که از اولاد اچهواکو هست مکانی پیدا کنم تا این برو مقام کند بعد از آن پیشتر رود سمدر
اینچنین بخاطر آورده بکوهی که برن نابهه میناک نام داشت گفت تو که اسر و غیره باشندگان
پاتال را پناه هستی و بر دروازهٔ پاتال اقامت داری ترا قدرت هست که خود را بلند نمایی
این را مددی کن که هنومان برای کار رامچندر میرود و آن رام مرا به پرستش و گرامی داشتن
سزاوار است شتاب کن تا وقت نگذرد و از میان آب بالا دراز شو تا این بوزنه
آرام کند بعده پیشتر رود بی شک رامچندر برای خبر سیتا فرستاده است برن نابهه میناک

این راش

और उसकी लहरों से जो समीर और महेन्द्र के समान थी पार हो गया और उसकी छाया से जो पानी में पड़ रहा था मछलियां और दूसरे जल पक्षी भय से भाग रहे थे और वह हवा में पर्वत के समान दिखाई दे रहा था। वह जहां से जाता था वहां पानी में उसके बल से कुआँ सा बन जाता था। वह जगह-जगह वायु में बादलों को बिखेर देता था और उनसे सफेद, लाल, नीला और दूसरे रंगों के बादल प्रकट होते थे। देवता उसके इतने काम देखकर फूल बरसा रहे थे। सूर्य ने भी अपनी गर्मी उसकी सुविधा के लिये कम कर दी थी और ठंडी हवा चलने लगी थी। क्योंकि वह राम के कार्य के लिए जा रहा था और आकाश पर दयालु हो गये थे। सांप यक्ष व गरूड़ और राक्षसों की संतानें, पक्षी और देवता यह दृश्य देख रहे थे। राजा सगर जो इक्ष्वाकु की संतान में थे ये मेरा पद बढ़ाया अर्थात् उनकी संतान ने मुझे खोदकर सागर नाम रखा और यह बंदर राम के मंत्रियों में से है जो इक्ष्वाकु की संतान में है। मैं ऐसा कोई स्थान बनाऊँगा जिस पर यह निवास कर सकें इसके बाद आगे जाएं। समुद्र ने मन में यह बात लाकर हिरणनाभि मैनाक नामी पर्वत से कहा तुम जो कि असुर आदि पाताल के निवासियों की शरण स्थली हो, और पाताल के द्वार पर रहे। तुम्हारे में इस बात की क्षमता है कि वह अपने को बड़ा कर लो और उसकी सहायता करो क्योंकि हनुमान रामचन्द्र के कार्य के लिए जा रहे हैं। वह राम मेरे लिये सम्मान के योग्य है। शीघ्र करो ताकि समय न निकल जाए और पानी के मध्य से ऊपर को लम्बे होते जाओ ताकि यह वानर विश्राम करें, फिर आगे जाएँ। निःसंदेह उसे रामचन्द्र ने सीता की सूचना लाने के लिए भेजा है।

این را شنیده از آب ببالا برآمد چنانچه ابر را شکافته آفتاب برآید و با قله های
زرین خود را نمود آورد چنانچه آفتاب برنگ زر روشن نمود شود و از آب برآمده
پیش راه هنومان بطریق سد ایستاد و هنومان او را مانع راه دانسته بانداز برو
سایهٔ سینه خود افکند و آواز شور نمود آن کوه فی الفور خود را بصورت آدمی نمود
بالای همان کوه استاده بخوشوقتی با هنومان گفت که من هرن نابهه میناکم نام
کوه هستم بمن اقامت کن برای خاطر تو برخاسته بلند گشته ام و تو اینکار دشوار
میکنی و بزرگان رام سمدر را کندیده اند و تو برای کار رام میروی لهذا سمدر مرا برای
آرام تو فرستاده که طرز بزرگانست هر که با خود نیکی کند با آن نیکی کند و این ضد جوجن
رفتن دور تر است بر من آرام کن بعد از آن راه دیگر باقی قطع کن و کند و مول
و ثمرات و دیگر خورشها و خوشبوئیها بر من بسیار است بخور و راحت بکن این
مقدمهٔ ملاقات من و تو در جهان شهرت خواهد یافت و در روندگان هوا ترا سرافراز
از همه میدانم و پرستش مسافران مرا سزاوار است از روی دهرم چه جای آنکه مثل تو آتیه
یعنی مسافر باشد و تو پسر باد هستی و رفتار تو مانند پدر تست و از همگنان قابل پرستش
هستی چون کوه چنین گفت هنومان از هوا بسمت او نظر نمود و او را با قسام زر
و گوهر آراسته دیده پرسید در چنین دریای ژرف تو چگونه هستی این را بیان کن کوه

हिरणनाभ मैनाक इसको सुनकर पानी से ऊपर आ गया जैसे कि बादलों को फाड़कर सूर्य निकलता है। सुनहरी चोटियों के साथ अपने को प्रकट किया जैसा कि सूर्य पीले रंग में अपने को प्रकाशित करता है। और पानी से निकलकर हनुमान के मार्ग के सामने सद के रूप में खड़े हो गये। हनुमान ने उसको मार्ग रोकने वाला समझकर उस पर अपनी छाती की छाया डाली और अपनी आवाज़ से ऐसा शोर मचाया कि वह पर्वत तुरन्त स्वयं को सुन्दर व्यक्ति के रूप में परिवर्तित करके उस पर्वत पर खड़ा हो गया और निःसंकोच हनुमान से कहा; ''मैं हिरणनाभ मैनाक नामी पर्वत हूँ मुझ पर रुको। तुम्हारे लिये मैं उठकर ऊँचा हुआ हूँ तुम यह कठिन कार्य कर रहे हो। राम के वरिष्ठ जनों ने समुन्द्र को खोदा है और तुम राम के काम के लिए जा रहे हो अतः समुद्र ने मुझे तुम्हारी सुविधा के लिये भेजा है। क्योंकि वरिष्ठ लोगों का स्वभाव है कि जो उनके साथ अच्छे कार्य करता है वह भी उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और यह सौ जोजन की यात्रा बहुत लम्बी है। मुझ पर विश्राम कर लो उसके बाद शेष मार्ग तय करना। मुझ पर कन्द मूल फल और दूसरे खाने पीने की वस्तुएं तथा सुगन्धित वस्तुएँ बहुत हैं खाओ और आराम करो। मेरी और तुम्हारी भेंट की यह बात संसार में प्रसिद्ध होगी तथा हवा में चलने वाले सारे लोगों में मैं तुमको योग्य समझता हूँ। यात्रियों की सेवा व सम्मान स्वाभाविक रूप से मेरे लिए आवश्यक है जबकि तुम्हारे जैसा कोई यात्री हो। तुम पवनपुत्र हो और तुम्हारी गति पिता समान है तथा तुम सबकी ओर से आदरणीय हो। जब पर्वत ने यह बात कही, तो हनुमान ने वायु से उसकी ओर देखा और उसको विभिन्न प्रकार के धन व रत्न से सुसज्जित देखकर पूछा ''इस सुसज्जित समुन्द्र में तुम कैसे हो? इसका वर्णन करो।''

که بصورت آدمی بود گفت پیش در ستجگ کوه‌ها پردار بودند و مانند گرد و باد بهر سو می پریدند
از سبب افتادن ایشان دیوتا و رکهه‌ها و دیگر جانداران از دهشت در گرفت اندر بخشم آمد
و از بجر پرهای هزاران کوه بشکست چون بجر برداشته بمن رسید ناگاه باد پدر تو مرا گرفته در سمندر انداخته
مخفی کرد ازین رو پردار مانده‌ام بنابران قابل پرستش منی و بجائی برادر عزیز هستی و با تو دوستی میکنم تو هم
مهر نموده برمن اقامت کن و تصدیع خود برطرف نما هنومان گفت از اکرام و تعظیم بر تو مهربانم و وقت میرود
و دیگر اینکه در حضور بوزنه‌ها شرط عبور تمام دریا بی قیام کرده‌ام بر تو مقیم نخواهم شد انگشت بر تو می نهم
و میگذرم این بگفت و دست بر وی نهاد و براه هوا روان گشت و برفتن و چندان شوق کرد و بیجا صورت

سمندر و جانوران آبی و صورت کوه طلا از آب برآمده بصورت آدمی گشته و صورت هنومان و دیوتاها
که تماشا میکنند

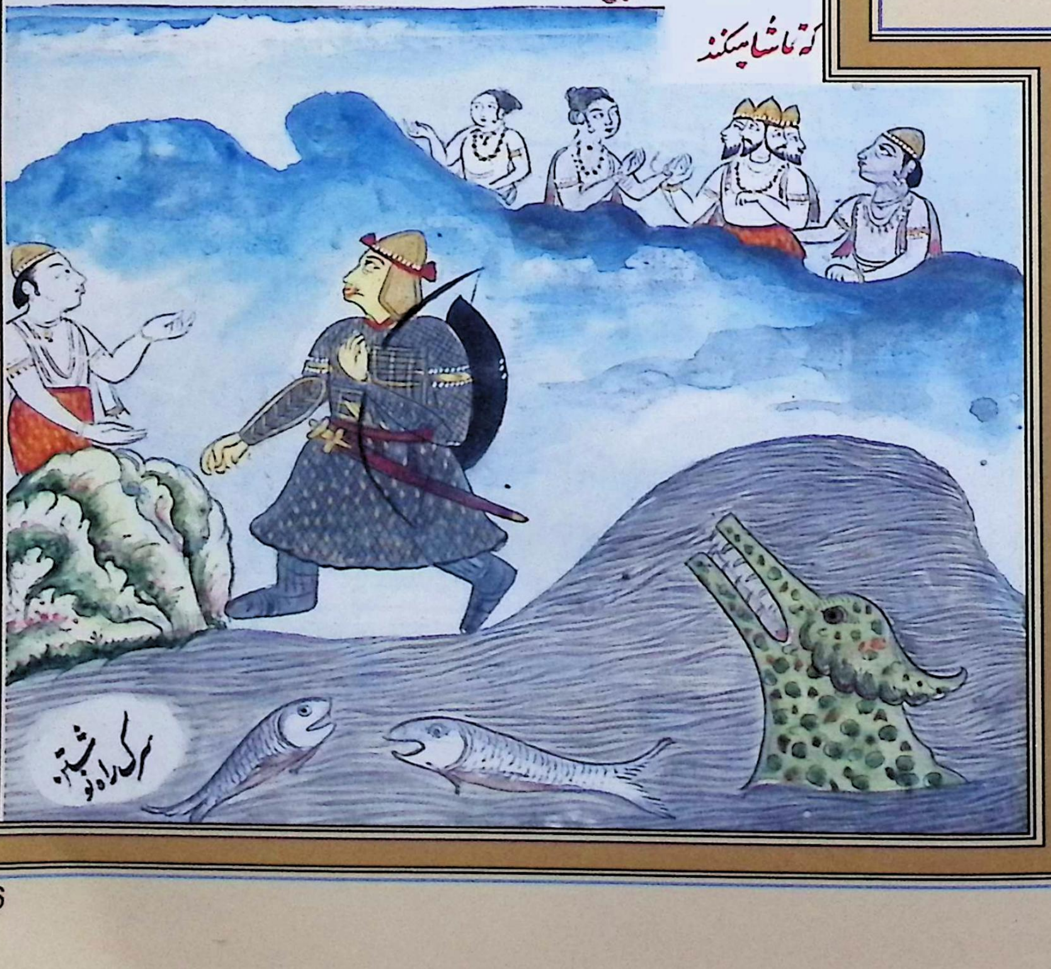

पर्वत ने जो मनुष्य के रूप में था कहा; इससे पहले सतयुग में पर्वत पर वाले होते थे और गरुड़ तथा वायु के समान प्रत्येक दिशा में उड़ते थे उनके गिरने से देवता और दूसरे जीवधारी भयभीत हो जाते थे। इन्द्र को क्रोध आ गया और वज्र से हजारों पर्वतों के सर तोड़ डाले। जब वह वज्र उठाकर मुझ तक पहुंचे तो अचानक तुम्हारे पिता वायु ने मुझे पकड़कर समुन्द्र में डालकर छिपा दिया इसी कारण मेरे पर शेष रह गये। इसी कारण तुम मेरे लिये आदरणीय भी हो और मेरे प्रिय भाई के स्थान पर हो, तथा अपने कष्ट और थकावट दूर करो। हनुमान ने कहा; तुम्हारे सम्मान करने से मैं तुम पर दयालु हुआ। समय निकला जा रहा है, और दूसरी बात यह कि मैंने समस्त वानरों के सामने मार्ग में रुके बिना समुन्द्र पार करने की शर्त लगायी थी इसलिए मैं तुम पर विश्राम नहीं करूंगा। अतः तुम पर उंगली रखूंगा और निकल जाऊंगा यह कहा और उस पर हाथ रखते हुए वायु में चल दिया। और चलने का शौक दो गुना बढ़ गया।

समुन्द्र और जल पशुओं का चित्र और सुनहरे पर्वत का चित्र जो पानी से प्रकट होकर मनुष्य के रूप में परिवर्तित हो गया है। हनुमान और देवताओं का चित्र जो दृश्य देख रहे हैं।

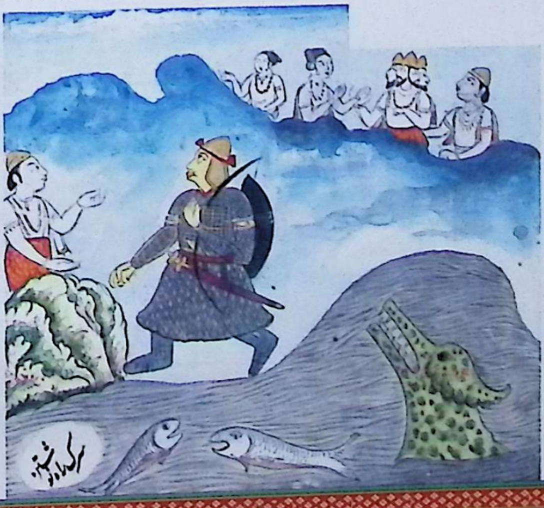

سرگ راه **نوشتن** بعدازان راه هوا طي نمود و کوه را دور تر گذاشت و کار دیگر
که ازو دشوار تر بود بروی کار آمد اینست که دیوتا و سده و رکهه نیز خوشوقت شدند
و اندر شاد گشته بکوه هرن نابهه میناک که بسونابهه مشهورست گفت تو که تعظیم هنومان
بجا آوردي بر تو مهربان شدم و این دوت یعنی ایلچي رام است آن کوه خوشدل گردید
القصه هنومان راه دور رفت بعدازان دیوتا و کندهرپ به سرسا نام دیوی گفتند
که هنومان پسر باد سمدر [illegible] میکند تو مانع رفتن شو و خود را بصورت راچهس بکن
که دندان دراز و چشم زرد و دهن فراخ باشند زیرا که قوت و زور و تدبیر و شعور
این را معلوم کنیم تا چه خواهد کرد سرسا این را شنیده در سمدر بشکل راچهسی استاده
و سد راه هنومان شد و گفت تو خوراک من هستی حالا ترا دیده ام میخورم در دهن من
داخل شو چون سرسا چنین گفت هنومان دست بسته عرض کرد رام ولد دسرته
با سیتا اهلیه و لچهمن برادر خود در دندک بن در آمده بود که از میان جن استهان
راچهسی راون نام سیتا را گرفته برده است من بستهٔ اویم و نزد سیتا میروم لهذا
توقف کن که سیتا را دیده خبر او برام رسانیده در دهن تو مي آیم این راست
میگویم سرسا گفت اینچنین نمی شود هنومان از غصه گفت دهن خود فراخ کن تا مرا
فرو بري سرسا دهن خود بمقدار ده یعنی چهل کروه فراخ کرد هنومان هم وجود خود را

सर्ग-१३१

मार्ग तय करना

उसके बाद उसने वायु का मार्ग तय किया और पर्वत को बहुत दूर छोड़ दिया। दूसरा काम जो उससे अधिक कठिन था वह आया कि देवता, सिद्ध और ऋषि उससे प्रसन्न हुए और इन्द्र ने प्रसन्न होकर हिरण्यनाभि मैनाक पर्वत से जो सुनाभ के नाम से प्रसिद्ध है कहा; ''तुमने चूंकि हनुमान का आदर किया है इसलिए मैं तुम पर दयालु हुआ। यह राम का दूत है वह पर्वत प्रसन्न हो गया। अतः हनुमान बहुत दूर के मार्ग पर गये उसके बाद देवता और गन्धर्व ने सुरसा नामी देवी से कहा कि हवा का पुत्र हनुमान समुन्द्र को पार कर रहे हैं तुम आगे जाने में रुकावट हो जाओ और अपने को राक्षसी के रूप में परिवर्तित कर लो कि दांत लंबे-लंबे आंख पीली और मुंह बड़ा हो क्योंकि हम उसकी शक्ति और बल पर योजना व बुद्धि ज्ञात कर रहे हैं कि यह क्या करेगा। सुरसा यह सुनकर वह समुन्द्र में एक राक्षसी के रूप में खड़ी हो गयी। और हनुमान का रास्ता रोककर बोली ''तुम मेरा भोजन हो, मैंने अभी तुम्हें देखा है अब खाऊँगी तुम मेरे मुख में चले जाओ। सुरसा ने जब यह कहा तो हनुमान ने हाथ जोड़कर विनती की दशरथ के पुत्र राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ दण्डक वन में आये थे कि जन स्थान से रावण नामक एक राक्षस सीता को पकड़कर ले गया है। मैं उनका भेजा हुआ हूं और सीता के पास जा रहा हूं। अतः तुम इतनी प्रतीक्षा करो कि मैं सीता को देखकर उसकी सूचना राम तक पहुंचाकर तुम्हारे मुख में आऊं। मैं सत्य कह रहा हूं कि अपना मुख चौड़ा करो ताकि मुझे नीचे उतारो। सुरसा ने अपना मुख चालीस कोस के बराबर फैला दिया हनुमान ने भी

بقدر ده جوجن کلان نمود سرسا اورا دیده دهن خود را بمقدار بیست جوجن فراخ
نمود هنومان بغضب در آمد وجود خود را بمقدار سی جوجن ساخت سرسا اورا
دیده دهن خود بمقدار چهل جوجن نمود هنومان بمقدار پنجاه جوجن دراز شد سرسا
دهن خود را بمقدار شصت جوجن نمود هنومان بمقدار هفتاد جوجن بلند شد سرسا
دهن خود بمقدار هشتاد جوجن بکشاد هنومان بمقدار نود جوجن بلند شد سرسا
دهن خود را بمقدار صد جوجن یعنی چهار صد کروه فراخ کرده بالسان چون زوز
شعله زن گشته در آن زمان هنومان شخص خود بمقدار ز انگشت نموده در دهن او
داخل شد و شتاب بیرون گشت و در هوا رفته بخنده گفت ای سرسا
تو که دختر دچهه هستی ترا نمسکار است در دهن تو داخل شدم و بر آمدم حالا بجای
که سیتاست میروم و گفته خود راست کردم سرسا صورت اصلی خود نموده
باو گفت مقصود تو حاصل باد بخیریت برو و سیتا را با رام توصل بده این کار
سیوم که از هنومان بوقوع آمد همه ذیحیات تحسین گفتند بعد از ان براه هوا
روان شد چنانچه گزر رود و راه سمدر را که بانواع جانداران [illegible] شیر دریا و غیرها
در جزیره ها پر بود و انواع بجان نشینان در انجا گذر داشتند طی میکرد بنوعیکه
پرون کنندگان بسرک رسند هنومان ابرها مثل باد درهم میکرد و از ان سبب

سیاه

अपना शरीर तीस जोजन के बराबर बढ़ा लिया। सुरसा ने उसे देखकर अपना मुंह चालीस जोजन के बराबर किया। हनुमान ने पचास जोजन के बराबर शरीर बढ़ा लिया, सुरसा ने साठ जोजन के बराबर मुख खोला लेकिन हनुमान नब्बे जोजन के बराबर हो गया सुरसा ने अपना मुँह सौ जोजन अर्थात् चार सौ मील के बराबर बड़ा करते हुए नरक जैसी जीभ के साथ अग्नि उगलती हुई निकली। उस समय हनुमान अपना रूप अंगूठे के रूप में करके उसके मुख में प्रविष्ठ हो गये। और बाहर निकल गये और वायु में जाकर हंसते हुए कहा ‘‘ऐ सुरसा । तू जो कि दक्ष की पुत्री है, तुझे नमस्कार है, मैं तेरे मुख में गया भी और निकल भी आया अब मैं वहां जा रहा हूँ जहाँ सीता हैं। मैंने अपना कहा हुआ सच कर दिखाया सरसा ने अपने वास्तविक रूप में आकर उससे कहा; ‘‘तुम्हें अपना उद्‌देश्य प्राप्त हो। कुशलतापूर्वक जाओ और सीता को राम से मिलाओ।’’ यह सेवा वाला काम जो हनुमान द्वारा किया गया समस्त जीवधारियों ने उसकी प्रशंसा की। फिर वह वायु के मार्ग पर चले जैसे कि गरूड़ जाता है और वह समुन्द्री मार्ग जो विभिन्न प्रकार के जीवों अर्थात् शेर, घोड़े आदि द्वीप में भरे हुए थे और विमान पर बैठने वाले लोग वहाँ से जाते थे जैसे कि पुण्य करने वाले स्वर्ग में जाते हैं। हनुमान बादलों को वायु के समान बिखेर देते थे।

سیاه و سفید و سرخ و دیگر نمودار میشدند و بعضی جا که در ابر می آمد و بیرون هیئت
مانند پدیدار میشدند ناگاه ستهکا نام والده راه او را از دور نظر کرد در دل گذراند
که این را بکشم بعد از دیر خوراک من رسیده است اینچنین بخاطر خود آورده دهن
فراخ کشاده سایهٔ دهن بر وانداخت هنومان فکر کرد که این کوه مانند راه من بند نمود
و یکایک در دهن این آمده ام چنانچه بزور باد کشتی در سمدر گردد حیرانم بعده پیش و پس
و زیر و بالا نظر نمود دید که آن ستهکا جاندار کلانست که از سمدر برآمده این را تحقیق
دانسته خود را در افزایش آورد ستهکا او را کلان دیده دهن خود را بسیار
فراخ تر کرد چنانچه از پاتال تا آسمان دهن او کشاده گشت هنومان بدین شکل او را دیده
به تدبیری در دهن او که دراز دندان داشت داخل شد که ماه چهارده در دهن راه
رود و اندر دهن او تالاب وغیره نظر نمود و بعد از ان بناخن های تیز جگر وغیره جای
نازک بر درید و دیگر جای مغز وغیره او شکسته زود بیرون شد و او بجگر و بیجان
گشته برافتاد و هنگام نزع چنان بر زبان راند ای بوزنه تو که این چهار چیز داری تحمل
و تفکر و زور و تدبیر کار کردن بنابران هرگز بد نخواهی دید بعد از ان ستهکا در سمدر برافتاد
برهما این کار را دیده مهربان شد و دیگر جانداران باشندگان هوا به هنومان گفتند
تو کار سخت کردی حالا سیتا را دریاب و این کار چهارم که از هنومان بوقوع آمد

इसी कारण से काला, सफेद, लाल और दूसरे रंग के बादल प्रकट होते थे और जहाँ वह बादलों में आता सुन्दर हो जाता और पंखधारी गिरिराज के समान हो जाता था अचानक सिंहिका नामी राहु की माता ने उसको दूर से देख लिया और हृदय में यह बात तय की कि मैं उसे मार डाँलू। बहुत देर के बाद मेरा भोजन मिला है। हृदय में यह बात लाते हुए उसने अपना मुँह चौड़ा करके अपने मुँह की छाया उस पर डाला। हनुमान ने सोचा कि उस पर्वत जैसी वस्तु ने मेरा मार्ग बन्द कर दिया और मैं अचानक उसके मुख में आ रहा हूँ। मानों वायु के बल से उसने नाव समुन्द्र में कर दी और मैं चकित हूँ। उसके बाद उसने आगे पीछे और ऊपर नीचे देखा तो देखा कि वह सिंहिका बड़ा पशु है जो समुन्द्र से निकला है। यह जानकर वह अपने को बड़ा करता रहा और सिंहिका ने भी उसको देखकर अपना मुख बहुत चौड़ा कर लिया कि पाताल से आकाश तक उसका मुँह फैल गया। हनुमान उसको इस रूप में देखकर किसी योजना से उसके मुँह में जिसमें बड़े-बड़े दाँत थे प्रविष्ट हो गये जैसे कि चौदहवीं का चाँद मार्ग के मुँह में जाता है और उसके मुख के अन्दर उसने तालाब आदि देखा। उसके बाद तेज नाखूनों से उसके कोमल स्थानों अर्थात् हृदय आदि को फाड़ दिया। दूसरे उसका मस्तिष्क आदि तोड़कर शीघ्र बाहर आ गया और वह बिना हृदय के निर्जीव होकर गिर पड़ा और अन्तिम समय यह कहाः ऐ वानर ! तू जो कि यह चार बातें रखता है अर्थात् धैर्य, चिन्तन, बल और कार्य करने की योजना। इसीलिए तू कभी बुरा नहीं देखेगा उसके बाद सिंहिका समुन्द्र में गिर पड़ी। ब्रह्मा यह काम देखकर दयालु हो गये और वायु के अन्य जीवों ने हनुमान से कहा; ‘‘तुमने कठिन कार्य किया। अब तुम सीता को पा लोगे। और यह चौथा कार्य जो हनुमान द्वार हुआ

اندر و غیره و دیوتا و رکبه با تحسین کردند بعد ازان باز هنومان براه هوا
روان شد و تمام یکصد جن جوطی راه ساخت لنکا بر ترکوت کوه منظر در آمد آنجا اشجار شال
و تال و چنپه و بهر و انبه و نیب و ناگ کیب و دهو و پیل و پلاس و تندوک و چندن
و جنبو و نپس و بلو و پاتل و کدنب و سپت پرن و کهجور یعنی خرما و گکوبه و بت و
بند هوک و تالک و بهولک و آشوک و ارجن و دیگر اقسام همه بدید و باغهای
ترکوت دیدند و عورات بسیار دیدند هنومان چون بر خود نظر گماشت
که مانند پنج صد زاده فلک شده است در خاطر گذراند که باین هیات
راچهسان دیده تمسخر خواهند کرد یعنی بنوعی دیگر گردن خواهند شناخت
بهتر آنست که شکل خورد نموده در آمد شوم بعد ازان مانند کشن هیکل
باز آمدن کلان تر خواهم شد بعد ازان قریب بستل نام کوهچه فرود آمد که درانجا
کیتکی و نار جیل و اودام و غیره هم اشجار بودند ازانجا بر کوه نظر کرد و مثل

امراوتی آزادیده تمام شد
کاند چهارم مسمی بکشکند

इन्द्र आदि देवता और ऋषियों ने उसकी प्रशंसा की। उसके बाद हनुमान फिर हवा के मार्ग पर आगे को चल दिया और पूरा एक जोजन मार्ग तय किया। लंका त्रिकूट पर्वत पर दिखाई दी वहाँ उसने शाल, ताल, चम्पा, हरे आम, नींबू, मकहप, दहू, पीपल, प्लास, तन्दूक, चन्दन, चम्पू, कटहल, बलू, पातल, कदम्ब, सपत परन और खजूर, ककूहा बत, बन्धूक, तलक, बहूलक, अशोक, अर्जुन और दूसरे बहुत से वृक्ष देखे और त्रिकूट के उपवन देखे और बहुत सी स्त्रियाँ देखीं। हनुमान ने जब अपने ऊपर दृष्टि डाली कि वह बादल के समान आकाश का मार्ग रोके है तो उसके दिल में यह बात आई कि इस रूप में राक्षस उसे देखकर हसेंगे अर्थात् वह किसी दूसरी ओर दौड़ेंगे। उचित यह है कि अपना रूप छोटा करके उनके सामने आऊँ। उसके बाद विष्णु के समान वापसी के समय बड़ा हो जाऊँगा। उसके बाद वह सीतल नामी एक पर्वत पर आया जहाँ केतकी, नारियल और बादाम आदि के वृक्ष थे। वहाँ से उसने पर्वत पर दृष्टि डाली और उसको अमरावती के समान देखा।

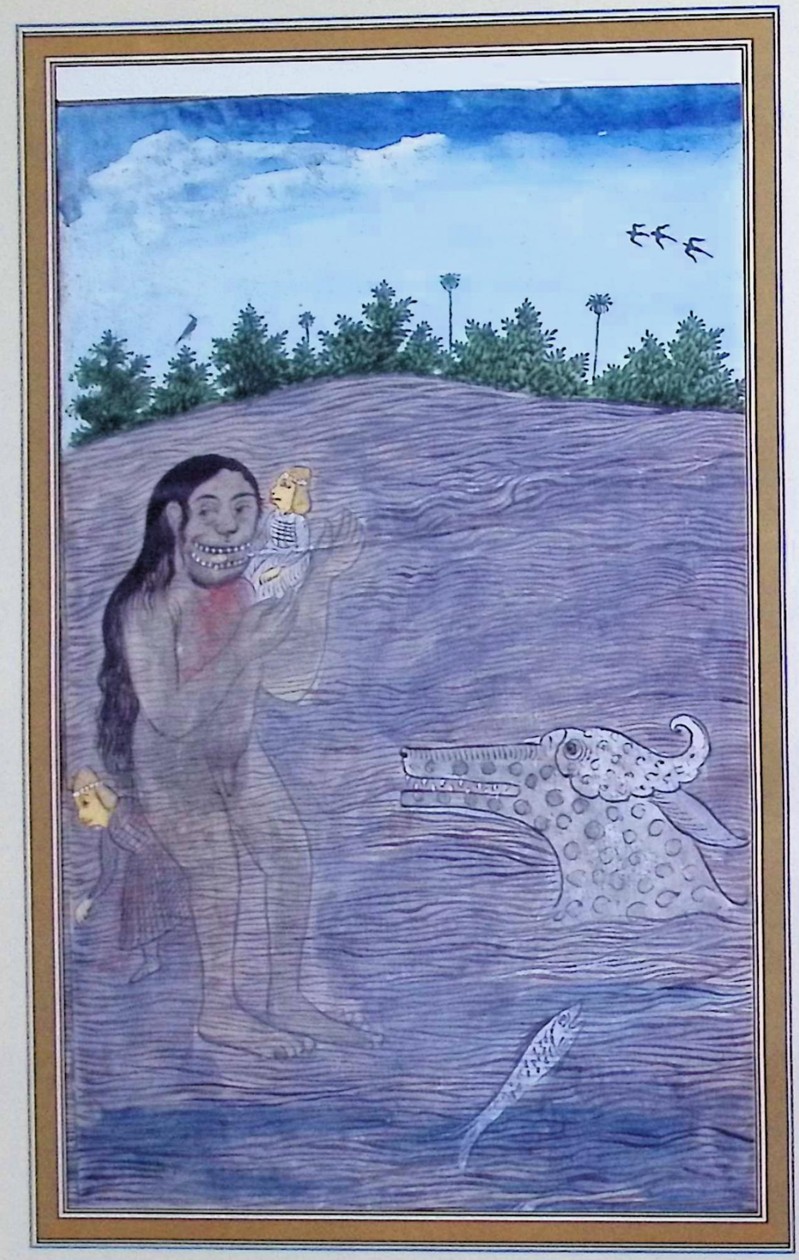

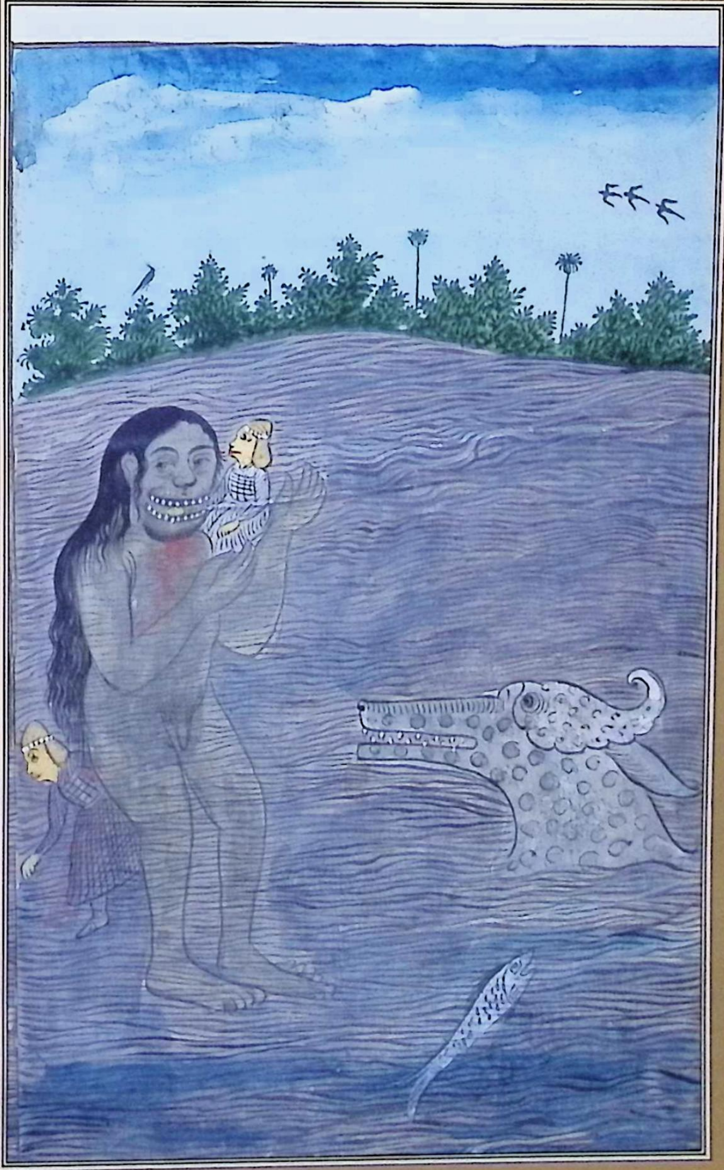

رب زدني علما
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
رضا لائبریری رامپور
ज्ञानं वर्धवतु प्रभुः।।
RAMPUR RAZA LIBRARY
رامپور رضا لائبریری
رامپور
RAMPUR

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

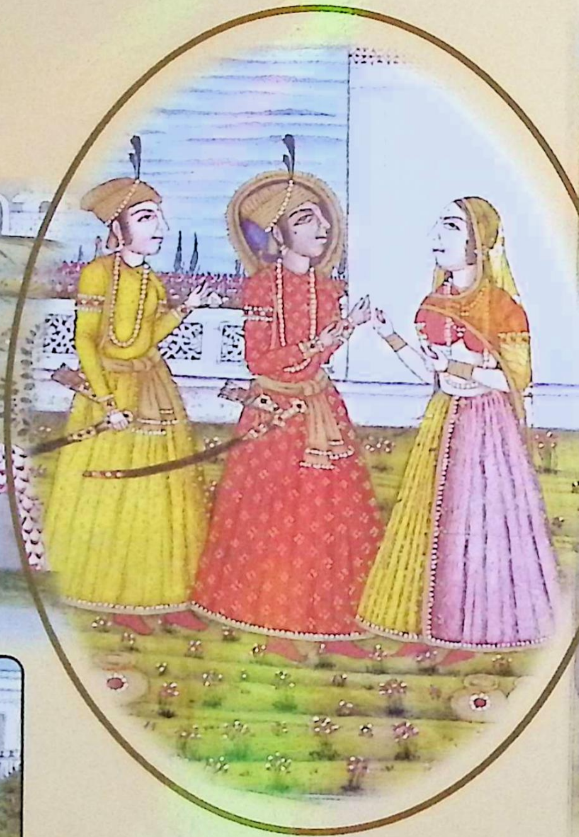

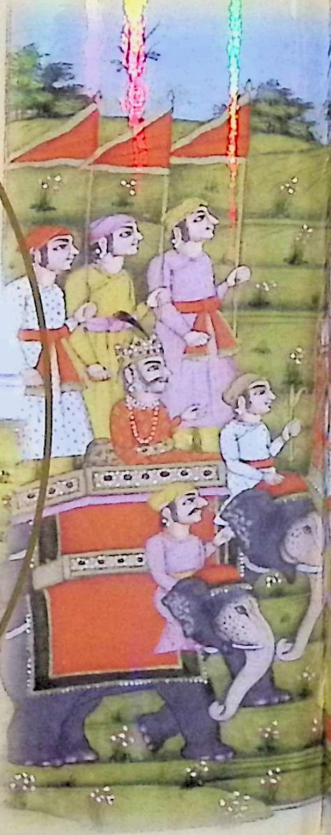

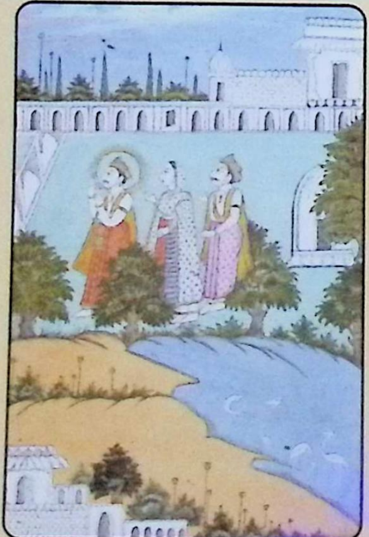

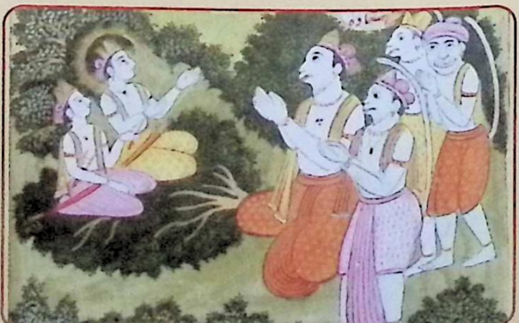

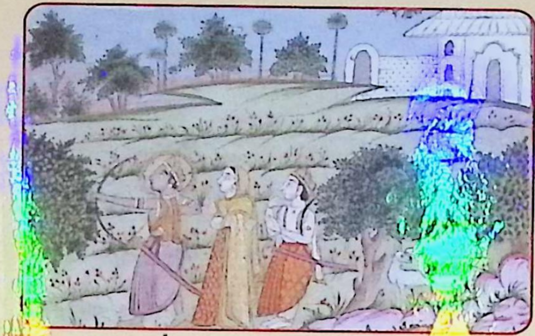

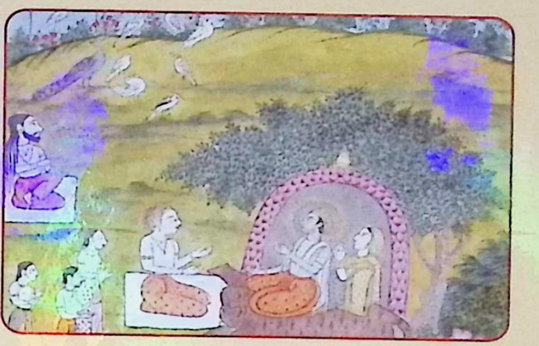

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

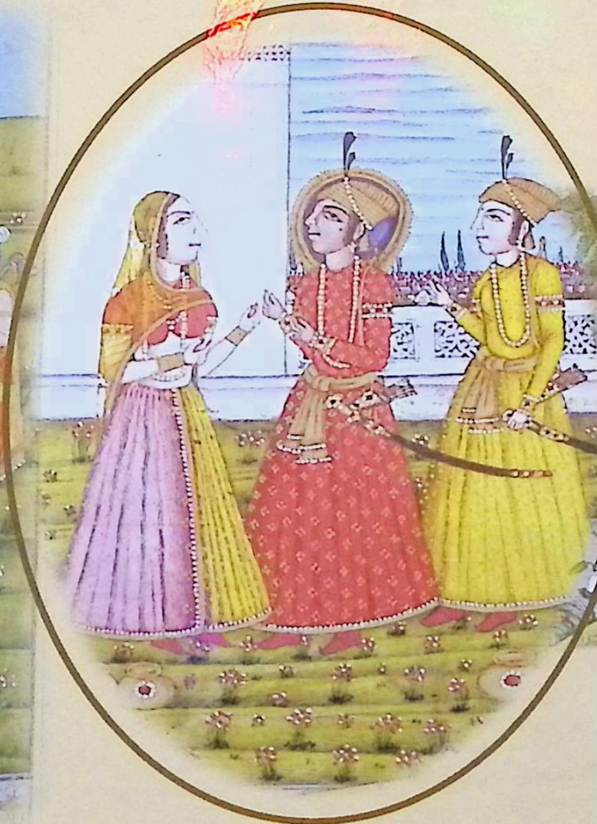

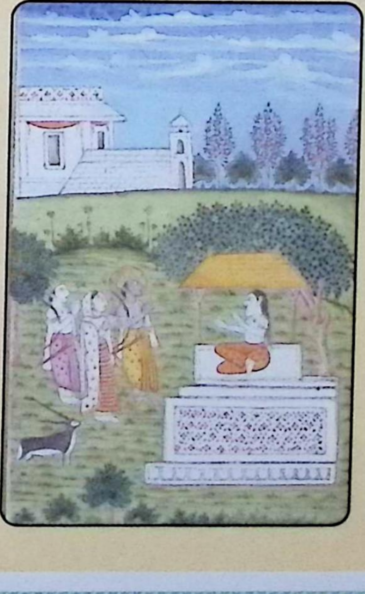

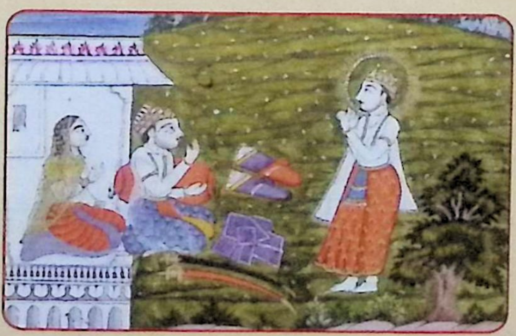

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

RAMPUR RAZA LIBRARY

RAMPUR

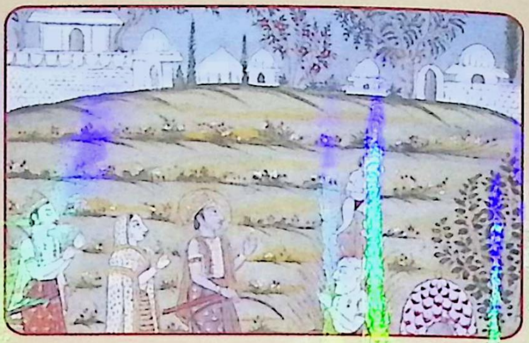

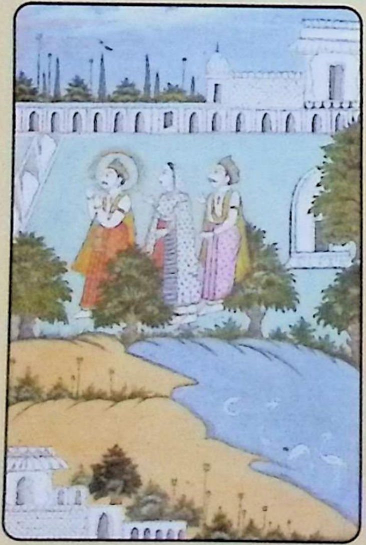

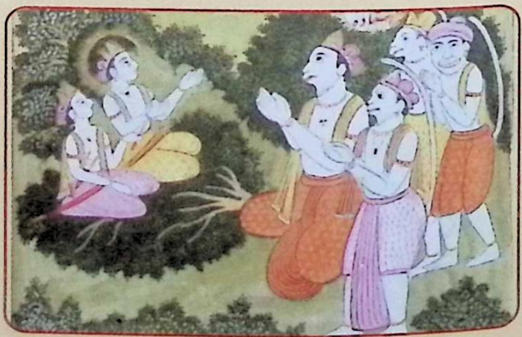

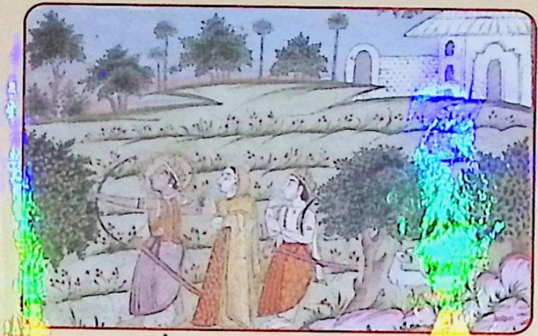

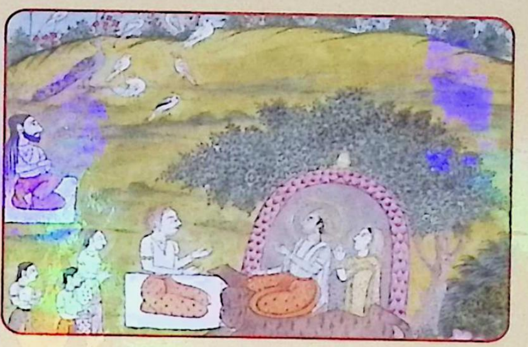

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

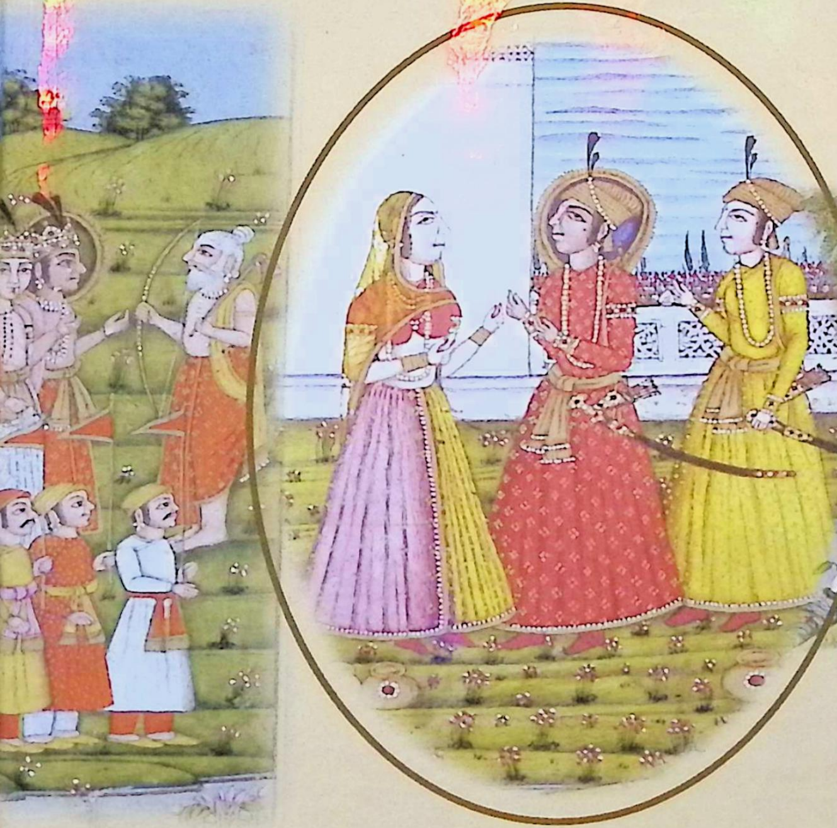

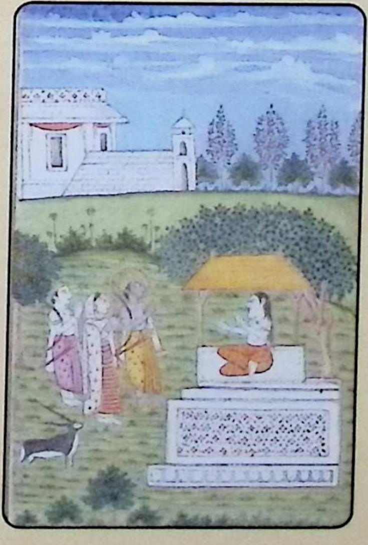

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

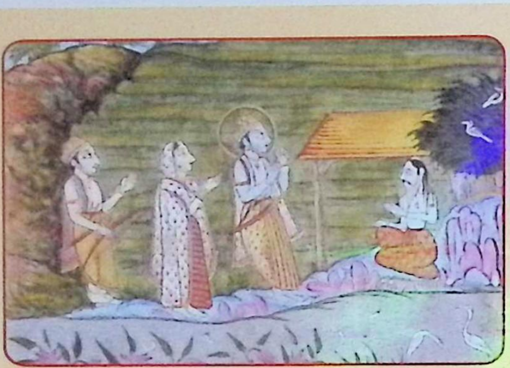

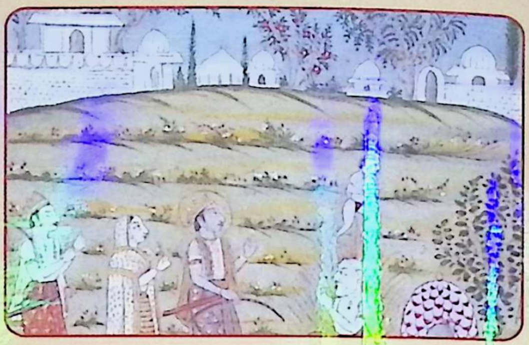

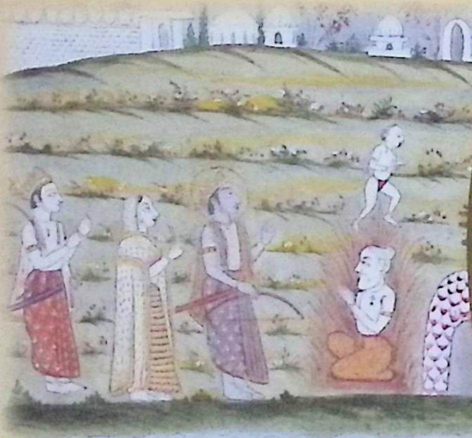

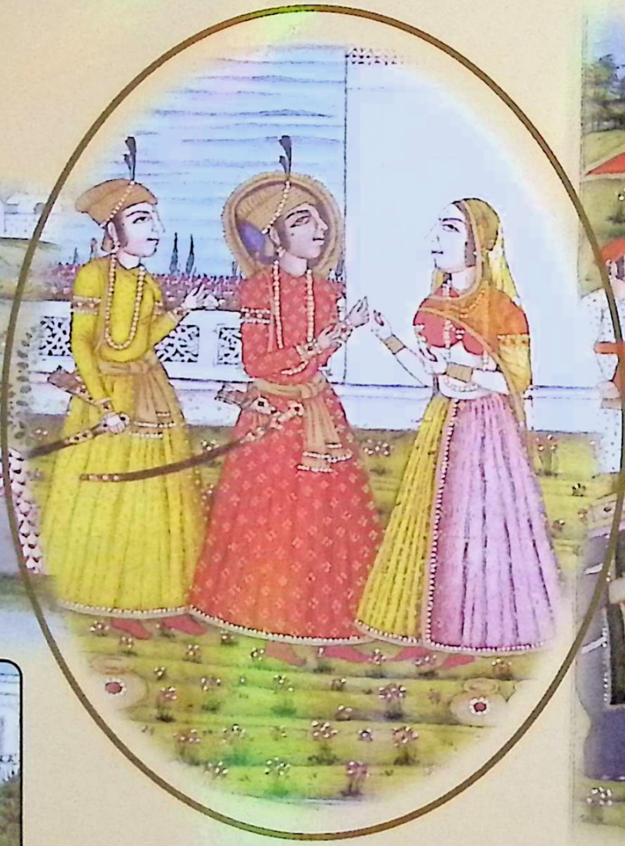

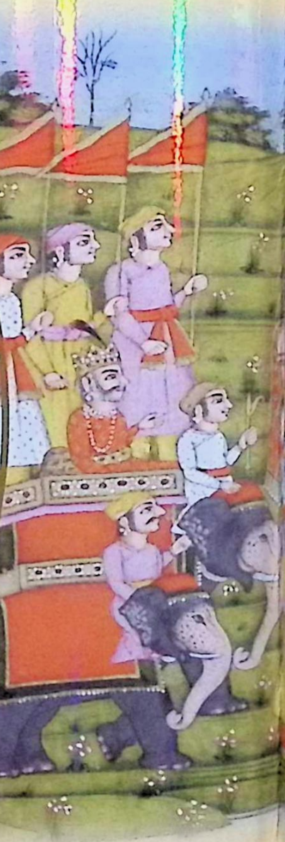

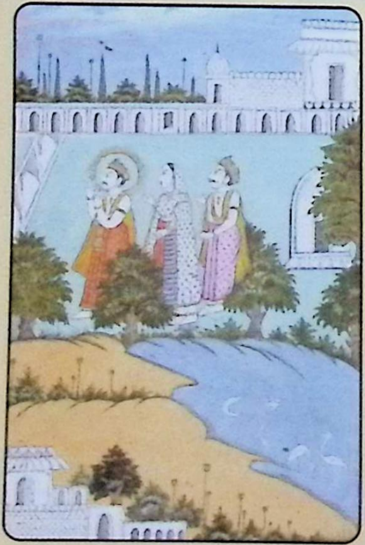

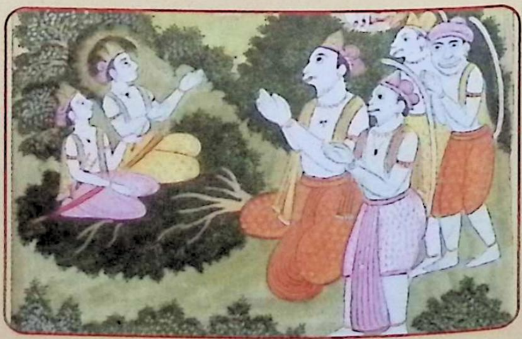

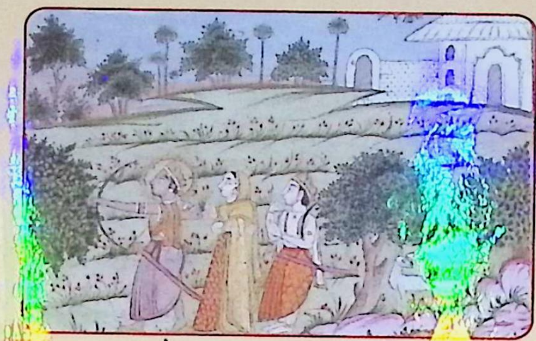

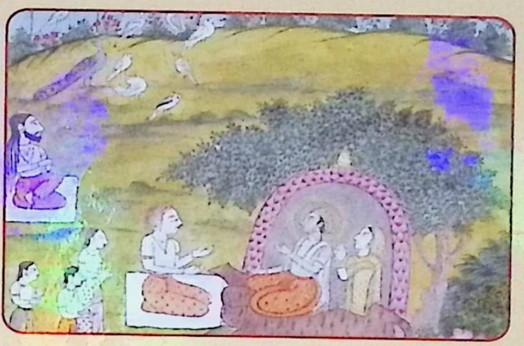

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

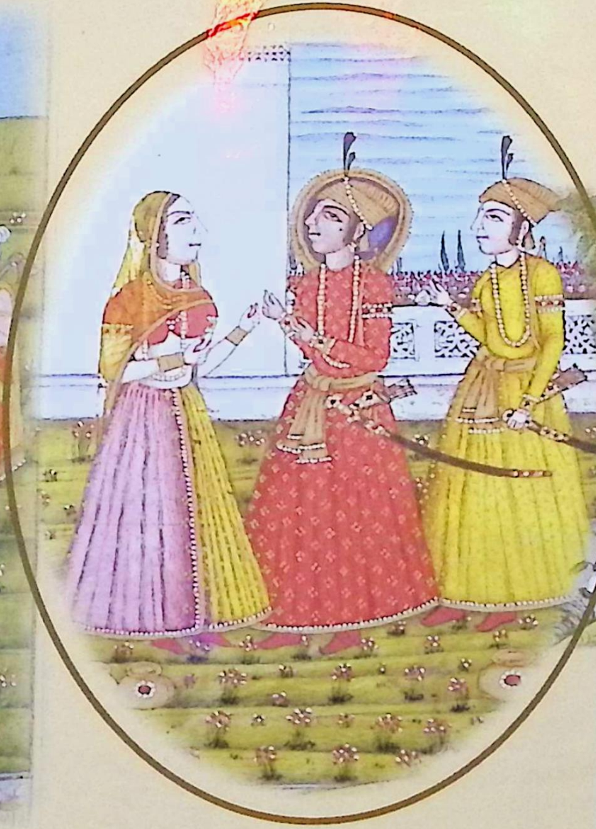

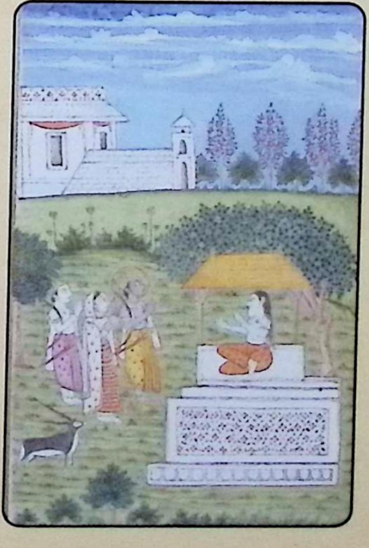

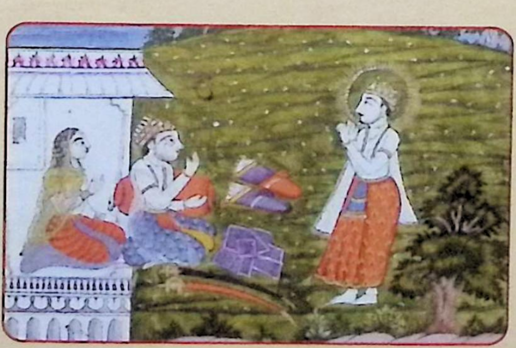

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR

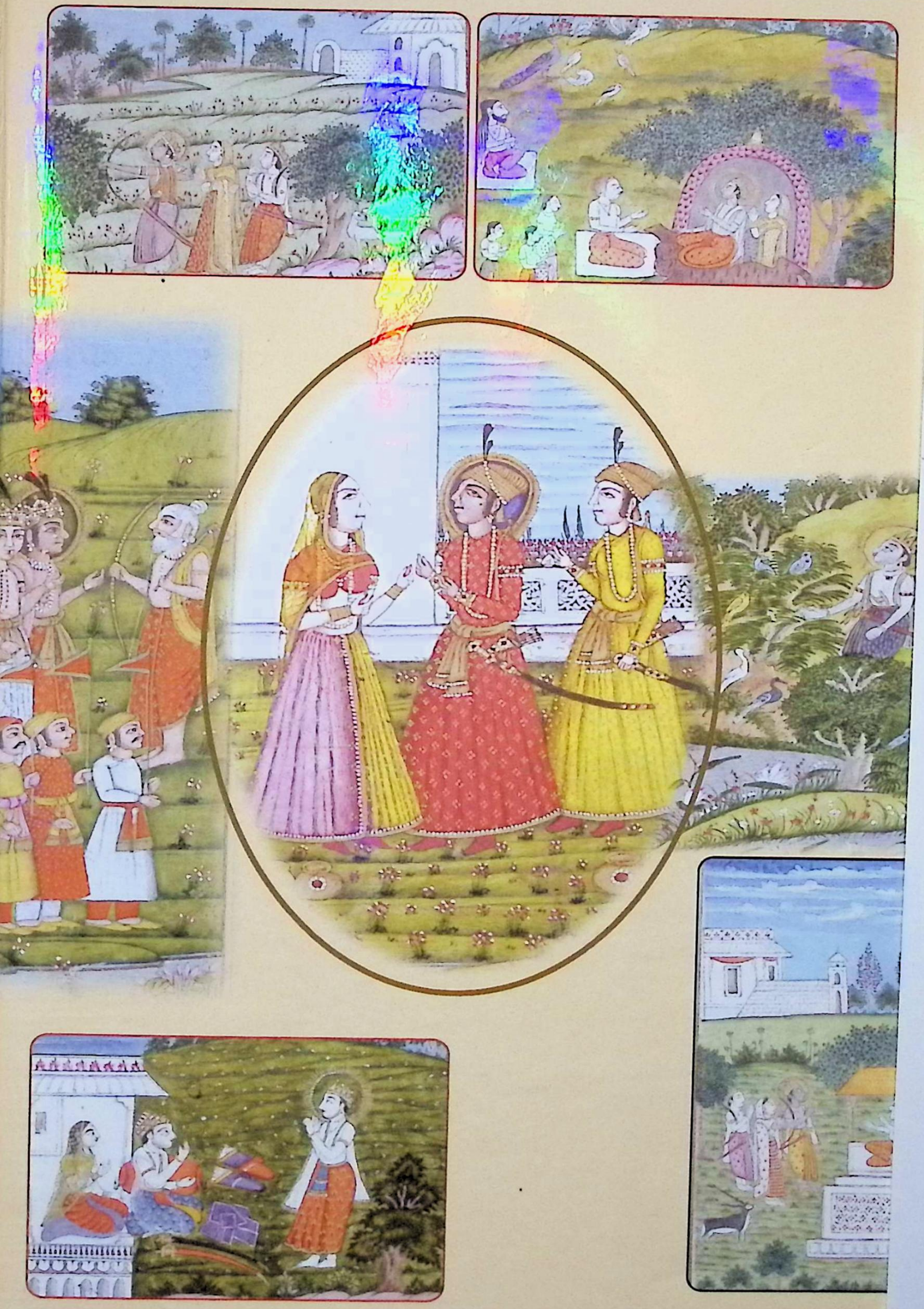

रामायण

(वाल्मीकि)

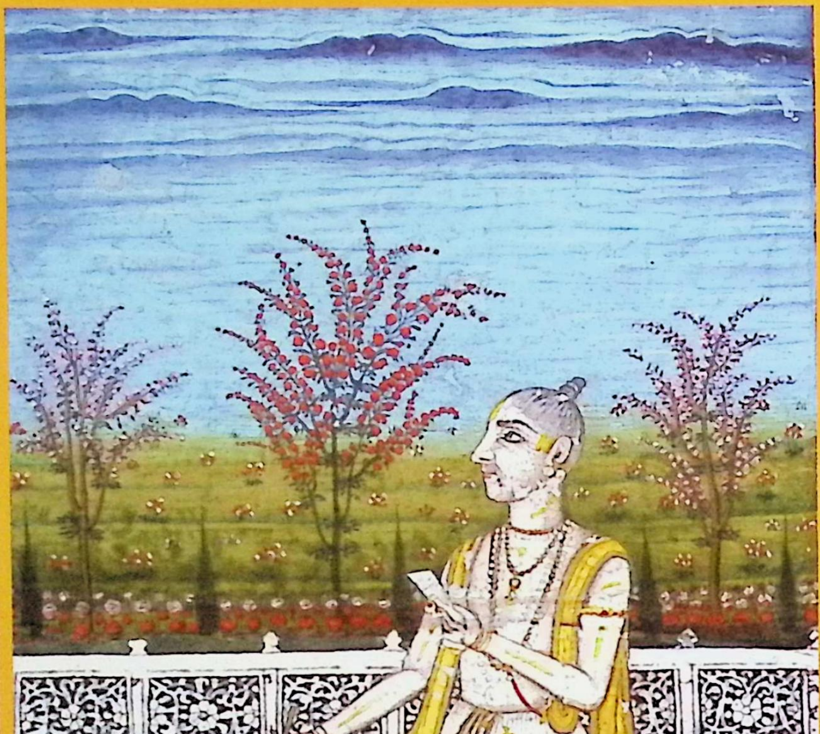

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA

रामायण

(वाल्मीकि)

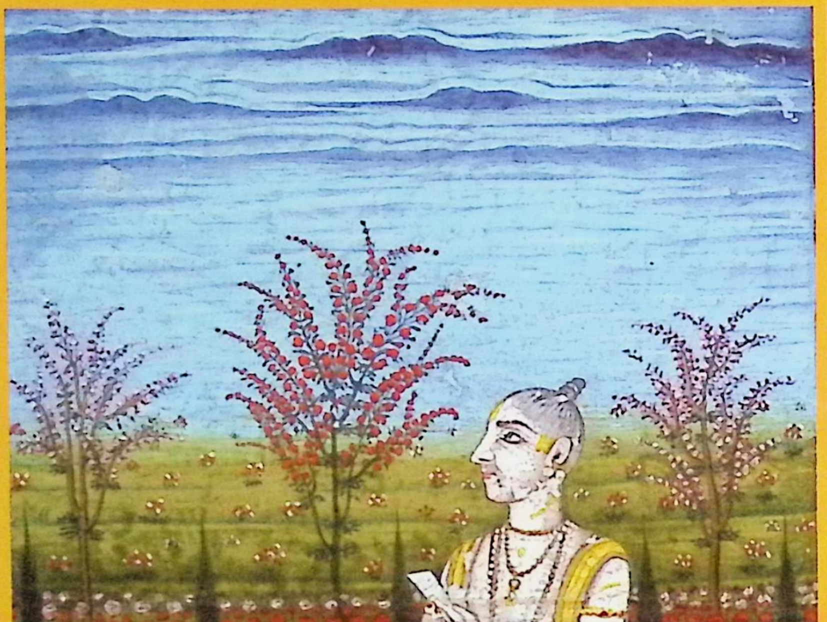

RAMPUR RAZA LIBRARY
RAMPUR -244 901 (U.P.) INDIA